वृहद् हस्तरेखा शास्त्र

(हस्तरेखा योग)

लेखक

डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली

एम० ए०, पी-एच० डी०

अध्यक्ष : भारतीय ज्योतिष अध्ययन अनुसंधान केन्द्र

तथा तंत्र-मंत्र-यंत्र, हस्तरेखा स्वप्न संस्थान और

बयालीस से अधिक ग्रन्थों के रचयिता

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-6

प्रकाशक

मूल्य : 18/- अठारह रुपये

मुद्रक :
स्वान प्रेस ऑफ लाहौर, 3 चमेलियान रोड, दिल्ली-110006

भूमिका

करा‍ग्रे वसते लक्ष्मी कर मध्ये सरस्वती।
कर पृष्ठे स्थितोब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम् ॥

ये दो पंक्तियां ही हाथ का महत्त्व सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं, हमारा हाथ एक सामान्य हाथ ही नहीं है, अपितु धार्मिक आध्यात्मिक दृष्टि से इसमें सभी देवताओं का निवास है, भौतिक दृष्टि से मानव की ओजस्विता और कार्य-शक्ति का पुंज है और ज्योतिष की दृष्टि से सम्पूर्ण जीवन की हलचल का स्रोत है। हमारा जीवन वेगमय है, निरन्तर सक्रिय है, और पल-पल परिवर्तनशील है, और इस सारे परिवर्तन का, जीवन के संघर्षों का, तथा मानव के घात-प्रतिघातों का यह सम्पूर्ण रूप से प्रतिबिम्ब है, जिसके माध्यम से भूत को जानकर विश्वास करते हैं, वर्तमान को समझते हैं और भविष्य को पहचान कर उसके अनुसार अपने-आप को ढालने का प्रयत्न करते हैं जिसकी वजह से हम स्थिर वेगमय रह सकें। जोरों का तूफ़ान चल रहा है और हमें इस तूफ़ान में ही कदम बढ़ाने हैं, परन्तु यदि तूफ़ान-आंधी सामने आ रही है, तो हमें एक-एक पग उठाने में तकलीफ़ होगी, पर यदि तूफ़ान पीठ की ओर से आ रहा है, तो हमें वह तूफ़ान सहायता देगा, हमारे पैर आसानी से उठेंगे, हम सुविधा से गतिशील होकर सुगमतापूर्वक अपने गन्तव्य स्थल तक पहुंच सकेंगे।

इस संसार में भी निरन्तर घात-प्रतिघात, संघर्ष-कशमकश का तूफ़ान चल रहा है, और हमें इस तूफ़ान में ही अपनी मंज़िल तक पहुँचना है। हस्तरेखा शास्त्र यह जानकारी देने के लिए आपका सहायक हो सकता है कि तूफ़ान का वेग किस ओर से है? आप कौन सा रास्ता चुनें, जिससे तूफ़ान आप की पीठ की ओर से बहे और आप सुविधापूर्वक अपने गन्तव्य स्थल तक पहुँच सकें।

हमारे सम्पूर्ण जीवन की छोटी से छोटी घटना हथेली में अंकित है, हथेली पर पाई जाने वाली सूक्ष्म से सूक्ष्म रेखा का भी अपने-आप में महत्त्व है। कोई भी रेखा व्यर्थ नहीं है, किसी भी रेखा का अस्तित्व निरर्थक नहीं है, आवश्यकता है ऐसे हस्तरेखा-शास्त्री की, जो इन रेखाओं को पढ सके, छोटी से छोटी रेखा के महत्त्व को समझ सके और उसे स्पष्ट कर सके।

वस्तुतः भविष्य-कथन हमारे युग की सर्वोच्च उपलब्धि है, क्योंकि जितना संघर्ष आज के युग में है, उतना पहले कभी नहीं रहा, और हस्तरेखा विज्ञान ने जितनी प्रगति इस युग में की है, उतनी पहले कभी नहीं हुई। अमेरिका, यूरोप, फ्रांस, जापान आदि उन्नत देशों में इससे संबंधित वैज्ञानिक परीक्षण हुए हैं तथा वहां के विश्व विद्यालयों में इस विज्ञान को प्राथमिकता दी जाने लगी है। चिकित्सा क्षेत्र, तथा भविष्य-कथन के क्षेत्र में तो इसकी उपयोगिता निर्विवाद है।

इस कशमकश के युग में हम इस विज्ञान के माध्यम से अपने भावी जीवन को समझ सकते हैं, आने वाले समय के संघर्षों से परिचित हो सकते हैं, और उनको ध्यान में रखते हुए हम भावी जीवन की योजना बना सकते हैं। उसके अनुसार अपने-आप

को व्यवस्थित कर सकते हैं, तथा संघर्षों, खतरों, घात-प्रतिघातों से अपने-आप को बचाते हुए जल्दी से जल्दी अपने लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं, वांछित कार्य को सम्पन्न कर अपने व्यक्तित्व का विस्तार कर सकते हैं।

आज सारे विश्व की आँखें इससे संबंधित ज्ञान के लिए भारत की ओर लगी हैं, और इस समय में भारत का यह कर्तव्य है कि वह आगे बढ़कर इस क्षेत्र में नेतृत्व करे, विश्व को दिशा निर्देश दे और नवीनतम सूत्रों से परिचित कराए।

काफी समय से इस बात की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी कि सामुद्रिक शास्त्र पर एक ऐसा सांगोपांग ग्रन्थ लिखा जाये, जिसमें हस्तरेखा से संबंधित सभी अंगों-उपांगों का सचित्र विवरण वर्णन हो तथा सरलतम भाषा में उच्चतम ज्ञान दिया जा सके। मुझे विश्वास है कि यह ग्रंथ इस उद्देश्य की पूर्ति में सहायक हो सकेगा।

इस ग्रन्थ में मैंने भारतीय एवं पाश्चात्य सामुद्रिक ग्रंथों का निचोड़ दिया है, साथ ही यह भी बताया है कि दोनों पद्धतियों में मूलतः क्या अन्तर है? यह अन्तर क्यों है? सही पद्धति कौन-सी है? तथा किन सूत्रों के माध्यम से सही-सही भविष्य-कथन किया जा सकता है?

इस पुस्तक में पहली बार इन तथ्यों का समावेश हुआ है, साथ ही हाथ की रेखाओं के बारे में, उंगलियों व उनके जोड़ों के बारे में, तथा मानव के अन्य चिह्नों के बारे में विस्तार से विवरण संगृहीत हुआ है, इन सबके पीछे है, मेरा अध्ययन, अध्ययन से भी बढ़ कर है विषय प्रतिपादन—और विषय प्रतिपादन से भी बढ़कर है मेरा इस क्षेत्र में वर्षों का अनुभव।

भारत ही नहीं, विश्व के सामुद्रिक ग्रन्थों में भी ज्योतिष योगों का पूर्ण विवरण-वर्णन नहीं है, क्योंकि यह विषय दुरूह है, दुर्गम है, अप्राप्य है। इस पुस्तक में पहली बार दो सौ चालीस से भी अधिक हस्तरेखा योगों का सांगोपांग अध्ययन स्पष्ट हुआ है, यह इस पुस्तक की विशेषता है।

इसके अतिरिक्त मैंने शरीर, अंग लक्षण, हस्त लक्षण आदि भी विस्तार से स्पष्ट किए हैं, साथ ही व्यावहारिक अनुभव के लिए हस्त चित्र के माध्यम से सम्पूर्ण भूत, भविष्य-कथन कर पुस्तक को प्रामाणिकता प्रदान की है।

मुझे विश्वास है, मेरे पाठकों को व ज्योतिष के विद्वानों को मेरा यह परिश्रम सार्थक लगेगा. और मुझे यह भी विश्वास है कि वे इस पुस्तक से निश्चय ही लाभान्वित होंगे।

सी. एफ. 14, हाईकोर्ट कालोनी,
जोधपुर (राजस्थान)
फोन नं० 22209

—नारायणदत्त श्रीमाली

विषय-सूची

प्रवेश

परमात्मा ने मानव-जीवन की और विशेषकर मनुष्य की संरचना कुछ इस प्रकार से की है कि आज तक संसार के सारे वैज्ञानिक इस जटिल प्रक्रिया को सुलझाने का जी-तोड़ प्रयत्न करने पर भी अपने उद्देश्यों में सफल नहीं हो पा रहे हैं। वे जितना ही ज्यादा इस प्रक्रिया को समझने का यत्न करते हैं, उतने ही ज्यादा उलझते चले जा रहे हैं। इस विश्व में जितना भी ज्ञान और विज्ञान है उन सभी का ध्येय मानव और मानव के व्यवहार को समझना एवं उसे सुख पहुंचाना है, परन्तु यह सुख उसे तभी मिल सकता है जबकि वह मनुष्य के उन गोपन रहस्यों को पहले से ही जान ले, जोकि अचानक अनिश्चय के रूप में प्रकट होकर उसके सारे किये-कराये पर पानी फेर देता है। यह 'भविष्य' एक ऐसा शब्द है जो अपनेआप में अत्यन्त गोपनीय, जरूरत से ज्यादा जटिल तथा दुर्बोध है। विज्ञान के समस्त प्रकार इस भविष्य में होने वाली घटनाओं को समझने और सुलझाने का प्रयत्न कर रहे हैं परन्तु अभी तक वे अपने उद्देश्य में पूर्णतया सफल नहीं हो सके हैं। यदि इस 'रहस्य' पर कोई रोशनी डाल सकता है या उसे समझने में सहायक हो सकता है तो वह केवल 'सामुद्रिक-शास्त्र' है, इसे सभी विद्वानों ने एक स्वर से स्वीकार किया है।

मनुष्य सदा से भविष्य को जानने के लिए प्रयत्नशील रहा है। उसके दिमाग में अज्ञात भविष्य के प्रति बराबर आशंका बनी रहती है। वह यह सोचता है कि मैं जो वर्तमान में कार्य कर रहा हूं, और जिस पर अपने सारे जीवन का श्रम, बुद्धि और धन लगा रहा हूं, कहीं ऐसा न हो जाए कि भविष्य में मैं अपने प्रयत्नों में सफल न हो सकूं और ऐसा सोच-सोचकर वह एक अज्ञात आशंका से डरा-डरा सा रहता है।

कभी-कभी ईश्वर पर आश्चर्य और इसके ठीक बाद उसकी महानता के सामने मेरा सिर श्रद्धा से झुक जाता है कि वह कितना कुशल कारीगर है जिसने भविष्य की सैकड़ों, लाखों घटनाओं को टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों के माध्यम से मनुष्य के हाथों में अंकित कर दिया है, और श्रद्धा होती है उन ऋषियों पर जिन्होंने अपनी तपस्या और दिव्य दृष्टि के माध्यम से इन रेखाओं के रहस्य को समझा है, और आने वाली पीढ़ियों के लिए इस ज्ञान को सुलभ किया है।

हाथ का अध्ययन करने के लिए कई तथ्य ध्यान में रहने आवश्यक हैं। सबसे पहली बात तो यह है कि किसी भी व्यक्ति के हाथ की केवल एक रेखा देखकर ही

उस पर अपना विचार दृढ़ नहीं बना देना चाहिए। क्योंकि केवल एक रेखा ही उससे सम्बन्धित तथ्य को स्पष्ट नहीं कर सकती, अपितु उसकी सहायक रेखाएं भी उस तथ्य को स्पष्ट करने में सहायक होती हैं। जिस प्रकार रेल के एक इंजन में सैकड़ों छोटे-मोटे-कल-पुर्जे होते हैं और उन सभी कल-पुर्जों का अपने-अपने स्थान पर महत्व है। यदि उन पुर्जों में से एक भी पुर्जा रुक जाए तो एक प्रकार से पूरा इंजन ही रुक जाएगा, ठीक यही स्थिति हाथ में रेखाओं की है। यदि इन रेखाओं को देखने के साथ-साथ उनकी सहायक रेखाएं भली प्रकार से न देखें या उन सहायक रेखाओं का महत्व न समझें तो परिणाम में भयंकर गलती होने की संभावना हो जाती है। अतः एक कुशल हस्तरेखा विशेषज्ञ को चाहिए कि वह हथेली पर पाई जाने वाली प्रत्येक रेखा को अपनी आंख से ओझल न होने दे, अपितु छोटी से छोटी रेखा को उतना ही महत्व दे जितना कि बड़ी और प्रमुख रेखा का महत्व होता है।

ईश्वर ने हाथ में जो रेखाएं अंकित की हैं वे बहुत सोच-समझकर अंकित की हैं। हाथ में पाई जाने वाली प्रत्येक रेखा का अपना महत्व है और किसी भी एक रेखा का सम्बन्ध दूसरी रेखा से होता है। यदि हम एक रेखा को ध्यान में रखकर अपना निर्णय सुना दें तो उसमें गलती होने की संभावना हो जाती है, इसलिए प्रमुख रेखा और उसकी सहायक रेखाओं का भली भांति अध्ययन करना चाहिए और उसके बाद ही उससे सम्बन्धित भविष्य-कथन स्पष्ट करना चाहिए। कई लोगों की यह सहज जिज्ञासा होती है कि दाहिने हाथ को महत्व देना चाहिए अथवा बायें हाथ को ? अलग-अलग लोगों का इस सम्बन्ध में अलग-अलग मत है। कुछ लोग दाहिने हाथ को ही महत्व देते हैं। उनकी दृष्टि में बायें हाथ का कोई महत्व नहीं है, जबकि कुछ लोग बायें हाथ को ही प्रधानता देते हैं। उनका कहना है कि दाहिना हाथ सक्रिय होने के कारण उसमें बहुत जल्दी-जल्दी रेखाएं बदल जाती हैं जबकि बायें हाथ में रेखाएं ज्यादा समय तक टिकी रहती हैं। कुछ लोगों का यह भी मत है कि दोनों ही हाथों का बराबर अध्ययन करना चाहिए, परन्तु मैं ऐसा समझता हूं कि ये सभी मत एक प्रकार से अपूर्ण हैं। इन विद्वानों ने जो मत निर्धारित किये हैं वे केवल सुनी-सुनाई बातों पर अथवा अपने अधकचरे ज्ञान के आधार पर ही स्थिर किये हैं। वास्तव में इस सम्बन्ध में 'हस्तरेखा-संजीवनी' नामक ग्रन्थ में प्रामाणिक विवरण मिलता है।

हस्तरेखा विशेषज्ञ को चाहिए कि वह दाहिने हाथ को ही विशेष रूप से महत्व दे, क्योंकि हम अपने जीवन में अधिकतर कार्य दाहिने हाथ से करते हैं, अतः हमारी सक्रियता दाहिने हाथ से झांकी जा सकती है। यहां यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि जो व्यक्ति बायें हाथ से लिखते हैं या जीवन का अधिकतर कार्य बायें हाथ से करते हैं उनका हाथ देखते समय उनके बायें हाथ को महत्व देना चाहिए। इसी प्रकार जो महिलाएं स्वयं अपने पैरों पर खड़ी हैं या नौकरी कर रही हैं अथवा अपनी बुद्धि से,

अपने विचारों से तथा अपने हाथों से धनोपार्जन में सक्रिय हैं, उनका भी दाहिना हाथ ही देखना चाहिए।

यहां यह प्रश्न उठता है कि जब जीवन में दाहिने हाथ का ही महत्व है तो बायें हाथ की क्या उपयोगिता है ? मैंने ऊपर ही यह बात स्पष्ट कर दी है कि जो व्यक्ति बायें हाथ से ही लिखते हैं या जिनका बायां हाथ ज्यादा सक्रिय है, उनके बायें हाथ को ही महत्व देना चाहिए। साथ ही साथ उन स्त्रियों का भी बायां हाथ ही देखना चाहिए जो पराश्रयी हैं या जो अपने पति पर अथवा अपने पिता पर आश्रित हैं। इसी प्रकार जो पुरुष बेकार हैं या स्वयं धनोपार्जन में सक्षम नहीं हैं उनका भी भविष्य स्पष्ट करते समय बायें हाथ को ही महत्व देना चाहिए।

इसके साथ ही इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि जब हम किसी पुरुष के दाहिने हाथ को महत्व दें और उस हाथ में कोई बात स्पष्ट दिखाई न दे तो उसकी स्पष्टता के लिए दूसरे हाथ का अर्थात् बायें हाथ का आश्रय लेना चाहिए। इस प्रकार यदि कोई तथ्य या घटना दोनों ही हाथों से दिखाई दे तो उस घटना को प्रामाणिक मानना चाहिए। इसी प्रकार जो महिलाएं राजकीय सेवा में हैं अथवा स्वतंत्र व्यवसाय में संलग्न हैं उनका दाहिना हाथ देखना चाहिए, पर इसके साथ ही साथ यदि कोई बात पूर्णतः स्पष्ट नहीं होती है तो उसकी स्पष्टता बायें हाथ को देखकर ज्ञात कर लेनी चाहिए।

प्रश्न उठता है कि क्या हाथ की रेखाओं के माध्यम से सही और सफल भविष्यफल स्पष्ट किया जा सकता है ? कई लोग इस मामले में सन्देह करते हैं। अधिकतर लोग इस तथ्य को मेरे सामने व्यक्त करते हैं कि जब हाथ की रेखाएं बराबर बदलती रहती हैं तो फिर उससे भविष्यफल कैसे ज्ञात किया जा सकता है ? कुछ लोगों ने यह भी प्रश्न किया कि विद्वानों के अनुसार सात वर्षों में पूरे हाथ की रेखाएं बिल्कुल बदल जाती हैं तब फिर अगले दस वर्षों का भविष्य या बीस वर्षों का भविष्यफल ज्ञात करना असम्भव सा ही है।

परन्तु जैसा कि मैं पीछे स्पष्ट कर चुका हूं कि ये बातें उन लोगों ने फैलाई हैं जिन्हें हस्तरेखा का पूर्ण ज्ञान नहीं है या जिनका ज्ञान केवल किताबी ज्ञान है। वास्तविकता यह है कि हाथ की रेखाएं बदलती नहीं हैं। हाथ में जो मूल रेखाएं हैं वे ज्यों की त्यों विद्यमान रहती हैं। इनकी सहायक रेखाएं कुछ समय के लिए बनती हैं और भावी तथ्यों का संकेत देती हुई मिट जाती हैं। इनके साथ ही साथ हाथ पर पाये जाने वाले कुछ ऐसे चिह्न अवश्य होते हैं जो कुछ समय के लिए बनते हैं और मिट जाते हैं। उन चिह्नों का बनना विशेष घटनाओं का प्रतीक है। इसी प्रकार उन चिह्नों का मिट जाना भी अपनेआप में आने वाले भविष्य का संकेत है। अतः वे चिह्न बनकर अथवा मिटकर आने वाले समय के तथ्यों का निरूपण ही करते हैं।

इसके साथ ही साथ यह बात भी स्पष्ट है कि वे चिह्न मिट भले ही जाते हैं परन्तु अपना स्मृति-चिह्न अंकित करके ही जाते हैं और वे स्मृति-चिह्न बराबर कायम रहते हैं। अतः यह कहना कि कोई चिह्न हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है प्रामाणिक नहीं है। उन स्मृति-चिह्नों के माध्यम से हस्तरेखा विशेषज्ञ आने वाली घटनाओं का वर्णन कर लेता है।

मैंने हस्तरेखा की प्रामाणिकता के लिए अनुभव जन्य परीक्षण किए। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि विशेष तथ्य के लिए एक विशेष चिह्न होता है, और उस विशेष चिह्न के माध्यम से उस व्यक्ति के व्यक्तित्व को समझा जा सकता है। जिस प्रकार जन्मकुण्डली को समझने के लिए और उसके माध्यम से सही भविष्य स्पष्ट करने के लिए इस बात का ज्ञान जिस ज्योतिषी को हो कि इस जन्मकुण्डली का मूल कौन-सा ग्रह है, जिसने इसके सारे व्यक्तित्व को प्रभावित कर रखा है। जब उस ग्रह की पकड़ आ जाती है या उस ग्रह को समझ लिया जाता है तब उस व्यक्ति का व्यक्तित्व पूरी तरह से हमारे सामने साकार हो जाता है। इसी प्रकार पूरे हाथ को देखने से पहले यह जानकारी प्राप्त कर लेनी ज्यादा उचित रहती है कि इस हाथ में वह कौन-सा चिह्न है जिसके माध्यम से इसके पूरे व्यक्तित्व को समझा जा सके। मैंने परीक्षण के लिए लगभग चार हजार हत्यारों के हाथ देखे और मैंने उन हत्यारों के भी हाथ देखे हैं जिन्होंने अपने ही हाथों से जीवन में किसी का खून किया है, या किसी व्यक्ति के प्राण लिए हैं। उन सभी हाथों में एक चिह्न समान था, वह यह कि हत्यारे का अंगूठा छोटा तथा अंगूठे का ऊपरी सिरा चपटा होता है। साथ ही साथ अंगूठे का नाखून छोटा और लगभग गोल सा होता है। यह चिह्न अपने आप में एक विशेष चिह्न है और इस परीक्षण के माध्यम से यह बात स्पष्ट हो गई कि जिस व्यक्ति का अंगूठा सामान्यतः उसकी अंगुलियों के अनुपात से छोटा तथा भारीपन लिये हुए होगा तथा जिसके अंगूठे का सिरा मोटा थुलथुला होने के साथ-साथ उस पर अंकित नाखून गोल-सा होगा वह व्यक्ति निश्चय ही अपने जीवन में हत्यारा होगा और किसी की हत्या करने के कारण जेल-जीवन व्यतीत करेगा।

एक बार इससे संबंधित घटना भी स्पष्ट हो गई। एक मिल में काम करने वाला एक अपरिचित मजदूर एक दिन मेरे सामने आया और उसने अपना भविष्य जानने के लिए अपना हाथ मेरे सामने फैला दिया। उस पूरे हाथ में अंगूठा अपने आप में अलग सा ही था और ऊपर मैंने जो तथ्य अंकित किये हैं, वे सारे ही तथ्य उस अंगूठे में दिखाई दे रहे थे। मेरे दिमाग में सबसे पहले यही बात कौंधी कि यह व्यक्ति हत्यारा होना चाहिए, और इसके हाथ खून से रंगे होने चाहिए।

अब यह प्रश्न उठता है कि वह हत्या किस उम्र में करेगा या उसका समय कौन-सा होगा। इसके लिए शनि पर्वत तथा शनि रेखा का आश्रय लेना पड़ेगा। जिस

स्थान पर शनि रेखा चलते-चलते टूट गई हो और, यदि वहां से एक तीखी रेखा आयु रेखा की ओर खिचें तो जिस बिन्दु पर वह रेखा मिलेगी उस बिन्दु के अनुसार अर्थात् उस रेखा के उस बिन्दु तक जितनी आयु का अनुपात होगा उसी आयु में वह इस प्रकार का जघन्य कार्य करेगा। यह तथ्य अनुभव के बाद ही आ सकता है।

जब उस मजदूर ने अपना हाथ मेरे सामने फैलाया, उस समय उसकी आयु ४५ वर्ष के लगभग थी और इस बिन्दु से जब मैंने अनुमान लगाया तो यह कार्य लगभग ४० साल के आसपास होना चाहिए था। मैंने उसकी आंखों में आंखें डालकर दो क्षण तक घूरा और उसके बाद सबसे पहला मेरा कथन था कि तुम चाहे कितने ही बचते रहो या कानून की आंखों में धूल झोंकते रहो, तुम कानून के पंजे से बच नहीं सकते। शीघ्र ही तुम्हें जेल जाना पड़ेगा, क्योंकि तुम अपने जीवन में किसी व्यक्ति की हत्या कर चुके हो।

उसकी आंखे फटी की फटी रह गईं। उसने अपने मन में सोचा होगा कि आज तक जिस पुलिस को मैं गच्चा दे रहा था और अभी तक मैं कानून की सीमाओं से बहुत अधिक परे था, उस तथ्य को इस सामने वाले व्यक्ति ने कैसे जान लिया? उसने अपना हाथ समेट लिया और बिना एक क्षण भी गंवाये तीर की तरह मेरे कमरे से बाहर निकल गया। उसका इस प्रकार जाना ही मेरे कथन की प्रामाणिकता थी। उसके बाद से आज तक मैंने उसको नहीं देखा।

यह तथ्य सैकड़ों वर्षों से चला आ रहा है। बारहवीं शताब्दी में लिखी हुई एक हस्तलिखित पुस्तक मेरे सामने आई थी, जिसमें यह स्पष्ट किया था कि जिस व्यक्ति का अंगूठा छोटा, फैला हुआ तथा चपटा हो एवं उसका नाखून लगभग गोल सा हो, साथ ही मंगल पर्वत पर क्रास का चिह्न हो, वह व्यक्ति निश्चय ही हत्यारा होगा। उसने यह बात अपने अनुभव से लिखी थी और उसका अनुभव आगे की पीढ़ियों को मिलता रहा। उसने इस सम्बन्ध में और परीक्षण किये और यह पाया कि वास्तव में जिस व्यक्ति के हाथ में यह चिह्न होता है वह हत्यारा ही होता है।

इसके बाद १९वीं शताब्दी में एक और ग्रन्थ निकला, जिसका नाम था 'हस्तरेखाएं'। उस पर भी यह तथ्य अंकित था और वही ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी चलता हुआ मुझ तक आया है और यही ज्ञान आगे की पीढ़ियों तक मिलता रहेगा, और इस ज्ञान में निरन्तर विकास होता रहेगा। परन्तु इस घटना से यह तो भली-भाँति स्पष्ट हो गया कि हाथ की रेखाएं जो भी कहती हैं सत्य कहती हैं। ये बिना लाग-लपेट के कहती हैं और आपकी रेखाओं में जो भी रहस्य छिपा हुआ होता है, वह अपने आप में पूर्णतः प्रामाणिक होता है। आवश्यकता है ऐसे व्यक्ति की जो उस रहस्य को समझ सके, हाथ की रेखाओं को पढ़ सके।

एक और उदाहरण से मैं इस बात को प्रामाणिक कर देना चाहता हूं कि हाथ की रेखाएं जो भी कहती हैं, वह अपने आप में पूर्ण सत्य होती हैं। मृत्यु का समय तथा मृत्यु की तारीख हाथ की रेखाएं काफी समय पहले स्पष्ट कर देती हैं। मृत्यु से ६ माह पूर्व मध्यमा उंगली के नाखूनों पर आड़ी-तिरछी रेखाओं का जाल-सा बन जाता है। जब ऐसा जाल दिखाई देने लग जाए तब यह समझ लेना चाहिए कि यह व्यक्ति अब छः महीनों से ज्यादा जीवित नहीं रह सकेगा। मैंने अपने जीवन में लगभग १५-२० व्यक्तियों के हाथों में जिस समय ये चिह्न देखे, उस समय वे पूर्णतः स्वस्थ थे परन्तु उनकी मृत्यु की सूचना अगले पांच-छः महीनों में ही मिल गई। ठीक इसी प्रकार मृत्यु से सम्बन्धित रेखाएं तीन प्रकार की होती हैं।

१. जीवन रेखा चलते-चलते जहां एकदम रुक जाती है और जहां यह रेखा रुकती है, उसके आगे ही काला धब्बा या क्रास का चिह्न बन जाए और उस क्रास के चिह्न से यदि जीवन रेखा की ओर सीधी रेखा खींचें तब उससे जो समय स्पष्ट होता है, वही उस व्यक्ति की आयु होती है।

२. हृदय रेखा मार्ग में लोप हो गई हो और शनि पर्वत के नीचे सहसा ही दिखाई दे जाए तो समझ लेना चाहिए कि इस व्यक्ति की मृत्यु बीच रास्ते में ही हो जाएगी या यह व्यक्ति पूरी आयु नहीं भोग सकेगा।

३. यदि हृदय रेखा मस्तिष्क रेखा से शनि पर्वत के नीचे या गुरु पर्वत के नीचे मिले और दूसरे हाथ में भी ऐसा ही योग दिखाई दे तो वह व्यक्ति पूरी आयु नहीं भोगता है। पूरी आयु से मेरा मतलब उस देश के व्यक्तियों की सामान्य औसत आयु से है। भारतवर्ष में पूर्ण आयु लगभग ६० वर्ष से ७० वर्ष के बीच मानी जाती है। यदि कोई व्यक्ति ४० या ४५ वर्ष की आयु में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है तो ऐसी मृत्यु पूर्ण आयु नहीं कहलाती।

ये तथ्य अपूर्ण आयु के सूचक हैं। अब यह ज्ञात करने के लिए कि वास्तविक आयु कितनी होगी तो जब ऐसा चिह्न दिखाई दे जाए तब सबसे पहले यह ज्ञात तो स्पष्ट हो ही जाती है कि इस व्यक्ति की अपूर्ण आयु है और जब यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है तो उस चिह्न से आयु रेखा तक रेखा खींचकर या अनुमान लगाकर आप उसकी वास्तविक आयु ज्ञात कर सकते हैं।

मैं ऊपर की पंक्तियों में यह स्पष्ट कर रहा था कि हस्तरेखा मजाक की वस्तु नहीं है या इस पर अविश्वास करने की आवश्यकता नहीं है बल्कि ये रेखाएं पूर्ण सत्य को स्पष्ट करने में सहायक हैं, साथ ही साथ भविष्य से सम्बन्धित तथ्य को जितनी स्पष्टता के साथ ये रेखाएं स्पष्ट करती हैं, उतना अन्य कोई विज्ञान नहीं।

हस्तरेखा के अध्ययन के लिए कई बातें ध्यान में रखनी चाहिए। इनमें से कुछ तथ्य अग्रिलिखित हैं :—

१. जब भी आपके पास कोई व्यक्ति अपना हाथ दिखाने के लिए आवे तो आपको चाहिए कि आप उसके हाथ का स्पर्श न करें क्योंकि आपके स्पर्श करने से आपके शरीर की विद्युत धारा से उसकी विद्युत धारा का सम्पर्क हो जाएगा और उस व्यक्ति के हाथ की मौलिकता समाप्त हो जाएगी। इसलिए हाथ को देखते समय आप अपने हाथ समेटे रहें।

२. सबसे पहले उस व्यक्ति के दोनों हाथों को उल्टा करके देखना चाहिए क्योंकि हाथ को उल्टा करने से अर्थात् हथेलियां जमीन की ओर रहने से आप उसके हाथ के आकार को भली प्रकार से समझ सकेंगे कि यह हाथ वर्गाकार है अथवा चौकोर है अथवा किस प्रकार का हाथ मेरे सामने प्रस्तुत हुआ है।

३. जब हाथ का प्रकार ज्ञात हो जाए तो उसे दोनों हाथ सीधे करने के लिए कहिये और दोनों हाथ सीधे होने पर उसके मणिबन्ध से देखते-देखते ऊपर की ओर आना चाहिए।

४. इसके बाद पर्वत, पर्वत के उभार, पर्वत से जुड़ी हुई उंगलियां और अंगूठे को देखना चाहिए। अन्त में उसकी उंगलियों के अग्र भाग और नाखूनों का निरीक्षण करना चाहिए।

५. इस प्रकार हाथ का अध्ययन बिना स्पर्श किये ही कर लेने के बाद उसके हाथ को छूना चाहिए और पूरे हाथ के जोड़ों को ध्यान में रखना चाहिए। हाथ के जोड़ अर्थात् हथेली के जोड़ों से ग्रहों के भागों का भली भांति अध्ययन हो जाता है। उंगलियों के जोड़ों से भी कई तथ्य स्पष्ट हो जाते हैं। हाथ का स्पर्श आपको इस बात का भी आभास दे देगा कि वह हाथ नरम है या कठोर, लचीला है अथवा सख्त। हाथ की कोमलता और कठोरता भी हस्तरेखा विशेषज्ञ के लिए अत्यधिक महत्व रखती है।

६. मणिबन्ध की रेखाओं का भी हस्तरेखा विशेषज्ञ के लिए महत्व होता है और उनका भी अध्ययन कर लेना चाहिए।

७. इसके बाद हथेली पर पाये जाने वाले पर्वत, पर्वतों के उभार, व दबाव साथ ही पर्वतों से जुड़ी हुई रेखाएं, दो पर्वतों की संधियां तथा उन पर पाये जाने वाले सूक्ष्म चिह्नों का भी अध्ययन करना चाहिए।

८. अन्त में उंगलियों के सिरों पर शंख, चक्र आदि दिखाई देते हैं, वे भी अपने आप में बहुत अधिक महत्व रखते हैं। अतः उनका भी अध्ययन आवश्यक है।

हाथ देखने की विधि

१. यों तो हाथ किसी भी समय देखा जा सकता है परन्तु इसके लिए सर्वोत्तम समय प्रातःकाल का होता है जबकि दिखाने वाले ने भोजन या नाश्ता न किया हो।

मेरा ऐसा अनुभव है कि भोजन करने पर रक्त का भ्रमण तेज हो जाता है, जिसकी वजह से उसके हाथ की महीन रेखाएं अदृश्य सी हो जाती हैं। ऐसी स्थिति आने पर सूक्ष्मदर्शक यंत्र का प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए।

२. हाथ दिखाने से पूर्व हाथ दिखाने वाला पृच्छक स्नान किया हुआ हो, नींद से उठा हुआ, गन्दा या आलस्य से भरा हुआ शरीर, वातावरण को बोझिल बना देता है और इससे भविष्य कथन में बाधा आती है।

३. अत्यधिक भोजन करने के बाद या व्यायाम करने के बाद भी हाथ नहीं दिखाना चाहिए। लगातार कार्य करते-करते एकदम से उठकर भी हाथ दिखाना ज्यादा उचित एवं अनुकूल नहीं कहा जा सकता।

४. अत्यधिक गर्मी में या अत्यधिक सर्दी में भी हाथ नहीं दिखाना चाहिए क्योंकि ज्यादा गर्मी पड़ने से हथेली जरूरत से ज्यादा लाल रहती है और उससे उसका वास्तविक रंग अनुभव नहीं होता।

५. शराब पीया हुआ, नशा किया हुआ या असहजावस्था में भी हस्तरेखा विशेषज्ञ के पास नहीं जाना चाहिए।

जहां हाथ दिखाने वाले के लिए कुछ नियम आवश्यक हैं, उसी प्रकार हाथ देखने वाले के लिए भी नीचे लिखे कुछ नियमों का पालन आवश्यक है :—

१. जिस समय क्रोध की अवस्था हो या किसी वजह से परेशानी हो उस समय हाथ नहीं देखना चाहिए। यदि कोई हाथ दिखाने के लिए आ ही जाए तो नम्रता-पूर्वक उसे मना कर देना चाहिए।

२. हाथ देखते ही उसके सम्बन्ध में अच्छी या बुरी बात अथवा भविष्यफल स्पष्ट नहीं कर देना चाहिए। इससे कई प्रकार की समस्याएं पैदा हो जाती हैं। उदाहरणार्थ यदि किसी की मृत्यु एक महीने बाद ही दिखाई देती हो तो यह बात अप्रत्याशित रूप से सामने वाले को कह देना किसी प्रकार से अनुकूल नहीं है।

३. सामने वाले व्यक्ति के प्रति तटस्थ भाव रखकर के ही हाथ देखना चाहिए। अत्यधिक प्रिय या शत्रु होने पर हाथ देखने वाला तटस्थ नहीं रह पाता और इससे उसके फल-कथन में अस्वाभाविकता आ जाती है।

४. हाथ देखकर जब पूरी तरह से सन्तुष्ट हो जाए और दूसरे हाथ से भी उसकी प्रामाणिकता स्पष्ट हो जाए तभी उसको फल-कथन करना चाहिए।

यदि ऊपर के तथ्य ध्यान में रखते हुए हस्तरेखा विशेषज्ञ किसी भी व्यक्ति के हाथ का अध्ययन करे तो वह निस्सन्देह सही भविष्य कथन कर सकता है और जिस प्रकार व्यक्ति स्वच्छ दर्पण में अपनी परछाईं देख सकता है, उसी प्रकार उसके हाथ के माध्यम से उसका भविष्य जान सकता है।

हाथ : एक परिचय

मणिबन्ध वह भाग है, जो भुजा को हाथ से जोड़ने में एक कड़ी के रूप में कार्य करता है। मणिबन्ध के आगे का सम्पूर्ण भाग हथेली कहलाता है और इस हथेली पर पाये जाने वाले चिह्न हस्तरेखा विशेषज्ञ के लिए अत्यन्त आवश्यक होते हैं।

हाथ अथवा हथेली छोटी-छोटी हड्डियों से बनी हुई होती है। उस हथेली में लगभग १४ प्रकार की हड्डियां आपस में जुड़ी हुई होती हैं, जिनसे हथेली के आकार का निर्माण होता है। इन १४ हड्डियों के आगे के भाग में तीन-तीन हड्डियों से उंगली तथा दो हड्डियों से अंगूठे का निर्माण होता है। इन हड्डियों के ऊपरी सिरे नाखूनों से सुरक्षित रहते हैं।

मणिबन्ध से मध्यमा उंगली के अन्तिम सिरे तक के भाग को हाथ कहते हैं। हस्तरेखा विज्ञान के अनुसार ये हाथ पांच प्रकार के होते हैं :—

१. अत्यन्त छोटा हाथ।

२. छोटा हाथ।

३. सामान्य हाथ।

४. लम्बा हाथ।

५. अत्यन्त लम्बा हाथ।

मैंने पीछे ही यह बात स्पष्ट कर दी है कि हाथ की बनावट को देखने के लिए हाथ को उल्टा करके देखना चाहिए। इस प्रकार देखने से यह ज्ञात हो जाता है कि सामने वाले व्यक्ति का हाथ किस प्रकार का है। इस प्रकार के हाथ के भेद से भी व्यक्ति के बारे में बहुत कुछ जानने को मिल जाता है।

१. अत्यन्त छोटा हाथ :—इस प्रकार के व्यक्ति अत्यन्त संकीर्ण विचारों वाले तथा सन्देह की प्रवृत्ति के होते हैं। ये अपने छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए झगड़ते रहते हैं। जीवन में अपने ही स्वार्थ को सर्वोपरि महत्व देते हैं और सही रूप में कहा जाए तो धोखा, चालाकी और अवसरवादिता इनके रक्त में मिली हुई होती है। दूसरे की बुराई करना, दूसरे को नीचा दिखाने की भावना तथा दूसरों के प्रति शत्रुवत् व्यवहार करना इनके लिए सहज स्वाभाविक है। समाज की दृष्टि से अथवा देश की दृष्टि से इन व्यक्तियों का कोई बहुत बड़ा मूल्य अथवा योगदान नहीं होता।

२. **छोटा हाथ** :—एक प्रकार से ऐसे व्यक्तियों को आलसी कहा जाता है। यद्यपि ये व्यक्ति बढ़-चढ़ कर कल्पनाएं करते हैं और अपनी कल्पना के बल पर सब कुछ करने के लिए तैयार हो जाते हैं परन्तु इनके जीवन में आलस्य जरूरत से ज्यादा होता है, जिसकी वजह से ये अपनी किसी भी योजना को सही रूप से कार्यान्वित नहीं कर सकते। इनको बढ़-चढ़कर बातें करना, डींगें हांकना, अपने चारों ओर आडम्बरपूर्ण वातावरण बनाये रखना इनको प्रिय लगता है, और ये कार्य भी इस प्रकार से करते हैं जिससे चारों ओर इनके भ्रम की सृष्टि अथवा सन्देह का वातावरण बना रह सके। यद्यपि यह बात सही है कि ये तीव्र मस्तिष्क वाले होते हैं परन्तु अवसर का सदुपयोग करना ये नहीं जानते। जब समय बीत जाता है तब ये पछताते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति योग्य एवं समर्थ होते हुए भी अपने जीवन में पूर्ण सफल नहीं हो पाते।

३. **सामान्य हाथ** :—ऐसे व्यक्ति व्यावहारिक बुद्धि से सम्पन्न होते हैं। इनको इस बात का एहसास रहता है कि किससे कब क्या बात की जाए और किसके साथ किस प्रकार से व्यवहार किया जाए। ये सारी बातें इनके दिमाग में होती हैं इस लिए इनको व्यवहार-कुशल कहा जाता है।

समाज में ये सम्मान प्राप्त करते हैं तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने से पूर्व उसके बारे में काफी समय तक सोचते-विचारते रहते हैं। इनके जीवन में बराबर संघर्ष बना रहता है और संघर्ष के बल पर ही ये व्यक्ति अपने जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं तथा सुविधाओं को जुटा पाते हैं। सामान्यतः इनका स्वास्थ्य ठीक रहता है और सबसे बड़ी बात इनमें यह पाई जाती है कि ये परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको ढाल लेने की क्षमता रखते हैं।

४. **लम्बा हाथ** :—ऐसे व्यक्ति समाज के लिए सामान्यतः उपयोगी होते हैं। इनको जीवन में एक रस देखा जा सकता है। ये न तो बहुत अधिक प्रसन्न रहते हैं और न चिन्तायुक्त। जीवन में ये अत्यधिक व्यवहार-कुशल, होशियार तथा मेधावी होते हैं। इनके सामने किसी भी प्रकार की कोई भी बात हो, उस बात की तह तक ये बहुत जल्दी पहुंच जाते हैं और उस कार्य के बारे में अथवा उस कार्य के परिणाम के बारे में ये जो धारणा बनाते हैं, वह धारणा आगे चलकर पूर्णतः सही होती है। अपरिचित से अपरिचित व्यक्ति को देखकर उसके बारे में, उसके चरित्र के बारे में, उसकी कार्यकुशलता के बारे में ये व्यक्ति जो धारणा बनाते हैं, वह आगे चलकर पूर्णतः सही होती है। ऐसे व्यक्ति समाज के लिए ज्यादा उपयोगी कहे जा सकते हैं।

५. **अत्यन्त लम्बा हाथ** :—समाज की दृष्टि से इन व्यक्तियों का कोई विशेष उपयोग नहीं होता। ऐसे व्यक्ति जरूरत से ज्यादा भावुक तथा कल्पना की दुनिया में ही जीवित रहने वाले होते हैं। जब जीवन का संघर्ष इनके सामने उपस्थित होता है तो ये विचलित हो जाते हैं और उन परिस्थितियों को झेलने की तथा उन संघर्षों का

सामना करने की इनमें क्षमता नहीं रहती। परिस्थितियों को चुनौती देना इनके वश की बात नहीं है।

हाथ के प्रकार जान लेने के साथ ही साथ कुछ और तथ्य भी जान लेने चाहिए। हाथ चौड़ा या तंग हो सकता है। नरम अथवा सख्त अनुभव हो सकता है। इसी प्रकार जब हम किसी का हाथ अपने हाथ में लेते हैं तो वह खुश्क अथवा नम अनुभव हो सकता है। ये सारे तथ्य एक हस्तरेखा विशेषज्ञ के लिए समझ लेने आवश्यक होते हैं। हाथ देखते समय यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि उंगलियों के सिरे नुकीले हैं या वर्गाकार हैं अथवा चपटाकार हैं। एक पर्व और दूसरे पर्व के बीच में जो गांठें होती हैं, उनका भी अध्ययन किया जाना चाहिए। ये गांठें मोटी अथवा पतली हो सकती हैं। इसी प्रकार प्रत्येक उंगली की लम्बाई भी अपने आप में महत्व रखती है। यह बात अनुभव से सिद्ध हुई है कि जिस व्यक्ति की कनिष्ठिका अर्थात् सबसे छोटी उंगली का ऊपरी सिरा यदि अनामिका उंगली के तीसरे पर्व से आगे की ओर बढ़ा हुआ हो तो वह व्यक्ति विशेष बुद्धिमान, प्रतिभावान तथा ऊंचे पद पर पहुंचने वाला होता है। जिन व्यक्तियों के हाथों में सबसे छोटी उंगली को लंबा पाया जाता है, वे व्यक्ति वास्तव में ही अपने जीवन में सफल होते देखे गए हैं। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि हमको हाथ का अध्ययन करते समय उंगलियों की लम्बाई पर भी ध्यान रखना चाहिए।

उंगलियों के नाम

प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में चार उंगलियां तथा एक अंगूठा होता है। अंगूठे को अंगुष्ठ भी कहा जाता है तथा इसके दो भाग होते है :—

१. तर्जनी :—यह उंगली अंगूठे के पास वाली होती है, इसको तर्जनी उंगली कहा जाता है। इसके तीन पर्व होते हैं। इस उंगली का अध्ययन करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इसका सिरा किस प्रकार का है तथा उसका झुकाव किस तरफ है। झुकाव तीन प्रकार के होते हैं। कुछ उंगलिया बिल्कुल सीधी होती हैं जबकि कुछ उंगलियां अंगूठे की तरफ झुकी हुई होती हैं। इसी प्रकार कुछ उंगलियां मध्यमा की तरफ झुकी हुई हो सकती हैं।
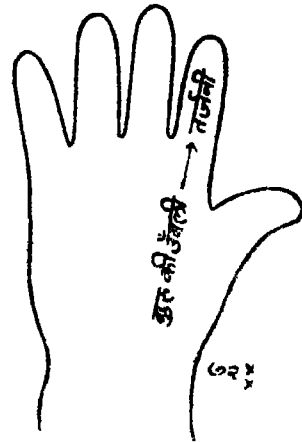
२. मध्यमा :—यह हाथ में सबसे बड़ी उंगली होती है, तथा इसको संस्कृत में मध्यमा उंगली कहा जाता है। इसके बारे में अध्ययन करते समय इस बात का

विशेष ध्यान रखना चाहिए कि इसके पर्वों के बीच जो गांठें हैं वे गांठें बहुत ज्यादा फूली हुई हैं अथवा मामूली हैं। ऐसे बहुत कम हाथ देखे जाते हैं जिनमें तर्जनी तथा मध्यमा उंगली बराबर हो। परन्तु जिस हाथ में भी तर्जनी तथा मध्यमा उंगली बराबर हों वह व्यक्ति आत्म-हत्या करता है या उसकी मृत्यु स्वाभाविक रूप से नहीं होती।

३. अनामिका :—मध्यमा के पास वाली उंगली को अनामिका उंगली कहते हैं। सामान्यत: यह उंगली मध्यमा उंगली से छोटी होती है तथा लगभग तर्जनी उंगली के बराबर लम्बी होती है इस उंगली के झुकाव का विशेष अध्ययन करना चाहिए। यदि उस अंगुली का झुकाव मध्यमा की तरफ हो तो वह ज्यादा अच्छी तथा श्रेष्ठ कही जाती है। विपरीत दिशा में झुकाव होने से ऐसा प्रतीत होता है कि उस व्यक्ति का गृहस्थ जीवन ज्यादा सुखमय नहीं रह सकेगा।
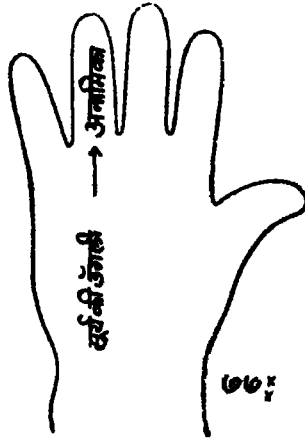
४. कनिष्ठिका :—यह हाथ की सबसे छोटी उंगली होती है तथा सामान्यत: इसका अंतिम सिरा अनामिका के ऊपरी सिरे तक अर्थात् ऊपरी जोड़ तक पहुंचता है

परन्तु जिस व्यक्ति के हाथ में यह उंगली जरूरत से ज्यादा लम्बी होती है, वह व्यक्ति निश्चय ही सौभाग्यशाली होता है और अपने प्रयत्नों से वह उच्चस्तरीय सम्मान प्राप्त करता है।
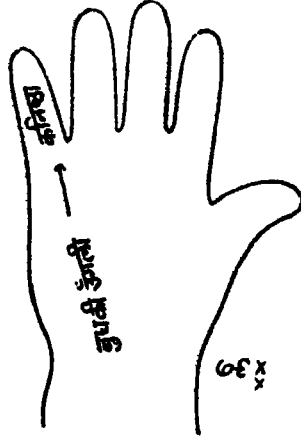
हाथ की बनावट

हड्डियों के पतले तथा भारी होने से हाथों के प्रकार में अन्तर आ जाता है। इस प्रकार से हम हाथों को सात वर्गों में बांट सकते हैं जो कि निम्नलिखित हैं :

१. प्रारम्भिक प्रकार

२. वर्गाकार हाथ

३. कर्मठ हाथ

४. दार्शनिक हाथ

५. कलात्मक हाथ

६. आदर्श हाथ

७. मिश्रित हाथ

आगे की पंक्तियों में इन हाथों की विशेषताओं को मैं स्पष्ट कर रहा हूं :—

१. प्रारम्भिक प्रकार :—सामान्यत: ऐसा हाथ खुरदरा, भारी तथा मोटा-सा होता है। इस हाथ की बनावट बेडौल तथा असुन्दर होती है एवं इसकी उंगलियां असमान-सी अनुभव होती हैं। सही रूप में देखा जाए तो ऐसे व्यक्ति पूर्ण सभ्य नहीं कहे जा सकते। नकल करने की प्रवृत्ति इनमें विशेष रूप से होती है। ये सभ्य हो सकते हैं परन्तु संस्कृति के जो गुण होने चाहिए वे इन व्यक्तियों में नहीं पाये जा सकते।

एक प्रकार से ये व्यक्ति पूर्णतः भौतिकवादी होते हैं। इनके जीवन का परम उद्देश्य भोजन, वस्त्र और आवास ही होता है। इसके आगे जीवन के मूल्यों को न तो ये समझते हैं और न समझने का प्रयत्न ही करते हैं। एक प्रकार से आदर्श एवं जीवन मूल्यों की दृष्टि से ये सर्वथा कोरे होते हैं।

यद्यपि यह बात सही है कि ये व्यक्ति परिश्रमी होते हैं और जो कुछ भी जीवन में उपार्जित करते हैं वह सब परिश्रम के बल पर ही संभव है। छोटी-छोटी बातों पर क्रोधित हो जाना या उफन जाना इनका स्वभाव होता है। कानून तोड़ना इनके लिए बायें हाथ का खेल होता है। सामाजिक एवं नैतिक दृष्टि से ये व्यक्ति अपराधी वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

२. **वर्गाकार हाथ** :—यदि हाथ को उल्टा करके देखें तो ऐसा हाथ तुरन्त पहचानने में आ जाता है। इस प्रकार के हाथों में ग्रन्थियां विशेष रूप से होती हैं तथा
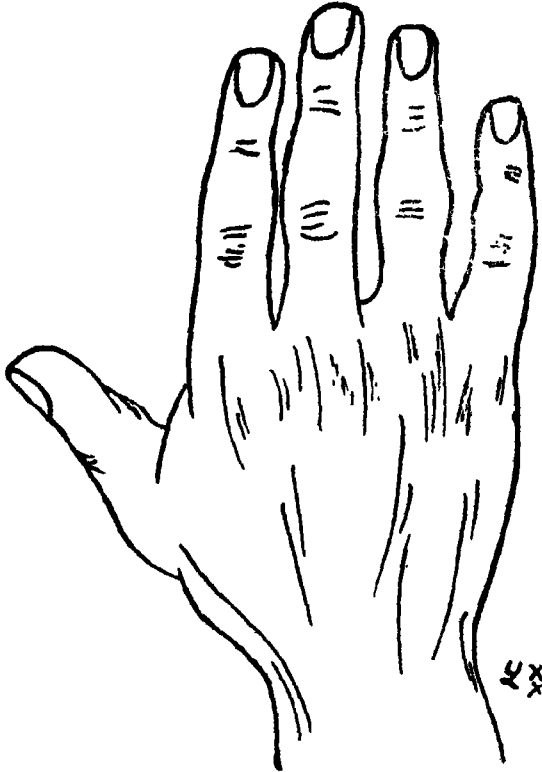
'वर्गाकार' हाथ

अस्थि प्रधान बेडौल हाथ ही इस वर्ग में आता है परन्तु प्रारम्भिक प्रकार के हाथ और इस हाथ में यह अन्तर होता है कि इस प्रकार के हाथ की उंगलियों में एक विशेष प्रकार की लचक होती है, जिससे इस हाथ को आसानी से पहचाना जा सकता है। ऐसे हाथ प्रारम्भिक प्रकार के हाथों की अपेक्षा पतले और कम खुरदरे होते हैं।

ऐसे व्यक्ति प्रतिभा सम्पन्न एवं बुद्धिजीवी होते हैं। समाज को इनका योगदान बराबर रहता है। ऐसे व्यक्ति ही समाज का नेतृत्व करने में सक्षम होते हैं तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ विशेष धरोहर देकर जाते हैं। ऐसे हाथ वाले व्यक्ति दार्शनिक, कलाकार, चित्रकार, साहित्यकार, मनोवैज्ञानिक आदि होते हैं। यद्यपि यह बात सही है कि इस प्रकार के व्यक्तियों के पास धन का अभाव होता है परन्तु ये अपने जीवन में धन को इतना अधिक महत्व नहीं देते जितना कि अपनी प्रतिष्ठा को, सम्मान को और कीर्ति को देते हैं।

३. **कर्मठ हाथ** : यह हाथ चौड़ाई की अपेक्षा लम्बाई लिए हुए होता है। हाथ का प्रारम्भ कुछ थुलथुला-सा तथा आगे का भाग उसकी अपेक्षा कुछ हल्का होता है। हथेली पर पाये जाने वाले पर्वत मांसल और कठोर होते हैं तथा अधिकतर पर्वत दबे हुए एवं भारी होते हैं।

ऐसे व्यक्ति अपने जीवन में बराबर सक्रिय बने रहते हैं और कोई न कोई काम करते ही रहते हैं। खाली बैठना इनको अपने जीवन में अच्छा नहीं लगता। अत्यन्त साधारण श्रेणी में जन्म लेकर भी ये अपने परिश्रम से अपनी स्थिति को अनुकूल बना लेते हैं और जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेते हैं। इनके कार्यों में विचार, भावना एवं पुरुषार्थ का प्रबल सामंजस्य रहता है।

'कर्मठ' हाथ

ऐसे व्यक्ति भावनाओं द्वारा अपने कार्य का संचालन नहीं करते अपितु इनके जीवन में भावना तथा व्यावहारिकता का पूर्ण समन्वय होता है। जीवन में नये-नये कार्यों की तरफ अग्रसर होना, नई से नई वस्तु की खोज करना तथा कुछ न कुछ नया करते रहना इनका स्वभाव होता है। सफल व्यक्तित्व इस प्रकार से इनकी विशेषता कही जा सकती है।

४. **दार्शनिक हाथ** : ऐसा हाथ फूला हुआ, गठीले जोड़ों से युक्त तथा सामान्यतया गुदगुदा-सा होता है। यह हाथ न तो विशेष कठोर होता है और न विशेष कोमल। हाथ में लेते ही यह ऐसा प्रतीत होता है कि मानो इस हाथ में एक विशेष प्रकार की लचक और लय हो। ये अपेक्षाकृत पतले, कोमल और मृदुल हाथ होते हैं।

जिनके हाथ दार्शनिक वर्ग के होते हैं, वे व्यक्ति योग्य विद्वान एवं बुद्धिजीवी होते हैं। समाज के लिए ये व्यक्ति ज्यादा उपयोगी तथा नेतृत्व देने वाले सिद्ध हुए हैं। समाज जिन कार्यों से ऊंचा उठता है या देश जिन कार्यों से गौरवान्वित होता है, ऐसे कार्य इन्हीं प्रकार के व्यक्तियों द्वारा सम्पन्न होते हैं।

ऐसे व्यक्ति आदर्श एवं विश्वासों के प्रति पूरी-पूरी आस्था रखते हैं। ज्ञान के क्षेत्र में ये जिज्ञासु बने रहते हैं तथा ज्ञान और बुद्धि में सदैव तत्पर एवं लोगों के लिए हितकारी देखे जा सकते हैं। बड़े-बड़े दार्शनिक, विचारक एवं बुद्धिजीवी इसी प्रकार के
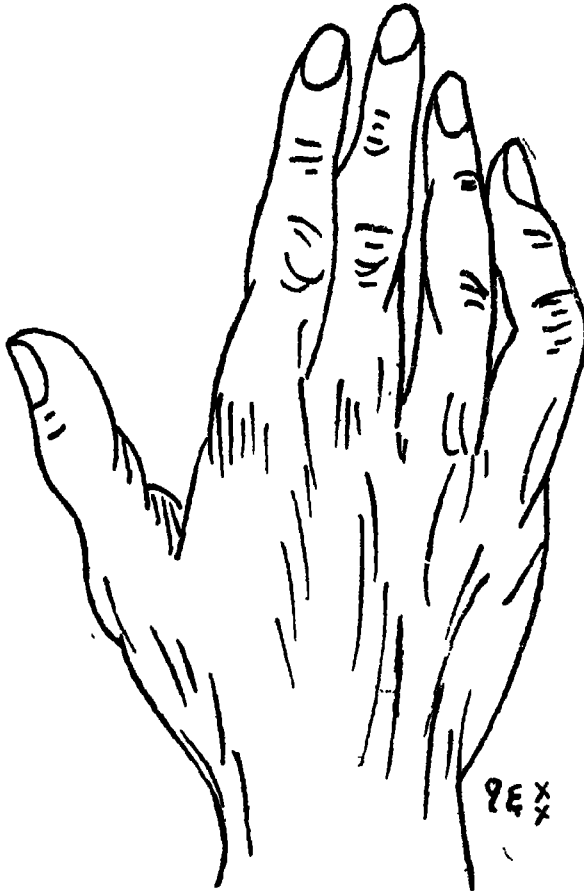
'दार्शनिक' हाथ

हाथों से सम्पन्न होते हैं। जीवन में इनको धन का अभाव-सा रहता है परन्तु फिर भी सम्मान की दृष्टि से ये बहुत ऊंचे उठे हुए होते हैं।

५. **कलात्मक हाथ :** इस प्रकार का हाथ नरम, लचकदार तथा मुलायम होता है। इसका रंग गुलाबी-सी आभा लिये हुए होता है तथा देखने में ये हाथ अत्यन्त सुन्दर होते हैं। हड्डियों के सभी जोड़ समान अनुपात के होते हैं तथा इन हाथों की पहचान इनकी उंगलियों से भली प्रकार से की जा सकती है। इनकी उंगलियां पतली, लम्बी, कलात्मक एवं सुघड़ होती हैं।
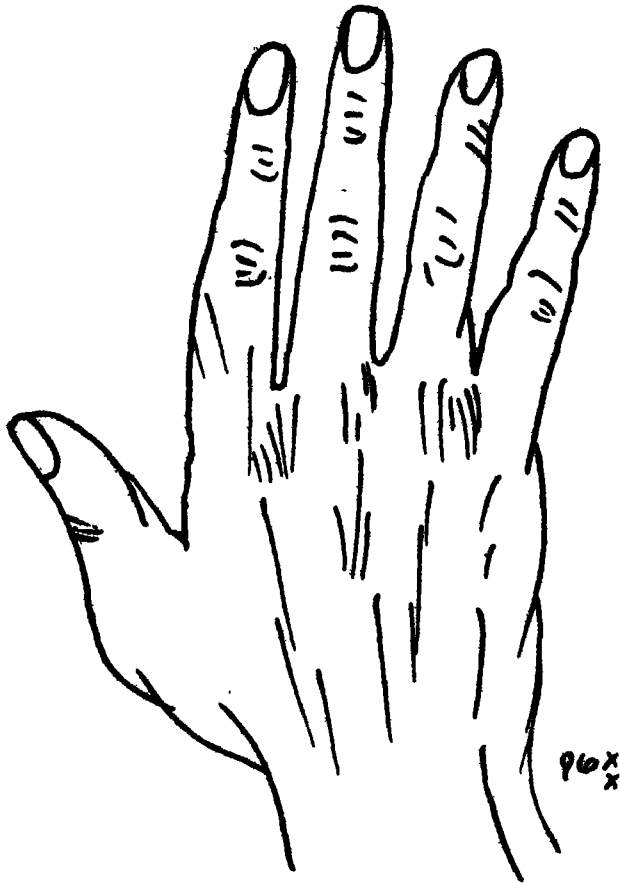
कलात्मक हाथ

ऐसे व्यक्ति स्वभावतः कला प्रेमी एवं सौन्दर्यजीवी होते हैं। इनके हृदय में कला के प्रति एक जिज्ञासा बराबर बनी रहती है तथा ये निरंतर कला के बारे में सोचते

रहते हैं। यद्यपि ये स्वयं कलाकार होते हैं और दूसरे व्यक्तियों को भी उसी रूप में देखते हैं। किसी कारणवश ये स्वयं कलाकार नहीं भी होते तो भी कला के ये जबरदस्त पारखी होते हैं और इनके धन का अधिकतर हिस्सा कला से सम्बन्धित कार्यों में व्यय हो जाता है।

ऐसे व्यक्तियों का रुझान प्रेम की तरफ विशेष रहता है परन्तु जीवन में अधिकतर ये प्रेम के मामले में असफल ही रहते हैं। व्यावहारिक दृष्टि से ये व्यक्ति सफल नहीं होते। क्योंकि ये अधिकतर भावना एवं कल्पना में ही खोए हुए रहते हैं। जीवन में आर्थिक चिन्ता इन्हें बराबर बनी रहती है तथा स्वभाव से ये आलसी होते हैं।

मेरे अनुभव में यह भी आया है कि यदि कलात्मक हाथ अत्यधिक लचीला न होकर थोड़ा-सा कड़ाई लिये हुए हो तो ऐसे व्यक्ति कला के माध्यम से अर्थ-संचय भी करते हैं तथा प्रसिद्धि भी प्राप्त करने में सफल रहते हैं।

६. **आदर्श हाथ** : वास्तव में हाथ का यह सर्वोत्तम प्रकार कहा गया है। ऐसा हाथ सामान्यतः सुडौल, मुलायम तथा एक विशेष लचक लिये हुए होता है। ऐसा हाथ न तो अधिक लम्बा होता है और न अधिक चौड़ा। (चित्र पृष्ठ २७ पर देखें।)

ऐसे व्यक्ति भावी घटनाओं को बहुत पहले से जान लेते हैं अर्थात् ऐसे व्यक्ति अपने जीवन में सूक्ष्मदर्शी होते हैं और बाल की खाल तक पहुंचने में विश्वास रखते हैं। जीवन में इनको जरूरत से ज्यादा बाधाओं एवं संघर्षों से सामना करना पड़ता है परन्तु फिर भी इन कठिनाइयों को देखकर ये विचलित नहीं होते अपितु अपने पथ पर बराबर आगे बढ़ते रहते हैं। यद्यपि कई बार समाज से इनको तिरस्कार एवं उपेक्षा भी मिलती है परन्तु इन सब बातों से ये जीवन में निराश नहीं होते।

सांसारिक दृष्टि से ये व्यक्ति केवल आदर्शों में ही जीवित रहने वाले होते हैं, जिसकी वजह से ऐसे व्यक्तियों का सामाजिक जीवन प्रायः असफल-सा ही रहता है। लेकिन फिर भी ये व्यक्ति धुन के धनी होते हैं और जिस कार्य में एक बार ये हाथ डाल देते हैं उस कार्य को पूरा करके ही छोड़ते हैं। समाज के लिए इनका योगदान एक प्रकार से वरदान स्वरूप ही होता है।

स्वप्न और आदर्शों में विचरण करने वाले ये व्यक्ति सांसारिक कार्यों में अनफिट होते हैं। पास में द्रव्य न होने पर भी राजसी ठाटबाट से गुजारा करने में विश्वास रखते हैं तथा धन समाप्त हो जाने पर फाकों पर गुजारा करने में भी नहीं हिचकिचाते। इनके जीवन का अन्तिम भाग अत्यन्त दुखद होता है।

७. **मिश्रित हाथ** : यह हाथ का अन्तिम वर्ग कहा जा सकता है। पहले छः वर्गों में जो हाथ नहीं आता, उस हाथ की गणना इस वर्ग में की जाती है। इस प्रकार के हाथों में एक से अधिक हाथों के गुण मिलते हैं, इसी लिए इसको मिश्रित हाथ कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए कर्मठ हाथ और दार्शनिक हाथ का मिला-जुला जो रूप होगा वह इसी वर्ग के अन्तर्गत आएगा। (चित्र पृष्ठ २८ पर देखें।)
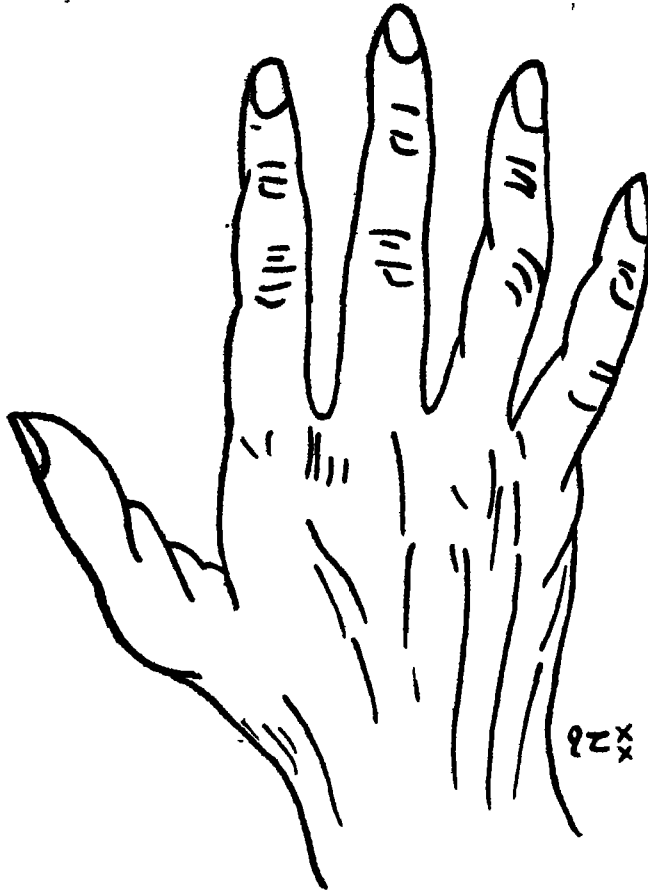
'आदर्श' हाथ

हाथ का यह मिश्रण इनके चरित्र एवं व्यवहार में भी देखा जा सकता है। ऐसे व्यक्ति किसी भी कार्य को जितनी उतावली से प्रारम्भ करते हैं, धीरे-धीरे उस कार्य के प्रति इनकी रुचि समाप्त हो जाती है और उस कार्य को बीच में ही छोड़कर ये नए कार्य को प्रारम्भ कर देते हैं। इनके दिमाग में निरन्तर सन्देह, आशंका और भ्रम का वातावरण बना रहता है।

ऐसे व्यक्तियों का चित्त अस्थिर होता है तथा किसी भी कार्य में पूरी तरह से सफलता न मिलने के कारण ये शीघ्र ही निराश हो जाते हैं और इसी वजह से ये धीरे-धीरे आत्म-केन्द्रित बन जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों को जीवन में सफलता बहुत अधिक प्रयत्नों के बाद ही मिलती है।
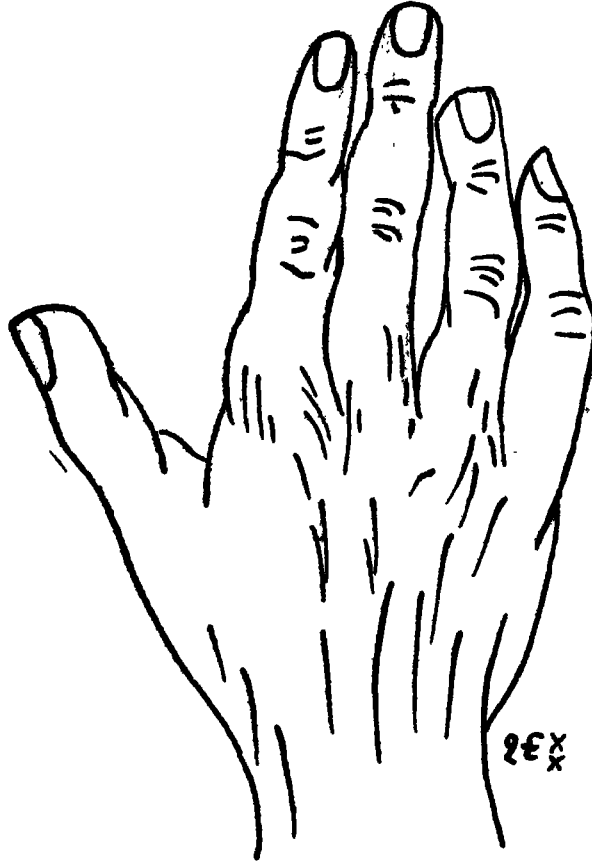
'मिश्रित' हाथ

ऊपर मैंने हाथ के सात प्रकारों का विवरण स्पष्ट किया है। हाथ का अध्ययन करने से पूर्व हस्तरेखा विशेषज्ञ के लिए यह बहुत अधिक आवश्यक होता है कि वह सबसे पहले इस बात का अध्ययन कर ले कि सामने वाले व्यक्ति का हाथ किस वर्ग का है और उस वर्ग का हाथ होने से उसमें क्या-क्या विशेषताएं या कमियां हैं, उसको ध्यान में रखकर यदि हम उसके हाथ में पाई जाने वाली अन्य रेखाओं का अध्ययन करेंगे तो निश्चय ही हम सफलता के अत्यधिक निकट होंगे और हमारा भविष्य-कथन एक प्रकार से विज्ञान सम्मत पद्धति पर आधारित होगा।

हाथ-हथेली, उंगलियां तथा उंगलियों के अग्रभाग

हाथ के अध्ययन में उंगलियां और हाथ की आकृति विशेष महत्व रखती हैं। बड़ा हाथ अपने आप में विशिष्ट हाथ कहलाता है। ऐसे व्यक्ति सूक्ष्मदर्शी और व्यवहार कुशल होते हैं। इसके विपरीत छोटे हाथ वाले व्यक्ति क्रोधी, सनकी और अस्थिर स्वभाव वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन में पूरी तरह से सफलता प्राप्त नहीं कर सकते।

यहां और आगे के पृष्ठों में भी जहां हाथ का वर्णन आएगा वहां हाथ से तात्पर्य मात्र हथेली से ही लिया जाना चाहिए।

हथेली

उंगली की जड़ से पहले मणिबन्ध तक हथेली की लम्बाई कहलाती है तथा अंगूठे की जड़ से दूसरे अन्तिम सिरे तक के भाग को हथेली की चौड़ाई कहा जाता है। इस सारे भाग पर जो भी चिह्न होते हैं, वे सभी चिह्न हस्तरेखा विशेषज्ञ के लिए अत्यन्त आवश्यक होते हैं।

१. **संकड़ी हथेली :** ऐसे व्यक्ति सामान्यतः कमजोर प्रकृति वाले होते हैं। ये व्यक्ति अपने ही स्वार्थ को सर्वाधिक महत्व देते हैं और अपने स्वार्थ साधन में यदि सामने वाले व्यक्ति का अहित भी हो जाता है तो ये इस बात की परवाह नहीं करते। ऐसे व्यक्तियों पर आसानी से विश्वास करना ज्यादा उचित नहीं कहा जा सकता।

२. **चौड़ी हथेली :** जिन व्यक्तियों के पास चौड़ी हथेली होती है, वे चरित्र की दृष्टि से दृढ़ निश्चयी तथा मजबूत हृदय वाले होते हैं। उनकी कथनी और करनी में कोई भेद नहीं होता और एक बार जो ये बात अपने मुंह से कह देते हैं उस पर ये खुद भी दृढ़ रहते हैं और यदि किसी को इस प्रकार का कोई आश्वासन दे देते हैं तो उसे यथासंभव पूरा करने की कोशिश करते हैं।

३. **अत्यधिक चौड़ी हथेली :** ऐसे व्यक्ति सामान्यतः अस्थिर प्रकृति के होते हैं। इसकी पहचान यह है कि इन लोगों की हथेली लम्बाई की अपेक्षा चौड़ी ज्यादा होती है। ऐसी हथेली वाले व्यक्ति तुरन्त निर्णय नहीं ले पाते और किसी भी कार्य को करने से पूर्व बहुत अधिक सोचते-विचारते रहते हैं।

इनके जीवन में किसी कार्य का व्यवस्थित रूप नहीं होता। एक बार में ये एक से अधिक कार्य अपने हाथ में ले लेते हैं और उनमें से कोई भी कार्य भली प्रकार से पूर्ण नहीं होता, जिसकी वजह से इनके मन में निराशा भी घर कर लेती है।

सामान्यतः ऐसे व्यक्ति जीवन में असफल ही होते हैं।

४. **समचौरस हथेली** : जिन व्यक्तियों की हथेली समचौरस होती हैं अर्थात् हथेली की लम्बाई और चौड़ाई बराबर होती है, वे व्यक्ति स्वस्थ, सबल, शान्त और दृढ़ निश्चयी होते हैं। ऐसे व्यक्ति पूरी तरह से पुरुषार्थी कहे जाते हैं। जीवन में ये जो भी बनते हैं या जो भी उन्नति करते हैं वह अपने प्रयत्नों के माध्यम से ही करते हैं।

इनके स्वभाव में दृढ़ निश्चय होता है। किसी कार्य को ये तब तक प्रारंभ नहीं करते जब तक कि इन्हें उस कार्य की सफलता में पूरा-पूरा भरोसा नहीं होता। परन्तु जब ये किसी एक कार्य को प्रारम्भ कर लेते हैं तो अपनी सारी शक्ति उसके पीछे लगा देते हैं और जब तक वह कार्य भली प्रकार से सम्पन्न नहीं हो जाता, तब तक ये विश्राम नहीं लेते। इनके जीवन की सफलता का यही मूल रहस्य है।

५. **हाथ के प्रकार** : हाथ के प्रकार का भी भविष्य-कथन के लिए बहुत अधिक महत्त्व है। हाथ देखने वाले को चाहिए कि वह जिस समय सामने वाले व्यक्ति के हाथ का स्पर्श करे, उसी समय यह भी जान ले कि उसका हाथ किस प्रकृति का है। मैं इससे सम्बन्धित तथ्य नीचे स्पष्ट कर रहा हूँ :—

नरम हाथ : जिन व्यक्तियों के इस प्रकार के हाथ होते हैं, वे सामान्यतः कल्पनाशील व्यक्ति होते हैं। इनके स्वभाव में एक विशेष प्रकार की लचक एवं कोमलता होती है और उसी के अनुसार इनका जीवन भी होता है। किसी भी व्यक्ति की सहायता करने के लिए ये हर समय तैयार रहते हैं। अधिकतर ऐसे हाथ स्त्रियों के होते हैं। यदि किसी पुरुष का भी ऐसा हाथ अनुभव हो जाए तो यह समझ लेना चाहिए कि इस व्यक्ति में स्त्री सम्बन्धी गुण विशेष हैं।

ढीला-ढाला नरम हाथ : यदि किसी व्यक्ति का हाथ नरम हो परन्तु वह बड़ा ही ढीला-ढाला हो तो ऐसे व्यक्ति आलसी, निकम्मे तथा अत्यन्त स्वार्थी होते हैं। अधिकतर ऐसे व्यक्तियों में दया नाम की कोई चीज नहीं होती। अपराधी वर्ग के हाथ अधिकतर ऐसे ही होते हैं। बुरे तथा समाज विरोधी कार्यों में ऐसे व्यक्ति सर्वदा अग्रणी रहते हैं। ऐसे व्यक्ति हृदयहीन, धोखा देने वाले तथा कपटपूर्ण व्यवहार करने वाले होते हैं।

सख्त हाथ : ऐसे व्यक्तियों का जीवन रूखा और कठोर-सा होता है। प्रेम के क्षेत्र में भी कठोर बने रहते हैं और प्रेम के मामले को भी ये युद्ध के मामले की तरह समझते हैं। यदि बहुत अधिक सख्त हाथ हो तो ऐसे व्यक्ति सामान्य मजदूर होते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने कार्य को सबसे अधिक महत्त्व देने वाले होते हैं तथा बाधाओं

के आने पर भी ऐसे व्यक्ति निराश नहीं होते अपितु लगातार उस कार्य को करते रहते हैं।

हाथ का प्रकार देखते समय अवस्था को भी ध्यान में रखना चाहिए। यौवन-काल में हाथ सामान्यतः कम सख्त होता है परन्तु उसी व्यक्ति का हाथ प्रौढ़काल में ज्यादा सख्त होता है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि हाथ का प्रकार देखते समय उसकी आयु का भी ध्यान रखना चाहिए। परन्तु सामान्यतः सख्त हाथ वाले व्यक्ति बुद्धिजीवी नहीं होते और परिश्रम करके ही अपना जीवन-यापन करते हैं।

अत्यधिक सख्त हाथ : ऐसा हाथ बुद्धि की न्यूनता और अत्याचार को प्रदर्शित करता है। ऐसे व्यक्ति दूसरों को दुखी देखकर आनन्द का अनुभव करते हैं और घोर स्वार्थी बने रहते हैं। अपराधी वर्ग के हाथ ऐसे ही होते हैं। जल्लाद या पेशेवर हत्यारे के हाथों में इसी प्रकार की स्थिति देखी जा सकती है।

हाथ के प्रकार को देखने के साथ-साथ हथेली के रंग को भी ध्यान में रखना चाहिए। परन्तु इस बात में यह सावधानी बरतनी चाहिए कि सामने वाले व्यक्ति की हथेली को छूने से पहले ही उसके स्वाभाविक रंग का अध्ययन करना चाहिए। छूने से हथेली का रंग बदल जाता है और वह अपनी सामान्य अवस्था में नहीं रहती।

१. **लाल :** जिस व्यक्ति की हथेली का रंग लाल होता है, वह क्रोधी स्वभाव का तथा दूसरों पर अविश्वास करने वाला व्यक्ति होता है। ऐसे व्यक्ति तुनक मिजाज भी होते हैं। किस समय ऐसा व्यक्ति गुस्सा हो जाएगा, इसका कोई आभास नहीं हो पाता। सामान्यतः ऐसा व्यक्ति संकीर्ण विचारों वाला तथा अदूरदर्शी होता है।

२. **अत्यधिक लाल :** जिस व्यक्ति की हथेली का रंग अत्यधिक लाल होता है, वह क्रूर, अपराध-वृत्ति वाला तथा जरूरत से ज्यादा स्वार्थी होता है। समय पड़ने पर यह मित्र को भी धोखा देने में नहीं चूकता। स्वार्थी इतना अधिक होता है कि यदि किसी का १००) रु० का नुकसान होता हो और उससे इसको एक पैसे की बचत होती है तो यह सामने वाले व्यक्ति को भी धोखा देने से नहीं चूकेगा। इसके साथ भलाई का व्यवहार करने पर भी समय पड़ने पर यह व्यक्ति धोखा देगा। ऐसे व्यक्ति पर विश्वास करना खतरे से खाली नहीं होता।

३. **गुलाबी :** जिस व्यक्ति की हथेली का रंग गुलाबी होता है वह स्वस्थ, सहृदय तथा उन्नत विचारों वाला होता है। उसके रहन-सहन में एक शालीनता दिखाई देती है। ऐसा व्यक्ति उच्च विचारों का धनी, एवं सन्तुलित मस्तिष्क वाला होता है। ऐसे व्यक्ति जीवन में अपने कार्यों से तथा अपने परिश्रम से सफल होते हैं एवं साधारण श्रेणी से उठकर अत्यन्त ऊंचे स्तर पर पहुंचने में समर्थ होते हैं। वास्तव में ऐसे व्यक्ति ही समाज को कुछ नया दे सकते हैं।

४. पीला : पीले रंग की हथेली रोग की सूचक होती है। जिस व्यक्ति की हथेली पीली दिखाई दे तो समझ लेना चाहिए कि वह व्यक्ति रोगी है अथवा इसके खून में किसी न किसी प्रकार का कोई विकार है। ऐसा व्यक्ति अस्थिर स्वभाव का तथा चिड़चिड़ा होता है एवं संकीर्ण बुद्धि का होने के साथ-साथ कमजोर मस्तिष्क वाला भी कहा जा सकता है।

५. चिकनी त्वचा : हथेली की त्वचा का भी अपनेआप में अत्यन्त ही महत्व होता है। जिस व्यक्ति की हथेली की त्वचा चिकनी और मुलायम होती है, वह व्यक्ति सहृदय तथा निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति का लक्ष्य हमेशा स्पष्ट होता है और वह निरन्तर उस ओर बढ़ता रहता है। जीवन में अधिक-तर ऐसे ही व्यक्ति सफल होते देखे गये हैं।

६. सूखी त्वचा : जिन व्यक्तियों की हथेली की त्वचा या चमड़ी सूखी सी होती है, वे व्यक्ति सामान्यतः रोगी और अस्थिर प्रकृति वाले होते हैं। वे स्वयं किसी प्रकार का कोई निर्णय नहीं ले पाते और इनको जिस प्रकार की भी सलाह दी जाती है उसी के अनुसार ये कार्य करने लग जाते हैं। इनके कार्यों में किसी प्रकार का कोई सामंजस्य नहीं रहता। मानसिक तथा शारीरिक दोनों ही दृष्टियों से ये लगभग बीमार से ही रहते हैं। जीवन में सफलता इनको बहुत अधिक प्रयत्न करने के बाद ही मिलती है।

७. रूखी त्वचा : अत्यधिक सूखी तथा रूखी त्वचा व्यक्ति की कमजोरी तथा लीवर की बीमारी को स्पष्ट करती है। ये व्यक्ति सन्देहशील प्रकृति के होते हैं तथा दुर्बल मनोवृत्ति के होने के कारण जीवन में प्रायः असफल ही रहते हैं।

नाखून

हथेली का अध्ययन करने के साथ ही साथ उंगलियों के नाखूनों पर भी विशेष विचार करना चाहिए। साधारणतः ये नाखून प्रत्येक व्यक्ति की उंगली के अग्रभाग में होते हैं और उंगली की रक्षा करने में सहायक होते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टि से नाखूनों के दो कार्य हैं। (१) उंगलियों के पोरों की रक्षा करना, जिससे बाहरी आघात से उंगलियां कट न जाएं और उंगलियों की सुन्दरता को बढ़ाने में ये नाखून सहायक होते हैं। (२) ये नाखून विद्युत प्रवाहक होते हैं। वायुमण्डल में जो नैसर्गिक विद्युत होती है, इन नाखूनों के माध्यम से ही शरीर में प्रवेश करती है। यह ही नहीं अपितु अन्य ग्रहों की रश्मियां भी इन्हीं नाखूनों के माध्यम से शरीर में प्रवेश कर व्यक्तियों को सुचारु रूप से कार्य करने में सक्षम रखती हैं।
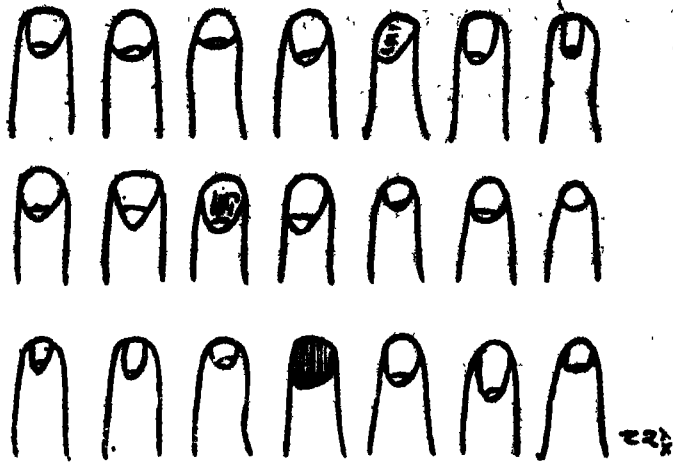
विभिन्न प्रकार के नाखून

१. छोटे नाखून : छोटे नाखून व्यक्ति की असभ्यता को प्रदर्शित करते हैं। जिस व्यक्ति की उंगलियों पर छोटे-छोटे नाखून होते हैं। इन्हें देखकर तुरन्त समझ जाना चाहिए कि इस व्यक्ति ने भले ही सभ्य और उन्नत घराने में जन्म लिया हो पर प्रकृति से वह संकीर्ण विचारों वाला कमजोर तथा दुष्ट स्वभाव वाला ही होगा।

२. छोटे और पीले नाखून : ऐसे नाखून व्यक्ति की मक्कारी को प्रदर्शित करते हैं। ये नाखून इस बात के भी सूचक हैं कि यह व्यक्ति कदम-कदम पर झूठ बोलनेवाला तथा समय पड़ने पर अपने परिवार को भी धोखा देने वाला होगा। ऐसे व्यक्ति कभी भी विश्वासपात्र नहीं हो सकते।

३. छोटे और चौरस नाखून : जिस व्यक्ति के हाथों में इस प्रकार के नाखून होते हैं, वह व्यक्ति हृदय रोग का रोगी होता है तथा उसकी मृत्यु हार्ट अटैक से ही होती है।

४. छोटे और [illegible] नाखून : ऐसा व्यक्ति लड़ाई-झगड़ों में विश्वास रखता है और दूसरों की आलोचना करना या दूसरों के कार्यों में हस्तक्षेप करना इनका प्रिय स्वभाव होता है। ऐसे व्यक्ति अड़ियल किस्म के होते हैं।

५. कठोर और संकरे नाखून : सामान्यत: ऐसे व्यक्ति झगड़ालू प्रकृति के होते हैं। जिस बात को ये एक बार मन में ठान लेते हैं उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं, चाहे वह बात गलत हो या सही कार्य हो। ये इस बात की परवाह नहीं करते, अपितु अपनी बात पर अड़े रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों पर विश्वास करना ठीक नहीं होता।

६. **चौकोर नाखून** : चौकोर नाखून व्यक्ति की कमजोरी को प्रकट करते हैं और इस प्रकार के नाखून मनुष्य का भीरुपन, कायरता एवं दब्बूपन को ही प्रदर्शित करता है।

७. **छोटे और तिकोने नाखून** : सामान्यत: ऐसे नाखून ऊपर से चौड़े तथा नीचे संकरे होते हैं। जिन व्यक्तियों के हाथों में ऐसे नाखून होते हैं वे व्यक्ति सुस्त होते हैं तथा काम करने से जी चुराते हैं। एक प्रकार से ऐसे व्यक्ति अपनेआप को समाज से कटे हुए तथा एकान्तवादी अनुभव करते हैं।

८. **लम्बाई की अपेक्षा चौड़े नाखून होना** : ऐसे व्यक्ति बहुत जल्दी क्रोधित हो जाते हैं परन्तु अपने काम के पक्के होते हैं और जिस काम को हाथ में ले लेते हैं उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं। अपने कार्यों में किसी का भी अनुचित हस्तक्षेप इन्हें पसन्द नहीं होता। एक प्रकार से ये व्यक्ति एकान्तप्रिय होते हैं।

९. **छोटे नाखून व गांठदार उंगलियां** : ऐसे व्यक्ति झगड़ालू किस्म के होते हैं और यदि किसी स्त्री के हाथों में ऐसे नाखून दिखाई दे जाएं तो यह समझ लेना चाहिए कि यह स्त्री अपने पति पर पूरी तरह से शासन करती होगी तथा ऐसी स्त्री लड़ाकू स्वभाव की होगी।

१०. **गोलाकार नाखून** : जिनके नाखून ऊपर से गोलाकार होते हैं, वे व्यक्ति सशक्त विचारों वाले एवं तुरन्त निर्णय लेने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति जो भी निर्णय लेते हैं उन पर अमल करना भी जानते हैं।

११. **पतले और लम्बे नाखून** : जिन व्यक्तियों के हाथों में पतले और लम्बे नाखून होते हैं, वे शारीरिक दृष्टि से कमजोर तथा अस्थिर विचार वाले कहे जाते हैं। ऐसे व्यक्ति स्वयं निर्णय नहीं ले पाते अपितु दूसरे व्यक्ति इनको जो भी राय देते हैं उसी पर ये अमल करते हैं।

१२. **लम्बे और मुड़े हुए नाखून** : ऐसे व्यक्ति चरित्रहीन होते हैं तथा इनका सम्बन्ध अपनी पत्नी के अलावा अन्य स्त्रियों से भी रहता है। जीवन में ऐसे व्यक्ति कई बार बदनाम होते हैं।

१३. **पूर्ण नाखून** : इस प्रकार के नाखून चौड़ाई की अपेक्षा मामूली लम्बे होते हैं और अपनी प्राकृतिक चमक लिए हुए होते हैं। ऐसे व्यक्ति उत्तम विचारों वाले, मानवीय प्रवृत्तियों वाले तथा निरंतर आगे की ओर बढ़ते रहने की भावना रखने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति ही समाज में सभी दृष्टियों से सफल कहे जाते हैं।

नाखूनों पर निशान

१. **काले धब्बे** : जिस व्यक्ति की उंगलियों के नाखूनों पर काले धब्बे होते हैं तो यह समझ लेना चाहिए कि ऐसे व्यक्ति पर महान विपत्ति अर्थात् दुःख आने वाला

है। यहां यह बात समझ लेनी चाहिए कि नाखूनों पर धब्बे समय-समय पर दिखाई देते हैं और लोप भी हो जाते हैं। जब भी उंगलियों पर काले धब्बे दिखाई देने लग जाएं तब यह समझ लेना चाहिए कि इस व्यक्ति के रक्त में दूषितता आ गई है। शीघ्र ही ऐसा व्यक्ति चेचक, मलेरिया, बुखार या ऐसी ही किसी रक्त से सम्बन्धित बीमारी से पीड़ित होने वाला है।

२. **सफेद धब्बे** : नाखूनों पर सफेद धब्बे रक्त भ्रमण में गतिरोध को स्पष्ट करते हैं और ये धब्बे भावी रोग के सूचक होते हैं। जब ऐसे धब्बे उंगलियों पर दिखाई देने लग जाएं तो यह समझ लेना चाहिए कि यह व्यक्ति शीघ्र ही बीमार पड़ने वाला है।

३. **नाखूनों की जड़ों में छोटा अर्द्धचन्द्र होना** : नाखूनों की जड़ों में कई बार अर्द्धचन्द्र दिखाई देने लग जाते हैं। ये अर्द्धचन्द्र प्रगति के सूचक हैं।

१—तर्जनी उंगली पर अर्द्धचन्द्र बने तो शीघ्र ही नौकरी में अथवा राज्य सेवा में उन्नति या शुभ समाचार मिलने के आसार बनते हैं।

२—मध्यमा उंगली पर अर्द्धचन्द्र इस बात का सूचक है कि व्यक्ति को शीघ्र ही मशीनरी सम्बन्धी कार्यों में लाभ होने वाला है तथा उसे आकस्मिक धन का लाभ अथवा शुभ समाचार मिल सकेंगे।

३—अनामिका उंगली पर यदि ऐसा अर्द्धचन्द्र दिखाई दे तो शीघ्र ही सम्मान वृद्धि, प्रतिष्ठा वृद्धि एवं समाज में आदर बढ़ता है।

४—कनिष्ठिका उंगली पर अर्द्धचन्द्र बने तो व्यापारिक कार्यों से लाभ होने के आसार बढ़ जाते हैं।

५—अंगूठे के नाखून की जड़ में यदि यह अर्द्धचन्द्र बने तो समस्त प्रकार के शुभ कार्य, उन्नति एवं शुभ संकेत समझना चाहिए।

४. **नाखूनों की जड़ों में बड़ा अर्द्धचन्द्र होना** : ऊपर मैंने छोटे अर्द्धचन्द्र के बारे में विवरण दिया है परन्तु कई बार बड़ा अर्द्धचन्द्र भी दिखाई दे जाता है जोकि लगभग आधे नाखून को घेर लेता है। बड़ा अर्द्धचन्द्र यदि दिखाई दे तो विपरीत फल समझना चाहिए। ऊपर प्रत्येक उंगली के सम्बन्ध में जो फल बतलाए हैं उनसे विपरीत विचार करना चाहिए।

ऊपर मैंने सफेद और काले धब्बों के बारे में विवरण दिया है। इस सम्बन्ध में यह भी जानना उचित रहेगा कि यदि अंगूठे पर सफेद धब्बा दिखाई दे तो वह प्रेम का सूचक होता है जबकि काला धब्बा निकट भविष्य में ही अपराध होने की सूचना देता है। इसी प्रकार तर्जनी उंगली पर काला धब्बा आर्थिक हानि का संकेत करता

है और सफेद धब्बा व्यापार में लाभ का सूचक होता है । मध्यमा उंगली के नाखून पर यदि सफेद धब्बा दिखाई दे तो शीघ्र ही यात्रा होने का योग बनता है, जबकि काला धब्बा परिवार के किसी वृद्ध व्यक्ति की मृत्यु का संकेत करता है । इसी प्रकार अनामिका के नाखून पर यदि काला धब्बा दिखाई दे जाए तो शीघ्र ही समाज में अपयश मिलता है । इसके विपरीत यदि सफेद धब्बा दिखाई देता है तो उस व्यक्ति को शीघ्र हीं सम्मान, धन तथा यश मिलने का योग बनता है । कनिष्ठिका उंगली के नाखून पर सफेद धब्बा अपने लक्ष्य में सफलता का सूचक माना गया है, जबकि काला धब्बा असफलता का द्योतक होता है ।

किसी भी उंगली पर या सभी उंगलियों पर यदि पीले धब्बे दिखाई देने लगें तो यह निश्चित रूप से समझ लेना चाहिए कि इस व्यक्ति की मृत्यु निकट भविष्य में ही होने वाली है ।

कभी-कभी लाल छींटे भी दिखाई दे जाते हैं । ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ये भी अशुभ संकेत ही करते हैं और, यदि किसी भी उंगली पर या सभी उंगलियों पर लाल छींटे या लाल धब्बे दिखाई दे जाएं तो उस व्यक्ति की हत्या होने का संकेत समझ में आता है ।

वस्तुतः नाखून और नाखूनों पर पाये जाने वाले चिह्न अपनेआप में बहुत अधिक महत्त्व रखते हैं । इसलिए हस्तरेखा विशेषज्ञ को चाहिए कि वह जब भी हाथ का अध्ययन करे तब उसे इन सारे तथ्यों को भी अपने दिमाग में स्थिर कर लेना चाहिए ।

गांठें

बिना गांठों के उंगलियां नहीं बनती हैं परन्तु कुछ लोगों के हाथों में ये गांठें बहुत अधिक फूली हुई होती हैं । वास्तव में फूले हुए भाग को ही गांठ कहते हैं । यहां गांठ से मेरा तात्पर्य यह है कि प्रत्येक पर्व में जोड़ होता है जोकि स्पष्ट रूप से दिखाई देता है परन्तु नरम उंगलियों में ये गांठें न तो अनुभव होती हैं और न ही दिखाई देती हैं ।

प्रत्येक उंगली के तीन भाग होते हैं जोकि दो जोड़ों से बने हुए होते हैं । ये दोनों जोड़ दो गांठों के सूचक होते हैं । कुछ लोगों के हाथों में एक गांठ दिखाई देती है जबकि दूसरी नहीं भी दिखाई देती । कुछ लोगों के हाथों में दोनों ही गांठें स्पष्ट अनुभव होती हैं और कुछ लोगों के हाथों में एक भी गांठ अनुभव नहीं होती ।

सामान्य रूप से गांठें विचार, कार्य तथा प्रेरणा की सूचक होती हैं । मैं आगे इससे संबंधित कुछ तथ्य स्पष्ट कर रहा हूं :—

१. यदि तर्जनी उंगली में मात्र नीचे की ही गांठ हो तो ऐसे व्यक्ति मन्द बुद्धि के होते हैं, परन्तु यदि ऊपर वाली गांठ ही अनुभव होती है तो वे अपने कार्यों में चतुर एवं योग्य होते हैं। यदि तर्जनी उंगली में दोनों ही गांठें दिखाई दें तो ऐसे व्यक्ति आलसी और जीवन में निष्क्रिय बने रहते हैं। इसके विपरीत यदि तर्जनी उंगली में एक भी गांठ न हो तो ऐसे व्यक्ति चतुर, मेधावी, दूरदर्शी तथा अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

२. यदि मध्यमा उंगली के नीचे वाले भाग में ही गांठ हो तो व्यक्ति अपने कार्य में बार-बार असफल होता है। इसके विपरीत यदि केवल ऊपर वाली गांठ ही हो तो व्यक्ति दृढ़निश्चयी होता है और असफलता मिलने पर भी हताश या निराश नहीं होता। यदि मध्यमा उंगली में दोनों ही गांठें दिखाई देती हों तो यह समझ लेना चाहिए कि यह व्यक्ति व्यापार में जितनी तेजी से प्रगति करेगा उतनी ही तेजी से इसका पतन भी हो जाएगा। यदि मध्यमा उंगली में कोई गांठ न हो तो वह व्यक्ति धीर, गम्भीर तथा अत्यन्त उच्चस्तरीय विद्वान अथवा व्यापारी होता है और सैकड़ों लोगों का भरण-पोषण करने में समर्थ होता है।

३. अनामिका उंगली में यदि मात्र नीचे ही गांठ अनुभव हो तो व्यक्ति धर्म के मामले में कमजोर होता है। धार्मिक कार्यों में उसकी रुचि कम होती है। परन्तु यदि केवल ऊपरी भाग में ही गांठ दिखाई दे तो ऐसा व्यक्ति धर्मभीरु तथा कमजोर दिल वाला होता है। यदि अनामिका उंगली में दोनों ही गांठें प्रतीत होती हों तो ऐसा व्यक्ति समाजद्रोही एवं धर्मद्रोही होता है। उसके जीवन में धर्म का या सामाजिक कार्यों का कोई महत्त्व नहीं होता। वह व्यक्ति पूर्णतः स्वार्थी तथा अपने ही हित चिन्तन में लगा रहता है। इसके विपरीत यदि अनामिका उंगली में कोई गांठ न हो तो ऐसे व्यक्ति समाज का नेतृत्व करने में समक्ष होते हैं तथा समाज को इनकी देन स्पष्ट दिखाई देती है। इनके कार्यों में एक निश्चित उद्देश्य होता है। ये व्यक्ति अपने स्वार्थ की अपेक्षा ये दूसरों की भलाई का विशेष ध्यान रखते हैं, ऐसे ही व्यक्ति समाज को सही निर्देश दे सकते हैं।

४. यदि कनिष्ठिका उंगली में नीचे की ओर ही गांठ हो तो वह व्यक्ति जरूरत से ज्यादा चालाक एवं सावधान होता है। कानून तोड़ना इसके लिए बायें हाथ का खेल होता है तथा यह समाज विरोधी कार्यों में अग्रणी रहता है। यदि कनिष्ठिका उंगली के ऊपरी भाग में ही गांठ हो तो ऐसा व्यक्ति समाज के लिए सहायक होता है तथा उसके जीवन का अधिकतर हिस्सा सामाजिक कार्यों में लगता है। यदि कनिष्ठिका उंगली में दो गांठें हों तो निश्चय ही वह व्यक्ति तटस्थ नहीं रह पाता। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी होने के साथ-साथ गलत कार्यों में भी लगा रहता है। समाज से इस व्यक्ति को बहुत अधिक आशाएं नहीं रखनी चाहिए। यदि कनिष्ठिका
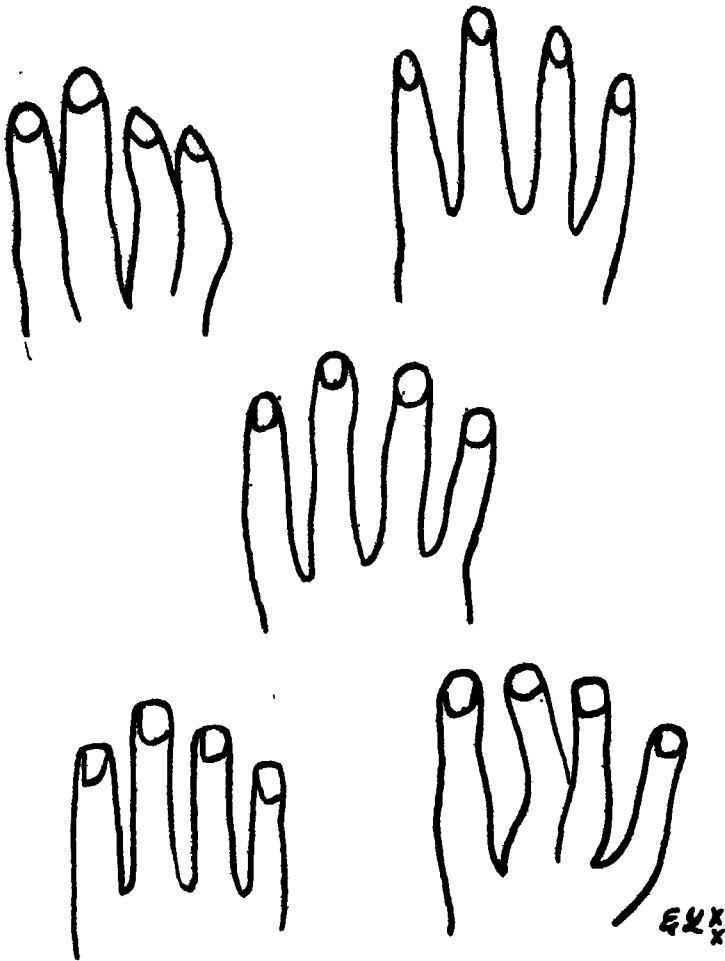
विभिन्न प्रकार के अग्रभागों वाली उंगलियां

उंगली में कोई गांठ न हों तो ऐसे व्यक्ति आदर्शजीवी होते हैं। इनके विचार शुद्ध एवं पवित्र होते हैं तथा ये व्यक्ति अपने जीवन में समाज को कुछ नया देने की सामर्थ्य रखते हैं। ऐसे व्यक्ति ही समाज के भूषण कहे जाते हैं।

५. अंगूठे में केवल एक ही गांठ होती है क्योंकि अंगूठे में मात्र दो भाव ही देखे जा सकते हैं। यदि अंगूठे में गांठ दिखाई दे तो ऐसे व्यक्ति कमजोर दिल वाले

होते हैं तथा अपने कर्तव्यों के प्रति ये लगभग उदासीन-से रहते हैं। इसके विपरीत यदि अंगूठे में कोई गांठ अनुभव न हो तो ऐसे व्यक्ति दृढ़निश्चयी तथा अपने कार्य के प्रति अटूट आस्था रखने वाले होते हैं। एक बार जो मन में निश्चय कर लेते हैं, उस कार्य को पूरा करके ही छोड़ते हैं। इनके जीवन में दृढ़ता, प्रबल इच्छा-शक्ति और कार्य करने के प्रति अटूट आस्था होती है। ऐसे ही व्यक्ति अपने जीवन में सफल होकर देश और समाज को नया नेतृत्व देने में सक्षम हो सकते हैं।

अंगूठा और उंगलियां

अंगूठा एक प्रकार से पूरे हाथ का प्रतिनिधित्व करता है। हाथ की रेखाओं का जितना महत्त्व होता है, उससे भी ज्यादा महत्त्व अंगूठे का माना गया है। जिस प्रकार मनुष्य का चेहरा उसके जीवन का प्रतिबिम्ब होता है, ठीक उसी प्रकार उसके हाथ का अंगूठा भी उसके पूरे व्यक्तित्व को हस्तरेखाविद् के सामने साकार कर देता है। पूरे हाथ का मूल, अंगूठे को ही माना गया है क्योंकि बिना अंगूठे के उंगलियों का महत्त्व एक प्रकार से नगण्य-सा हो जाता है। अंगूठा ही पूरे हाथ की शक्ति को अपने हाथ में संचित रखता है और कार्य करने की क्षमता प्रदान करता है। बच्चे के जन्म के समय भी उसका अंगूठा चारों उंगलियों से ढका हुआ सा रहता है, अतः हस्तरेखा विज्ञान में अंगूठे का महत्त्व सर्वोपरि माना गया है।
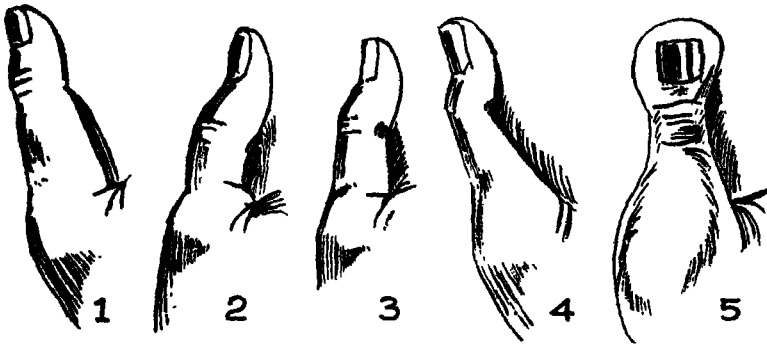
अंगूठे के विभिन्न प्रकार

अंगूठा इच्छा-शक्ति का केन्द्र माना जाता है जोकि तीन हड्डियों से मिलकर निर्मित होता है। हथेली से आगे निकले हुए दो भाग स्पष्ट दिखाई देते हैं। तीसरे भाग से हथेली की आन्तरिक रचना होती है जोकि शुक्र पर्वत कहा जाता है और यह भाग प्रेम तथा वासना का केन्द्र माना गया है। इससे ऊपर का भाग तर्क एवं नाखून से जुड़े हुए भाग को इच्छा-शक्ति का द्योतक कहा जाता है।

अंगूठा मानव की आन्तरिक क्रियाशीलता को स्पष्ट करता है और इसका सीधा संबंध मस्तिष्क से होता है। चूंकि मानव शरीर में उसका मस्तिष्क सर्वोपरि माना

गया है अतः केवल मात्र अंगूठे को देखकर ही मानव का स्वभाव उसकी प्रकृति तथा उसके विचारों का अध्ययन किया जा सकता है। चिकित्सा विज्ञान के अनुसार यदि चारों उंगलियां कट जाती हैं तब भी कोई हानि नहीं होती परन्तु किसी कारणवश अंगूठा फट जाय और रक्त प्रवाह जोरों से होने लग जाय तो व्यक्ति पागल हो जाता है और कई बार मृत्यु भी हो जाती है। इस छोटे से तथ्य से ही अंगूठे का महत्व समझा जा सकता है।

परिस्थितियों तथा विभिन्न जलवायु को ध्यान में रखते हुए समस्त मानव जाति के अंगूठे तीन भागों में बांटे जा सकते हैं।

१. वे अंगूठे जो हथेली पर तर्जनी के साथ मिलकर अधिक कोण का निर्माण करते हैं।

२. वे अंगूठे जो तर्जनी के साथ मिलकर समकोण का निर्माण करते हैं।

३. वे अंगूठे जो हथेली पर तर्जनी के साथ न्यूनकोण का निर्माण करते हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए इन तीनों ही प्रकार के अंगूठों का संक्षिप्त विवरण स्पष्ट कर रहा हूं :

१. अधिक कोण अंगूठा :—ये अंगूठे देखने में सुन्दर आकृति वाले, लम्बे तथा पतले होते हैं। ऐसे अंगूठों को सात्विक अंगूठा कहा जाता है। जिन व्यक्तियों के हाथों में ऐसा अंगूठा होता है, वे व्यक्ति कोमल और मधुर स्वभाव वाले, कलाकार, संगीतज्ञ तथा समाज में रचनात्मक कार्य करने वाले होते हैं। यद्यपि ऐसे लोगों का बचपन बहुत अधिक संघर्षों के साथ व्यतीत होता है परन्तु फिर भी ये अपने प्रयत्नों से घरेलू परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना कर ऊंचा उठ जाते हैं। यद्यपि निरन्तर इनके मार्ग में बार-बार बाधाएं आती हैं परन्तु ये अपनी इच्छा-शक्ति के बल पर ही जीवन में सफल होते हैं।

इस प्रकार के हाथ में अत्यधिक लम्बा अंगूठा अशुभ माना गया है। यदि अंगूठे की लम्बाई तर्जनी के दूसरे पोरुए के आधे भाग से भी ऊपर बढ़ जाय तो वह व्यक्ति मूर्ख होता है तथा अपने जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। यदि अंगूठे की लम्बाई समान एवं उचित अनुपात में होती है तो व्यक्ति बुद्धिमान, चतुर तथा कला प्रेमी होता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में स्वार्थ की अपेक्षा मानव-सेवा एवं समाज-सेवा को प्राथमिकता देता है। यद्यपि इनके जीवन में मित्रों की संख्या कम ही होती है परन्तु फिर भी जितने भी मित्र होते हैं, वे विपत्ति पड़ने पर सहायता करने वाले होते हैं। इनके चित्त में अस्थिरता बनी रहती है। ऐसे व्यक्ति बार-बार अपने विचार बदलते रहते हैं और जीवन में काफी बाधाओं के बाद ही सफल हो पाते हैं।

२. समकोण अंगूठा :—ऐसे अंगूठे वे कहे जाते हैं, जो तर्जनी से जुड़ते समय समकोण का निर्माण करते हैं। ये अंगूठे देखने में सुन्दर, मजबूत तथा स्तम्भ की तरह प्रतीत होते हैं परन्तु ऐसे अंगूठे पीछे की तरफ झुके हुए नहीं होते।

इन अंगूठों को ध्यानपूर्वक देखने से पता चलता है कि ये व्यक्ति बातों की अपेक्षा कार्य एवं परिश्रम पर ज्यादा विश्वास करते हैं। यद्यपि इनमें क्रोध की मात्रा विशेष होती है परन्तु यह भी देखा गया है कि इनके जीवन में जितनी तेजी से गुस्सा आता है उतनी ही तेजी से गुस्सा उतर भी जाता है। यह बात सही है कि क्रोध के समय ये चुपचाप बैठे रहते हैं, अहित या अनिष्ट नहीं करते। अपनी बात पर ये पूरी तरह से अड़े रहते हैं। कई बार गलत बातों पर या गलत कार्यों पर ही दृढ़ता का रुख ले लेते हैं, जिसकी वजह से कुछ नई समस्याएं भी पैदा हो जाती हैं। प्रतिशोध की भावना इनमें इतनी अधिक होती है कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी भी ये अपने बैर को भूलते नहीं। ऐसे व्यक्ति या तो अच्छे मित्र हो सकते हैं या अच्छे शत्रु। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन में टूट सकते हैं परन्तु झुकना इनके बस की बात नहीं होती। सही रूप में देखा जाए तो ऐसे ही व्यक्ति देश-भक्त, देश तथा समाज के कार्यों पर अपने प्राणों को उत्सर्ग करने वाले एवं दृढ़-निश्चयी होते हैं। मन में एक बार ये व्यक्ति जो निश्चय कर लेते हैं, उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं। दूसरों के अधीन रहकर कार्य करना इनको प्रिय नहीं होता, अपितु ये अपने ही द्वारा संचालित होते हैं।

३. न्यूनकोण अंगूठा : हथेली से जुड़ते समय तर्जनी उंगली के साथ जो अंगूठे न्यूनकोण का आकार बनाते हैं, वे इसी वर्ग के अन्तर्गत आते हैं। इन अंगूठों की लम्बाई अपेक्षाकृत कम होती है तथा देखने में ये अंगूठे बेडौल से प्रतीत होते हैं। ऐसे अंगूठों को तमोगुणी अंगूठा कहा जाता है।

जिन व्यक्तियों के हाथों में इस प्रकार का अंगूठा होता है, वे व्यक्ति जीवन में निराशावादी भावना बनाये रखते हैं। आलस्य इनके जीवन में बराबर बना रहता है। यात्रा आदि कार्यों में इनकी रुचि नहीं होती और न किसी कार्य की पूर्णतः में ये विश्वास रखते हैं। निम्न और मध्य वर्ग के लोगों में ऐसे ही अंगूठे प्रायः देखने को मिलते हैं। ऐसे व्यक्ति बुरी आदतों तथा व्यसनों में व्यस्त रहते हैं, जिसकी वजह से आय की अपेक्षा इनका व्यय बढ़ा-चढ़ा रहता है। ये जरूरत से ज्यादा फ़ुज़ूलखर्ची होते हैं तथा दिवास्वप्न देखते-देखते अपनी उम्र काट लेते हैं। धर्म-कर्म में उनकी रुचि कम ही होती है। भूत-प्रेत, देवी-देवताओं आदि की ओर इनका थोड़ा-बहुत झुकाव रहता है। निम्नस्तरीय कार्यों में इन्हें आनन्द आता है।

इस प्रकार के व्यक्ति भोगी होते हैं तथा अन्य स्त्रियों के प्रति बराबर आसक्ति बनाए रखते हैं। अपने से निम्नतर अथवा निम्न जाति की स्त्रियों से इनका सम्पर्क

रहता है। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन में कई-बार बदनाम होते हैं। मेरी राय में ऐसे व्यक्तियों से समाज को किसी प्रकार का कोई विशेष लाभ नहीं मिलता।

अंगूठे के तीन भाग :

ध्यानपूर्वक देखने से प्रतीत होता है कि अंगूठा मुख्यत: तीन भागों में बंटा हुआ होता है। पहला वह भाग कहलाता है, जो नाखून से चिपका हुआ होता है। दूसरा मध्य भाग तथा तीसरा वह भाग कहलाता है, जो हथेली में शुक्र पर्वत से जुड़ा हुआ होता है। हस्तरेखा विज्ञान के अनुसार इनमें प्रथम पोरुआ 'सत', दूसरा 'रज' तथा तीसरा 'तम' को स्पष्ट करता है। इनको हम ऊर्ध्व भाग, मध्यम भाग तथा अधो भाग के नाम से भी सम्बोधित कर सकते हैं। ऊर्ध्व भाग विज्ञान और इच्छा शक्ति का द्योतक होता है। मध्य भाग तर्क एवं विचार का प्रतिनिधित्व करता है तथा तीसरा अधो भाग प्रेम, विराम और स्नेह को सूचित करता है।

प्रथम पोरुआ :

जिस मनुष्य के अंगूठे का प्रथम पोरुआ दूसरे पोरुए से लम्बा हो, उस व्यक्ति में इच्छा-शक्ति प्रबल होती है तथा निर्णय लेने में यह स्वतन्त्र होता है। ऐसे व्यक्ति किसी की अधीनता में रह कर कार्य नहीं कर पाते। ऐसे व्यक्ति धार्मिक विचारों में गहरी आस्था रखने वाले होते हैं तथा इनका स्वयं का व्यक्तित्व इतना प्रबल तथा आकर्षक होता है कि देखते ही इनके व्यक्तित्व का प्रभाव सामने वाले पर पड़ जाता है। ये अपने व्यक्तित्व के बल पर कुछ भी कार्य सम्पन्न करा लेने में समर्थ होते हैं। ऐसे व्यक्ति यौवनावस्था की अपेक्षा वृद्धावस्था में अधिक संवेदनशील तथा अधिक सुखी देखे जाते हैं।

यदि प्रथम तथा द्वितीय पोरुआ बराबर लम्बा एवं मोटा होता है तो ऐसा व्यक्ति समाज में सम्माननीय स्थान प्राप्त करने में सफल होता है। न तो ये किसी को धोखा देते है और न किसी से ये व्यक्ति सहज में ही धोखा खाते हैं। जीवन में मित्रों की संख्या बहुत ज्यादा होती है तथा समाज में ऐसे व्यक्ति लोकप्रिय होते हैं। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी इन्हें मुस्कराते हुए देखा जा सकता है।

द्वितीय पोरुआ :

अंगूठे का दूसरा पोरुआ तर्क-शक्ति का स्थान माना गया है। यदि दूसरा पोरुआ पहले पोरुए से बड़ा और मजबूत हो तो इससे यह सिद्ध होता है कि व्यक्ति में तर्क-शक्ति जरूरत से ज्यादा है और इस व्यक्ति की यह विशेषता होगी कि यह अपनी तर्क शक्ति के सामने किसी को भी टिकने नहीं देगा। परन्तु इस प्रकार के व्यक्तियों

एक कमजोरी यह होती है कि ये अपनी उचित और अनुचित सभी बातों को तर्क शक्ति के सहारे मनवाने की कोशिश करते हैं। यदि कभी तर्क-शक्ति में अपना पलड़ा कमजोर होता देखते हैं तो हो-हल्ला मचाकर अपनी विजयसिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं। सभ्य समाज में इनको ज्यादा आदर नहीं मिलता अपितु इन्हें बकवादी और वाचाल कहा जाता है। यदि किसी व्यक्ति के हाथ में यह पोरुआ पतला हो तो ऐसे व्यक्ति अपने दिमाग से काम न लेकर जो भी जी में आता है मुंह पर बक देते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने अधिकारियों की गलती निकालने में तत्पर रहते हैं। इनका जीवन भारवत् ही होता है।

यदि पहला और दूसरा पोरुआ बराबर लम्बाई और चौड़ाई तथा मोटाई लिये हुए हों तो व्यक्ति शान्त मस्तिष्क के कहे जाते हैं न तो ये क्षणिक आवेश में क्रोधित होते हैं और न क्षणिक प्रशंसा से फूलते ही हैं। जीवन में प्रत्येक कदम साव-धानी के साथ उठाते हैं जिससे इनको समाज में कम-से-कम धोखा खाने को मिलता है। इनमें आत्म-विश्वास भी प्रबल रूप में होता है। सही शब्दों में कहा जाय तो ये व्यक्ति सभ्य, ऊंचे स्तर के व्यापारी, महत्त्वपूर्ण पदों पर अधिकारी और माने हुए कलाकार होते हैं।

यदि पहले पोरुए की अपेक्षा दूसरा पोरुआ कमजोर, पतला और दुर्बल हो तो ऐसे व्यक्ति अपनी इच्छा से न चलकर दूसरों की अधीनता में ही चलना पसन्द करते हैं। सही रूप में ये स्वयं कोई निर्णय नहीं लेते। जीवन में ये किसी भी प्रकार का कोई कार्य बिना योजना के ही प्रारम्भ कर देते हैं, जिससे उस कार्य के अन्त में इन्हें हमेशा असफलता ही मिलती है। इनकी आत्मा निर्बल होती है। इनके विचार अस्थिर होते हैं। इनकी प्रवृत्ति झगड़ालू होती है और जीवन में ये एक असफल व्यक्ति कहे जाते हैं।

वास्तव में ही ऐसे व्यक्ति भाग्यवादी होने के साथ-साथ आलसी भी कहे जाते हैं।

तीसरा भाग :

अंगूठे का तीसरा भाग पोरुआ न कहलाकर शुक्र का स्थान कहलाता है। शुक्र पर्वत के बारे में आगे विवेचन किया जायगा।

प्रथम दो पोरुओं की अपेक्षा यह भाग निश्चय ही उन्नत, सुदृढ़ एवं सुन्दर होता है। यदि यह भाग सामान्य रूप से अधिक ऊंचा उठा हुआ, सुन्दर और किञ्चित् गुलाबी आभा लिये हुए होता है तो ऐसा व्यक्ति प्रेम और स्नेह के क्षेत्र में काफी बढ़ा-चढ़ा होता है। समाज में ऐसे व्यक्ति आदर प्राप्त करते हैं तथा मित्रों में भरपूर लोकप्रियता अर्जित करने में सफल होते हैं। ये व्यक्ति कठिनाइयों में भी मुस्कराते रहते हैं और अपने प्रयत्नों से जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करके ही रहते हैं।

यदि शुक्र का पर्वत बहुत अधिक उठा हुआ दिखाई दे तो ऐसा व्यक्ति भोगी और कामी होता है तथा सौन्दर्य के पीछे भटकने वाला माना जाता है। प्रेम और सौन्दर्य के लिए यह सब कुछ करने के लिए तैयार रहता है और उस समय क्षणिक आवेश में यह कुछ भी आगा-पीछा नहीं सोचता। यदि यह क्षेत्र दबा हुआ या कम उन्नत होता है अथवा इस क्षेत्र पर जरूरत से ज्यादा रेखाएं एवं जाल दिखाई दें तो ऐसा व्यक्ति निराशावादी प्रवृत्ति का होता है। इनका प्रेम भी शुद्ध प्रेम न होकर उस प्रेम के पीछे भी वासना या स्वार्थ छिपा हुआ होता है। ये लम्बी-लम्बी योजनाएं बनाते हैं, दिवा-स्वप्न देखते रहते हैं पर ये अपने उद्देश्यों में पूर्णतः सफलता प्राप्त नहीं कर पाते हैं। भावना शून्य होने के कारण समाज में भी इनको पूर्ण यश नहीं मिलता। जीवन इनका कलह पूर्ण कहा जाता है तथा वैवाहिक जीवन में जरूरत से ज्यादा बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

उंगलियां :

मैंने पीछे के पृष्ठों में उंगलियों के बारे में कुछ संकेत दिये थे। यह ज्ञात रहना चाहिए कि उंगलियों का सीधा सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है और यदि उंग-लियों पर विशेष बोझ पड़ता है तो उससे मस्तिष्क की धमनियां भी बोझिल होने लगती हैं। साधारणतः प्रत्येक हाथ में चार उंगलियां पाई जाती हैं।
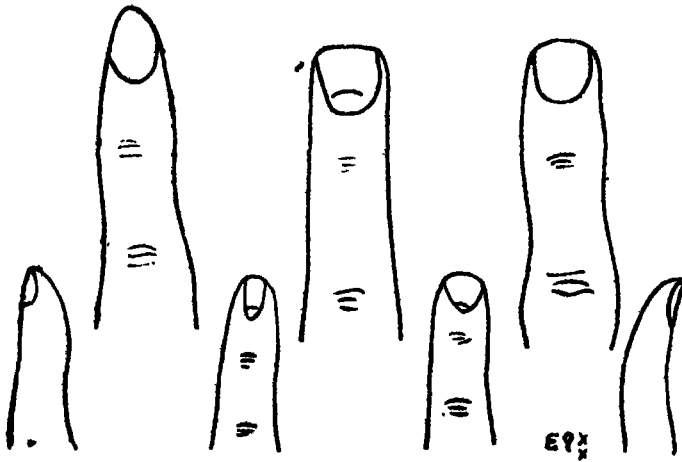
उंगलियां

१. तर्जनी :

२. मध्यमा :

३. अनामिका :

४. कनिष्ठिका :

इन चारों उंगलियों में से प्रत्येक उंगली तीन-तीन खण्डों में बंटी हुई होती है। नैसर्गिक रूप से देखा जाये तो मध्यमा उंगली सबसे बड़ी; तर्जनी, मध्यमा के आखिरी खण्ड के मध्य तक पहुंचने वाली, अनामिका भी लगभग इतनी ही लम्बी, तथा कनिष्ठिका, अनामिका के आखिरी खण्ड तक पहुंचने वाली होती है, इसमें थोड़ी बहुत लम्बाई कम या ज्यादा हो सकती है।

तर्जनी पहली उंगली है, जो कि अंगूठे के पास वाली होती है। इसके मूल में गुरु पर्वत का स्थान है। तर्जनी के पास मध्यमा होती है, जिसके मूल में शनि का पर्वत कहा जाता है। मध्यमा के पास वाली उंगली अनामिका कहलाती है, जिसके मूल में सूर्य पर्वत स्थित है तथा इसके पास की उंगली कनिष्ठिका होती है, जिसके मूल मे बुध पर्वत का स्थान है, यह सभी उंगलियों से छोटी होती है।

तर्जनी उंगली :

इसको अंग्रेजी में 'इण्डैक्स फिन्गर' कहत हैं। अधिकतर लोगों के हाथ में यह उंगली अनामिका से छोटी होती है। पर कुछ हाथों में मैंने यह उंगली अनामिका से बड़ी भी देखी है। जिस हाथ में यह उंगली अनामिका से लम्बाई में बड़ी हो वे व्यक्ति अपने गौरव से अभिभूत, घमण्डी तथा उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर कार्य करने वाले होते हैं। धार्मिक कार्यों में इनकी रुचि नहीं होती। ये ऊपर के अधिकारियों की चापलूसी करने में भी विश्वास रखते हैं। अपने अधीनस्थ कर्मचारियों पर कड़ाई से नियन्त्रण करते हैं। तथा शासन करने की भावना इनमें हद से ज्यादा होती है। यद्यपि इस वजह से समाज में इन्हें कई बार निन्दा का पात्र बनना पड़ता है फिर भी अपने धैर्य के बल पर ये आगे की ओर बढ़ते रहते हैं।

यदि तर्जनी अनामिका उंगली से छोटी हो तो ऐसा व्यक्ति चालाक होता है ऐसा व्यक्ति किसी भी तरीके से अपना काम निकालने में माहिर होते हैं। ऐसे व्यक्तियों को स्वार्थी, खुदगर्ज और चालाक समझना चाहिए।

यदि तर्जनी उंगली असामान्य रूप से छोटी हो तो व्यक्ति अकस्मात निर्णय लेने में होशियार होता है। यदि यह असाधारण रूप से लम्बी हो तो ऐसे व्यक्ति अत्याचारी, घमण्डी, तथा कामुक होते हैं। यदि तर्जनी उंगली लम्बी हो तथा ऊपर का सिरा नोकीला हो तो ऐसे व्यक्ति अन्ध-विश्वासी और धर्म में जरूरत से ज्यादा आस्था रखने वाले होते हैं। यदि यह उंगली लम्बी हो परन्तु ऊपर का सिरा वर्गाकार हो तो ऐसे व्यक्ति सच्चरित्र तथा उदार प्रवृत्ति के होते हैं। यदि तर्जनी उंगली औसत लम्बाई लिए हुए हो और आगे का भाग चपटा हो तो व्यक्ति डांवाडोल मनस्थिति का होता है। यदि तर्जनी उंगली का पहला पर्व ही लम्बा हो तो व्यक्ति आत्मविश्वासी कहा जाता है। यदि मात्र दूसरा पर्व लम्बा हो तो उसकी इच्छाएं बहुत अधिक बड़ी-बड़ी होती हैं। यदि तीसरा पर्व लम्बा हो तो उसमें जरूरत से ज्यादा घमण्ड और अभिमान होता है। यदि मध्यमा और प्रथमा दोनों ही उंगलियां बराबर हो तो ऐसे व्यक्ति पूरे संसार में सम्मानित होते हैं। नैपोलियन बोनापार्ट तथा अब्राहीम लिंकन की तर्जनी और मध्यमा दोनों ही उंगलियां बराबर लम्बाई लिये हुई थीं।

मध्यमा उंगली :

इसे अंग्रेजी में 'फिन्गर आफ सेटर्न' कहते हैं। क्योंकि इसके मूल में शनि पर्वत होता है। सामान्यतः यह उंगली तर्जनी और अनामिका से लम्बी होती है, परंतु यह लम्बाई १/४ इंच से बड़ी नहीं होनी चाहिए। यदि यह १/४ इंच से बड़ी हो तो उस व्यक्ति का पूरा जीवन दुख, अभाव और परेशानियों में ही व्यतीत होता है। यदि यह उंगली मात्र १/४ इंच ही बड़ी हो तो ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान, शुभ कार्यों को करने वाला तथा उन्नति की ओर अग्रसर होने वाला होता है। ऐसा ही व्यक्ति समाज में सम्मान तथा यश प्राप्त करता है।

यदि मध्यमा उंगली तर्जनी से आधा इंच या उससे भी ज्यादा बड़ी हो तो व्यक्ति निश्चय ही हत्यारा होगा, ऐसा समझ लेना चाहिए।

यदि मध्यमा उंगली लम्बी हो तो व्यक्ति रोगी और कामी होता है। यदि यह उंगली लम्बी होने के साथ-साथ गांठदार एवं फूली हुई हो तो वह व्यक्ति स्वार्थी तथा चिन्ताओं से ग्रस्त रहता है। यदि यह उंगली लम्बी हो, साथ ही इसका ऊपर का सिरा वर्गाकार हो तो ऐसे व्यक्ति गम्भीर स्वभाव के होते हैं तथा जीवन में उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर सफलता के साथ कार्य करते हैं। यदि यह उंगली लम्बी हो पर

ऊपर से चपटी हो तो ऐसे व्यक्ति कला के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करते हैं तथा कला के माध्यम से उच्चस्तरीय सम्मान, ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त करते हैं। यदि मध्यमा उंगली का पहला पर्व लम्बा हो तो व्यक्ति आत्महत्या करता है। यदि दूसरा पर्व अपेक्षाकृत लम्बा हो तो ऐसा व्यक्ति व्यापारिक क्षेत्रों में विशेष कर मशीनरी सम्बन्धी कार्यों में विशेष लाभ उठाता है। यदि तीसरा पर्व ज्यादा लम्बा हो तो ऐसा व्यक्ति जरूरत से ज्यादा कंजूस होता है तथा समाज में अपयश का भागी होता है। यदि मध्यमा उंगली का ऊपरी सिरा तर्जनी की ओर झुका हुआ हो तो उसमें जरूरत से ज्यादा आत्मविश्वास होता है और इस आत्मविश्वास के कारण ही वह अपने लक्ष्य तक पहुंचने में सफल हो जाता है। यदि इसका ऊपरी भाग अनामिका की ओर झुका हुआ हो तो ऐसा व्यक्ति भाग्य पर भरोसा करने वाला एवं संगीत, कला आदि में रुचि रखने वाला होता है।

अनामिका उंगली :

अंग्रेजी में इस उंगली को 'फिगर आफ अपोलो' भी कहते हैं क्योंकि इसके मूल में सूर्य का स्थान होता है। सामान्यतः यह उंगली मध्यमा से छोटी परन्तु तर्जनी से अपेक्षाकृत लम्बी होती है। परन्तु कुछ हाथों में इसका अपवाद भी देखा गया है। यदि यह उंगली तर्जनी से बड़ी होती है तो ऐसा व्यक्ति उन्नति करता है और उसमें
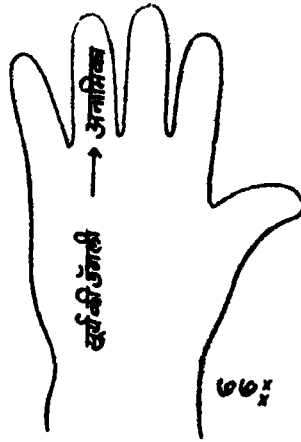
दया, प्रेम, स्नेह आदि मानवोचित गुण जरूरत से ज्यादा होते हैं परन्तु यदि यह उंगली मध्यमा के बराबर पहुंच जाती है तो ऐसे व्यक्ति अत्यन्त दुष्ट एवं स्वार्थी होते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने स्वार्थ के कारण सामने वाले का अधिक से अधिक अहित करने से भी नहीं चूकते। परन्तु ऐसे व्यक्ति भाग्यवादी होते हैं तथा अपने धन का अधिकांश

लोग जुआ, सट्टा आदि गलत कार्यों में लगा देते हैं। ऐसे व्यक्तियों को असभ्य और निर्दयी कहा जाना चाहिए।

यदि अनामिका उंगली का झुकाव सबसे छोटी उंगली की ओर हो तो व्यक्ति व्यापार से विशेष लाभ उठाता है और उसका सारा जीवन व्यापारिक कार्यों में ही व्यतीत होता है। परन्तु यदि इस उंगली का झुकाव मध्यमा की तरफ हो तो ऐसा व्यक्ति चिन्तन-प्रधान व आत्म-केन्द्रित होता है तथा जीवन में कुछ ऐसा कार्य करके जाता है, जिससे आगे के जीवन में समाज और देश उसको याद रख सकें।

यदि अनामिका छोटी हो तो वह व्यक्ति कलाकृतियों अथवा चित्रों एवं पुरानी वस्तुओं से धन-संचय करता है। यदि इसका अगला सिरा नुकीला हो तो वह एक सफल संगीतज्ञ अथवा चित्रकार होता है। यदि अगला भाग वर्गाकार हो तो कला के माध्यम से धन एवं यश दोनों ही कमाता है। यदि ऊपरी भाग चपटा हो तो इतिहास से संबंधित कार्यों में वह विशेष रुचि लेता है तथा उसमें सफलता भी प्राप्त करता है। यदि इस उंगली का पहला पर्व लम्बा हो तो इसमें कलात्मक रुचि विशेष रूप से होती है। यदि दूसरा पर्व लम्बा हो तो अपनी प्रतिभा के बल पर यह व्यक्ति बहुत ऊंचे स्तर तक उठ सकता है। यदि तीसरा पर्व लम्बा तथा चौड़ा हो तो अपने जीवन में यह राष्ट्र-व्यापी सम्मान अर्जित करता है। यदि यह उंगली तर्जनी के बराबर लम्बी हो तो उसे विशेष ख्याति की भूख बनी रहती है। यदि यह उंगली मध्यमा के बराबर लम्बी हो तो इसके जीवन में कई कार्य आकस्मिक रूप से गठित होते हैं और अन्त में यह सफलता प्राप्त करके ही रहता है।

कनिष्ठिका उंगली :

अंग्रेजी में इस उंगली को 'फिंगर आफ मरकरी' अथवा 'लिटल फिंगर' कहते हैं। इसके मूल में बुध पर्वत का स्थान माना गया है। प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में यह सभी उंगलियों से छोटी होती है। यदि यह उंगली अनामिका के नाखून तक पहुंच जाए तो वह व्यक्ति जीवन में अत्यन्त उच्चस्तरीय सफलता प्राप्त करता है तथा महत्वपूर्ण पद पर आसीन होता है। वह उंगली जितनी ही ज्यादा लम्बी होती है उतनी ही ज्यादा शुभ मानी गई है। ऐसी उंगली रखने वाले व्यक्ति सफल प्रशासक एवं सफल साहित्यकार कहे जाते हैं। यदि यह उंगली अनामिका के ऊपरी पोर के अर्द्ध भाग से भी आगे बढ़ जाती है तो

ऐसा व्यक्ति सैक्रेटरी अथवा आई० ए० एस० अधिकारी होता है। इन लोगों को आकस्मिक रूप से धन लाभ होता है तथा जीवन का उत्तरार्द्ध अत्यन्त सफलता के साथ व्यतीत होता है।

यदि यह उंगली असाधारण रूप से लम्बी दिखाई दे तो ऐसे व्यक्ति बुद्धिजीवी होते हैं तथा उनमें दूसरों को प्रभावित करने की विशेष क्षमता होती है। यदि यह उंगली बहुत अधिक छोटी हो तो वह व्यक्ति बात के मर्म को बहुत जल्दी समझ जाता है और तुरन्त निर्णय लेने में समर्थ रहता है। यदि इसका आगे का सिरा नुकीला हो तो ऐसे व्यक्ति बुद्धिमान, सूक्ष्म दृष्टि सम्पन्न तथा वाकपटु होते हैं। यदि आगे का भाग वर्गाकार हो तो ऐसे व्यक्ति में तर्क करने की विशेष क्षमता होती है तथा ये अपने भाषणों के माध्यम से लोगों को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। यदि ऊपरी भाग चपटा हो तो वैज्ञानिक अथवा मशीनरी सम्बन्धी कार्यों में रुचि लेने वाला होता है। यदि उस उंगली का पहला पर्व लम्बा हो तो वह व्यक्ति विज्ञान में सफलता प्राप्त करता है। यदि दूसरा पर्व लम्बा हो तो वह परिश्रम के माध्यम से व्यापार में विशेष सफलता अर्जित करता है। यदि इसका तीसरा पर्व लम्बा हो तो ऐसा व्यक्ति चतुर होता है परन्तु उसमें असत्य बोलने की भावना जरूरत से ज्यादा होती है। यदि यह उंगली अनामिका के बराबर लम्बी हो तो ऐसा व्यक्ति ऊंचे स्तर का दार्शनिक तथा बुद्धिमान होता है। यदि यह उंगली मध्यमा के बराबर लम्बी दिखाई दे तो वह व्यक्ति अपने कार्यों से विश्वविख्यात होता है। वास्तव में अनामिका उंगली जितनी ही ज्यादा लम्बी होती है, उतना ही ज्यादा शुभ कहा जाता है।

उंगलियों की दूरी :

दो उंगलियों का खाली स्थान भी अपनेआप में महत्व रखता है। यदि अंगूठे और तर्जनी के बीच अधिक दूरी हो तो उस व्यक्ति में मानवीय गुण भरपूर होते हैं तथा उनमें प्रेम, दया, क्षमा आदि मानवोचित गुण सहज, स्वाभाविक रूप से प्राप्त होते हैं। यदि तर्जनी और मध्यमा उंगली के बीच खाली जगह दिखाई दे तो वह व्यक्ति अपने विचारों में स्वतन्त्र होता है तथा अपनी बात को किसी के भी सामने कहने में हिचकिचाता नहीं। मध्यमा और अनामिका उंगली के बीच का खाली स्थान व्यक्ति की लापरवाही और असभ्यता प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार अनामिका और कनिष्ठिका के बीच खाली स्थान हो तो ऐसा व्यक्ति हत्यारा एवं निर्दयी होता है।

उंगलियों के अग्र भाग :

उंगलियों के अग्रभाग भी भविष्य-कथन में बहुत ज्यादा महत्व रखते हैं। हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार ये अग्र भाग चार प्रकार के होते हैं।
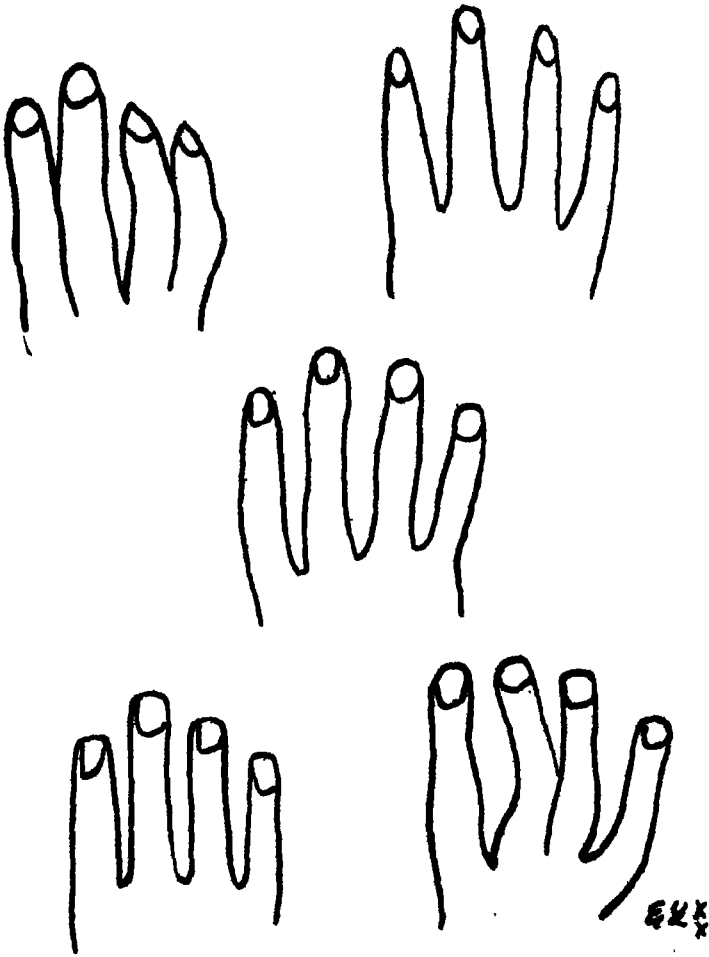
विभिन्न प्रकार के अग्रभागों वाली उंगलियां

१. तीखे

२. चपटे

३. नोकीले

४. वर्गाकार

कई बार यह देखने में आया है कि सभी उंगलियों के अग्र भाग एक समान ही होते हैं और कई बार अलग-अलग उंगलियों के अग्रभाग अलग-अलग प्रकार के होते हैं। अब मैं सामान्य रूप से इनका वर्णन स्पष्ट कर रहा हूँ :

१. तीखी उंगलियां :—जिनके हाथों में तीखी उंगलियां होती हैं अथवा जिनके अग्रभाग तीखे होते हैं, वे व्यक्ति अत्यन्त ही श्रेष्ठ तथा समाज में अग्रणी माने जाते हैं। ऐसे व्यक्ति दार्शनिक, कलाकार, संगीतकार, तथा अपनी आत्मा के अनुसार चलने वाले होते हैं । उनके हृदय में घृणा, क्रोध और अविवेक नहीं होता अपितु इनका पूरा हृदय दया, प्रेम, और स्नेह से लबालब भरा होता है।

परन्तु अत्यधिक तीखी उंगलियां मस्तिष्क के पागलपन को स्पष्ट करती हैं। ऐसे व्यक्ति केवल कल्पना में ही खोये रहते हैं । इनके जीवन में सफलता कम ही रहती है। तांत्रिक लोगों की उंगलिया सामान्यतः ऐसी ही देखने को मिलती हैं। जहां तक देखा गया है, यह अनुभव में आया है कि मनुष्यों में वे व्यक्ति ज्यादा उन्नत एवं सभ्य ज्ञात हुए हैं, जिनकी उंगलियों के अग्रभाग सामान्य रूप से तीखे होते हैं।

२. चपटी उंगलियां :—चपटी उंगलियां कार्यकुशलता तथा फुर्ती की सूचक होती हैं। ऐसे व्यक्ति अपने कार्यों में बराबर लगे रहते हैं तथा किसी भी कार्य को बीच में नहीं छोड़ते। जब तक कोई कार्य भली प्रकार से सम्पन्न नहीं हो जाता तब तक ये विश्राम नहीं लेते । इनमें भरपूर आत्म-विश्वास होता है और अपने आत्म-विश्वास के बल पर ही कार्यों को पूर्णता की ओर पहुंचाते हैं । ऐसे व्यक्ति सफल युद्ध विशारद, संगीतकार, कुशल कारीगर, कुशल खिलाड़ी तथा श्रेष्ठ विद्वान होते हैं । सीखने की इनमें विशेष प्रवृत्ति होती है। इनके जीवन में व्यवस्था और क्रमबद्धता होती है। ऐसे व्यक्ति धर्म के प्रति कट्टर नहीं होते अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उदारता से काम लेते हैं। वस्तुतः ऐसे व्यक्ति ही अपने कार्यों से अपने समाज को कुछ नया योगदान देने में सफल होते हैं।

३. नुकीली उंगलियां :-ये उंगलियां मानव के सुन्दर विचारों तथा सुन्दर कार्यों की ओर इंगित करती हैं । ऐसे व्यक्ति जो भी कार्य करेंगे वह एक तरीके से करेंगे और उनके कार्यों में एक विशेष प्रकार की व्यवस्था होगी परन्तु ऐसा देखा गया है कि

तीखी अंगुलियां
नोकीया अंगुलियां
वर्गाकार अंगुलियां
चपटी अंगुलियां

इनके जीवन में उतार-चढ़ाव बराबर बना रहता है। कभी ये प्रसन्नता की चरम सीमा पर होते हैं तो कभी इनके जीवन में जरूरत से ज्यादा निराशा छा जाती है। इनका वैवाहिक-जीवन अधिकतर असफल ही रहता है।

उंगलियों के अग्र भाग बहुत अधिक तीखे होना अनुकूल नहीं कहा जाता। ऐसे व्यक्तियों में आत्म-विश्वास कम होगा। ये अपनी भावनाओं के अनुसार ही चलते हैं। ऐसे व्यक्ति आलसी, कामुक और अक्षम कहे जाते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने पेट में रहस्य नहीं रख सकते।

४. **वर्गाकार उंगलियां** :—जिन व्यक्तियों के हाथों में वर्गाकार उंगलियां होती हैं, वे व्यक्ति जीवन में दूरदर्शी तथा नियमितता के साथ कार्य करने वाले होते हैं। अधिकतर ऐसे व्यक्ति व्यापारी वर्ग में आते हैं जो प्रत्येक कार्य की योजना बहुत अधिक सोच-विचार कर करते हैं। ऐसे व्यक्ति फूंक-फूंक कर कदम रखने वाले होते हैं तथा इनके कार्यों में एक नियमतता होती है। ये स्वयं भी पूरा परिश्रम करते हैं और दूसरों से भी काम लेने की युक्ति इनको आती है। स्वच्छता, समय की पाबन्दी, अपने वचनों की रक्षा, आत्म विश्वास आदि गुण इनमें विशेष रूप से पाये जाते हैं। ऐसे व्यक्ति अच्छे गणितज्ञ, इतिहासज्ञ, तथा कवि होते हैं। ऐसे ही व्यक्ति जीवन में विशेष सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

उंगली दर्शन :

यदि उंगलियां भीतर की ओर झुकी हुई हों तो व्यक्ति दुनियादारी में बहुत अधिक चतुर होते हैं तथा ऐसे व्यक्ति प्रत्येक कार्य की देखभाल कर सकते हैं।

यदि उंगलियों का झुकाव बाहर की ओर हो तो ऐसे व्यक्तियों का हृदय उदार होता है। अपने विचारों के वे धनी होते हैं तथा जीवन में यदि किसी को आश्वासन देते हैं तो अपने कथन को अन्तिम क्षण तक निभाने की कोशिश करते हैं। यदि उंगलियां जरूरत से ज्यादा बाहर झुकी हुई हों तो व्यक्ति लापरवाह होता है।

यदि उंगलियां टेढ़ी-मेढ़ी एवं बेडौल हों तो व्यक्ति अपराधी वर्ग के होते हैं तथा अपराध पूर्ण कार्यों में ही उनकी रुचि रहती है।

जिनकी उंगलियां मोटी और फूली हुई होती हैं, वे निर्धनता की सूचक होती है। ऐसे व्यक्ति जितना ही उपार्जित करते हैं, उससे ज्यादा खर्च कर डालते हैं।

यदि उंगलियां चपटी हों तो व्यक्ति सेवाकार्य में सफल होते हैं। जीवन में ऊंचे स्तर पर तथा अधिकारी पद पर पहुंचकर प्रशंसा अर्जित करते हैं।

जिसकी उंगलियां एक सीध में होती हैं, वह व्यक्ति भाग्यशाली होता है तथा समाज में उसको विशेष सम्मान मिलता है।
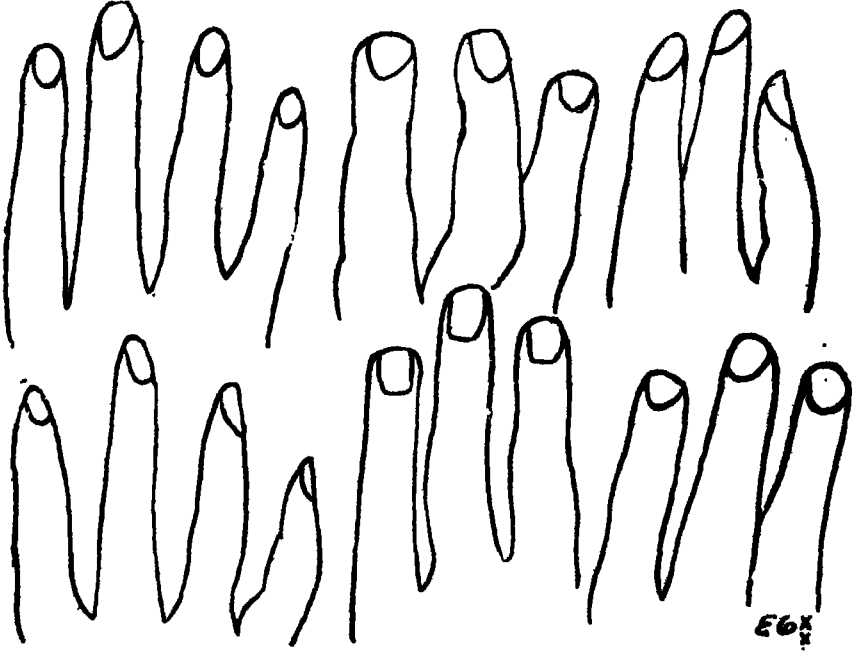
यदि सभी उंगलियां गठीली एवं ऊबड़-खाबड़ हों तो व्यक्ति विचारशील एवं अध्ययन प्रिय होता है।

यदि उंगलियों में गांठें बहुत ज्यादा विकसित हों तो ऐसा व्यक्ति प्रतिभावान तथा चिन्तक होता है। उसके प्रत्येक कार्य में एक विशेष सुघड़ता और व्यवस्था होती है।

यदि ये गांठें अत्यधिक उभरी हुई होती हैं तो ऐसे व्यक्ति जीवन में निराशावादी होते हैं तथा अकाल मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

यदि ये गांठें चिकनी होती हैं तो व्यक्ति जरूरत से ज्यादा भावुक देखे गये हैं।

यदि गांठें रहित उंगलियां हों तो व्यक्ति दार्शनिक होता है।

उंगलियों पर निशान :

उंगलियों पर पाये जाने वाले निशान भी हस्तरेखा विशेषज्ञ के लिये बहुत अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। अपराध शास्त्र में इन चिह्नों का बहुत अधिक महत्व माना गया है। इन चिह्नों के माध्यम से व्यक्ति के चरित्र उसका मनोविज्ञान आदि को अच्छी तरह से जान सकते हैं। इन चिह्नों के माध्यम से ही हम उसके व्यक्तित्व को भली प्रकार से समझ सकते हैं। ये चिह्न निम्न प्रकार से हैं :

१. शंकु :—उंगलियों के ऊपरी भाग अर्थात पोरुओं पर यदि शंकु का चिन्ह दिखाई दे तो ऐसा व्यक्ति मानसिक रूप से अत्यन्त समर्थ एवं श्रेष्ठ होता है। ऐसे व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी उन्नति करते रहते हैं तथा परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करते हैं साथ ही परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको ढ़ाल लेने की क्षमता रखते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन में अपने प्रयत्नों से सफल हो जाते हैं परन्तु वृद्धा-वस्था में ये व्यक्ति हृदय रोगों के भी शिकार पाये जाते हैं।

२. तम्बू :—किसी-किसी व्यक्ति की उंगलियों के पोरुओं पर तम्बू वत चिह्न देखने को मिलते हैं। ऐसे व्यक्ति अधिकतर सहृदय एवं कलाकार होते हैं और अपनी कला के माध्यम से बहुत ऊंचे उठते हैं। परन्तु यह बात भी सही है कि ऐसे व्यक्ति भावुक होते हैं और इन लोगों का अनुचित लाभ उठाया जाता है। मानसिक दृष्टि से ऐसे व्यक्ति असंतुलित होते हैं तथा इनका गृहस्थ जीवन लगभग दुखमय-सा ही रहता है।

३. चक्र :—उंगलियों पर चक्र के निशान पाये जाना शुभ माना गया है। ऐसे व्यक्ति अपने विचारों में स्वतंत्र होते हैं तथा इनके प्रत्येक कार्य में मौलिकता दिखाई देती है। विवेक के बल पर ये समाज में सम्माननीय स्थान भी प्राप्त करते हैं तथा ये रूढ़ि, अज्ञान और पोंगा पन्थी से दूर रहते हैं।

४. मेहराब :—जिन के पोरुओं पर मेहराब के चिह्न पाये जाते हैं, वे व्यक्ति अधिकतर आलसी, शक्की तथा सन्देहशील प्रकृति के होते हैं। ऐसे व्यक्तियों का न तो अपने आप पर भरोसा होता है और न ये किसी दूसरों पर भरोसा करते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने चारों ओर भ्रम का वातावरण बनाये रखते हैं। रहस्यमय कार्यों तथा गुप्तचर से सम्बन्धित कार्यों में ये विशेष सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

५. त्रिभुज :—त्रिभुज का चिह्न व्यक्ति को रहस्यमय बनाता है। ऐसे व्यक्ति योगाभ्यास के द्वारा अपने शरीर को सुगठित बनाने में समर्थ होते हैं। साथ ही साथ ऐसे व्यक्ति एकान्त प्रेमी तथा रूढ़िवादी भी देखे गए हैं। इनके मन में जो बात घर कर जाती है उसे ये सहज में ही नहीं छोड़ते।

६. तारा :—जिन व्यक्तियों की उंगलियों पर तारा या क्रॉस का चिह्न दिखाई दे तो वह व्यक्ति प्रबल भाग्यवादी एवं भाग्यशाली होगा, ऐसा समझ लेना चाहिए। ऐसे व्यक्ति को जीवन में कई बार अप्रत्याशित रूप से धन-लाभ होता है। आर्थिक दृष्टि से ये व्यक्ति जीवन में सुखी रहते हैं।

७. कंदुक :—यदि उंगलियों के पौरुओं पर गोल निशान या कंदुक चिह्न दिखाई दे तो वे व्यक्ति आदर्श प्रेमी और आदर्श मित्र कहे जाते हैं। एक तरफ जहां इनकी रुचि भोग की तरफ होती है वहीं दूसरी ओर वैराग्य की तरफ भी इनका झुकाव होता है। मानसिक दृष्टि से ये अस्थिर होते हैं तथा किसी भी कार्य को पूर्णता के साथ सम्पन्न करना इनके स्वभाव में नहीं होता।

८. जाल :—जाल युक्त उंगलियां इस बात की सूचक होती हैं कि व्यक्ति के जीवन में जरूरत से ज्यादा बाधाएं एवं परेशानियां आयेगीं। यद्यपि इनकी जीवन शक्ति दृढ़ होती है तथा अपनी इच्छा-शक्ति के बल पर ये संकटों से भी सही सलामत निकल आते हैं परन्तु फिर भी इनके जीवन में आराम तथा सुख कम ही रहता है। अधिकतर अपराधवृत्ति के लोगों तथा डाकुओं की उंगलियों पर ऐसे चिह्न आसानी से देखे जा सकते हैं।

९. चतुर्भुज :—यदि उंगली के पौरुए पर वर्ग या चतुर्भुज का चिह्न दिखाई दे तो यह समझ लेना चाहिए कि वह व्यक्ति अपने जीवन में परिश्रमी रहा है और अपने परिश्रम तथा उद्यम के बल पर लक्ष्मी को अपने वश में रखने की सामर्थ्य रखता है। ऐसा व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सम्पन्न तथा सुखी रहता है।

यदि किसी की उंगलियों पर एक से अधिक चिह्न दिखाई दें तो उस व्यक्ति में उनसे सम्बन्धित फलादेशों का मिश्रण समझना चाहिए।

अंगूठा

अंगूठे से भी व्यक्ति के बारे में बहुत कुछ जानने को मिलता है। इसके बारे में भी मैं संक्षेप में यहां प्रकाश डाल रहा हूं :

१. लम्बा अंगूठा :—ऐसे व्यक्ति स्वेच्छाचारी, आत्मनिर्भर तथा दूसरों पर अपना अधिकार रखने वाले होते हैं। इनके जीवन में भावना की बजाय बुद्धि ज्यादा होती है और एक प्रकार से इन्हें बुद्धिजीवी ही कहा जाता है। गणित इंजीनियरिंग आदि कार्यों में इनकी विशेष रुचि रहती है।

२. छोटा अंगूठा :—ऐसा व्यक्ति अपनी बुद्धि से कम काम लेता है अपितु दूसरों से प्रभावित होकर कार्य करता है। इनके जीवन में बुद्धि की अपेक्षा भावना का बाहुल्य रहता है। काव्य, चित्रकला, संगीत आदि में ये विशेष रुचि लेते हैं।
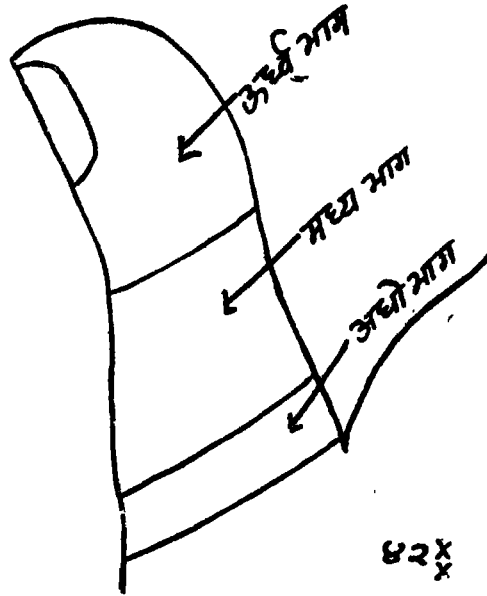
अंगूठे के मुख्य तीन भाग

३. **कड़ा अंगूठा** :—ऐसे व्यक्ति हठी और सतर्क होते हैं। कोई भी बात अपने पेट में पचा लेने की विशेष क्षमता रखते हैं। इनके जीवन में भावुकता का अभाव होता है तथा बुद्धि के बल पर ही ये विशेष रूप से संचालित रहते हैं।

४. **लचकीला अंगूठा** :— जिस व्यक्ति के हाथ में ऐसा अंगूठा होता है, वह व्यक्ति धन-संग्रह करने में विशेष रुचि रखता है तथा परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको ढाल लेने की क्षमता रखता है।

५. **पहला पर्व** : – यदि अंगूठे का पहला पर्व बहुत अधिक लम्बा हो तो वह व्यक्ति निरंकुश होता है जबकि यह पर्व छोटा होने पर उसमें कार्य करने की इच्छा कम होती है। ऐसे व्यक्ति दुर्बल इच्छा-शक्ति वाले देखे गये हैं। यदि अंगूठे का अग्रभाग वर्गाकार हो तो व्यक्ति न्याय-कार्यों में चतुर होता है तथा अपनी न्याय-शीलता के कारण समाज में आदरणीय स्थान प्राप्त करता है। यदि अंगूठे का अग्र-भाग चौड़ा होता है तो व्यक्ति जरूरत से ज्यादा हठी होता है और हठ के कारण ही जीवन में कई बार नुकसान उठा लेता है। यदि अंगूठे का पहला पर्व असाधारण रूप

से लम्बा होता है तो ऐसा व्यक्ति हत्यारा, डाकू या समाज-विरोधी कार्यों में संलग्न रहता है।

६. दूसरा पर्व :—यदि यह पर्व लम्बा होता है तो ऐसा व्यक्ति चतुर, सावधान तथा समाज के कार्यों में आगे बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने वाला होता है। अपने कार्यों से यह समाज में सम्माननीय स्थान प्राप्त करता है। यदि यह पर्व छोटा हो तो व्यक्ति बिना सोचे-समझे काम कर लेता है और उसमें असफल होने पर बराबर पछताता रहता है। जोखिमपूर्ण कार्यों में यह व्यक्ति बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता है। यदि यह पर्व भद्दा हो तो उसमें तर्क-शक्ति का अभाव होता है। यदि यह पर्व पिचका हुआ दिखाई दे तो व्यक्ति का मस्तिष्क अत्यन्त तीव्र एवं संवेदनशील होता है।

वस्तुतः हस्तरेखा विशेषज्ञ के लिए अंगूठा और उंगलियों का अध्ययन अपने-आप में बहुत अधिक महत्त्व रखता है।

पर्वत

हथेली का अध्ययन करते समय उस पर पाये जाने वाले पर्वतों का विशेष महत्व है। क्योंकि पर्वतों के माध्यम से ही विभिन्न रेखाएं बनती हैं और उनका विकास हो पाता है। पर्वतों का नामकरण ग्रहों के नामकरण से हुआ है और जिस ग्रह में जो गुण विशेष रूप से होते हैं, वे ही गुण उन पर्वतों के उभार से ज्ञात किये जा सकते हैं। उदाहरणार्थ सूर्य सम्मान, प्रसिद्धि, यश आदि का कारक ग्रह है। अतः यदि हथेली में सूर्य पर्वत विकसित है तो निश्चय ही उस व्यक्ति को विशेष सम्मान तथा आदर मिलेगा, परन्तु यदि हथेली में सूर्य पर्वत का विकास नहीं हुआ है तो वह व्यक्ति भले ही कितने ही ऊंचे स्तर पर पहुंच जाय, उसको वांछनीय सम्मान अथवा ख्याति नहीं मिल पाती।

हथेली पर पर्वतों के स्थान

अनुभव में यह भी आया है, कि यदि जन्म-कुण्डली में कोई ग्रह विशेष बलवान है तो वह ग्रह हथेली में भी बलवान दिखाई देता है अर्थात् उसका पर्वत विकसित

स्पष्ट एवं सुघड़ होता है। एक प्रकार से देखा जाय तो हथेली के पर्वतों में और जन्म कुण्डली के ग्रहों में किसी प्रकार का कोई विशेष अन्तर नहीं होता, इसीलिए कहा जाता है कि हथेली की रेखाओं और पर्वतों का अध्ययन करने से व्यक्ति की जन्म-कुण्डली बनायी जा सकती है।

पर्वतों के तीन भेद हैं :

१. **सामान्य पर्वत**

२. **विकसित पर्वत**

३. **अविकसित पर्वत**

यदि हथेली में पर्वत काफी ऊंचे उठे हुए मांसल, स्वस्थ और लालिमा लिये हुए होते हैं तो वे विकसित कहलाते हैं। इसके विपरीत अविकसित पर्वत सामान्यतः दिखाई ही नहीं देते। सामान्य पर्वत वे कहलाते हैं, जो न अविकसित की श्रेणी में आते हैं और न जिन्हें पूर्णतः विकसित माना जा सकता है।

ग्रह, उनके अंग्रेजी नाम तथा संबंधित प्रभावों का परिचय निम्न प्रकार से है::

१. **बृहस्पति पर्वत** :—इसे अंग्रेजी में 'जुपिटर' कहते हैं। यह सौम्य ग्रह कहलाता है तथा यह पर्वत राज्य सेवा, इच्छाओं के प्रदर्शन आदि से संबंधित होता है।

२. **शनि पर्वत** :—अंग्रेजी में इसे 'सेटर्न' कहते हैं तथा यह मननशीलता ,एकान्त-प्रियता, रोग, चिन्ता, मशीनरी व व्यापार आदि से संबंधित है।

३. **सूर्य पर्वत** :—इसको अंग्रेजी भाषा में 'सन' कहते हैं। इसके माध्यम से राज्य, मानसिक उन्नति, प्रसिद्धि, सम्मान, यश तथा विविध कला-कौशल का अध्ययन किया जाता है।

४. **बुध पर्वत** :—इसे अंग्रेजी में 'मरकरी' कहते हैं। वैज्ञानिक उन्नति, व्यापार, गणित संबंधी कार्य आदि तथ्यों का अध्ययन इसी ग्रह के माध्यम से किया जाता है।

५. **हर्षल पर्वत** :—यह नाम अंग्रेजी का है, हिन्दी में इसे 'प्रजापति' कहते हैं। इसका संबंध शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं से होता है।

६. **नेपच्युन पर्वत** :—हिन्दी में इसे वरुण ग्रह तथा अंग्रेजी में 'नेपच्युन' कहते हैं। व्यक्ति की विद्वता, उसका व्यक्तित्व, दूसरों पर उसका प्रभाव तथा उसका पुरुषार्थ आदि इसी पर्वत के माध्यम से जाना जाता है।

७. **चन्द्र पर्वत** :—इसे अंग्रेजी में 'मून' कहते हैं तथा हथेली में इस पर्वत के माध्यम से कल्पना, विशालता, सहृदयता, मानसिक उत्थान तथा समुद्र पारीय यात्राओं का अध्ययन किया जाता है।

८. **शुक्र पर्वत** :—अंग्रेजी में यह ग्रह 'वीनस' कहलाता है। सुन्दरता, प्रेम, शान-शौकत, तथा ऐश्वर्य-भोग आदि का संबंध इसी ग्रह से है।

६. **मंगल पर्वत** :—यह अंग्रेजी में 'मार्स' के नाम से पुकारा जाता है। युद्ध जीवट, शक्ति, परिश्रम, पुरुषोचित गुण आदि का अध्ययन इस ग्रह के माध्यम से किया जाता है।

१०. **राहू पर्वत** :—इसको अंग्रेजी में 'ड्रेगन्स हेड' के नाम से पुकारते हैं। आकस्मिक धन-प्राप्ति, लॉटरी, हार्ट एटेक या अचानक घटित होने वाली घटनाओं का संबंध इसी ग्रह से है।

११. **केतु पर्वत** :—इसे अंग्रेजी में 'ड्रेगन्स टेल' कहते हैं। हाथ पर इस ग्रह से धन, भौतिक उन्नति एवं बैंक बैलेन्स आदि का अध्ययन किया जाता है।

१२. **प्लूटो पर्वत** :—इसे अंग्रेजी में 'प्लूटो' तथा हिन्दी में इन्द्र के नाम से पुकारते हैं। मानसिक चिन्ता तथा अध्यात्मिक उन्नति के बारे में इसी ग्रह से जान सकते हैं।

ग्रहों का क्षेत्र :

हस्तरेखा विज्ञान में हथेली में समस्त ग्रहों के स्थान निर्धारित हैं और सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर इनको पहचाना जा सकता है।

१. **बृहस्पति** :— हथेली में इसका स्थान तर्जनी उंगली के मूल में तथा मंगल पर्वत से ऊपर होता है। यह स्वभाव से अधिकार, नेतृत्व, संचालन तथा लेखन का देवता विशेष रूप से माना गया है। गुरु का पर्वत इन तथ्यों को भली प्रकार से स्पष्ट करता है।

जिन हथेलियों में गुरु का पर्वत सबसे अधिक उभरा हुआ और स्पष्ट होता है उनमें देव-तुल्य सभी गुण पाये जाते हैं। ऐसा व्यक्ति जहां स्वयं की उन्नति करता है, वहां दूसरों की भी उन्नति देने में सहायक रहता है। ऐसे व्यक्ति अपने स्वाभिमान की रक्षा विशेष रूप से करते हैं। ये विद्वान न्याय करने वाले, अपने वचनों का निर्वाह करने वाले, परोपकारी, तथा समाज में माननीय होते हैं। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी ये सहसा विचलित नहीं होते अपितु देश के जो भी उच्च न्यायाधीश या उच्च पदाधिकारी व्यक्ति हैं उनमें निश्चय ही गुरु पर्वत विकसित अवस्था में होना चाहिए। ऐसे लोगों में यह विशेष क्षमता होती है कि वे जनता को अपने विचारों के अनुकूल बना लेते हैं। इनमें धार्मिक भावनाएं जरूरत से ज्यादा होती हैं।

यदि गुरु पर्वत अल्पविकसित या अविकसित होता है तो उन व्यक्तियों में उपर्युक्त गुणों की न्यूनता समझनी चाहिए। शारीरिक दृष्टि से ये व्यक्ति साधारण डील-डौल के स्वस्थ तथा हंस-मुख होते हैं। वाचन तथा भाषण-कला में ये व्यक्ति पटु

होते हैं तथा हृदय से ऐसे व्यक्ति दयालु और परोपकारी कहे जाते हैं। आर्थिक पक्ष की अपेक्षा सम्मान तथा यश-प्राप्ति की ओर इनका झुकाव कुछ ज्यादा ही होता है। अधिकार, स्वतंत्रता और नेतृत्व के इनमें विशेष गुण पाये जाते हैं।

विपरीत योनि के प्रति इनके मन में कोमल भावनाएं होती हैं, सुन्दर तथा सभ्य स्त्रियों से इनका मधुर सम्बन्ध रहता है। यदि स्त्रियों के हाथों में यह पर्वत विकसित अवस्था में होता है तो उनमें समर्पण की भावना विशेष रूप से पाई जाती है।

यदि गुरु पर्वत का झुकाव शनि की ओर हो तो ऐसा व्यक्ति चिन्तनशील तथा अपने ही कार्यों में लगा रहने वाला होता है परन्तु जीवन में पूर्ण सफलता न मिल पाने के कारण धीरे-धीरे उनमें निराशा की भावना आने लग जाती है। स्वभाव से ये व्यक्ति गम्भीर तथा अड़ियल प्रकृति के होते हैं। यदि गुरु पर्वत नीचे की तरफ खिसका हुआ हो तो व्यक्ति को जीवन में कई बार बदनामी का सामना करना पड़ता है परन्तु साहित्यिक क्षेत्र में ऐसे व्यक्ति पूर्ण सफल होते देखे गये हैं।

यदि गुरु पर्वत जरूरत से ज्यादा विकसित हो तो ऐसा व्यक्ति स्वार्थी, घमंडी तथा स्वेच्छाचारी होता है।

जिनके हाथों में गुरु पर्वत का अभाव होता है, उनके जीवन में आत्म-सम्मान की कमी रहती है। माता-पिता का सुख उन्हें बहुत कम मिल पाता है तथा वह निम्न विचारों से सम्पन्न हलके स्तर के मित्रों से सम्बन्धित रहते हैं।

यदि इस पर्वत का उभार सामान्यतः ठीक हो तो व्यक्ति में आगे बढ़ने की भावना होती है परन्तु इनका विवाह शीघ्र हो जाता है और इनका गृहस्थ-जीवन सामान्यतः सुखमय रहता है।

यदि उंगलियां नुकीली हों तथा गुरु पर्वत विकसित हो तो वह व्यक्ति अंधविश्वासी होता है। इसी प्रकार वर्गाकार उंगलियों के साथ विकसित गुरु पर्वत हो तो वह एक प्रकार से जीवन में निरंकुश एवं अत्याचारी बन जाता है। यदि उंगलियां बहुत लम्बी हों और इस पर्वत का विकास ठीक प्रकार से हुआ हो तो वह व्यक्ति अपव्ययी तथा भोगी होता है। यदि गुरु तथा शनि पर्वत बराबर उभरे हुए हों तथा लगभग एक-दूसरे में मिल गये हों तो वह व्यक्ति प्रबल भाग्यशाली होता है तथा जीवन में विशेष सफलता प्राप्त करता है।

वस्तुतः गुरु पर्वत जीवन में अत्यधिक सहायक तथा उन्नति की ओर अग्रसर करने वाला पर्वत कहा जाता है।

२. शनि : इसका आधार मध्यमा उंगली के मूल में होता है। हथेली पर इस पर्वत का विकास असाधारण प्रवृत्तियों का सूचक कहा जाता है। यदि हाथ में इस पर्वत का अभाव हो तो व्यक्ति जीवन में विशेष सफलता या सम्मान प्राप्त नहीं कर पाता।

मध्यमा उंगली को 'भाग्य की देवी' कहा जाता है, क्योंकि भाग्य रेखा या 'फेट लाइन' की समाप्ति इसी उंगली के मूल में होती है। यदि शनि ग्रह पूर्णविकसित होता है तो व्यक्ति प्रबल भाग्यवान होता है तथा जीवन में अपने प्रयत्नों से बहुत अधिक ऊंचा उठता है। विकसित पर्वत होने पर ऐसा व्यक्ति एकान्त-प्रिय तथा निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला होता है। वह अपने कार्यों में अथवा लक्ष्य में इतना अधिक डूब जाता है कि वह घर-गृहस्थी की चिंता ही नहीं करता। स्वभाव से ऐसे व्यक्ति चिड़चिड़े तथा सन्देहशील प्रवृत्ति के होते हैं। ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों ये व्यक्ति भी रहस्यवादी बन जाते हैं। शनि पर्वत प्रधान व्यक्ति, जादूगर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, साहित्यकार अथवा रसायनशास्त्री होते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण मितव्ययी होते हैं तथा अचल सम्पत्ति में ज्यादा विश्वास रखते हैं। संगीत, नृत्य आदि कार्यों में इनका रुझान कम रहता है। सन्देहशीलता इनके जीवन में बचपन से ही होती है और अपनी पत्नी तथा पुत्रों पर भी सन्देह की दृष्टि रखने मे नहीं चूकते।

यदि यह पर्वत अत्यधिक विकसित होता है तो व्यक्ति अपने जीवन में आत्म-हत्या कर लेता है। डाकू, ठग, लुटेरे आदि व्यक्तियों के हाथों में यह पर्वत जरूरत से ज्यादा विकसित होता है। ऐसे व्यक्तियों का पर्वत साधारणतः पीलापन लिये हुए होता है। इनकी हथेलियां तथा चमड़ी पीली होती हैं तथा इनके स्वभाव में चिड़चिडा-पन स्पष्टतः झलकता है।

यदि शनि का पर्वत गुरु पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो यह शुभ संकेत कहा जाता है। ऐसे व्यक्ति समाज में आदरणीय स्थान प्राप्त करते हैं तथा समाज में श्रेष्ठ रूप में देखे जाते हैं। परन्तु यदि शनि पर्वत का झुकाव सूर्य की ओर हो तो ऐसे व्यक्ति आलसी, निर्धन तथा भाग्य के भरोसे जीवित रहने वाले होते हैं। इनमें जरूरत से ज्यादा निराशा होती है तथा वे प्रत्येक कार्य का अन्धकार पक्ष ही देखते हैं। परिवार वालों से उनको विशेष लाभ नहीं मिल पाता, व्यापार में ये हानि उठाते हैं।

यदि शनि पर्वत पर जरूरत से ज्यादा रेखाएं हों तो व्यक्ति कायर तथा अत्य-धिक भोगी होता है। यदि शनि पर्वत तथा बुध पर्वत दोनों ही विकसित हों तो वह व्यक्ति एक सफल वैद्य अथवा व्यापारी बनता है और उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

यदि हथेली में शनि पर्वत का अभाव होता है तो उस व्यक्ति का जीवन महत्त्व हीन-सा होता है। यदि यह पर्वत सामान्य रूप से उभरा हुआ हो तो वह व्यक्ति जरू-रत से ज्यादा भाग्य पर विश्वास करने वाला तथा अपने कार्यों में असफलता प्राप्त करने वाला होता है। ऐसे व्यक्तियों के जीवन में मित्रों की संख्या बहुत कम होती है। स्वभाव से ये हठी तथा अधार्मिक होते हैं।

यदि मध्यमा उंगली का सिरा नुकीला हो तथा शनि पर्वत विकसित हो तो व्यक्ति कल्पना-प्रिय होता है, परन्तु यदि उंगली का सिरा वर्गाकार हो तो वह व्यक्ति कृषि अथवा रसायन के क्षेत्र में विशेष उन्नति करता है।

३. सूर्य :— अनामिका उंगली के मूल में तथा हृदय-रेखा के ऊपर का जो भाग होता है वह सूर्य पर्वत कहलाता है। ऐसा पर्वत व्यक्ति की सफलता का सूचक होता है। यदि हाथ में सूर्य पर्वत का अभाव हो तो व्यक्ति अत्यन्त साधारण जीवन व्यतीत करता है। इसलिये जिसके हाथ में सूर्य पर्वत नहीं होता वह एक प्रकार से गुमनाम जिन्दगी ही व्यतीत करता है।

इस पर्वत का विकास मानव के लिए अत्यन्त आवश्यक है और इस पर्वत के विकास से मानव प्रतिभावान् और यशस्वी बनता है। यदि यह पर्वत पूर्ण उन्नत, विकसित तथा गुलाबीपन लिये हुए होता है तो वह व्यक्ति अपने जीवन में अत्यन्त ऊंचे पद पर पहुंचता है। ऐसा व्यक्ति स्वभाव से हंस-मुख तथा मित्रों में घुल-मिल कर काम करने वाला होता है। इनकी बातें और इनके कार्य समाचार बन जाते हैं तथा जनसाधारण में ये व्यक्ति अत्यन्त लोकप्रिय होते हैं। ऐसे व्यक्ति सफल कलाकार, श्रेष्ठ संगीतज्ञ, तथा यशस्वी चित्रकार होते हैं। इन लोगों में प्रतिभा जन्मजात होती है। एक दूसरे के व्यवहार में ये व्यक्ति ईमानदारी बरतते हैं तथा वैभवपूर्ण जीवन बिताने के ये इच्छुक होते हैं। सही रूप में देखा जाय तो ये व्यक्ति व्यापार में विशेष लाभ उठाते हैं तथा इनके जीवन में आय के स्रोत एक से अधिक होते हैं।

ये पूर्ण रूप से भौतिक होते हैं तथा सामने वाले व्यक्ति के मन की थाह तक पहुंचने में अत्यन्त सक्षम होते हैं। अनपढ़ तथा सामान्य घराने के व्यक्ति की हथेली में भी यदि सूर्य पर्वत विकसित हो तो वह व्यक्ति श्रेष्ठ धनी और सम्पन्न होता है। आकस्मिक धन-प्राप्ति इनके जीवन में कई बार होती है तथा इनका रहन-सहन अत्यंत राजसी तथा वैभवपूर्ण होता है।

हृदय से ये व्यक्ति साफ होते हैं तथा अपनी गलती को स्वीकार करने में भी हिचकिचाते नहीं। सुलझे हुए मस्तिष्क के धनी ये अपना विरोध सहन नहीं कर पाते तथा खरी-खरी बात सामने वाले के मुंह पर कह देने में विश्वास रखते हैं। ऐसे व्यक्ति ही जीवन में महत्त्वपूर्ण पदों पर पहुंच सकते हैं तथा कुछ नया कार्य करके दिखा सकते हैं।

यदि हथेली में सूर्य पर्वत नहीं होता तो ऐसा व्यक्ति मन्द-बुद्धि तथा मूर्ख होता है। यदि यह पर्वत कम विकसित होता है तो उस व्यक्ति में सौंदर्य के प्रति रुचि तो होती है परन्तु वे उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं कर पाते। अत्यन्त श्रेष्ठ तथा सुविकसित सूर्य पर्वत आत्म-विश्वास, सज्जनता, दया, उदारता, तथा धन-वैभव, का सूचक

होता है। ऐसे व्यक्ति सभा वगैरह में लोगों को प्रभावित करने की विशेष क्षमता रखते हैं। इनका आदर बहुत ऊंचा होता है।

यदि यह पर्वत जरूरत से ज्यादा विकसित हो तो वह व्यक्ति अत्यधिक घमण्ड करने वाला तथा झूठी प्रशंसा करने वाला होता है। ऐसे व्यक्तियों के मित्र सामान्य स्तर के लोग होते हैं। ये फिजूल खर्च तथा बात बात पर झगड़ने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं कर पाते।

यदि सूर्य पर्वत शनि की ओर झुका हुआ हो तो ऐसे व्यक्ति एकान्त-प्रिय तथा निराशावादी भावनाओं से ग्रस्त रहते हैं। इनके जीवन में धन की कमी हमेशा बनी रहती है। किसी भी कार्य को ये पूर्ण जोश से प्रारम्भ करते हैं, परन्तु जितनी उमंग और जोश से ये कार्य प्रारंभ करते हैं उसी उमंग से उस कार्य को पूरा नहीं कर पाते। कार्य को बीच में ही अधूरा छोड़कर किसी नये कार्य की ओर लग जाते हैं। वस्तुतः शनि की ओर झुका हुआ पर्वत भाग्यहीनता का सूचक होता है।

यदि यह पर्वत बुध की ओर झुका हुआ हो तो व्यक्ति एक सफल व्यापारी तथा श्रेष्ठ धनवान होता है। ऐसे व्यक्ति समाज में सम्माननीय स्थान प्राप्त करने में सफल होते हैं।

यदि सूर्य की उंगली बेडौल होती है तो वह सूर्य के गुणों में न्यूनता ला देती है। ऐसे व्यक्ति में बदले की भावना बढ़ जाती है तथा लोगों से व्यवहार करते समय वह सावधानी नहीं बरतता, यदि सूर्य पर्वत पर जरूरत से ज्यादा रेखाएं हों तो वह व्यक्ति बीमार रहता है। यदि सूर्य उंगली का सिरा कोणदार हो तथा पर्वत उभरा हुआ हो तो वह व्यक्ति कला के क्षेत्र में विशेष रुचि लेता है। वर्गाकार सिरे, व्यावहारिक कुशलता तथा नुकीले सिरे आदर्शवादिता के सूचक कहे जाते हैं।

४. **बुध** :—कनिष्ठिका उंगली के मूल में जो भाग फूला हुआ अनुभव होता है वही बुध पर्वत कहलाता है। यह पर्वत भौतिक सम्पदा एवं भौतिक समृद्धि का सूचक होता है इसीलिये आज के युग में इसका महत्त्व जरूरत से ज्यादा माना जाता है। बुध प्रधान व्यक्ति अपने जीवन में जिस कार्य में भी हाथ डालते हैं उसमें पूरी-पूरी सफलता प्राप्त कर लेते हैं। ये व्यक्ति उर्वर मस्तिष्क वाले, तीव्र बुद्धि, तथा परि-स्थितियों को भली प्रकार से समझने वाले होते हैं। अपने जीवन में ये व्यक्ति जो भी कार्य करते हैं उसे योजनाबद्ध तरीके से करते हैं और इनके हाथों से जो भी कार्य प्रारंभ होता है उसे पूरा होना ही पड़ता है।

बुध पर्वत का जरूरत से ज्यादा उभार उचित नहीं कहा जा सकता। जिन हथेलियों में बुध पर्वत जरूरत से ज्यादा विकसित होता है वह चालाक और धूर्त होता है, तथा ऐसे व्यक्ति लोगों को धोखा देने में पटु होते हैं। यदि बुध पर्वत

सामान्य विकसित हो और उस पर वर्ग के आकार का चिन्ह दिखाई दे जाय तो वह व्यक्ति बहुत ऊंचे स्तर का अपराधी होगा, ऐसा समझना चाहिए । ये व्यक्ति कानून तोड़ने में विश्वास रखते हैं तथा अस्थिर मति वाले ऐसे व्यक्ति समाज-विरोधी कार्य करने में चतुर होते हैं ।
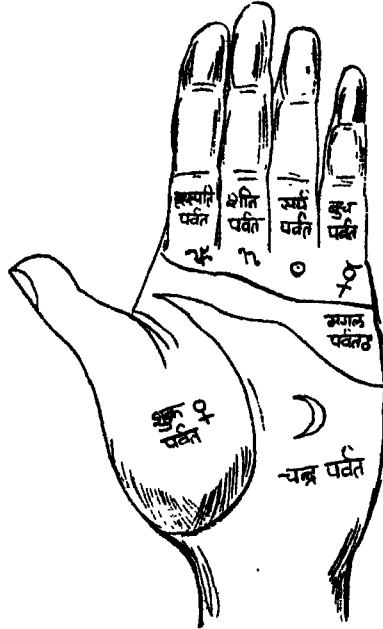
इनके हाथो में बुध पर्वत सही रूप से विकसित होता है, वे मनोविज्ञान के क्षेत्र में माहिर होते हैं । तथा सामने वाले व्यक्ति को किस प्रकार प्रभावित करना चाहिए इस बात को ये भली प्रकार से जान लेते हैं । ऐसे व्यक्ति व्यापारिक कार्यों में विशेष सफलता प्राप्त करते हैं ।

जिनके हाथों में बुध पर्वत विकसित होता है वे व्यक्ति अवसरवादी होते हैं ठीक समय की तलाश में रहते हैं, और उस समय का पूरा-पूरा उपयोग करने में ये दक्ष माने जाते हैं । ऐसे व्यक्ति सफल वक्ता होते हैं ।

एक प्रकार से देखा जाय तो ऐसे व्यक्ति पूर्णत: भौतिकवादी कहे जाते हैं । धन-संचय करने में ये उचित-अनुचित आदि का कोई ख्याल नहीं रखते । दर्शन, विज्ञान, गणित आदि कार्यों में ये विशेष रुचि लेते हैं । तथा ऐसे व्यक्ति जीवन में श्रेष्ठ वकील, श्रेष्ठ वक्ता तथा श्रेष्ठ अभिनेता होते हैं । लेखन के क्षेत्र में भी ऐसे व्यक्ति

प्रसिद्धि पाते देखे गये हैं। यात्राओं के ये शौकीन होते हैं तथा घूमना इनकी प्रिय हॉबी होती है। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करते हैं।

यदि बुध पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ होता है तो ऐसे व्यक्ति धन के पीछे पागल रहते हैं। और 'येन केन प्रकारेण' धन-संचय करना ही ये अपने जीवन का उद्देश्य मानते हैं। यदि बुध पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो ऐसे व्यक्ति जीवन में आसानी से पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेते हैं। साहित्यकार व वैज्ञानिक आदि के हाथों में ऐसा ही बुध पर्वत देखा जाता है। यदि व्यक्ति के हाथ की हथेली लचीली हो तथा उस पर बुध पर्वत का पूरा उभार हो तो व्यक्ति अपने प्रयत्नों से लाखों रुपया इकट्ठा करता है। यदि हथेली पर बुध पर्वत का अभाव हो तो उसका जीवन दरिद्रता में ही व्यतीत होता है। यदि सामान्य रूप से बुध पर्वत विकसित हो तो आविष्कार तथा वैज्ञानिक कार्यों में उसकी रुचि होती है, यदि कनिष्ठिका उंगली का सिरा नुकीला हो तथा बुध पर्वत विकसित हो तो वह व्यक्ति वाक्पटु होता है। यदि सिरा वर्गाकार हो तो व्यक्ति में तर्क-बुद्धि की बाहुल्यता रहती है। चपटा सिरा भाषण-कला में विशेष दक्षता प्रदान करता है, यदि कनिष्ठिका उंगली छोटी हो तो व्यक्ति सूक्ष्म बुद्धि रखने वाला होता है। लम्बी उंगलियों के साथ विकसित बुध पर्वत हो तो वह व्यक्ति स्त्रियों के प्रति विशेष आसक्ति रखने वाला होता है। यदि यह उंगली गांठदार हो तो ऐसा व्यक्ति दृढ़संकल्प का धनी होता है। यदि हाथों की उंगलियां लम्बी और पीछे की ओर मुड़ी हुई हों तो ऐसा व्यक्ति धोखा देने में विशेष माहिर होता है। यदि बुध पर्वत हथेली के बाहर की तरफ झुका हुआ हो तो वह व्यापार के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है। यदि बुध पर्वत अपने आप में पूर्णतः श्रेष्ठ एवं विकसित हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

५. शुक्र :—अंगूठे के दूसरे पौरुए के नीचे तथा आयु-रेखा से जो घिरा हुआ स्थान होता है उसे हस्तरेखा विशेषज्ञ शुक्र पर्वत के नाम से सम्बोधित करते हैं। यूनान में शुक्र को 'सुन्दरता की देवी' कहा गया है। जिसके हाथ में शुक्र पर्वत श्रेष्ठ स्तर का होता है वह व्यक्ति सुन्दर तथा पूर्ण सभ्य होता है। ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य जरूरत से ज्यादा अच्छा होता है उसके व्यक्तित्व का प्रभाव सामने वाले व्यक्ति पर विशेष रूप से रहता है। ऐसे व्यक्ति में साहस और हिम्मत की कमी नहीं रहती। यदि किसी व्यक्ति के हाथ में यह पर्वत कम विकसित हो तो वह व्यक्ति कायर तथा दब्बू स्वभाव का होता है।

जिन लोगों के हाथों में शुक्र पर्वत जरूरत से ज्यादा विकसित होता है, वे व्यक्ति भोगी तथा विपरीत सैक्स के प्रति लालायित रहते हैं। यदि किसी के हाथ में शुक्र पर्वत का अभाव होता है तो वह व्यक्ति वीतरागी, साधु तथा संन्यासी की तरह होता है। गृहस्थ जीवन में उसकी रुचि नहीं के बराबर होती है। यदि शुक्र का विकास

पूरी तरह से हुआ हो परन्तु उसकी मस्तिष्क रेखा सन्तुलित न हो तो वह व्यक्ति प्रेम तथा भोग के क्षेत्र में बदनामी प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्तियों का प्रेम वासना-प्रधान ही कहा जा सकता है।

शुक्र पर्वत का उभार व्यक्ति को तेजस्वी और लावण्यमान बना देता है। इसके चेहरे में कुछ ऐसा आकर्षण होता है, जिसकी वजह से लोग बरबस उसकी ओर आकृष्ट रहते हैं। मुसीबतों को भी ये व्यक्ति हंसते-हंसते सहन करते हैं तथा अपने कार्यों एवं कर्त्तव्यों के प्रति पूर्णतः जागरूक रहते हैं। सुन्दर एवं कलात्मक वस्तुओं के प्रति इनका रुझान स्वाभाविक ही होता है।

यदि हथेली खुरदरी हो तथा उस पर शुक्र पर्वत बहुत ज्यादा विकसित हो तो वह व्यक्ति भोगी तथा ऐयाशी किस्म का होता है। ऐसे व्यक्ति भौतिक सुखों के दास होते हैं परन्तु यदि हथेली चिकनी एवं मुलायम हो तथा उस पर शुक्र पर्वत पूर्णतः विकसित हो तो ऐसे व्यक्ति एक सफल प्रेमी तथा उत्कृष्ट कोटि के कवि होते हैं।

शुक्र पर्वत की अनुपस्थिति व्यक्ति के जीवन में दुख तथा परेशानियां भर देती है। यदि शुक्र पर्वत सामान्य रूप से विकसित हो तो वह व्यक्ति सुन्दर, शुद्ध प्रेम भाव रखने वाला तथा संवेदनशील होता है। यदि शुक्र पर्वत मंगल की ओर झुका हुआ हो तो वह प्रेम के क्षेत्र में कोमलता नहीं बरतता। उनके जीव में बलात्कार की घटनाएं जरूरत से ज्यादा होती हैं।

शुक्र प्रधान व्यक्तियों को गले का रोग विशेष रूप से रहता है। ऐसे व्यक्ति ईश्वर पर आस्था नहीं रखते। इनके जीवन में मित्रों की संख्या बहुत अधिक होती है तथा ये अपने जीवन में प्रेम और सौन्दर्य को ही अपना सब-कुछ समझते हैं।

यदि अंगूठे का सिरा कोणदार हो तथा शुक्र पर्वत विकसित हो तो वह व्यक्ति कलात्मक रुचि वाला होता है। यदि अंगूठे का सिरा वर्गाकार हो तो ऐसा व्यक्ति समझदार और तर्क से काम लेने वाला माना जाता है, फैला हुआ सिरा व्यक्ति में दयालुता की भावना भर देता है।

वस्तुतः शुक्र प्रधान व्यक्ति ही इस सुन्दर दुनिया को अच्छी तरह से पहचान सकते हैं और उसका आनन्द उठा सकते हैं।

६. **मंगल** :—हथेली में दो मंगल होते हैं, जिन्हें उन्नत मंगल तथा अवनत मंगल कहा जाता है।

जीवन रेखा के प्रारम्भिक स्थान के नीचे और उससे घिरा हुआ शुक्र पर्वत के ऊपर जो फैला हुआ भाग है वही मंगल पर्वत कहलाता है। मूल रूप से यह पर्वत युद्ध का प्रतीक माना जाता है। मंगल प्रधान व्यक्ति साहसी, निडर तथा शक्तिशाली होते हैं।

जिन हाथों में मंगल पर्वत बलवान होता है, वे कायर या दब्बू नहीं होते। ऐसे व्यक्तियों के जीवन में दृढ़ता और सन्तुलन होता है। अगर हथेली में मंगल पर्वत का अभाव होता है तो उस व्यक्ति को कायर समझ लेना चाहिये।

मंगल पर्वत प्रधान व्यक्ति हृष्टपुष्ट तथा पूरी लम्बाई लिये हुये होते हैं। धीरजता तथा साहस इनका प्रधान गुण होता है। जीवन में ये अन्याय तो रत्ती-भर भी सहन नहीं करते। ऐसे व्यक्ति पुलिस विभाग में या मिलिट्री में अत्यन्त ऊंचे पद पर पहुंचते हैं। शासन करने का इनमें जन्मजात गुण होता है तथा ऐसे ही व्यक्ति समाज में नेतृत्व करने में सक्षम होते हैं।

यदि मंगल पर्वत बहुत ज्यादा विकसित हो तो वह व्यक्ति दुराचारी, अत्याचारी तथा अपराधी होता है। समाज-विरोधी कार्यों में वह हमेशा आगे रहता है। उसका स्वभाव लड़ाकू होता है। अपने बात को जबरदस्ती से मनवाने का यह आदी होता है। ऐसे व्यक्ति बात-बात पर लड़ने वाले, अपने अधिकारों के लिए सब कुछ बलिदान करने वाले, लम्पट तथा धूर्त होते हैं।

यदि मंगल पर्वत का झुकाव शुक्र क्षेत्र की ओर होता है तो यह बात निश्चित समझनी चाहिए कि उस व्यक्ति में सद्‌गुणों की अपेक्षा दुर्गुण विशेष होंगे। यही नहीं अपितु प्रत्येक आवेग की तीव्रता होगी। ऐसे व्यक्ति यदि शत्रुता रखेंगे तो भयंकर शत्रु होंगे और यदि मित्रता का व्यवहार करेंगे तो अपना सब कुछ बलिदान करने के लिए तैयार रहेंगे। ऐसे व्यक्ति झूठी शान-शौकत, व्यर्थ का आडंबर तथा प्रदर्शन-प्रिय होते हैं। यद्यपि ये स्वयं डरपोक होते हैं परन्तु दूसरों को गीदड़ भभकी देकर काम निकालने में माहिर होते हैं।

सही रूप में देखा जाय तो ऐसे व्यक्ति रूखे 'कर्कश एवं कठोर' होते हैं। यदि मंगल पर्वत पर रेखाएं विशेष रूप से दिखाई दें तो यह समझ लेना चाहिए कि ऐसा व्यक्ति युद्ध-प्रिय होता है। आगे चलकर इस प्रकार का व्यक्ति या तो सेनाध्यक्ष बनता है अथवा भयंकर डाकू बन जाता है। जोश दिलाने पर ये सब कुछ बलिदान करने के लिए तैयार रहते हैं। मंगल पर्वत पर त्रिकोण, चतुर्भुज या किसी प्रकार के बिन्दु शुभ नहीं कहे जाते। ऐसे चिह्न व्यक्ति के रोग को स्पष्ट करते हैं और रक्त से सम्बन्धित बीमारी उनके जीवन में बराबर बनी रहती है।

यदि मंगल पर्वत भली प्रकार से विकसित हो तथा साथ ही हथेली का रंग भी लालिमा लिये हुए हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही ऊंचा पद प्राप्त करता है। अपने जीवन में वह संघर्षों एवं बाधाओं की परवाह न कर के अपने लक्ष्य तक पहुंच जाने में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। पीला रंग व्यक्ति को अपराध भावना की ओर प्रवृत्त करता है। यदि हथेली का रंग सामान्य नीलापन लिये हुए हो तो ऐसा व्यक्ति गठिया का रोगी होता है।

ऐसे व्यक्ति महत्त्वाकांक्षी होते हैं और अपना लक्ष्य इन्हें बराबर ध्यान में रहता है। जीवन में ये अपने लक्ष्य की ओर बराबर बढ़ते रहते हैं। यदि ये व्यापार के क्षेत्र में प्रवेश करें तो मेडिकल आदि में विशेष सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

यदि मंगल पर्वत उभरा हुआ हो और हाथ की उंगलियां कोणदार हों तो व्यक्ति आदर्श-प्रिय होता है। वर्गाकार उंगलियां इस बात की सूचक होती हैं कि वे व्यक्ति व्यावहारिक तथा जीवन में फूंक-फूंक कर कदम रखने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति चतुर और चालाक होते हैं तथा अपने हितों की ओर विशेष ध्यान रखते हैं। यदि उंगलियां गठीली हों तथा मंगल पर्वत उन्नत हो तो व्यक्ति तर्क करने वाला तथा अपने जीवन में सोच-समझ कर कार्य करने वाला होता है। यदि मंगल पर्वत पर क्रॉस का चिह्न दिखाई दे तो उस व्यक्ति की मृत्यु निश्चय ही युद्ध में या चाकू लगने से होती है। यदि मंगल पर्वत पर आड़ी-तिरछी रेखाएं हों और उससे जाल-सा बन गया हो तो निश्चय ही उसकी मृत्यु दुर्घटना के फलस्वरूप होती है।

वस्तुतः मंगल पर्वत से ही व्यक्ति साहसी, निर्भीक, और स्पष्ट वक्ता बनता है।

७. **चन्द्र** : चन्द्रमा मनुष्य का सबसे अधिक निकटतम ग्रह है। इसलिए इसका प्रभाव भी मनुष्य पर सबसे अधिक पड़ता है। सही रूप में यह ग्रह 'सुन्दरता और कल्पना' का ग्रह कहा जाता है।

हथेली में आयु रेखा से बायीं ओर तथा मणिबन्ध से ऊपर एवं नेपच्युन क्षेत्र से नीचे भाग्य रेखा से मिला हुआ जो क्षेत्र है, वह चन्द्र क्षेत्र अथवा चन्द्र पर्वत कहलाता है। जिन व्यक्तियों के हाथों में चन्द्र पर्वत विकसित होता है, वे व्यक्ति कोमल, रसिक एवं भावुक होते हैं।

जिनके हाथों में चन्द्र-पर्वत पूर्णतः उभरा हुआ होता है वे प्रकृति-प्रिय एवं सौन्दर्यप्रिय होते हैं। ऐसे लोग वास्तविक जीवन से हट कर स्वप्नलोक में ही विचरण करते हैं। इनके जीवन में कल्पनाओं का कोई अभाव नहीं रहता। एक प्रकार से ये व्यक्ति अपने आप में ही खोये हुए होते हैं। जीवन की कठोरताओं को तथा मुसीबतों को ये झेल नहीं पाते और थोड़ी-सी भी परेशानी आने पर ये विचलित हो जाते हैं।

ऐसे व्यक्ति संसार के छल-कपट से दूर तथा एक शान्त और कल्पनामय जग में विचरण करने वाले कहे जाते हैं। ऐसे ही व्यक्ति उत्तम कोटि के कलाकार, संगीतज्ञ और साहित्यकार होते हैं। इनके विचारों में धार्मिकता विशेष रूप में होती है, किसी के दबाव में ये कार्य नहीं कर पाते। इनके विचार स्वतंत्र एवं स्पष्ट होते हैं।

जिनके हाथों में चन्द्र-पर्वत का अभाव होता है, वे व्यक्ति कठोर हृदय एवं पूर्ण भौतिक वादी होते हैं। जिनके जीवन में युद्ध ही प्रधान होता है उनके हाथों में चन्द्र पर्वत का अभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

जिनका चन्द्र-पर्वत भली प्रकार से विकसित होता है, वे भौतिकवादी न होकर कल्पनावादी होते हैं। प्रेम तथा सौन्दर्य उनके जीवन की कमजोरी होती है परन्तु सांसारिक छल-प्रपंचों को न समझ पाने के कारण उनका प्रेम जीवन दुखान्त ही होता है। यदि चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा विकसित हो तो यह व्यक्ति पागल होता है।

यदि चन्द्र-पर्वत मध्यम स्तर का विकसित हो तो ऐसा व्यक्ति कल्पनालोक में विचरण करने वाला तथा हवाई किले बनाने वाला होता है वे खाट पर पड़े-पड़े लाखों करोड़ों की योजनाएं बना लेते हैं पर उनमें एक भी पूरी नहीं हो पाती, या यों कहा जाय कि उनमें उन योजनाओं को पूरा करने की योग्यता अथवा साहस नहीं होता।

ऐसे व्यक्ति जरूरत से ज्यादा भावुक होते हैं। छोटी-सी भी बात इनको बहुत अधिक चुभती है। छोटा-सा भी व्यंग इनके पूरे शरीर को झकझोर देता है। ऐसे लोगों में संघर्ष की भावना नहीं के बराबर होती है। विपरीत परिस्थितियों में ये पलायन कर जाते हैं और धीरे-धीरे इनमें निराशा की भावना बढ़ जाती है।

यदि चन्द्र-पर्वत विकसित होकर हथेली के बाहर की ओर झुक जाता है तो ऐसे व्यक्ति में रजोगुण की प्रधानता बन जाती है। ऐसे व्यक्ति भोगी, विषयी तथा कामी हो जाते हैं एवं सुन्दर स्त्रियों के पीछे व्यर्थ के चक्कर लगाते रहते हैं। इनके जीवन का ध्येय भोग विलास एवं ऐयाशी होता है परन्तु जीवन में ये सुख भी उनको नसीब नहीं होते।

यदि हथेली में यह पर्वत शुक्र की ओर झुकता हुआ अनुभव हो तो ऐसे व्यक्ति कामुक होने के साथ-साथ निर्लज्ज भी होते हैं। इनको अपने-पराये का भी भेद नहीं रहता, जिसके फलस्वरूप वे व्यक्ति समाज में बदनाम हो जाते हैं।

यदि चन्द्र-पर्वत पर आड़ी-टेढी रेखाएं फैली हुई दिखाई दें तो ऐसा व्यक्ति कई बार जलयात्राएं करता है। यदि चन्द्र-पर्वत पर गोल घेरा हो तो वह व्यक्ति राजनीतिक कार्य से विदेश की यात्रा करता है। यदि हाथ में चन्द्र पर्वत का अभाव हो तो वह व्यक्ति रूखा और पूर्णतः भौतिक होता है। परन्तु जिनका चन्द्र-पर्वत सामान्य रूप से उभरा हुआ होता है वे आन्तरिक दृष्टि से अत्यधिक सुन्दर एवं समझदार होते हैं। यदि यह पर्वत ऊपर की ओर से उभरा हुआ होता है तो उसे गठिया अथवा जुकाम जैसे रोग बने रहते हैं। यदि यह पर्वत जरूरत से ज्यादा विकसित हो तो वह अस्थिर बुद्धि का, निराश, वहमी तथा लगभग पागल-सा होता है। इसको सिर दर्द की शिकायत बराबर बनी रहती है। यदि यह पर्वत नीचे की तरफ खिसका हुआ हो तो वह व्यक्ति शक्तिहीन होता है। यदि चन्द्र-पर्वत पर शंख का चिह्न हो तो वे व्यक्ति अपने ही प्रयत्नों से सफल होते हैं परन्तु उनकी सफलता में बराबर बाधाएं और परेशानियां बनी रहती हैं। इतना होने पर भी वे जीवन को सही रूप से जीने में तथा दूसरों को सहयोग एवं सहायता देने में विश्वास रखते हैं।

वस्तुतः हाथ में चन्द्र-पर्वत से ही व्यक्ति कल्पनाप्रिय, सौन्दर्यप्रिय तथा भावुक हो सकता है।

८. **हर्षल** : यदि वास्तव में देखा जाय तो यह ग्रह दूसरे ग्रहों की अपेक्षा ज्यादा बलवान एवं समर्थ होता है। हथेली में इसका क्षेत्र हृदय तथा मस्तिष्क रेखा के बीच में होता है। सही रूप में इसका क्षेत्र भली प्रकार से यह कनिष्ठिका के नीचे, बुध पर्वत से थोड़ा-सा नीचे अनुभव किया जा सकता है।

इस ग्रह का प्रभाव हृदय तथा मस्तिष्क पर विशेष रूप से होता है। जिन व्यक्तियों की हथेली में यह पर्वत बुध के नीचे तथा हृदय एवं मस्तिष्क रेखा के बीच में होता है, वह व्यक्ति विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक और गणितज्ञ बनता है। अणु, परमाणु टेलीविजन आदि जटिल यन्त्रों के निर्माण तथा रचना में ऐसे व्यक्ति पूर्णतः सफल होते हैं।

यदि इस पर्वत का उभार कम होता है तो ऐसे व्यक्ति मशीनरी से सम्बन्धित कार्यों में रुचि लेते हैं तथा ऐसे ही स्थानों पर नौकरी करके संतुष्ट होते हैं।

यदि इस पर्वत पर त्रिकोण या चतुर्भुज का चिह्न हो तो वह व्यक्ति आश्चर्य-जनक रूप से प्रगति करता है तथा अपने कार्यों से विश्वस्तरीय सम्मान प्राप्त करता है। समाज में उसका सम्मान होता है और उसे अपने जीवन में आशा से अधिक सफलता मिलती है। यदि हर्षल पर्वत से कोई रेखा अनामिका उंगली की ओर जाती है तो वह व्यक्ति जीवन में विश्व प्रसिद्ध होता है। यदि हर्षल पर्वत का झुकाव बुध पर्वत की ओर विशेष रूप से होता है तो ऐसा व्यक्ति अपनी प्रतिभा का दुरुपयोग करता है और एक प्रकार से वह व्यक्ति अन्तर्राष्ट्रीय ठग या लुटेरा हो जाता है। ऐसे व्यक्ति हृदय रोग से भी बराबर पीड़ित रहते हैं। यदि हर्षल पर्वत नेपच्यून की ओर झुकता हुआ दिखाई दे तो ऐसे व्यक्ति को पूर्णतः भोगी समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति एक पत्नी से सन्तुष्ट न होकर भटकता फिरता है। उसका गृहस्थ जीवन एक प्रकार से बरबाद हो जाता है तथा उसे अपनी पत्नी तथा अपने पुत्रों से किसी प्रकार का कोई मोह नहीं होता। जीवन में जरूरत से ज्यादा व्यसनों में लिप्त होकर वह अपना स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य खो बैठता है।

९. **नेपच्यून** : यह ग्रह पृथ्वी से बहुत अधिक दूरी पर स्थित होने के कारण इसका प्रभाव पृथ्वीवासियों पर बहुत कम पड़ता है परन्तु फिर भी इसका प्रभाव मानव जीवन पर जो भी पड़ता है, वह स्थायी होता है और अपने आप में आश्चर्यजनक परिणाम दिखाता है।

हथेली में इस ग्रह का क्षेत्र मस्तक रेखा से नीचे तथा चन्द्र क्षेत्र से ऊपर होता है। यदि यह क्षेत्र अथवा यह पर्वत विशेष रूप से उभरा हुआ हो तो वह व्यक्ति श्रेष्ठ संगीतज्ञ, कवि अथवा लेखक होता है। यदि इस पर्वत पर रेखा दिखाई दे और यदि

वह रेखा आगे चलकर भाग्य रेखा से मिल जाय तो वह व्यक्ति जीवन में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण पद पर पहुंचता है।

यदि इस पर्वत का झुकाव चन्द्र क्षेत्र की तरफ विशेष हो तो उसका स्तर अपने आप में अत्यन्त घटिया होता है ऐसा व्यक्ति संकीर्ण मनोवृत्ति वाला तथा समाज विरोधी कार्य करने वाला होता है। यदि नेपच्यून पर्वत से उठकर कोई रेखा मस्तिष्क रेखा को काट लेती है तो वह व्यक्ति निश्चय ही पागल होता है तथा उसके जीवन का अधिकतर हिस्सा पागलखाने में ही व्यतीत होता है।

यदि यह पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो तो ऐसे व्यक्ति का जीवन दुखमय होता है तथा उसका गृहस्थ जीवन बरबाद हो जाता है। ऐसे व्यक्ति सनकी, संशयालु तथा क्रूर प्रकृति के माने जाते हैं। यदि नेपच्यून पर्वत विकसित होकर हर्षल से मिल जाता है तो वह व्यक्ति जीवन मे निश्चय ही धन के लालच में किसी की हत्या करेगा, ऐसा समझ लेना चाहिए। ऐसे व्यक्ति अपने कार्यों के प्रति लापरवाह होते हैं, तथा कार्य हो जाने के बाद पछताते रहते हैं।

यदि इस पर्वत पर क्रॉस का चिह्न हो तो उसका पूरा जीवन गरीबी तथा निर्धनता में बीतता है। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन की आवश्यकताओं को भी भली प्रकार से पूरा नहीं कर पाते।

१०. **प्लूटो** : अंग्रेजी में इस ग्रह को प्लूटो तथा हिन्दी में इसे 'इन्द्र' के नाम से पुकारते हैं। हथेली में इसका क्षेत्र हृदय रेखा के नीचे तथा मस्तिष्क रेखा के ऊपर होता है, और यह हर्षल तथा गुरु क्षेत्र के बीच में अवस्थित होता है। प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में इस पर्वत को स्पष्टता से देखा जा सकता है।

इसका प्रभाव व्यक्ति की वृद्धावस्था में ही देखने को मिलता है। यदि यह पर्वत भली प्रकार से विकसित होता है तो उस व्यक्ति का बुढ़ापा अपने आप में अत्यन्त सुखी एवं सफल रहता है। जीवन के ४२ वें वर्ष से आगे वह जीवन में सुख अनुभव करने लगता है और मृत्युपर्यन्त वह सभी दृष्टियों से सुखी ही रहता है। यदि प्लूटो पर्वत पर क्रॉस का चिह्न हो तो उसकी मृत्यु ४५ वर्ष से पहले-पहले दुर्घटना से हो जाती है।

यदि यह पर्वत जरूरत से ज्यादा विकसित हो तो वह व्यक्ति असभ्य, मूर्ख, निरक्षर तथा अपव्ययी होता है। इसको जीवन में पग-पग पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा जीवन में परिवार वालों का तथा मित्रों का किसी भी प्रकार से कोई सहयोग नही मिलता।

यदि यह पर्वत अविकसित हो तो वह व्यक्ति भाग्यहीन माना जाता है। उसका स्वभाव चिड़चिड़ा तथा दुखमय हो जाता है।

११. राहु : हथेली में इस पर्वत की स्थिति मस्तिष्क रेखा से नीचे चन्द्र, मंगल, तथा शुक्र से घिरा हुआ जो भूभाग होता है वह राहु क्षेत्र कहलाता है। भाग्य रेखा इसी पर्वत पर से होकर शनि पर्वत की ओर जाती है।

राहु का क्षेत्र यदि हथेली पर अत्यन्त पुष्ट एवं उन्नत हो तो ऐसा व्यक्ति निश्चय ही भाग्यवान होता है और यदि पुष्ट पर्वत पर से होकर भाग्य रेखा स्पष्ट तथा गहरी होकर आगे बढ़ती है तो वह व्यक्ति जीवन में परोपकारी प्रतिभावान धार्मिक तथा सभी प्रकार से सुख भोगने वाला होता है। यदि हथेली पर भाग्य रेखा टूटी हुई हो पर राहु पर्वत विकसित हो तो ऐसा व्यक्ति एक बार आर्थिक दृष्टि से बहुत अधिक ऊंचा उठ जाता है और फिर उसका पतन हो जाता है।

यदि यह पर्वत अपने स्थान से हटकर हथेली के मध्य की ओर सरक जाता है तो उस व्यक्ति को यौवनकाल में बहुत अधिक बुरे दिन देखने को मिलते हैं। यदि हथेली के बीच का हिस्सा गहरा हो और उस पर से भाग्य रेखा टूटी हुई आगे बढ़ती हो तो वह व्यक्ति यौवनकाल में भिखारी के समान जीवन व्यतीत करता है।

यदि राहु पर्वत कम उभरा हुआ हो तो ऐसा व्यक्ति चंचल स्वभाव का तथा अपने ही हाथों अपनी सम्पत्ति का नाश करने वाला होता है।

१२. केतु : हथेली में इस पर्वत का स्थान मणिबन्ध के ऊपर शुक्र और चन्द्र क्षेत्रों को बांटता हुआ भाग्य रेखा के प्रारम्भिक स्थान के समीप होता है। इस ग्रह का फल राहु के समान ही देखा गया है।

इस ग्रह का प्रभाव जीवन के पांचवें वर्ष से बीसवें वर्ष तक होता है। यदि यह पर्वत स्वाभाविक रूप से उन्नत एवं पुष्ट होता है तथा भाग्य रेखा भी स्पष्ट तथा गहरी हो तो वह व्यक्ति भाग्यशाली होता है तथा अपने जीवन में समस्त प्रकार के सुखों का भोग करता है। ऐसा बालक गरीब घर में जन्म लेकर भी अमीर होता देखा गया है। यदि यह पर्वत अस्वाभाविक रूप से उठा हुआ हो और भाग्य रेखा कमजोर हो तो उसे बचपन में बहुत अधिक बुरे दिन देखने पड़ते हैं। उसके घर की आर्थिक स्थिति धीरे-धीरे कमजोर होती जाती है तथा शिक्षा के लिए भी ऐसे बालक को बहुत अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसा बालक बचपन में रोगी भी होता है।

यदि यह पर्वत अविकसित हो और भाग्य रेखा प्रबल भी हो फिर भी उसके जीवन से दरिद्रता नहीं मिटती, अतः केतु पर्वत विकसित हो और साथ ही भाग्य रेखा भी स्पष्ट और विकसित हो तभी व्यक्ति जीवन में पूर्ण उन्नति कर सकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि व्यक्ति की हथेली में यदि पर्वत सही रूप से विकसित एवं पुष्ट होते हैं तभी व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण उन्नति कर सकता है।

पर्वत युग्म एवं हस्त चिह्न

हथेली पर पर्वतों का अध्ययन हमने पीछे के अध्याय में किया है परन्तु ऐसा देखा जाता है कि अधिकतर हाथों में एक से अधिक पर्वत विकसित होते हैं। ऐसी स्थिति में उन दोनों पर्वतों का मिश्रित फल उसके जीवन में प्राप्त होता है। पाठकों के लिए यह फल प्राप्त करना कुछ कठिन-सा होता है इसलिए मैं उनकी सुविधा के लिए नीचे पर्वत-युग्मों का फल स्पष्ट कर रहा हूं :

१. गुरु :

गुरु और शनि : उत्तम भाग्यवर्द्धक।

गुरु और सूर्य : श्रेष्ठ धन सम्मान, पद-प्राप्ति।

गुरु और बुध : ज्योतिष ज्ञान में रुचि तथा काव्य शास्त्र आदि में विशेष सफलता।

गुरु और मंगल : पराक्रम, साहस, नीति-निपुणता तथा रण-संचालन योग्यता।

गुरु और नेपच्यून : श्रेष्ठ विचार, उत्तम धन-प्राप्ति।

गुरु और हर्षल : विज्ञान में रुचि, परोपकार की भावना।

गुरु और प्लूटो : श्रेष्ठ वक्ता, उर्वर मस्तिष्क, विलक्षण प्रतिभा।

गुरु और राहू : दुष्टविचार तथा आत्म-विश्वास में कमी।

गुरु और केतु : जीवन में बाधाएं, परेशानियां एवं असफलताएं।

गुरु और चन्द्र : गम्भीरता तथा प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व।

गुरु और शुक्र : आकर्षक व्यक्तित्व एवं सम्मोहन की विशेष योग्यता तथा मानव को पूर्ण प्रभावित करने की क्षमता।

२. शनि :

शनि और सूर्य : तर्क-शक्ति, चिन्तन तथा वैज्ञानिक भावना का विकास।

शनि और बुध : निर्णय, लेने की क्षमता तथा परोपकार की भावना।

शनि और शुक्र : स्वार्थी, रसिक तथा प्रेम में सब कुछ लुटाने वाला।

शनि और राहू : उत्तम गुणों से युक्त एवं जीवन में आकस्मिक धन लाभ करने वाला।

शनि और केतु : आजीविका की चिन्ता एवं मानसिक परेशानियां।

शनि और नेपच्यून : जीवन में कई बार विदेश यात्राएं।

शनि और हर्षल : एकान्त-प्रिय तथा विविध कलाओं में निपुणता।

शनि और प्लूटो : चतुराई, विवेकशीलता तथा तेजस्विता।

शनि और चन्द्र : रहस्यमय एवं गोपनीय व्यक्तित्व।

शनि और मंगल : लड़ाकू प्रवृत्ति तथा क्रोधित होने पर सब कुछ विध्वंस कर देने की प्रवृत्ति।

३. सूर्य :

सूर्य और बुध : विज्ञान में रुचि तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार करने की क्षमता।

सूर्य और शुक्र : योजना बद्ध रूप से कार्य करने वाला।

सूर्य और राहू : जीवन में बराबर दुख, चिन्ता एवं परेशानियां भोगने वाला।

सूर्य और केतु : विदेश यात्राएं।

सूर्य और हर्षल : उच्चस्तरीय प्रसिद्धि एवं ज्ञान तथा विवेक का विकास।

सूर्य और नेपच्यून : सोच समझकर योजना बनाने वाला।

सूर्य और प्लुटो : धीर गम्भीर व्यक्तित्व।

सूर्य और चन्द्र : आडम्बर तथा कृत्रिमता में विश्वास रखने वाला।

सूर्य और मंगल : आत्मोत्सर्ग की प्रबल भावना।

४. बुध :

बुध और शुक्र : विपरीत सैक्स के प्रति विशेष रुझान तथा संगीत के प्रति विशेष रुचि।

बुध और राहू : गुस्सा तथा चिड़चिड़ा स्वभाव।

बुध और केतु : यात्रा प्रेमी तथा मानवीय दृष्टि से सफल।

बुध और हर्षल : कल्पना प्रिय।

बुध और नेपच्यून : परोपकारी तथा विश्व की कल्याण कामना करने वाला।

बुध और प्लूटो : अन्तर्राष्ट्रीय सफलता प्राप्त करने वाला व्यापारी।

बुध और चन्द्र : वैज्ञानिक प्रतिभा सम्पन्न दूरदर्शी व्यक्तित्व।

बुध और मंगल : तुरन्त एवं सही निर्णय लेने वाला व्यक्ति।

५. शुक्र :

शुक्र और चन्द्र : प्रेमभावना की तीव्रता तथा कला प्रेम।

शुक्र और राहू : निम्न स्तर की स्त्रियों से सम्बन्ध।

शुक्र और केतु : सहृदयता एवं उच्च भावना का विकास।

शुक्र और हर्षल : प्रेम में तीव्रता।

शुक्र और नेपच्यून : उच्च कोटि का कला प्रेम और मनुष्य मात्र के प्रति स्नेह।

शुक्र और प्लूटो : जीवन की बाधाओं को समझने वाला और उन बाधाओं को परास्त करने वाला।

शुक्र और मंगल : संगीत ज्ञान में पूर्णता।

६. चन्द्र :

चन्द्र और मंगल : समुद्रपारीय यात्रा।

चन्द्र और राहू : मित्रों द्वारा विश्वासघात।

चन्द्र और केतु : यौवनावस्था में प्रेम के द्वारा बदनामी।

चन्द्र और हर्षल : मानवीय भावनाओं का विकास।

चन्द्र और नेपच्यून : वैरागी भावना।

चन्द्र और प्लूटो : प्रबल काम-शक्ति।

७. राहू :

राहू और केतु : आजीविका के लिए कठोर प्रयत्न।

राहू और हर्षल : दुखमय जीवन।

राहू और नेपच्यून : विदेश में रहने वाली स्त्री से विवाह।

राहू और प्लूटो : अपराधवृत्ति का विकास।

८. केतु :

केतु और हर्षल : अत्याचार की भावना।

केतु और नेपच्यून : ज्ञान शून्यता।

केतु और प्लूटो : सम्मान वृद्धि।

९. हर्षल :

हर्षल और प्लूटो : वैज्ञानिक प्रतिभा का विकास।

हर्षल और नेपच्यून : विदेश गमन, उच्च पद प्राप्ति ।

१०. नेपच्यून :

नेपच्यून और प्लूटो : तीव्र कामांधता ।

हथेली पर पाये जाने वाले चिह्न :

हथेली का अध्ययन करते समय उन पर अंकित चिह्नों का भी सावधानीपूर्वक अध्ययन करना चाहिए क्योंकि भविष्यफल और फलादेश में ये चिह्न बहुत अधिक सहयोग देते हैं ।

हथेली पर जो चिह्न पाये जाते हैं उनमें से मुख्य निम्न प्रकार से हैं :

१—रेखा

२ –अधिक रेखाएं

३—आपस में कटती हुई रेखाएं

४—बिन्दु

५—क्रॉस

६—नक्षत्र

७—वर्ग

८—वृत्त

९—त्रिकोण

१०—जाली

अब मैं पर्वतों पर पाये जाने वाले इन चिह्नों का शुभाशुभ फल स्पष्ट कर रहा हूं :

१. गुरु पर्वत :

एक रेखा : कार्यों में सफलता ।

एक से अधिक रेखाएं : भाग्योदय तथा नवीन कार्यों में रुचि ।

आपस में कटती हुई रेखाएं : निम्न कोटि के विचार तथा जीवन में परेशानियां ।

बिन्दु : सामाजिक प्रतिष्ठा में कमी ।

क्रॉस : वैवाहिक जीवन में पूर्णता तथा घर में मांगलिक कार्य ।

नक्षत्र : ऊंची इच्छाएं तथा उन इच्छाओं की पूर्ति ।

वर्ग : कल्पना और यथार्थता का सुखद समन्वय ।

त्रिकोण : राजनीतिक एवं धार्मिक कार्यों में सफलता।
जाली : अंधविश्वास, अशुभ घटनाएं तथा हानि।
वृत्त : प्रत्येक कार्य में सफलताएं।
गुरु का चिह्न : पर्वत में पाये जाने वाले गुणों का विकास।
शनि का चिह्न : तंत्र विद्याओं में सफलता।
सूर्य का चिह्न : ललित कलाओं में रुचि।
बुध का चिह्न : प्रशासन दक्षता।
शुक्र का चिह्न : उच्च घराने की महिलाओं से प्रेम।
चन्द्र का चिह्न : युद्ध में निपुणता।

२. शनि पर्वत :

एक रेखा : भाग्योदय में वृद्धि।
कई रेखाएं : जीवन में निरन्तर बाधाएं।
आपस में कटती हुई रेखाएं : दुर्भाग्य तथा चिन्ताएं।
बिन्दु : असम्भावित घटनाओं में वृद्धि।
क्रॉस : कमजोरी तथा नपुंसकता।
नक्षत्र : हत्या करने की भावना का विकास।
वर्ग : अनिष्टों से बचाव।
वृत्त : मांगलिक कार्यों में रुचि।
त्रिकोण : रहस्यमय कार्यों में वृद्धि।
जाली : भाग्यहीनता।
शनि का चिह्न : धर्म, दर्शन, तथा तंत्र आदि विद्याओं में रुचि।
गुरु का चिह्न : दर्शन के क्षेत्र में विश्व प्रसिद्ध सफलता।
सूर्य का चिह्न : कलात्मक सौन्दर्य का विकास।
बुध का चिह्न : ज्योतिष शास्त्र में रुचि।
शुक्र का चिह्न : विपरीत योनि के प्रति प्रेम का आवेग एवं असफलता।
मंगल का चिह्न : न्यायाधीश एवं न्यायप्रियता।

३. सूर्य पर्वत :

एक रेखा : धन, सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि।

कई रेखाएं : कलात्मक रुचि तथा उच्च पद प्राप्ति ।

आपस में कटती हुई रेखाएं : नौकरी में बाधाएं ।

बिन्दु : अपमान एवं पराजय ।

क्रॉस : प्रसिद्धि में न्यूनता ।

नक्षत्र : धन, उच्च पद प्राप्ति ।

वर्ग : समाज में विशेष सम्मान ।

वृत्त : जीवन में कई बार विदेश यात्रा ।

त्रिकोण : कला के क्षेत्र में उच्च सम्मान ।

जाली : मान हानि ।

सूर्य का चिह्न : कला के माध्यम से विश्व प्रसिद्ध सम्मान तथा श्रेष्ठ धन लाभ ।

शनि का चिह्न : तंत्र विद्याओं में रुचि ।

गुरु का चिह्न : सफल राजनीतिज्ञ ।

बुध का चिह्न : वाक्पटु ।

शुक्र का चिह्न : कविता तथा कला के प्रति विशेष रुझान ।

चन्द्र का चिह्न : साहित्यिक कार्यों में सफलता ।

मंगल का चिह्न : प्रसिद्ध सैनिक अथवा सेनाध्यक्ष ।

४. बुध पर्वत :

एक रेखा : धनवान तथा समृद्धि ।

कई रेखाएं : व्यापार में असाधारण योग्यता ।

आपस में कटती हुई रेखाएं : सफल चिकित्सक ।

बिन्दु : व्यापार में असाधारण हानि ।

क्रॉस : दिवालिया ।

नक्षत्र : विदेशों में व्यापार करने वाला ।

वर्ग : भविष्य को पहचानने वाला ।

वृत्त : एक्सीडेंट तथा आकस्मिक मृत्यु ।

त्रिकोण : राजनीतिक सफलता ।

जाली : मान हानि ।

धब्बा : व्यापार में असफलता ।

बुध का चिह्न : सफल व्यापारी ।

गुरु का चिह्न : विज्ञान में असाधारण योग्यता ।

शनि का चिन्ह : जीवन में हर क्षेत्र में निराशा ।

सूर्य का चिन्ह : धार्मिक भावना का विकास एवं ज्योतिष शास्त्र में निपुणता ।

शुक्र का चिन्ह : धन के लालच में निन्दनीय प्रेम ।

चन्द्र का चिन्ह : षडयन्त्र तथा धोखा देने की प्रवृत्ति ।

मंगल का चिन्ह : ठगविद्या में सफलता ।

५. शुक्र पर्वत :

एक रेखा : तीव्र कामवासना ।

कई रेखाएं : अत्यधिक भोगी ।

आपस में कटती हुई रेखाएं : प्रेम में असफलता तथा सम्मान हानि ।

बिन्दु : गुप्तांगों की बीमारी ।

क्रॉस : असफल प्रेम तथा जीवन में निराशावादी भावना का विकास ।

नक्षत्र : प्रेमिका के कारण धन हानि ।

वर्ग : जेल यात्रा ।

वृत्त : दुर्घटना में शारीरिक क्षति ।

त्रिकोण : जीवन में कई स्त्रियों से भोग करने वाला ।

जाली : अस्वस्थ शरीर ।

शुक्र का चिन्ह : विशेष भोगी ।

गुरु का चिन्ह : चापलूसी करने वाला ।

शनि का चिन्ह : ईर्ष्या एवं अन्याय पूर्ण प्रेम भावना ।

सूर्य का चिन्ह : आदर्श प्रेम

बुध का चिन्ह : धन के लिए प्रेम ।

चन्द्र का चिन्ह : वासना पूर्ण विचार ।

मंगल का चिन्ह : जीवन में कई बार कई स्त्रियों से बलात्कार ।

६. मंगल पर्वत :

एक रेखा : साहस ।

कई रेखाएं : हिंसात्मक प्रवृत्ति ।

आपस में : युद्ध भावना तथा हिंसापूर्ण विचार।
कटती हुई
रेखाएं
बिन्दु : युद्ध में शारीरिक क्षति।
क्रॉस : युद्ध में मृत्यु।
नक्षत्र : मिलिट्री में विशेष उच्च पद प्राप्ति।
वर्ग : जरूरत से ज्यादा क्रोध की भावना।
वृत्त : चतुर, नीति निपुण।
त्रिकोण : योजनाबद्ध कार्य करने वाला।
जाली : आत्म हत्या।
मंगल का चिन्ह : युद्ध भावना में विकास।
गुरु का चिह्न : स्त्रियों को मोहित करने वाला।
शनि का चिह्न : कुटिल स्वभाव।
सूर्य का चिह्न : प्रदर्शन प्रियता।
बुध का चिह्न : आकस्मिक धन प्राप्ति।
शुक्र का चिह्न : प्रेम के क्षेत्र में उग्रता।
चन्द्र का चिह्न : पागलपन।

७. चन्द्र पर्वत :

एक रेखा : कल्पना की भावना का विकास।
कई रेखाएं : सौन्दर्य प्रियता।
आपस में : चिन्ताएं।
कटती हुई
रेखाएं
बिन्दु : प्रेम में बार-बार असफलताएं।
क्रॉस : सामाजिक सम्मान में न्यूनता।
नक्षत्र : राजकीय सम्मान।
वर्ग : विशेष धन प्राप्ति।
वृत्त : जल में डूबने से मृत्यु।
त्रिकोण : राष्ट्र व्यापी सम्मान प्राप्त करने वाला कवि।

जाली : निराशा।
चन्द्र का चिह्न : मूर्ख।
गुरु का चिह्न : साहस के बल पर आगे बढ़ने वाला।
शनि का चिह्न : अन्धविश्वासी तथा अर्द्ध पागल।
सूर्य का चिह्न : जुए की प्रवृत्ति
शुक्र का चिह्न : नवीन विचारों की तरफ प्रेरणा।
मंगल का चिह्न : पागलपन।

८. राहू-केतु :

एक रेखा : सहस
कई रेखाएं : अत्यन्त क्रोधी
आपस में कटती हुई रेखाएं : उत्तरदायी भावना की कमी।
बिन्दु : हर कार्य में सफलता।
क्रॉस : मानहानि।
नक्षत्र : युद्ध सम्बन्धी कार्यों में विशेष सफलता।
वर्ग : राज्य सम्मान।
वृत्त : सेना में अत्यन्त उच्च पद प्राप्ति।
त्रिकोण : अतुलनीय धन प्राप्ति।
जाली : दरिद्र जीवन।
सूर्य का चिह्न : कमजोरी
चन्द्र का चिह्न : पागलपन
मंगल का चिह्न : डाकू, हत्यारा
बुध का चिह्न : निम्नस्तरीय कार्यों से धन लाभ।
गुरु का चिह्न : अधार्मिक।
शुक्र का चिह्न : निम्नस्तरीय स्त्रियों से प्रेम संपर्क।
शनि का चिह्न : प्रसिद्ध जाल साज।

९. हर्षल :

एक रेखा : विशेष सम्मान।

कई रेखाएं : बार-बार विदेश यात्राएं ।
आपस में : वायुयान दुर्घटना में मृत्यु ।
कटती हुई
रेखाएं
बिन्दु : उच्चस्तरीय प्रसिद्धि ।
क्रॉस : विदेश में रहने को बाध्य होना ।
नक्षत्र : विदेशों में ख्याति ।
वर्ग : वैज्ञानिक कार्यों में रुचि ।
वृत्त : विशेष धन प्राप्ति ।
त्रिकोण : इंजीनियरिंग कार्यों में रुचि ।
जाली : आकस्मिक दुर्घटना से मृत्यु ।
सूर्य का चिह्न : विश्व प्रसिद्ध सम्मान ।
चन्द्र का चिह्न : जीवन में विशेष सफलता ।
मंगल का चिह्न : सेना में उच्च पद प्राप्ति ।
बुध का चिह्न : आयात-निर्यात का व्यापार करने वाला ।
गुरु का चिन्ह : धार्मिक काव्य की रचना करने वाला ।
शुक्र का चिन्ह : उच्च कोटि का प्रेम ।
शनि का चिन्ह : सफल राजनीतिज्ञ ।

१०. **नेपच्यून :**

एक रेखा : समाज में सफलता !
कई रेखाएं : सामाजिक कार्यों के करने से सम्मान प्राप्ति ।
आपस में कटती हुई रेखाएं : हर कार्य में निराशा ।
बिन्दु : न्यायप्रियता ।
क्रॉस : हत्या करने की भावना का विकास ।
नक्षत्र : जल यात्रा ।
वर्ग : राष्ट्रस्तरीय सम्मान ।
वृत्त : मानसिक कमजोरी ।
त्रिकोण : विदेश में विवाह ।
जाली : जल से मृत्यु ।

सूर्य का चिन्ह् : विशेष सफलता ।

चन्द्र का चिन्ह : तटवर्ती स्थानों पर व्यापार से लाभ ।

मंगल का चिन्ह् : युद्ध शस्त्र, के व्यापार से सफलता ।

बुध का चिन्ह् : अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारी ।

गुरु का चिन्ह् : सफल सामाजिक भावना का विकास ।

शुक्र का चिन्ह् : सौ से अधिक स्त्रियों से रमण ।

शनि का चिन्ह् : नपुंसकता ।

११. प्लूटो :

एक रेखा : जीवन में पूर्ण उन्नति ।

कई रेखाएं : समाज में विशेष सम्मान ।

आपस में कटती हुई रेखाएं : सन्यास भावना का विकास ।

बिन्दु : हर कार्य में असफलता ।

क्रॉस : आत्महत्या

नक्षत्र : धार्मिक कार्यों में रुचि ।

वर्ग : मूर्खता ।

वृत्त : शुभ कार्यों में रुचि ।

त्रिकोण : कई कलाओं में सफलता ।

जाली : असफल जीवन ।

सूर्य का चिन्ह् : विशेष सम्मान ।

चन्द्र का चिन्ह् : जल में डूबने से मृत्यु ।

मंगल का चिन्ह् : धर्मान्धता ।

बुध का चिन्ह् : व्यापारिक कार्यों में विशेष सफलता ।

गुरु का चिन्ह् : समाज में सम्मानीय स्थान प्राप्त होना ।

शुक्र का चिन्ह् : सात्विक प्रेम ।

शनि का चिन्ह् : तंत्र विद्याओं में रुचि ।

संक्षेप में आगे की पंक्तियों में ऋणात्मक और धनात्मक पर्वत का विवेचन कर रहा हूं । जिन तारीखो मे जन्म होता है उन तारीखों के अनुसार उसके पर्वत का फल उसके जीवन में रहता है । धनात्मक पर्वत होने पर उस पर्वत की विशेषताएं तथा ऋणात्मक पर्वत होने पर उस पर्वत से सम्बन्धित ग्रह की न्यूनताएं मिलती हैं ।

जन्म तारीख	ग्रह (धनात्मक)
२० अप्रैल से २० मई	शुक्र
२१ मार्च से २१ अप्रैल	मंगल
२१ नवम्बर से ३० दिसम्बर	गुरु
२१ दिसम्बर से २० जनवरी	शनि
२१ जुलाई से २० अगस्त	सूर्य
२१ मई से २० जून	बुध
२१ जुलाई से २० अगस्त	चन्द्र

इसके साथ ही में ऋणात्मक पर्वत विकास को भी स्पष्ट कर रहा हूं। इस समय में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सम्बन्धित ग्रह पर्वत फल न्यूनतम मिलता है।

ऋणात्मक पर्वत : निम्न तारीखों में जन्म लेने वाले सम्बन्धित ग्रह का ऋणात्मक विकास रखते हैं।

जन्म तारीख	ग्रह (ऋणात्मक)
२१ सितम्बर से २० अक्टूबर	शुक्र
२१ अक्टूबर से २० नवम्बर	मंगल
१६ फरवरी से २० मार्च	गुरु
२१ जनवरी से १८ फरवरी	शनि
२१ मार्च से २० अप्रैल	सूर्य
२१ अगस्त से २० सितम्बर	बुध
२१ जुलाई से २० अगस्त	चन्द्र

वस्तुतः हथेली का अध्ययन करना अपने आप में अत्यन्त कठिन है परन्तु यदि धैर्य परिश्रम तथा लगन से हस्तरेखा ज्ञान का अध्ययन करे तो वह निश्चय ही अपने जीवन में पूर्ण एवं श्रेष्ठ सफलता प्राप्त कर सकता है।

रेखाएं

जीवन शक्ति का स्फूर्तमय वेग हथेली के माध्यम से ही सम्पन्न होता है। और यह वेग हथेली के माध्यम से रेखाओं और पर्वतों को एक ही सूत्र में ग्रंथित करता है। जैसा कि मैं पीछे कह चुका हूं कि हथेली पर अंकित कोई भी रेखा व्यर्थ नहीं होती क्योंकि हथेली पर छोटी या बड़ी, स्थूल या सूक्ष्म जो भी रेखा होती है वह इस जीवन शक्ति के वेग को प्रवाहित करने में सहायक होती है इसलिये हस्तरेखा विशेषज्ञ को चाहिए कि वह हथेली पर पाई जाने वाली प्रत्येक रेखा का सूक्ष्म अध्ययन करे।

हथेली पर जो रेखाएं स्पष्ट गहरी एवं लंबी होती हैं वे सफलता की सूचक होती हैं इसके विपरीत टूटी हुई विरल और अस्पष्ट रेखाएं जीवनशक्ति में बाधक समझनी चाहिए। अतः स्पष्ट रेखाओं का प्रभाव ही मानव जीवन पर सही रूप में अंकित होता है।

हस्तरेखा विशेषज्ञ को चाहिए कि वह सामने वाले व्यक्ति के दोनों हाथों का सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन करे। साथ ही वह छोटी से छोटी रेखा का भी अवलोकन करे, क्योंकि हाथ में पाई जाने वाली प्रत्येक रेखा का अपना महत्व होता है और वह रेखा किसी न किसी घटना को स्पष्ट करती ही है।

रेखाओं द्वारा घटनाओं का समय भी ज्ञात किया जा सकता है। जितना ही ज्यादा व्यक्ति का अभ्यास होगा उतना ही ज्यादा वह उस समय को सही रूप में अंकित कर सकता है।

हाथ का अध्ययन करने से पूर्व रेखाओं का सही सही परिचय ज्ञात कर लेना आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में सात मुख्य रेखाएं होती हैं तथा बारह गौण रेखाएं या सहायक रेखाएं अथवा प्रवहित रेखाएं होती हैं। सात मुख्य रेखाएं निम्न-लिखित हैं —

मुख्य रेखाएं :

१. जीवन रेखा।
२. मस्तिष्क रेखा।
३. हृदय रेखा।
४. सूर्य रेखा।
५. भाग्य रेखा।

६. स्वास्थ्य रेखा।

७. विवाह रेखा ।

इनके अतिरिक्त बारह गौण रेखाएं होती हैं । यद्यपि ये गौण रेखाएं कहलाती हैं परन्तु हथेली में इनका महत्त्व स्वतंत्र होता है और वह जीवन में बहुत अधिक महत्त्व रखने वाली होती हैं ।

गौण रेखाएं :

१. गुरु वलय
२. मंगल रेखा
३. शनि वलय
४. रवि वलय
५. शुक्र वलय
६. चन्द्र रेखा
७. प्रतिभा प्रभावक रेखा
८. यात्रा रेखा
९. सन्तति रेखा
१०. मणिबन्ध रेखाएं
११. आकस्मिक रेखाएं
१२. उच्च पद रेखाएं

इन रेखाओं का अध्ययन सावधानी के साथ करना चाहिए । परन्तु रेखाओं का अध्ययन करने से पूर्व रेखा के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर लेनी उचित रहेगी । मुख्यतः चार प्रकार की रेखाएं होती हैं :

१. मोटी रेखा : ये वे रेखाएं होती हैं जो अपने आप में गहरी, स्पष्ट और सामान्यतः चौड़ाई लिये हुए होती हैं । ऐसी रेखाएं धुंधल में भी स्पष्ट देखी जा सकती हैं ।

२. पतली रेखाएं : ये रेखाएं प्रारम्भ से लेकर अन्त तक पतली परन्तु स्पष्ट होती हैं । ऐसी रेखाएं ज्यादा प्रभावपूर्ण कही जाती हैं ।

३. गहरी रेखा : ये रेखाएं सामान्यतः पतली तो होती हैं परन्तु साथ ही साथ गहरी भी होती हैं, और ऐसा प्रतीत होता है जैसे हथेली के मांस में धंसी हुई सी हों ।

४. ढलवा रेखा :—ये रेखाएं प्रारम्भ में तो मोटी होती हैं परन्तु ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती है त्यों-त्यों अपेक्षाकृत पतली होती जाती हैं ।

इन रेखाओं की जानकारी के साथ-ही-साथ निम्न प्रकार की जानकारी भी पाठकों के लिए आवश्यक कही जाती है।

१. रेखाएं स्पष्ट सुन्दर लालिमा लिये हुए तथा साफ-सुथरी होनी चाहिए। इनके मार्ग में न तो किसी प्रकार का चिह्न होना चाहिए, और न किसी प्रकार का द्वीप होना चाहिए। साथ ही ये रेखाएं टूटी हुई भी नहीं होनी चाहिए।

२. यदि हथेली में रेखाएं किंचित् पीलापन लिये हुए हों तो ऐसी रेखाएं स्वास्थ्य में कमी और रक्त दूषितता को स्पष्ट करती है। ऐसी रेखाएं निराशावादी भावना को भी बताती हैं।

३. रक्तिम रेखाएं व्यक्ति की प्रसन्नता और स्वस्थ मनोवृत्ति को स्पष्ट करती है। इससे ऐसा ज्ञात होता है कि व्यक्ति प्रसन्नचित्त स्वस्थ और स्पष्ट वक्ता है।

४. हथेली पर काली रेखाएं पाया जाना निराशा तथा कमजोरी को सूचित करती हैं।

५. मुर्झाई हुई या कमजोर रेखाएं : भविष्य में आने वाली बाधाओं की सूचक कही जाती हैं।

६. यदि किसी रेखा के साथ-साथ कोई और रेखा आगे बढ़ती हो तो उस रेखा को विशेष बल मिलता है और उस रेखा का प्रभाव विशेष समझना चाहिए।

७. यदि किसी टूटी हुई रेखा के साथ साथ सहायक रेखा चलती हुई दिखाई दे तो उस भग्न रेखा का विपरीत फल न्यूनतम होता है।

८. जीवन रेखा के अलावा यदि कोई रेखा अपने अन्तिम सिरे पर जाकर दो भागों में विभक्त हो जाती है तो ऐसी रेखा अत्यन्त श्रेष्ठ एवं प्रभावपूर्ण मानी जाती है परन्तु यदि हृदय रेखा अन्त में जाकर दो भागों में विभक्त होती है तो ऐसे व्यक्ति की मृत्यु कम आयु में ही हार्ट एटेक से हो जाती है।

९. यदि कोई रेखा अपने अन्तिम सिरे पर जाकर कई भागों में बंट जाय तो उस रेखा का फल विपरीत समझना चाहिए।

१०. यदि किसी रेखा में से कोई नई रेखा निकल कर ऊपर की ओर बढ़ती हो तो उस रेखा के फल में वृद्धि होती है।

११. यदि किसी रेखा में से कोई रेखा निकल कर नीचे की ओर झुक रही हो या नीचे के भाग की ओर गतिशील हो तो उसका विपरीत फल मिलता है।

१२. भोग रेखा या प्रणय रेखा में से कोई रेखा निकल कर उपर की ओर बढ़ रही हो तो सुन्दर पति मिलने का योग बनता है इसके विपरीत यदि उसमें से कोई रेखा निकलकर नीचे की ओर बढ़ रही हो तो उस व्यक्ति की पत्नी की मृत्यु शीघ्र ही हो जाती है।

१३. यदि मस्तिष्क रेखा में से कोई रेखा ऊपर की ओर बढ़ रही हो तो वह व्यक्ति विशेष यश प्राप्त करता है।

१४. जंजीरदार रेखा अशुभ मानी गई है।

१५. यदि विवाह रेखा जंजीरदार हो तो उसको प्रेम में असफलता मिलती है।

१६. यदि मस्तिष्क रेखा जंजीरदार दिखाई दे तो वह व्यक्ति पागल बन जाता है।

१७. हथेली में लहरियादार रेखा शुभ फल देने वाली नहीं होती।

१८. टूटी हुई रेखाएं अशुभ फल ही देती है।

१९. यदि कोई रेखा बहुत अधिक सूक्ष्म और कमजोर हो तो उसका प्रभाव नहीं के बराबर होता है।

२०. यदि किसी रेखा के मार्ग में वह द्वीप या कोई चिन्ह हो तो उसे शुभ नहीं समझना चाहिए।

२१. यदि रेखा के मार्ग में वर्ग हो तो इससे उस रेखा को बल मिलता है तथा उस रेखा का शुभ फल प्राप्त होता है।

२२. यदि रेखा पर कोई बिन्दु हो तो इससे उस रेखा से संबंधित कार्य की हानी होती है।

२३. यदि किसी रेखा पर त्रिकोण का चिह्न दिखाई दे तो उस रेखा से संबंधित कार्य शीघ्र ही होना समझना चाहिए।

२४. रेखाओं पर तिरछी रेखाएं हानिकारक मानी गई हैं।

२५. यदि रेखाओं पर नक्षत्र दिखाई दे तो इससे कार्य सफलता शीघ्र प्राप्त होती है।

२६. मोटी रेखाएं व्यक्ति की दुर्बलता को स्पष्ठ करती है।

२७. पतली रेखाएं व्यक्ति के जीवन में श्रेष्ठ फल देने में समर्थ मानी गई हैं।

२८. ढलवा रेखाएं व्यक्ति के परिश्रम को तो स्पष्ट करती हैं परन्तु उससे श्रेष्ठ फल मिलने का योग नहीं बनता।

२९. यदि कोई गहरी रेखा चलते-चलते बीच में ही रुक जाय या कमजोर पड़ जाय तो ऐसी रेखा दुर्घटना की परिचायक होती है।

३०. रेखा यदि कहीं पर पतली और कहीं पर मोटी हो तो वह शुभ नहीं है और ऐसा व्यक्ति जीवन में कई बार धोखा खायेगा ऐसा समझना चाहिए।

३१. रेखाओं के बारे में सावधानी के साथ विचार करना चाहिए और यदि कोई चिह्न दोनों ही हाथों में दिखाई दे तभी उससे संबंधित भविष्य कथन करना चाहिए।

रेखाओं के उद्गम स्थान :

पीछे की पंक्तियों में मैंने रेखाओं के बारे में साधारण जानकारी दी है परन्तु हमें यह भी ज्ञात करना चाहिए कि इन रेखाओं का वास्तविक उद्गम स्थान कौन-सा होता है।

१. **जीवन रेखा** :—इसे अंग्रेजी में 'लाइफ लाइन' कहते हैं हिन्दी में कुछ विद्वान इसे पितृ रेखा या आयु रेखा के नाम से भी सम्बोधित करते हैं पूरी हथेली में इस रेखा का महत्त्व सबसे अधिक है, क्योंकि यदि जीवन है तो सब कुछ है जिस दिन जीवन ही समाप्त हो जायगा उस दिन बाकी रेखाओं का प्रभाव भी व्यर्थ हो जायगा।

जीवन रेखा　　　　　जीवन रेखा

जीवन रेखा बृहस्पति पर्वत के नीचे हथेली की बगल से उठ कर तर्जनी और अंगूठे के बीच में से प्रारंभ होकर शुक्र पर्वत को घेरती हुई मणिबन्ध पर जाकर विश्राम करती है संसार में जितने भी प्राणी हैं उन सब के हाथों में यह रेखा यहीं पर दिखाई देती हैं इसी रेखा से व्यक्ति की आयु, स्वास्थ्य, बीमारी, स्वस्थता आदि की जानकारी अथवा ज्ञान प्राप्त होता है।

सभी व्यक्तियों के हाथों में यह रेखा एक-सी दिखाई नहीं देती कुछ लोगों के हाथों में यह रेखा गहरी और लम्बी होती है तो कुछ रेखाएं व्यक्ति के शुक्र पर्वत को बहुत संकीर्ण बना लेती है किसी-किसी व्यक्ति के हाथ में यह रेखा शुक्र पर्वत के पास में जाकर टूट-सी जाती है ऐसे व्यक्ति निश्चय ही कम आयु के होते हैं तथा उनकी मृत्यु दुर्घटना से होती है।

इस रेखा से व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन के बारे में साधारणतः जाना जा सकता है।

२. मस्तिष्क रेखा :—अंग्रेजी में इस रेखा को 'हैड-लाइन' [illegible] हिन्दी में इसको बुद्धि रेखा शीष रेखा, प्रज्ञा रेखा अथवा मातृ रेखा, के नाम से पुकारते हैं।

मस्तिष्क रेखा

मस्तिष्क रेखा
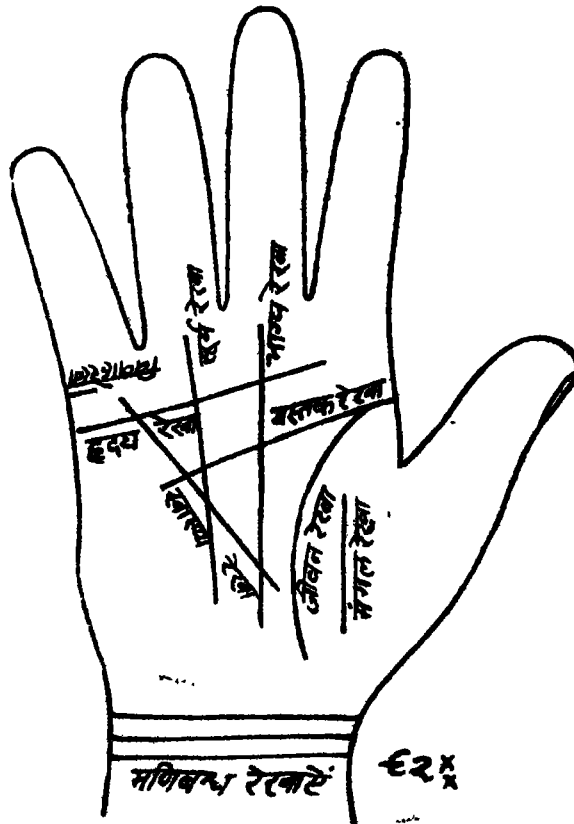
का प्रारंभ बृहस्पति पर्वत के पास से या बृहस्पति पर्वत के ऊपर से होता है। अधिकांश हाथों में मैंने जीवन रेखा और मस्तिष्क रेखा का उद्गम एक ही स्थान पर देखा है। परन्तु कई हाथों में यह उद्गम एक ही न होकर पास-पास होता देखा गया है। यह रेखा हथेली को दो भागों में बांटती हुई राहू और हर्षल क्षेत्रों को अलग-अलग करती हुई बुध क्षेत्र के नीचे तक चली जाती है, इस पूरी रेखा को मस्तिष्क रेखा कहते हैं।

इस रेखा की स्थिति अलग-अलग हाथों में अलग-अलग प्रकार से देखी जाती है। जिन व्यक्तियों का मस्तिष्क पैना, उर्वर, तथा क्रियाशील होता है या जो व्यक्ति मुख्यत: बुद्धिजीवी होते हैं उन व्यक्तियों के हाथों में यह रेखा लम्बी गहरी और स्पष्ट होती है। इसके विपरीत जो शारीरिक श्रम करने वाले होते हैं या जिनका मस्तिष्क कमजोर होता है अथवा जो श्रमजीवी होते हैं उनके हाथों में या तो यह रेखा धूमिल और अस्पष्ट-सी होती है अथवा यह रेखा बीच-बीच में कई स्थान पर टूटी हुई-सी दिखाई देती है। इस रेखा से मानव के मस्तिष्क का भलीभांति अध्ययन किया जा सकता है।

३. **हृदय रेखा** :—इस रेखा को अंग्रेजी में 'हार्ट लाइन' और भारत में इस रेखा को विचार रेखा कहते हैं। यह रेखा बुध पर्वत के नीचे से प्रारभ होकर बुध तथा प्रजापति के क्षेत्रों को अलग-अलग करती हुई तर्जनी के नीचे या गुरु पर्वत के नीचे तक पहुंच जाती है। सामान्यतः यह रेखा सभी व्यक्तियों के हाथों में दिखाई देती है क्योंकि इस रेखा का सीधा सम्बन्ध हृदय से होता है, परन्तु मैंने कुछ डाकुओं एव हृदयहीन व्यक्तियों के हाथों में इस रेखा का सर्वथा अभाव ही देखा है। जिन व्यक्तियों के हाथों में यह रेखा कमजोर होती है वस्तुत: वे व्यक्ति अमानवीय एवं क्रूर होते हैं।

हृदय रेखा
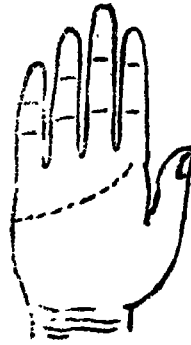
हृदय रेखा

अलग-अलग हाथों में यह रेखा अलग-अलग लम्बाई लिये हुई होती है। किसी हाथ में यह रेखा तर्जनी तक किसी हाथ में मध्यमा तक तो किसी हाथ में अनामिका तक ही जाकर समाप्त हो जाती है परन्तु मैंने कुछ हाथों में यह रेखा गुरु क्षेत्र को पार कर हथेली के दूसरे छोर तक पहुंचती हुई भी देखी है, परन्तु ऐसी लम्बी रेखा बहुत कम लोगों के हाथों में ही होती है।

४. सूर्य रेखा :—अंग्रेजी में इसे 'अपोलो लाइन' या 'सन लाइन' अथवा 'लाइन आफ सक्सेस' भी कहते हैं। हिन्दी में इस रेखा को सूर्य रेखा, रवि रेखा अथवा प्रतिभा रेखा कहते हैं। इस रेखा का उद्गम विभिन्न व्यक्तियों के हाथों में विभिन्न स्थानों से देखा गया है, परन्तु एक बात सभी व्यक्तियों के हाथों में समान होती है वह यह कि इस रेखा की समाप्ति सूर्य पर्वत पर जाकर होती है। मैंने लगभग इस रेखा का प्रारम्भ तीस स्थानों से देखा है। अतः रवि रेखा या सूर्य रेखा उसी रेखा को माननी चाहिए जिसकी समाप्ति सूर्य पर्वत पर होती हो।

सूर्य रेखा

५. भाग्य रेखा :—इसे अंग्रेजी में 'फेट लाइन' कहते हैं। हिन्दी में इसे भाग्य रेखा ऊर्ध्व रेखा अथवा प्रारब्ध रेखा भी कहते हैं।
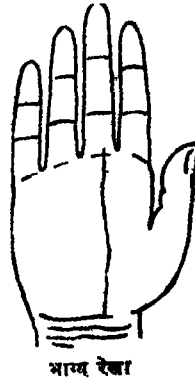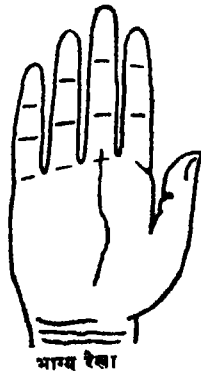
भाग्य रेखा

भाग्य रेखा

यह रेखा सभी व्यक्तियों के हाथों में दिखाई नहीं देती। साथ ही इस रेखा के उद्गम भी कई होते हैं परन्तु एक बात भली प्रकार से समझ लेनी चाहिए कि जिस रेखा की समाप्ति शनि पर्वत पर होती है वही रेखा भाग्य रेखा कहला सकती है।

जब तक यह शनि पर्वत पर नहीं पहुंच जाती तब तक इस रेखा को भाग्य रेखा कहना उचित नहीं।

कई हाथों में यह रेखा बुध पर्वत पर भी पहुंच जाती है परन्तु वास्तव में यह रेखा भाग्य रेखा न होकर कोई अन्य रेखा ही होती है। इस रेखा का विकास हथेली में नीचे से ऊपर की ओर होता है। कुछ हाथों में यह रेखा शुक्र पर्वत से प्रारंभ होती है तो कुछ हाथों में यह रेखा मणिबन्ध से प्रारंभ होकर ऊपर की ओर उठती हुई दिखाई देती है। कुछ हाथों में यह रेखा सूर्य पर्वत के पास से भी निकल कर शनि पर्वत पर पहुंच जाती है। अतः जैसा कि मैंने ऊपर कहा कि इस रेखा का उद्‌गम अलग-अलग होता है अतः इसकी समाप्ति के स्थान से इसके उद्‌गम का पता लगाना चाहिए।

संसार में आधे से अधिक लोगों के हाथों में यह रेखा नहीं पाई जाती।

६. **स्वास्थ्य रेखा** :—अंग्रेजी में इस रेखा को 'हेल्थ लाइन' कहते हैं। इस रेखा का सम्बन्ध स्वास्थ्य से होता है परन्तु इस रेखा के उद्‌गम का कोई निश्चित स्थान नहीं है। यह हथेली में मंगल पर्वत से, जीवन रेखा से, हथेली के बीच में से, या कहीं से भी प्रारम्भ हो सकती है, परन्तु यहां यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि इस रेखा की समाप्ति बुध पर्वत पर ही होती है, और जो रेखा बुध पर्वत तक पहुंचती है वास्तव में वही रेखा स्वास्थ्य रेखा कहला सकती है। कुछ हाथों में यह रेखा बहुत

स्वास्थ्य रेखा
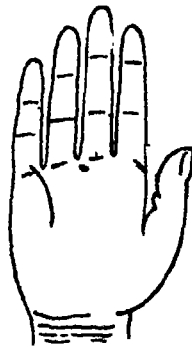
स्वास्थ्य रेखा

मोटी होती है, तो कुछ हाथों में यह रेखा बाल से भी पतली देखी जा सकती है। इस रेखा का अध्ययन अत्यन्त सावधानी के साथ किया जाना चाहिए। इसके माध्यम से स्वास्थ्य, तन्दुरुस्ती, बीमारी आदि का अध्ययन होता है।

७. **विवाह रेखा** :—इसे अंग्रेजी में 'लव लाइन' या 'मैरिज लाइन' कहते हैं। यह बुध पर्वत पर होती है। हथेली के बाहरी भाग से बुध पर्वत की ओर अन्दर की

तरफ आती हुई जो रेखा होती है वही विवाह रेखा कहलाती है। कुछ लोगों के हाथों में ऐसी तीन चार रेखाएं होती हैं, परन्तु इससे यह नहीं समझ लेना चाहिए कि उस
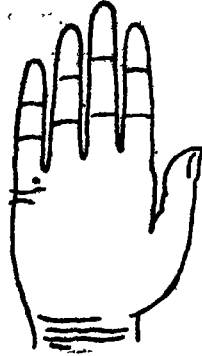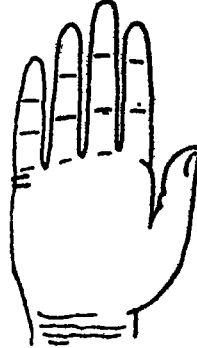
विवाह रेखा   विवाह रेखा

व्यक्ति का विवाह तीन चार स्त्रियों से होगा, परन्तु इसका अर्थ यह होता है कि उसका सम्बन्ध तीन चार प्राणियों से अवश्य ही रहेगा। इन तीन चार रेखाओं में से जो रेखा गहरी और स्पष्ट होती है वास्तव में वही रेखा विवाह रेखा कहलाती है।

कई बार यह भी देखने में आया है कि व्यक्ति के हाथ में विवाह रेखा होते हुए भी वह आजीवन कुंआरा रहता है। इसका कारण यह है कि जब विवाह रेखा पर किसी प्रकार का कोई क्रॉस बना हुआ हो तो यह समझ लेना चाहिए कि इस व्यक्ति के सम्बन्ध बन कर समाप्त हो जायेंगे। जीवन में विवाह नहीं हो सकेगा। यदि विवाह रेखा के साथ में चलने वाली किसी रेखा पर छोटे-छोटे चिह्न हों तो उस व्यक्ति के जीवन में अनैतिक सम्बन्ध बने रहते हैं।

ऊपर मैंने सात प्रमुख रेखाओं की विवेचना की है अब आगे मैं गौण रेखाओं के बारे में जानकारी प्रस्तुत कर रहा हूं।

वृहस्पतिवलय

१. वृहस्पति वलय :—इसे अंग्रेजी में 'रिंग आफ जुपिटर' कहते हैं। हिन्दी में इसको गुरुमुद्रा या गुरु रेखा भी कहते हैं। यह तर्जनी उंगली से नीचे वृहस्पति पर्वत पर तर्जनी उंगली के नीचे अर्द्ध चन्द्राकार बनाती हुई उसके पूरे क्षेत्र को घेर लेती है जो कि अंगूठी के समान दिखाई देती है इसी को गुरुवलय या वृहस्पति मुद्रा कहते हैं।
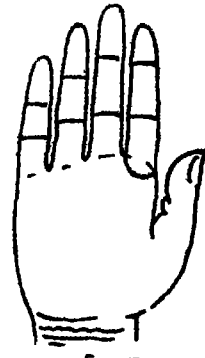
२. मंगल रेखा :—इसे अंग्रेजी में 'लाइन आफ मार्स' कहते हैं। यह रेखा अंगूठे के पास जीवन रेखा के मूल उद्गम से निकल कर मंगल क्षेत्र पर होती हुई शुक्र पर्वत की ओर जाती है इसे मंगल रेखा कहते हैं परन्तु इसका उद्गम स्थान निश्चित नहीं होता। कुछ लोगों के हाथों में यह जीवन रेखा के बीच में से, तो कुछ हाथों में

मंगल रेखा मंगल रेखा
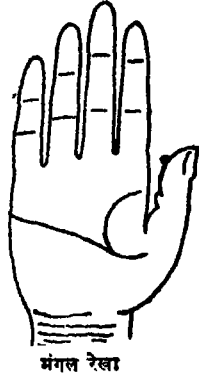
यह रेखा जीवन रेखा के बराबर चलती हुई भी दिखाई देती है। शुक्र क्षेत्र की ओर जब यह रेखा बढ़ती है तो वह जीवन रेखा से दूर हटती जाती है।

हथेली में इस रेखा का महत्त्व बहुत अधिक माना गया है।

३. शनिवलय : इसे 'रिंग आफ सेटर्न' कहते हैं तथा हिन्दी में शनि मुद्रा या शनि रेखा या शनि वलय कहते हैं। यह रेखा मध्यमा उंगली के मूल में शनि पर्वत को घेरती हुई अपना एक छोर तर्जनी और मध्यमा के बीच में तो दूसरा छोर मध्यमा और अनामिका के बीच में रख देती है। इस प्रकार से यह शनि पर्वत को अंगूठी की तरह घेर लेती है। यह वलय हाथ में बहुत महत्त्व रखता है।

शनिवलय

रविवलय

४. रविवलय : इसे "रिंग आफ सन" कहते हैं तथा हिन्दी में इसको सूर्य मुद्रा या सूर्य बलय भी कहा जाता है। यह अनामिका उंगली के मूल में अंगूठी की तरह सूर्य पर्वत को घेर लेती है। इस रेखा का एक छोर मध्यमा अनामिका के बीच में होता है तथा दूसरा छोर अनामिका कनिष्ठिका के बीच में पाया जाता है जिस किसी हाथ में यह बलय देखा जाता है वह इसी रूप में होता है।
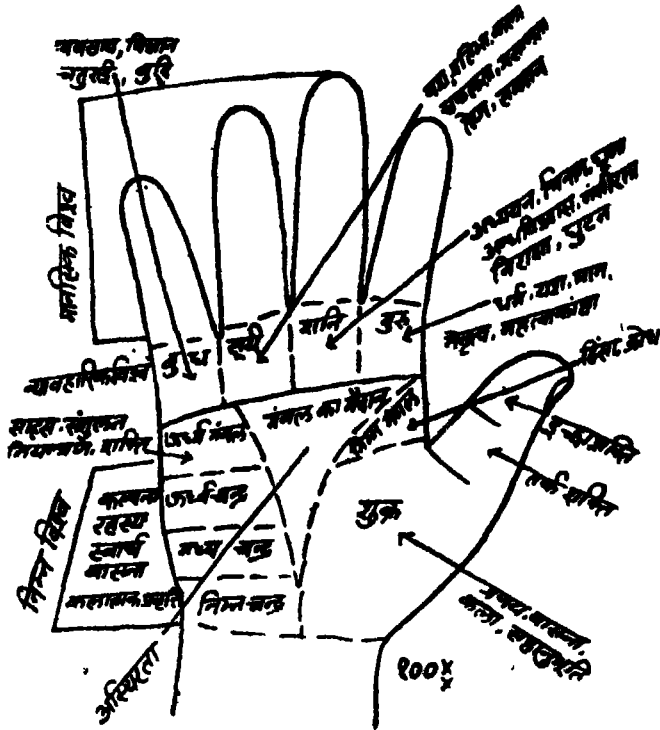
५. शुक्र वलय : इसे अंग्रेजी में "गर्डल आफ वीनस" कहते हैं तथा संस्कृत में इसको भृगु रेखा, शुक्र रेखा या शुक्र वलय कहा जाता है। यह वलय तर्जनी और मध्यमा के बीच में से प्रारम्भ होकर अनामिका और कनिष्ठिका के बीच में आकर समाप्त होता है। इस प्रकार यह रेखा शनि और सूर्य दोनों पर्वतों को घेर लेता है। कई हाथों में यह वलय दोहरी रेखाओं से बनता है। यद्यपि इसका नाम शुक्र वलय होता है परन्तु इसका शुक्र पर्वत से किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं होता। यह वलय व्यक्ति के हाथों में बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण कहा जाता है।
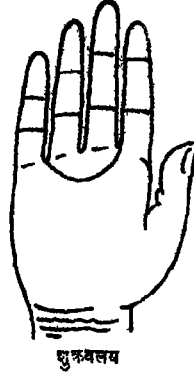
शुक्रवलय
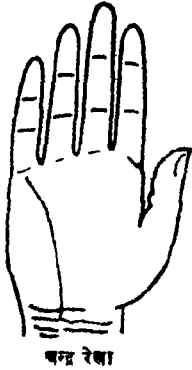
चन्द्र रेखा

६. चन्द्र रेखा : यह धनुष के आकार की रेखा होती है तथा यह चन्द्र क्षेत्र से प्रारम्भ होकर वरुण तथा प्रजापति क्षेत्रों के ऊपर से चलती हुई बुध पर्वत तक जाकर रुकती है, बहुत ही कम लोगों के हाथों में यह रेखा देखने को मिलती है।

७. प्रभावक रेखा : अंग्रेजी में इस रेखा को "लाइन ऑफ इन्फ्लुएन्स" कहते हैं। तथा यह जिस रेखा के साथ में भी होता है उस रेखा के प्रभाव को बढ़ा देती है। यह रेखा चन्द्र क्षेत्र तथा वरुण क्षेत्र के ऊपर से चलकर भाग्य रेखा तक पहुँचती है। कुछ लोगों के हाथों में यह रेखा दुहरी तथा कुछ लोगों के हाथों में यह तिहरी दिखाई पड़ती है। इसका प्रारम्भ शुक्र पर्वत से भी देखा जा सकता है परन्तु इस प्रकार का प्रारम्भ बहुत कम हाथों में अनुभव हुआ है।
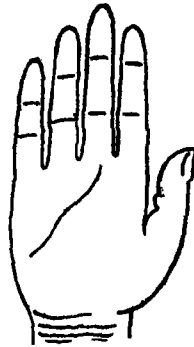
प्रभावक रेखा

यात्रा रेखा

८. यात्रा रेखा : अंग्रेजी भाषा में इसको 'ट्रेवलिंग लाइन' कहा जाता है। यह यात्रा वायुयान यात्रा, जल यात्रा या पैदल यात्रा किसी भी प्रकार की यात्रा को स्पष्ट करती है। परन्तु सूक्ष्मता से देखने पर ज्ञात होता है कि इस रेखा पर अलग-अलग प्रकार के चिह्न होते हैं जिनमें यात्राओं का भेद ज्ञात किया जा सकता है यह रेखा चन्द्र रेखा पर या शुक्र क्षेत्र से, मंगल क्षेत्र की ओर जाती हुई राहू क्षेत्र को पार कर चन्द्र पर्वत की ओर जाती हुई दिखाई देती है। ऐसी रेखाएं मोटी और पतली दोनों ही प्रकार की दिखाई देती हैं।

९. सन्तति रेखा : इन रेखाओं को 'लाइनस आफ चिल्ड्रन' भी कहते हैं। ये रेखाएं बुध पर्वत के पास में विवाह-रेखा पर खड़ी लकीरों के रूप में दिखाई देती है। वास्तव में ये रेखाएं बाल के समान पतली होती है जिनको नंगी आंखों से देखना सम्भव नहीं रहता।
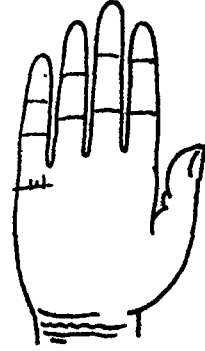
सन्तति रेखा

मणिबन्ध रेखा

१०. मणिबन्ध रेखा : ये रेखाएं कलाई पर पाई जाती हैं परन्तु इनकी संख्या अलग-अलग हाथों में अलग-अलग होती है। किसी व्यक्ति के हाथ में एक मणिबन्ध रेखा किसी में दो तीन या चार मणिबन्ध रेखाएं भी देखने को मिल जाती है।

आकस्मिक रेखाए

११. **आकस्मिक रेखाएं** : ये रेखाएं समय-समय पर बनती रहती हैं तथा अच्छे और बुरे समय को प्रदर्शित करती रहती हैं। ये रेखाएं स्थायी नहीं होती वरन् इनका क्षणिक प्रभाव समाप्त हो जाता है तो ये रेखाएं मिट जाती हैं। ये रेखाएं हथेली पर कहीं पर भी बन सकती है और बनकर मिट सकती हैं।

१२. **उच्च पद रेखा** : यह रेखा मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर केतु क्षेत्र की ओर जाती दिखाई देती है। यदि यह रेखा गहरी और स्पष्ट हो तो व्यक्ति निश्चय ही उच्च पद प्राप्त करता है।

उच्च पद रेखा

ऊपर मैंने प्रधान तथा गौण रेखाओं का स्थान तथा उनका संक्षिप्त परिचय दिया है। अब आगे के पृष्ठों में मैं इनसे सम्बन्धित कुछ और तथ्य स्पष्ट कर रहा हूं :

जीवन रेखा

जीवन रेखा ही हथेली में एक ऐसी रेखा है जो प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में पाई जाती है। यदि किसी के हाथ में यह रेखा न देखने को मिले तो यह समझना चाहिए कि ऐसे व्यक्ति का व्यक्तित्व शून्यवत् है और उस व्यक्ति का जीवन शक्ति का सर्वथा लोप हो गया है। ऐसे व्यक्ति का जीवन किसी भी समय समाप्त हो सकता है, कई बार मंगल रेखा चल कर इस रेखा को बल देती है, कभी-कभी शनि रेखा भी इस रेखा को बल देती हुई दिखाई दी है परन्तु फिर भी जो जीवन रेखा अपने आप में निर्दोष और स्पष्ट होती है वास्तव में वही रेखा मानव के लिये कल्याणकारी मानी जाती है।

इसी रेखा से व्यक्ति की आयु का पता चलता है तथा इस रेखा के माध्यम से यह ज्ञात किया जा सकता है कि जीवन में कौन-कौन सी दुर्घटनाएं किस-किस समय घटिया होंगी तथा मृत्यु का कारण और मृत्यु का समय भी इसी रेखा से ज्ञात होता है।

यह रेखा बृहस्पति पर्वत के नीचे से निकलती है पर कई बार यह रेखा बृहस्पति पर्वत के ऊपर से भी निकलती हुई दिखाई दी है। इस रेखा के बारे में यह ध्यान रखना अत्यन्त जरूरी है कि यह रेखा शुक्र पर्वत को जितने ही बड़े रूप में घेरती है उतनी ही यह रेखा ज्यादा श्रेष्ठ मानी जाती है। यद्यपि कई बार यह रेखा शुक्र पर्वत को अत्यन्त संकीर्ण बना देती है जब ऐसा तथ्य हथेली में दिखाई दे तब यह समझ लेना चाहिए कि इस व्यक्ति की प्रगति जीवन में कठिन ही होगी, साथ ही साथ इस व्यक्ति को जीवन में प्रेम भोग सुख आदि सांसारिक गुणों की न्यूनता ही रहेगी। अंगूठे के पास में से होकर यदि यह रेखा निकले तो उस व्यक्ति की आयु बहुत कम होती है।

जीवन रेखा जितनी ही ज्यादा गहरी स्पष्ट और बिना टूटी हुई होती है उतनी ही वह ज्यादा अच्छी कहलाती है। ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य उन्नत होगा, उसके हृदय में प्रेम और सौन्दर्य की भावना विकसित रहेगी परन्तु जिसके हाथ में यह रेखा कटी-फटी या टूटी हुई अथवा अस्पष्ट दिखाई दे तो उसका जीवन दुखमय भावनाशून्य एवं दुर्घटनाओं से युक्त रहता है। ऐसे व्यक्ति तुनक मिजाज चिड़चिड़े तथा बात-बात पर क्रोधित होने वाले होते हैं।

यदि गुरु पर्वत के नीचे जीवन रेखा और मस्तिष्क रेखा का पूर्ण मिलन होता है तो यह शुभ माना जाता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रमी सतर्क और योजनाबद्ध तरीके से काम करने वाला होता है। परन्तु यदि इन दोनों रेखाओं का उद्गम अलग-अलग होता है तो व्यक्ति उन्मुख विचारों वाला तथा अपनी ही धुन से कार्य करने वाला होता है। परन्तु यदि किसी के हाथ में जीवन रेखा, मस्तिष्क रेखा, और हृदय रेखा तीनों ही एक ही स्थान से निकले तो यह एक दुर्भाग्यपूर्ण प्रतीक होता है ऐसे व्यक्ति की निःसंदेह हत्या हो जाती है।

जीवन रेखा पर यदि आड़ी-तिरछी लकीरें दिखाई दें तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य कमजोर समझना चाहिए। यदि हृदय रेखा और जीवन रेखा के बीच में त्रिभुज बन जाय तो ऐसा व्यक्ति दमे का रोगी होता है।

यदि जीवन रेखा से कोई पतली रेखा निकल कर गुरु पर्वत की ओर जाती दिखाई दे तो उस व्यक्ति में इच्छाएं, भावनाएं और महत्त्वकांक्षाएं जरूरत से ज्यादा होती है और वह उन इच्छाओं को पूरी करने का भगीरथ प्रयत्न करता है। यदि इस रेखा पर कोई रेखाएं उठती हुई दिखाई दें तो वह व्यक्ति परिश्रमी और कर्मण्ठ होता है तथा अपने प्रयत्नों से भाग्य का निर्माण करता है।

यदि जीवन रेखा के प्रारम्भ से ही उसके साथ-साथ सहायक रेखा चल रही हो तो ऐसा व्यक्ति सोच-समझ कर कार्य करने वाला विवेकपूर्ण योजनाएं बनाने वाला चतुर तथा महत्त्वाकांक्षी होता है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में कुछ भी असम्भव नहीं होता।

यदि जीवन रेखा चलती-चलती अचानक बीच में समाप्त हो जाती है तो यह आकस्मिक मृत्यु की ओर संकेत करती है। यदि जीवन रेखा से कोई सहायक रेखा निकल कर चन्द्र पर्वत की ओर जाती हुई दिखाई दे तो वह व्यक्ति वृद्धावस्था में पागल होता है, यदि इस रेखा में शनि रेखा आकर मिल जाए तो वह व्यक्ति प्रतिभावान और तेजस्वी होता है।

जीवन रेखा के अंत में यदि किसी प्रकार का कोई बिंदु या क्रॉस दिखाई दे तो उस व्यक्ति की मृत्यु अचानक होती है। यदि जीवन रेखा अन्त में आकर कई भागों में बंट जाए तो ऐसे व्यक्ति को बुढ़ापे में निश्चय ही क्षय रोग होगा।

इससे सम्बन्धित कुछ अन्य तथ्य भी नीचे स्पष्ट किये जा रहे हैं :—

१. छोटी रेखा—कम आयु।

२. पीली और चौड़ी रेखा—बीमारी और विवादास्पद चरित्र।

३. लाल रेखा—हिंसा की भावना।

४. पतली रेखा—आकस्मिक मृत्यु।

५. जंजीरदार रेखा—शारीरिक कोमलता ।
६. टूटी हुई रेखा—बीमारी ।
७. सीढ़ी के समान रेखा—जीवन-भर रुग्णता ।
८. बृहस्पति पर्वत के नीचे से प्रारम्भ—उच्च सफलता ।
९. मस्तिष्क रेखा से मिली हुई—विवेकपूर्ण जीवन ।
१०. जीवन मस्तिष्क तथा हृदय रेखा का मिलन—दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति ।
११. धंसी हुई गहरी रेखा—अशिष्टतापूर्ण व्यवहार ।
१२. स्वास्थ्य तथा मस्तिष्क रेखाओं के पास नक्षत्र—सन्तानहीनता ।
१३. स्पष्ट रेखा—न्यायपूर्ण जीवन ।
१४. प्रारम्भ स्थल पर शाखा पुंज—अस्थिर जीवन ।
१५. रेखा के मध्य में शाखाएं—क्षयपूर्ण जीवन ।
१६. अन्तिम सिरे पर शाखाएं—दुखदायी बुढ़ापा ।
१७. अन्त में दो भागों में विभक्त—निर्धनतापूर्ण मृत्यु ।
१८. अन्त में जाल—धनहानि के बाद मृत्यु ।
१९. रेखा से ऊपर की ओर उठती हुई सहायक रेखा—आकस्मिक धन-प्राप्ति ।
२०. रेखा पर काला धब्बा—रोग का प्रारम्भ ।
२१. नीचे की ओर जाती हुई सहायक रेखाएं—स्वास्थ्य तथा धन की हानि ।
२२. मार्ग में रेखा का टूटना—आर्थिक हानि ।
२३. कई जगह पर काटती हुई रेखाएं—स्थायी रोग ।
२४. रेखा पर वृत्त का निशान—हत्या ।
२५. प्रारम्भ में क्रॉस—दुर्घटना से अंग-भंग ।
२६. रेखा के अन्त में क्रॉस—असफलत बुढ़ापा ।
२७. क्रॉस से कटती हुई जीवन रेखा—मानसिक कमजोरी ।
२८. रेखा के प्रारम्भ में द्वीप—तंत्र-विद्या में रुचि ।
२९. रेखा के मध्यम में द्वीप—शारीरिक कमजोरी ।
३०. लहरदार जीवन रेखा और उस पर द्वीप—रोगी जीवन ।
३१. जीवन रेखा से हाथ के पार जाती हुई रेखाएं—चिन्ताएं और कष्ट ।
३२. जीवन रेखा से गुरु पर्वत को जाती हुई रेखाएं—कदम-कदम पर सफलता ।
३३. शनि पर्वत की ओर जाती हुई रेखाएं—पशु से दुर्घटना एवं मृत्यु ।
३४. सूर्य पर्वत की ओर जाती हुई रेखाएं—प्रसिद्धि और सम्मान ।
३५. बुध पर्वत की ओर जाती हुई रेखाएं—अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में विशेष सफलता ।
३६. चन्द्र पर्वत की ओर जाती हुई रेखाएं—जरूरत से ज्यादा निर्धनता तथा रोगमय जीवन ।

३७. निम्न मंगल की श्रोर जाती हुई रेखाएं—क्रोध में आत्महत्या ।
३८. मंगल पर्वत की ओर जाती हुई रेखाएं—प्रेम के कारण युवावस्था में बदनामी ।
३९. शुक्र पर्वत की श्रोर अंदर की श्रोर जाती हुई रेखाएं—प्रेम-भंग ।
४०. जीवन रेखा को कई स्थानों पर काटती हुई रेखाएं—पारिवारिक जीवन में पूर्ण असफलता ।
४१. जीवन रेखा को काटकर भाग्य रेखा तक जाने वाली रेखा—व्यापार में पूर्ण असफलता ।
४२. जीवन रेखा को काटकर मस्तिष्क रेखा की ओर जाती हुई रेखा—पागलपन ।
४३. जीवन रेखा को काटकर हृदय रेखा की श्रोर जाती हुई रेखा—हृदयरोग से पीड़ित ।
४४. जीवन रेखा तथा हृदय रेखा को काटती हुई रेखा—प्रेम कार्यों में असफलता ।
४५. हृदय रेखा की श्रोर जाने वाली रेखा के अन्त में द्वीप—दुखपूर्ण वैवाहिक जीवन ।
४६. जीवन रेखा और सूर्य रेखा को काटती हुई रेखा—सामाजिक पतन ।
४७. शुक्र पर्वत तथा जीवन रेखा पर नक्षत्र का चिह्न—घरेलू झगड़े ।
४८. सूर्य रेखा तथा जीवन रेखा पर नक्षत्र—दुखमय घरेलू जीवन ।
४९. मस्तिष्क हृदय रेखा तथा जीवन रेखा पर चिह्न—रोगपूर्ण जीवन ।
५०. भाग्य रेखा तथा जीवन रेखा पर त्रिकोण—आर्थिक हानि ।
५१. सूर्य रेखा तथा जीवन रेखा पर त्रिकोण—अपराधपूर्ण जीवन ।

मस्तिष्क रेखा

जीवन और मस्तिष्क का आपस में गहरा सम्बन्ध है क्योंकि बिना बुद्धि के या मस्तिष्क के जीवन व्यर्थ-सा हो जाता है। जीवन में यश, मान, प्रतिष्ठा आदि बुद्धि के द्वारा ही प्राप्त होती है अतः जीवन रेखा का जितना महत्त्व हथेली में है, लगभग उतना ही महत्त्व मस्तिष्क रेखा का भी है।

विद्वानों के अनुसार हथेली में मस्तिष्क रेखा का पुष्ट सुदृढ़ एवं स्पष्ट होना अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि यदि मस्तिष्क रेखा जरा-सी भी विकृत होती है तो उसका पूरा जीवन लगभग बरबाद-सा हो जाता है।

मस्तिष्क रेखा का कोई एक उद्‌गम नहीं है। यह अलग-अलग स्थानों से निकलती है। प्रधानतः इनका उद्‌गम निम्न प्रकार से देखा गया है :

१. जीवन की रेखा के उद्‌गम स्थान से निकल कर यह जीवन रेखा को ही काटती हुई हथेली के दूसरे छोर पर पहुंच जाती है।

२. जीवन रेखा के उद्‌गम स्थान के पास से निकल कर हथेली के मध्य में समाप्त हो जाती है।

३. जीवन रेखा के बराबर चलती हुई काफी आगे चलकर यह अपना रास्ता बदल लेती है।

४. जीवन रेखा के पास से चलकर हथेली को दो भागों में बांटती हुई दूसरे छोर पर पहुंच जाती है।

५. मस्तिष्क रेखा और हृदय रेखा आपस में मिलती हुई-सी चलती है इस प्रकार ये पांच उद्‌गम स्थान देखे जा सकते हैं। परन्तु इसके अलावा भी मस्तिष्क रेखा के अन्य उद्‌गम स्थान होते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में मस्तिष्क रेखा पहले प्रकार के अनुसार दिखाई देती है वह अनुकूल नहीं मानी जाती। क्योंकि ऐसी रेखा जीवन रेखा को काट कर चलती है और इस प्रकार का चिह्न मानव जीवन में दुर्घटना का संकेत देता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में दुर्बल, कमजोर तथा रुग्ण रहता है। जरा-जरा सी बात पर वह क्रोधित हो जाता है तथा दूरदर्शी न होने के कारण जीवन में अपना ही अहित कर बैठता है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में मित्रों की संख्या कम ही होती है और समय पड़ने पर मित्र भी धोखा दे देते हैं।

दूसरे प्रकार की मस्तिष्क रेखा का उद्गम जिस हथेली में दिखाई देता है ऐसा व्यक्ति निश्चय ही जीवन में महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति के जीवन के कार्य और विचार में परस्पर पूर्ण सामंजस्य रहता है, और वह समय पड़ने पर शीघ्र निर्णय लेने वाला एवं अवसर को भली प्रकार से पहिचानने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति कुशाग्र बुद्धि वाला होता है तथा बात के मर्म तक शीघ्र ही पहुंचने में सक्षम होता है। यात्राओं के माध्यम से यह व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

जिसके हाथ में तीसरे प्रकार की मस्तिष्क रेखा का उद्गम होता है ऐसा व्यक्ति प्रबल आत्मविश्वासी होता है, तथा अपना कार्य निकालने में वह बहुत अधिक चतुर एवं योग्य होता है। जीवन में आय के स्रोत एक से अधिक होते हैं। यद्यपि कई बार इनके मन में हीनभावना आ जाती है परन्तु फिर भी यह अपने पुरुषार्थ के माध्यम से जीवन में सफल हो जाता है।

चौथे प्रकार की मस्तिष्क रेखा का उद्गम जिन व्यक्तियों के हाथों में होता है उनके जीवन में कई बार विदेश यात्राओं के योग बनते हैं साथ ही वह विदेश में व्यापार कर विशेष धन लाभ करता है। ऐसे व्यक्ति भौतिक दृष्टि से पूर्ण सफल होते देखे गये हैं।

जिन व्यक्तियों के हाथों में पांचवें प्रकार की मस्तिष्क रेखा का उद्गम होता है वे व्यक्ति कठोर, निर्दयी एवं भावनाशून्य होते हैं। एक प्रकार से इन व्यक्तियों के पास हृदय नाम की कोई वस्तु नहीं होती। अधिकतर अपराधियों के हाथ में इस प्रकार का उद्गम सहज ही देखने को मिल जाता है। यदि इस प्रकार के हाथों में मात्र मस्तिष्क रेखा ही हो और हृदय रेखा दिखाई न दे या हाथ में मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा परस्पर मिल गई हो या एक दूसरे से लिपट गई हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में कई हत्याएं करता है तथा भयंकर डाकू बनता है।

वस्तुतः हस्तरेखा विशेषज्ञ को हाथ देखते समय मस्तिष्क रेखा के उद्गम पर विशेष विचार करना चाहिए, और उस उद्गम को देखकर उसके अनुसार अपनी धारणा बनानी चाहिए। क्योंकि मस्तिष्क रेखा का प्रारम्भ कई नए तथ्यों को स्पष्ट करता है।

आगे की पंक्तियों में मस्तिष्क रेखा से सम्बन्धित अन्य तथ्य स्पष्ट कर रहा हूं:

१. यदि मस्तिष्क रेखा से कोई पतली रेखा गुरु पर्वत की ओर जा रही हो, तो वह व्यक्ति योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने वाला तथा बुद्धिमान होता है।

२. यदि यह रेखा सीधी, स्पष्ट, और निर्दोष हो तो वह व्यक्ति तुरन्त निर्णय लेने वाला, क्रियाशील मस्तिष्क का धनी तथा बुद्धिमान व्यक्ति होता है।

३. यदि मस्तिष्क रेखा तथा जीवन रेखा का उद्गम अलग-अलग हो तो ऐसा

व्यक्ति स्वच्छन्द प्रकृति का होता है। वह अपने तरीके से काम करता है और किसी के दबाव में कार्य नहीं करता।

४. यदि किसी स्त्री के हाथ में मस्तिष्क रेखा और जीवन रेखा का उद्गम अलग-अलग हो तो वह स्त्री कुलटा होती है।

५. यदि मस्तिष्क रेखा से कोई शाखा निकल कर गुरु पर्वत के अन्त तक पहुंच जाती है तो वह व्यक्ति देश का श्रेष्ठ साहित्यकार अथवा कलाकार होता है। वह अपना जीवन शालीनता से व्यतीत करने में समर्थ होता है।

६. यदि मस्तिष्क रेखा हथेली के बीच में जाकर नीचे की ओर झुक जाती है तो ऐसा व्यक्ति धन के प्रति बहुत अधिक मोह रखने वाला होता है। उसकी इच्छाएं ऐश्वर्य में जीवन व्यतीत करने की होती हैं। परन्तु परिस्थितियों के कारण वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाता।

७. यदि मस्तिष्क रेखा बढ़कर हृदय रेखा को छू ले तो वह व्यक्ति अपनी पत्नी के अलावा अन्य कई स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला होता है। परन्तु जीवन में इस क्षेत्र में उसे बदनामी भी मिलती है।

८. यदि मस्तिष्क रेखा हृदय रेखा से लिपटती हुई-सी आगे बढ़ती है तो ऐसा व्यक्ति क्रोध में अपनी पत्नी या प्रेमिका की हत्या कर देता है।

९. मस्तिष्क रेखा का झुकाव जिस पर्वत की ओर विशेष होता है उस पर्वत के गुणों में वृद्धि हो जाती है उदाहरणार्थ यदि इसका झुकाव गुरु पर्वत की ओर होता है तो वह व्यक्ति श्रेष्ठ साहित्यकार या तत्त्वज्ञानी होता है।

१०. यदि मस्तिष्क रेखा शनि पर्वत की ओर जा रही हो तो ऐसा व्यक्ति दार्शनिक अथवा चिन्तक होता है।

११. यदि यह रेखा सूर्य पर्वत की ओर झुकती हुई दिखाई दे तो वह व्यक्ति अत्यन्त उच्च पद प्राप्त करता है।

१२. यदि मस्तिष्क रेखा का झुकाव बुद्ध पर्वत की ओर प्रतीत हो तो ऐसा व्यक्ति एक सफल व्यापारी होता है, तथा व्यापार के माध्यम से वह अतुलनीय धन प्राप्त करता है।

१३. यदि मस्तिष्क रेखा लहराती हुई आगे बढ़ती हो तो ऐसे व्यक्ति का चित्त अस्थिर होता है, तथा उसकी कथनी और करनी में समानता एवं एकरूपता नहीं रह पाती।

१४. यदि मस्तिष्क रेखा आगे चलकर चन्द्र पर्वत की ओर जाती हुई दिखाई दे तो निश्चय ही वह व्यक्ति कवि होता है और जीवन में कई बार जलयात्रा करता है।

१५. मस्तिष्क रेखा जहां समाप्त होती है उस स्थान पर क्रॉस का चिह्न हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही वृद्धावस्था में पागल हो जाता है।

१६. यदि मस्तिष्क रेखा चन्द्र पर्वत के ऊपर से होती हुई मणिबन्ध तक पहुंच जाती है तो ऐसा व्यक्ति जीवन-भर दुखी, दरिद्री और निकम्मा रहता है।

१७. यदि यह रेखा मणिबन्ध तक पहुंच कर रुक जाती है और इसके आगे क्रॉस का चिह्न होता है तो वह व्यक्ति निश्चय ही आत्महत्या करता है।

१८. यदि मस्तिष्क रेखा के अन्तिम छोर पर दो भाग हो जाते हैं तो वह व्यक्ति कई प्रयत्नों से धन-संग्रह करने में लगा रहता है। जीवन में ऐसे व्यक्ति को धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा सहज ही मिल जाते हैं।

१९. यदि मस्तिष्क रेखा मंगल क्षेत्र पर ही समाप्त हो जाय तो ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में असफल ही रहता है।

२०. यदि मस्तिष्क रेखा शनि पर्वत की ओर जाती हो तथा उसके अन्तिम सिरे पर क्रॉस का चिह्न हो तो वह व्यक्ति आधा पागल कहलाता है, तथा जीवन में उसको असफलता ही मिलती है।

२१. मस्तिष्क रेखा जिस स्थान पर भी हृदय रेखा को काटती है जीवन की उस उम्र में व्यक्ति को बहुत बड़ी स्वास्थ्य की हानि होती है।

२२. यदि हाथ में मस्तिष्क रेखा दोहरी हो अर्थात् मस्तिष्क रेखा के साथ ही साथ उसकी सहायक रेखा भी चल रही हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त भाग्यवान कहलाता है।

२३. यदि दोहरी मस्तिष्क रेखा सीधी, स्पष्ट और सपाट हो तो निश्चय ही व्यक्ति कूटनीति में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

२४. यदि मस्तिष्क रेखा चलते-चलते मार्ग में टूट गई हो तो वह असंतुलित मस्तिष्क वाला होता है।

२५. यदि मस्तिष्क रेखा गुरु पर्वत के नीचे ही खण्डित हो जाती है तो उस व्यक्ति को बचपन में भयंकर चोट लगती है। इसी प्रकार यदि यह रेखा शनि पर्वत के नीचे टूटती है तो २४वें वर्ष में शस्त्र घात का योग बनता है।

२६. यदि मस्तिष्क रेखा सूर्य पर्वत के नीचे भंग हो जाती है, तो उस व्यक्ति को नौकरी में बहुत बदनामी का सामना करना पड़ता है। यदि ऐसी रेखा बुध पर्वत के नीचे जाकर टूटती हो तो उसे व्यापार में दिवालिया होना पड़ता है।

२७. यदि मस्तिष्क रेखा जंजीर के समान हो तो उसे जीवन में मस्तिष्क सम्बन्धी रोग रहते हैं।

२८. यदि गुरु पर्वत के नीचे मस्तिष्क रेखा पर किसी प्रकार का कोई द्वीप हो तो वह व्यक्ति पागल होता है।

२६. शनि पर्वत के नीचे यदि मस्तिष्क रेखा पर द्वीप का चिह्न दिखाई दे तो २४वें वर्ष में उसे पागलखाने जाना पड़ता है।

३०. यदि सूर्य पर्वत के नीचे मस्तिष्क रेखा पर किसी प्रकार का कोई द्वीप दिखाई दे तो वह व्यक्ति जीवन में सभी दृष्टियों से असफल रहता है।

३१. यदि बुध पर्वत के नीचे इस रेखा पर द्वीप बन जाय तो विस्फोट के कारण उस व्यक्ति की मृत्यु होती है।

३२. यदि मस्तिष्क रेखा बीच में से कटी हुई हो तो ऐसे व्यक्ति असंतुलित दिमाग वाला कहा जायगा।

३३. यदि मस्तिष्क रेखा के आस-पास छोटी-मोटी बारीक रेखाएं दिखाई दें तो वह व्यक्ति अस्थिर निर्णय वाला होता है।

३४. यदि मस्तिष्क रेखा घूम कर शुक्र पर्वत की ओर जाती हुई दिखाई दे तो वह व्यक्ति उन्नति करता है तथा स्त्रियों में अत्यधिक लोकप्रिय होता है।

३५. यदि मस्तिष्क रेखा पर सफेद बिन्दु दिखाई दे तो वह व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

३६. यदि मस्तिष्क रेखा पर काले धब्बे या बिन्दु दिखाई दें तो ऐसा व्यक्ति विकृत मस्तिष्क वाला होता है।

३७. यदि इस रेखा पर क्रॉस का चिह्न हो तो उस व्यक्ति की मृत्यु दुर्घटना से होती है।

३८. यदि इस रेखा पर नक्षत्र का चिह्न दिखाई दे तो उसे जीवन में गहरी चोट लगती है।

३९. यदि इस रेखा पर वृत का चिह्न हो तो वह व्यक्ति अदूरदर्शी तथा मूर्ख होता है।

४०. यदि इस रेखा पर त्रिकोण का चिह्न हो तो उसे जीवन में भयंकर हानि का सामना करना पड़ता है।

४१. यदि लम्बी उंगलियां हों और मस्तिष्क रेखा भी सीधी तथा स्पष्ट हो तो वह व्यक्ति सूक्ष्मदर्शी एवं बुद्धिमान होता है।

४२. यदि छोटी उंगलियां हों पर मस्तिष्क रेखा स्पष्ट हो तो उसके जीवन में पूर्ण प्रगति नहीं हो पाती।

४३. यदि सभी पर्वत पुष्ट हों तथा मस्तिष्क रेखा भी सीधी और स्पष्ट हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही अपने प्रयत्नों से जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

४४. यदि हाथ में नोकीली उंगलियां हों तथा मस्तिष्क रेखा सीधी हो तो वह व्यक्ति विद्वान होता है।

४५. यदि हृदय रेखा तथा जीवन रेखा के अन्तिम छोर पर त्रिकोण का चिह्न हो तो यह शुभ माना गया है।

४६. यदि मस्तिष्क रेखा हथेली के आरपार जाती हुई दिखाई दे तो उस व्यक्ति की स्मरणशक्ति अत्यन्त तीव्र होती है और वह जीवन में मेधावी कहा जाता है।

४७. यदि हृदय रेखा छल्लेदार हो तो उसे सिर के रोग बराबर बने रहते हैं।

४८. यदि छोटा अंगूठा हो पर साथ में मस्तिष्क रेखा हलकी हो तो वह व्यक्ति अपनी ही मूर्खता से दिवालिया हो जाता है।

४९. यदि बुध पर्वत विकसित हो परन्तु मस्तिष्क रेखा कमजोर हो तो उसे जीवन में बहुत बड़ा विश्वासघात सहन करना पड़ता है।

५०. यदि चौड़ी हथेली हो तथा सूर्य पर्वत कमजोर हो, परन्तु मस्तिष्क रेखा स्पष्ट हो तो भी वह व्यक्ति जीवन में सफल नहीं हो पाता।

५१. पतली हृदय रेखा मानसिक दुर्बलता को स्पष्ट करती है।

५२. यदि मस्तिष्क रेखा पर छोटे-छोटे कई द्वीप हों तो उस व्यक्ति को सन्निपात की अवस्था में मरना पड़ता है।

५३. यदि मस्तिष्क रेखा टेढ़ी-मेढ़ी हो तो, वह व्यक्ति संकुचित विचार-धारा का होता है।

५४. यदि हृदय रेखा कमजोर हो और मस्तिष्क रेखा स्पष्ट हो तो उसे जीवन में क्षयरोग का सामना करना पड़ता है।

५५. यदि जीवन रेखा ऊपर से उद्गम करती हुई आगे बढ़ती हो, और साथ में कई छोटी-मोटी रेखाएं हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यधिक शक्तिशाली होता है।

५६. यदि इस रेखा के अन्त में चतुर्भुज हो तो वह व्यक्ति विदेश में सफलता प्राप्त करता है।

५७. यदि गुरु एवं मंगल पर्वत विकसित हो तथा मस्तिष्क रेखा स्पष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति में असाधारण आत्मविश्वास एवं प्रबल इच्छाशक्ति होती है।

५८. यदि मस्तिष्क रेखा अंगूठे के पास में से होकर चल रही हो तो उसकी आयु बहुत कम होती है।

५९. यदि हृदय रेखा की ओर बढ़ती हुई यह रेखा बीच में कई जगह टूटी हुई हो तो उसे जीवन में मिर्गी का रोग होता है।

६०. यदि यह रेखा जीवन रेखा के साथ-साथ आगे बढ़ रही हो तो प्रेम में विश्वासघात होने के कारण इसकी मृत्यु होती है।

६१. यदि यह रेखा चन्द्र पर्वत पर जाकर समाप्त होती है तो वह व्यक्ति प्रसिद्ध तांत्रिक होता है।

६२. यदि यह रेखा जालीदार हो तो वह कुशल वक्ता होता है।

६३. यदि यह रेखा तिरछापन लिये हुए आगे बढ़ती हो तो ऐसा व्यक्ति जूए में अपना सब-कुछ बर्बाद कर लेता है।

६४. यदि यह रेखा हथेली के बीच में समाप्त होती है तो वह व्यक्ति पागल होता है।

६५. यदि यह रेखा कुछ दूर चलकर वापिस मुड़ जाती हो तो ऐसे व्यक्ति का प्रेम में दुखद अन्त होता है।

६६. यदि यह भाग्य रेखा के आस-पास आकर समाप्त होती है तो वह व्यक्ति २५ साल के पहले-पहले मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

६७. यदि इसका अन्त बुध पर्वत की ओर हो तो वह व्यवस्थित कार्य करने वाला व्यक्ति होता है। यदि इसका अन्त मंगल पर्वत पर हो तो उसे दिमागी परेशानी रहती है।

६८. यदि यह रेखा छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटी हुई हो तो वह व्यक्ति अत्यधिक घमण्डी होता है।

६९. यदि यह सूर्य क्षेत्र के नीचे टूट जाती है तो हिंसक पशु के आघात से उसकी मृत्यु होती है।

७०. यदि मस्तिष्क रेखा और जीवन रेखा मिलकर न्यून कोण बनाते हों तो वह व्यक्ति राज्य सेवा में अत्यन्त उच्चपद पर पहुंचता है।

७१. यदि यह जीवन रेखा से मिलकर हृदय रेखा की ओर जा रही हो तो वह व्यक्ति अंधा होता है।

७२. यदि मस्तिष्क रेखा और स्वास्थ्य रेखा दोनों के अन्तिम सिरे पर क्रॉस का चिह्न हो तो उसे जीवन में मस्तिष्क रोगों से ग्रसित होना पड़ता है।

७३. यदि मस्तिष्क रेखा और हृदय रेखा दोनों टूटी हुई हों तो उसे गृहस्थ-जीवन का सुख नहीं मिलता।

७४. यदि स्वास्थ्य रेखा और मस्तिष्क रेखा दोनों ही लहरदार हों तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य अत्यन्त कमजोर होता है।

७५. यदि हथेली के मध्य में यह हृदय रेखा से मिलती है तो उसके जीवन में शस्त्र भय बना रहता है।

७६. यदि कोई अन्य रेखा मस्तिष्क रेखा को काट दे तो उसका मस्तिष्क कमजोर होता है।

७७. यदि मस्तिष्क रेखा टूटी हुई हो तथा इसके साथ अन्य रेखाएं भी हों वह व्यक्ति जीवन में पागल होता है।

७८. यदि कोई रेखा शुक्र पर्वत से निकलकर मस्तिष्क रेखा को काटती हो तो उसका गृहस्थ-जीवन बरबाद हो जाता है।

७९. यदि मस्तिष्क रेखा से कोई शाखा निकलकर शुक्र पर्वत की ओर जाती हो तो उसका प्रेम जीवन-भर गुप्त बना रहता है।

८०. यदि इस रेखा से कोई सहायक रेखा निकल कर गुरु पर्वत की ओर जाती हो तो वह व्यक्ति किराने का व्यापारी होता है।

८१. यदि इस रेखा से कोई सहायक रेखा निकल कर शनि पर्वत की ओर जाती हो तो वह जीवन में उच्चकोटि का धार्मिक व्यक्ति होता है।

८२. यदि इस रेखा से निकल कर कोई सहायक रेखा सूर्य पर्वत की ओर जाती हो तो उसे आकस्मिक धन-लाभ होता है।

८३. यदि इस रेखा से कोई सहायक रेखा बुध पर्वत की ओर जाती हो तो निश्चय ही वह लाखों का स्वामी होता है।

८४. यदि इस रेखा के अन्त में रेखाओं का गुच्छा-सा हो तो वह व्यक्ति कुटिल झूठा एवं चालाक होता है।

८५. यदि शनि पर्वत के नीचे इस रेखा पर सफेद धब्बे हों तो उसे जीवन में आर्थिक सफलता मिलती है।

८६. यदि सूर्य पर्वत के नीचे इस रेखा पर सफेद धब्बे हों तो उसे राष्ट्र-व्यापी सम्मान मिलता है।

८७. यदि बुध पर्वत के नीचे इस रेखा पर सफेद धब्बे हों तो वह व्यक्ति करोड़पति होता है।

८८. यदि मंगल पर्वत बलवान हो और इस रेखा के अन्त में त्रिकोण बना हुआ हो तो वह अपने जीवन में किसी न किसी की हत्या अवश्य करता है।

८९. यदि इस रेखा पर कहीं पर भी लाल धब्बा हो तो सिर पर चोट लगने से उस व्यक्ति की मृत्यु होती है।

९०. यदि इस रेखा पर कहीं पर भी नीला धब्बा होता है तो वह जीवन में अपराधी मनोवृत्ति का होता है।

यदि यह रेखा तर्जनी के मूल तक पहुंच जाए तो वह जीवन में असफल व्यक्ति होता है।

९१. यदि यह रेखा मध्यमा उंगली पर चढ़ जाय तो उस व्यक्ति की डूबने से मृत्यु होती है।

९३. यदि यह रेखा अनामिका के मूल तक पहुंच जाए तो ऐसा व्यक्ति प्रसिद्ध तांत्रिक होता है।

९४. यदि यह रेखा कनिष्ठिका उंगली पर चढ़ जाय तो उसकी सन्निपात की अवस्था में मृत्यु होती है।

९५. यदि यह रेखा सभी दृष्टियों से दोष मुक्त हो तो उसका चुम्बकीय व्यक्तित्व होता है।

वस्तुत: मस्तिष्क रेखा का हथेली में बहुत बड़ा महत्त्व होता है और यदि इस रेखा का सम्यक् अध्ययन न किया जाए तो सही भविष्यफल स्पष्ट करना कठिन हो जाता है। इसलिये हस्तरेखा विशेषज्ञ को चाहिए कि वह मस्तिष्क रेखा का भली-भांति अध्ययन कर अपनी धारणा को पुष्ट बनाकर भविष्य कथन करे जिससे वह अपने जीवन में यशस्वी हो सके।

हृदय रेखा

हथेली में जीवन रेखा, और मस्तिष्क रेखा का जितना महत्त्व है लगभग उतना ही महत्त्व हृदय रेखा का भी है। इसलिये विद्वानों को चाहिए कि वह हृदय रेखा के बारे में सावधानी के साथ अध्ययन करें।

जिस व्यक्ति के हाथ में हृदय रेखा शुद्ध, स्पष्ट, निर्दोष और ललायी लिये हुए होती है, वह व्यक्ति वास्तव में ही अपने जीवन में सफल होता है, और उसे समाज से पूरा यश तथा सम्मान मिलता है। ऐसे व्यक्ति सामाजिक उत्तरदायित्व को अनुभव करते हैं और अपने जीवन में मानवोचित गुण सामने रखकर आगे बढ़ते हैं।

यदि यह रेखा अस्पष्ट कमजोर टूटी हुई या कटी-छटी होती है तो वह व्यक्ति कितना ही दृढ़ एवं धनवान क्यों न हो उसे सही रूप में मानव नहीं कहा जा सकता क्योंकि ऐसा व्यक्ति हृदय से स्वार्थी, पापी तथा कलुषित होगा। ऐसे व्यक्ति का सहज ही विश्वास नहीं करना चाहिए।

हृदय रेखा मनुष्य की हथेली में कनिष्ठिका उंगली के नीचे बुध पर्वत के नीचे से निकलकर सूर्य तथा शनि क्षेत्र को पार करती हुई गुरु पर्वत तक जाती है, परन्तु सभी हाथों में ऐसा नहीं होता। सामान्यतः इस रेखा की पांच स्थितियां पायी जाती हैं जो कि निम्नलिखित हैं :

१. पहले प्रकार की हृदय रेखा वह होती है जो बुध पर्वत के नीचे से प्रारम्भ होकर सूर्य और शनि पर्वत के नीचे चलती हुई गुरु पर्वत पर जाकर समाप्त होती है।

२. कुछ लोगों के हाथों में यह रेखा बुध पर्वत के नीचे से प्रारम्भ होकर सूर्य शनि तथा गुरु पर्वत के नीचे-नीचे चलती हुई हथेली के उस पार तक जा पहुंचती है।

३. कुछ लोगों के हाथों में यह रेखा बुध पर्वत के नीचे से निकलकर सूर्य पर्वत के नीचे ही समाप्त हो जाती है।

४. कुछ हाथों में यह रेखा बुध पर्वत के नीचे से निकल कर शनि पर्वत के नीचे समाप्त हो जाती है।

५. कुछ व्यक्तियों की हथेलियों में यह रेखा बुध पर्वत के नीचे से निकल कर तर्जनी और मध्यमा के बीच में जाकर समाप्त होती है।

उपर्युक्त पांचों ही प्रकार की स्थितियों का अध्ययन करने से उनका फलादेश में अन्तर आता है। इस रेखा से मानव का हृदय उसकी इच्छाएं, उसका व्यवहार,

उसकी भावनाएं, उसकी मानसिक क्रियाएं तथा आन्तरिक गोपनीय तथ्यों का पता लगता है। अब मैं प्रत्येक प्रकार की स्थिति का संक्षेप में वर्णन कर रहा हूं :

पहला प्रकार :

इस प्रकार की हृदय रेखा जिसकी हथेली में होती है वह सर्वश्रेष्ठ रेखा कहलाती है। सही रूप में देखा जाय तो यह रेखा अपनी अन्तिम अवस्था में शनि और गुरु पर्वत को विभक्त कर लेती है। ऐसे व्यक्ति दूसरों की भलाई करने वाले निष्पक्ष, स्वतंत्र विचार-धारा रखने वाले तथा प्रेम के क्षेत्र में धैर्य से काम लेने वाले होते हैं। इनके जीवन में न तो उच्छृंखलता होती है, और न अधूरापन ही स्पष्ट होता है। ऐसे व्यक्ति अपने वचनों की सामर्थ्य समझते हैं और जीवन में जो भी बात कह देते हैं उसे पूरी तरह से निभाने की क्षमता रखते हैं।

ऐसा व्यक्ति हलके स्तर का नहीं होता तथा अपनी पत्नी को भी सबसे अधिक महत्त्व देता है। यद्यपि यह बात सही है कि इसके जीवन में प्रेमिकाएं होती हैं। परन्तु उन्हें यह जरूरत से ज्यादा महत्त्व नहीं देते। ऐसा व्यक्ति धार्मिक सात्त्विक तथा ईमानदार होता है। न तो यह धोखा खाता है और न किसी को धोखा देने का प्रयत्न करता है। इसका हृदय दयालु होता है तथा इसके जीवन को 'आदर्श जीवन' कहा जा सकता है। ऐसे व्यक्ति अपने प्रयत्नों से जीवन में यश, मान, पद, प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं।

दूसरा प्रकार :

इसमें हृदय रेखा का उद्गम बुध पर्वत के नीचे से ही होता है। परन्तु इसका अन्त तर्जनी और मध्यमा उंगली के बीच में न होकर गुरु पर्वत के नीचे चलकर हथेली के पास जाकर होता है। ऐसी रेखा बहुत ही कम लोगों के हाथों में दिखाई देती है परन्तु जिन व्यक्तियों के हाथों में ऐसी रेखा होती है वे व्यक्ति जीवन में जरूरत से ज्यादा महत्त्वाकांक्षी होते हैं और अपने प्रयत्नों से अपने जीवन को सुखमय बनाने में समर्थ होते हैं।

सही रूप में देखा जाय तो ऐसे व्यक्ति कठोर परिश्रमी होते हैं और इनका लक्ष्य हमेशा इनके सामने रहता है। जब तक ये अपने लक्ष्य को भली प्रकार से प्राप्त नहीं कर लेते तब तक ये जीवन में विश्राम नहीं लेते।

इस रेखा के बारे में विचारणीय तथ्य यह है कि जहां यह रेखा समाप्त होती है उस स्थान का सूक्ष्मता से अध्ययन आवश्यक है। यदि अन्तिम स्थिति में इस रेखा का झुकाव नीचे की तरफ होता है तो वह व्यक्ति अपने जीवन में अपनी इच्छाओं को

पूरी नहीं कर पाता। परन्तु अन्तिम अवस्था में यदि यह रेखा ऊपर की ओर उठती हुई दिखाई दे तो ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में अपने लक्ष्य तक पहुंच जाता है और उसके सोचे हुए सभी काम पूरे हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में यश, मान, पद, प्रतिष्ठा की दृष्टि से पूर्ण सौभाग्यशाली कहा जाता है।

तीसरा प्रकार :

इस प्रकार की रेखा बुध पर्वत के नीचे से लेकर सूर्य पर्वत के नीचे ही समाप्त हो जाती है। ऐसा व्यक्ति अदूरदर्शी तथा कुण्ठाग्रस्त होता है। इसका हृदय कमजोर होता है। छोटी-छोटी बातों पर झुंझला जाता है, तथा इसका स्वभाव चिड़चिड़ा होता है। सही रूप में देखा जाय तो ऐसे व्यक्ति दयाहीन होते हैं। ये व्यक्ति दुःखी मनुष्यों की सहायता नहीं करते अपितु उनकी निन्दा करने में ही अपना सौभाग्य मानते हैं। ऐसे व्यक्ति सामान्य दृष्टि से सफल नही कहे जा सकते।

वृद्धावस्था में ऐसा व्यक्ति हृदय रोग से पीड़ित रहता है। तथा ऐसे व्यक्तियों की मृत्यु हार्ट-अटेक से ही होती है।

चौथा प्रकार :

कुछ लोगों के हाथों में यह रेखा बुध पर्वत के नीचे से निकलकर शनि पर्वत के नीचे जाकर समाप्त हो जाती है। ऐसे व्यक्ति कई स्त्रियों से प्रेम करते हैं और लगभग सभी को धोखा देते हैं। इनके जीवन में छल, कपट आदि बराबर बना रहता है। सही शब्दों में कहा जाय तो ऐसे लोगों पर पूरी तरह से विश्वास नहीं किया जा सकता।

इनका प्रेम सात्त्विक प्रेम न होकर वासना-पूर्ति का एक साधन होता है। इनके मन में बराबर स्वार्थ बना हुआ होता है, तथा लोगों को धोखा देने में ये कुशल होते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रदर्शन तथा आडम्बर को ज्यादा महत्त्व देते हैं। झूठा प्रचार नकली शान-शौकत तथा व्यर्थ का दिखावा करने में यह विश्वास रखते हैं। एक बार तो लोग इनका विश्वास कर लेते हैं, परन्तु बाद में इनसे वे लोग घृणा करते हैं। अपना काम निकल जाने के बाद ये उसकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखते। समाज में इन लोगों को किसी प्रकार का आदर या सम्मान नहीं मिलता।

ऐसे व्यक्ति निर्दयी, डाकू तथा अत्याचारी भी हो सकते हैं।

पांचवां प्रकार :

जिनके हाथों में इस प्रकार की हृदय रेखा दिखाई देती है वे व्यक्ति एक प्रकार से आत्म केन्द्रित से ही होते हैं, और जीवन में लगभग अपने आप में ही खोये रहते हैं।

यद्यपि ऐसे व्यक्ति जरूरत से ज्यादा परिश्रमी तथा अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने वाले होते हैं। परन्तु कई बार के प्रयत्नों के बाद ही इनको सामान्यतः सफलता नहीं मिल पाती। जीवन के मध्य काल तक आते-आते ये व्यक्ति ऊब से जाते हैं।

यद्यपि इन व्यक्तियों के पास उर्वर मस्तिष्क होता है, तथा योजना बद्ध तरीके से कार्य भी प्रारम्भ करते हैं। परन्तु जितने उत्साह से ये कार्य प्रारम्भ करते हैं उस कार्य के मध्य में आते-आते उनका जोश या उत्साह ठंडा पड़ जाता है। ऐसे व्यक्ति जीवन में असफल होने पर चिड़चिड़े हो जाते हैं तथा इनकी प्रकृति संशयालू हो जाती है। इनके सम्पर्क में जो भी व्यक्ति आता है उन सब पर शक करना इनका स्वभाव हो जाता है। धीरे-धीरे यह व्यक्ति अपने मित्रों तथा परिचितों से कट जाते हैं तथा इनमें निराशा की भावना जरूरत से ज्यादा व्यापित हो जाती है। एक प्रकार से ये आगे चलकर अपने आपको बेसहारा और पराश्रय-सा अनुभव करते हैं।

अब मैं आगे के पृष्ठों में हृदय रेखा से सम्बन्धित उन तथ्यों को स्पष्ट कर रहा हूं, जिसके माध्यम से इससे सम्बन्धित फला-फल ज्ञात किया जा सकता है :

१. हृदय रेखा जिस पर्वत के नीचे तक पहुंचती है, उस पर्वत में उससे सम्बन्धित विशेष गुण स्वतः ही आ जायेंगे उदाहरणार्थ यदि हृदय रेखा अनामिका के मूल में स्थित सूर्य पर्वत के नीचे जाकर समाप्त होती है तो सूर्य से सम्बन्धित विशेष गुण प्रसिद्धि, कीर्ति, सम्मान आदि में स्वतः ही वृद्धि का योग बन जायगा।

२. यदि हृदय रेखा मस्तिष्क रेखा की ओर झुके तो जिस जगह वह मुड़ती है मस्तिष्क रेखा के उस बिन्दु के समान आयु में मस्तिष्क का पूर्ण विकास होता है।

३. यदि यह रेखा आगे चलकर मस्तिष्क रेखा से पूर्णतः मिल जाती है, तो वह अपने दिमाग में कुछ नहीं सोचता अपितु दूसरों के कहने के अनुसार कार्य करता है, और उसके आदेश के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर लेता है।

४. यदि हृदय रेखा आगे बढ़कर मस्तिष्क रेखा को काट लेती है, तो दिमाग अस्त-व्यस्त हो जाता है तथा उस व्यक्ति में निर्णय लेने की पूर्ण क्षमता नहीं होती।

५. यदि हृदय रेखा पर आकर कोई अन्य पतली रेखा मिले तो जिस पर्वत की तरफ से वह पतली रेखा आती है, उस पर्वत के गुणों का उसके हृदय पर विशेष प्रभाव रहता है।

६. यदि हृदय रेखा से पतली-पतली छोटी-छोटी रेखाएं मस्तिष्क रेखा की ओर बढ़ती हों तो ऐसा व्यक्ति जीवन-भर मानसिक चिन्ताओं से परेशान रहता है।

७. यदि हृदय रेखा कई जगह टूट-फूट जाती है तो वह व्यक्ति हृदय रेखा का शिकार होता है।

८. यदि किसी की हथेली में हृदय रेखा पर द्वीप का चिह्न दिखाई दे तो वह व्यक्ति समाज में विशेष सम्मान प्राप्त नहीं कर पाता तथा उसका सामाजिक स्वरूप एक तरह से खण्डित हो जाता है।

९. हृदय रेखा जितनी अधिक लम्बी होती है और बृहस्पति पर्वत से जितनी ही अधिक दूर होती है उतनी ही ज्यादा श्रेष्ठ कही जाती है।

१०. यदि हृदय रेखा चलती-चलती मार्ग में कहीं टूट जाती है और फिर आगे चलकर प्रारम्भ हो जाती है, तो जीवन के उस भाग में वह व्यक्ति मृत्यु-तुल्य कष्ट उठाता है।

११. यदि हृदय रेखा लम्बी स्पष्ट तथा सुन्दर होती है तो उस व्यक्ति को प्रत्येक प्राणी से भरपूर प्यार तथा स्नेह मिलता है।

१२. यदि हृदय रेखा हथेली के पास पहुंच जाती है तो वह व्यक्ति किसी के भी प्रति अन्ध श्रद्धा का शिकार होता है।

१३. यदि हृदय रेखा कई जगह से कटी हुई हो तो उस व्यक्ति के जीवन में निराशा की भावना बराबर बनी रहती है।

१४. यदि हथेली में दूसरी हृदय रेखा हो तो वह व्यक्ति जीवन में ऊंचे स्तर पर प्रेम करता है परन्तु उसे जीवन में निराशा हाथ लगती है।

१५. यदि हृदय रेखा के अन्त में तारे का चिह्न बना हुआ हो तो उस व्यक्ति की मृत्यु आकस्मिक दुर्घटना से होती है।

१६. यदि हृदय रेखा बृहस्पति पर्वत को घेर कर चलती हो तो उस व्यक्ति में नफरत की भावना जरूरत से ज्यादा होती है।

१७. यदि हृदय रेखा पर नक्षत्र का चिह्न दिखाई देता है तो वह व्यक्ति आजीवन रोगी बना रहता है।

१८. यदि हृदय रेखा के अन्तिम सिरे दो भागों में बंट जाते हैं तो ऐसा व्यक्ति सफल न्यायाधीश सहृदय सामाजिक तथा सद्गुणों से सम्पन्न होता है।

१९. यदि यह रेखा शनि पर्वत पर समाप्त हो जाती है तो वह व्यक्ति जरूरत से ज्यादा कामी होता है।

२०. यदि यह सूर्य पर्वत पर समाप्त हो जाती है तो ऐसा व्यक्ति बार-बार धोखा खाता है।

२१. यदि यह रेखा गुरु पर्वत के नीचे जाकर त्रिशूल की तरह बन जाती है, तो उसका यौवन काल पागलखाने में ही व्यतीत होता है।

२२. यदि शनि पर्वत के नीचे हृदय रेखा तथा मस्तिष्क रेखा पर क्रॉस का चिह्न हो तो उस व्यक्ति की बहुत छोटी उम्र में मृत्यु हो जाती है।

२३. हृदय रेखा मस्तिष्क रेखा से जितनी ही ज्यादा लम्बी, स्पष्ट और लालिमा लिये हुए होती है उतनी ही ज्यादा श्रेष्ठ कही जाती है। ऐसा व्यक्ति विश्व-स्तरीय सम्मान प्राप्त करता है।

२४. दोहरी हृदय रेखा अत्यन्त उच्च पद प्राप्ति में सहायक होती है।

२५. यदि मंगल पर्वत उभरा हुआ हो और हृदय रेखा स्पष्ट हो तो वह व्यक्ति जीवन में जोखिम पूर्ण कार्य करता है।

२६. यदि वर्गाकार उंगलियां हों और हृदय रेखा आगे चलकर मस्तिष्क रेखा की ओर झुकती हो तो ऐसा व्यक्ति निम्नस्तर का होता है।

२७. अत्यन्त छोटी हृदय रेखा व्यक्ति के दुर्भाग्य को सूचित करती है।

२८. यदि हृदय रेखा जरूरत से ज्यादा लाल हो तो वह व्यक्ति हिंसक होता है।

२९. यदि यह रेखा पीलापन लिये हुए होती है तो उसे हृदय के रोग बराबर बने रहते हैं।

३०. यदि हृदय रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तो स्वास्थ्य के मामले में वह जीवन-भर बराबर कमजोर बना रहता है।

३१. यदि यह रेखा बहुत अधिक पतली और लम्बी हो तो वह व्यक्ति निस्संदेह हत्यारा होता है।

३२. यदि हृदय रेखा हथेली के अन्तिम सिरे पर पहुंचती है, परन्तु अपने आप में बहुत ही कमजोर होती है तो उस व्यक्ति के सन्तान नहीं होती।

३३. यदि हृदय रेखा जंजीर के समान हो तो ऐसे व्यक्तियों का विश्वास नहीं किया जा सकता। झूठ बोलने में ये व्यक्ति चतुर होते हैं।

३४. यदि यह रेखा जंजीरदार हो और शनि पर्वत के नीचे जाकर समाप्त होती हो तो उसे विपरीत सैक्स के प्रति घृणा रहती है।

३५. यदि किसी स्त्री के हाथ में शनि पर्वत पर जाकर हृदय रेखा जंजीर के समान बन गई हो तो वह स्त्री कुलटा होती है।

३६. यदि यह रेखा सूर्य पर्वत के नीचे छिन्न-भिन्न हो जाती है, तो वह व्यक्ति कमजोर होता है।

३७. बुध पर्वत के नीचे यदि यह रेखा टूट-फूट जाती है तो उसका वैवाहिक जीवन दुखमय होता है।

३८. यदि हृदय रेखा से कोई शाखा निकल कर मंगल पर्वत की ओर जाती है तो ऐसा व्यक्ति कठोर हृदय का तथा निर्दयी स्वभाव का होता है।

३९. हृदय रेखा पर काले बिन्दु उसके विवाह में बाधा कारक माने गये हैं।

४०. यदि हृदय रेखा पर सफेद बिन्दु हों तो उसका वैवाहिक जीवन आदर्श कहा जाता है।

४१. यदि हृदय रेखा पर त्रिकोण का चिह्न हो तो उसे विश्व व्यापी कीर्ति मिलती है।

४२. यदि हृदय रेखा गुरु पर्वत पर जाकर मंगल पर्वत की ओर मुड़ जाती है तो वह व्यक्ति मूर्ख होता है।

४३. यदि यह रेखा चतुर्भुज के साथ कहीं पर भी समाप्त होती है तो वह अस्थिर स्वभाव वाला माना जाता है।

४४. यदि यह रेखा शनि पर्वत के नीचे मस्तिष्क रेखा से मिलती हो तो उसके जीवन में कई दुर्घटनाएं होती हैं।

४५. यदि हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे मस्तिष्क रेखा से मिलती हो तो उस व्यक्ति की यौवन काल में ही मृत्यु हो जाती है।

४६. यदि यह रेखा नीचे झुक कर चन्द्र पर्वत की ओर जा रही हो, या चन्द्र पर्वत से कोई रेखा निकलकर इससे मिलती हो तो उसे जीवन में अप्रत्याशित सफलता प्राप्त होती है।

४७. यदि कुछ तिरछी रेखाएं हृदय रेखा को कई जगह से काटती हो तो उसे जीवन में कई प्रकार के रोग होते है।

४८. यदि हृदय रेखा से निकल कर कोई सहायक रेखा मस्तिष्क रेखा से जुड़ जाती है तो उसमें प्रेम करने की क्षमता जरूरत से ज्यादा होती है।

४९. यदि हृदय रेखा से कोई सहायक रेखा निकल कर शनि पर्वत की ओर जाती है तो उसे प्रेम के क्षेत्र में निराशा मिलती है।

५०. यदि भाग्य रेखा से कोई सहायक रेखा निकल कर हृदय रेखा को स्पर्श करती हो तो उसका गृहस्थ-जीवन परेशानी पूर्ण होता है।

५१. यदि शुक्र पर्वत से कोई सहायक रेखा निकल कर हृदय रेखा से मिलती हो तो वह व्यक्ति जरूरत से ज्यादा भोगी होता है।

५२. यदि इस रेखा पर बुध पर्वत के नीचे क्रॉस हो तो उसे व्यापार में बार-बार असफलता का मुंह देखना पड़ता है।

५३. यदि इस रेखा से कई चतुर्भुज बनते हों तो उसकी प्रतिभा अत्यधिक होती है, परन्तु अपने मामले में वह असफल रहता है।

५४. यदि हृदय रेखा गुरु पर्वत के नीचे कई शाखाओं में बंट जाती है, तो वह व्यक्ति भाग्यशाली होता है।

५५. यदि इस रेखा के प्रारम्भ में ही शाखा पुंज हो तो वह व्यक्ति जरूरत से ज्यादा बोलने वाला होता है।

५६. यदि इस रेखा के मध्य में शाखा पुंज हो तो ऐसा व्यक्ति कट्टर एवं घमण्डी होता है।

५७ अगर किसी व्यक्ति के हाथ में हृदय रेखा नहीं हो तो वह निर्दयी होता है।

५८. यदि हृदय रेखा से किसी प्रकार की कोई सहायक रेखा नहीं निकलती है तो ऐसे व्यक्ति को सन्तान का सुख नहीं मिलता।

५९. यदि बिना किसी शाखा के यह रेखा गुरु पर्वत के नीचे समाप्त होती हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में गरीब बना रहता है।

६०. यदि रेखा के अन्तिम सिरे पर कोई अलग तरह का निशान हो तो वह व्यक्ति लकवे का शिकार होता है।

६१. यदि सूर्य पर्वत के नीचे कोई बिन्दु हो तो ऐसा व्यक्ति भावुक होता है।

६२. बुध पर्वत के नीचे यदि कोई बिन्दु दिखाई दे तो वह प्रसिद्ध चिकित्सक होगा।

६३. यदि रेखा पर वृत्त का चिह्न अनुभव हो तो हृदय रेखा की दृष्टि से कमजोर होता है।

६४. यदि हृदय रेखा पर कोई द्वीप दिखाई दे तो उसके जीवन में कई विश्वासघात होते हैं।

६५. यदि भाग्य रेखा तथा हृदय रेखा दोनों का द्वीप के चिह्न दिखाई दें तो वह व्यक्ति व्यभिचारी होता है।

६६. हृदय रेखा पर कोई चोट का चिह्न प्रतीत हो तो उसे जीवन में असफल प्रेम का सामना करना पड़ता है।

६७. हृदय रेखा जितनी ही ज्यादा स्पष्ट सुन्दर और लालिमा लिये हुए होगी वह व्यक्ति जीवन में उतनी ही ज्यादा सफलताएं एवं श्रेष्ठता प्राप्त करता है।

वस्तुत: हृदय रेखा का मानव जीवन में बहुत अधिक महत्त्व है और हस्तरेखा विशेषज्ञ के लिए यह आवश्यक है कि वह इस रेखा का सावधानी के साथ अध्ययन करें।

सूर्यरेखा

अंग्रेजी में इस रेखा को 'सन लाइन' एवं हिन्दी में यश रेखा भी कहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की यह सामान्य इच्छा होती है कि वह जीवन में कुछ ऐसा कार्य करे जिससे समाज में उसके कार्यों की सराहना हो। लोग उसके विचारों को आदर दें और उसकी मृत्यु के बाद भी उसकी अक्षय कीर्ति बनी रहे। इन सबके अध्ययन के लिए सूर्य रेखा का सहारा लेना अत्यन्त आवश्यक होता है। यह सूर्य रेखा ही मानव को उसके जीवन में यश, मान, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, तथा कीर्ति दिलाने में सहायक होती है। यदि किसी व्यक्ति के हाथ में स्वास्थ्य रेखा, हृदय रेखा और जीवन रेखा चाहे कितनी ही अधिक पुष्ट हो परन्तु उसके हाथ में सूर्य रेखा कमजोर होती है तो उस व्यक्ति का जीवन नगण्य-सा होकर रह जाता है। स्पष्ट गहरी और निर्दोष सूर्य रेखा ही मानव को ऊंचा उठाने में सहायक होती है। हस्त रेखा विशेषज्ञ के लिए इस रेखा का सूक्ष्मता से अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

यद्यपि विद्वानों के अनुसार हथेली में केवल सूर्य रेखा को ही महत्त्व नहीं दिया जाना चाहिए। क्यों कि जब तक हथेली में भाग्य रेखा प्रबल नहीं होती तब तक सूर्य रेखा का प्रभाव विशेष नही मिलता। अत: सूर्य रेखा का अध्ययन करते समय भाग्य रेखा पर भी विचार करना चाहिए।

मेरे अनुभव में ऐसा आया है कि सभी व्यक्तियों के हाथों में सूर्य रेखा नहीं होती और यह बात भी सही है कि सूर्य रेखा का उद्गम भी अलग-अलग हाथों में अलग-अलग स्थानों से होता है। इसका प्रभाव इसकी लम्बाई तथा स्पष्टता से ही अनुभव होती है। इसलिये हाथ देखते समय सूर्य रेखा के उद्गम पर भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

यह रेखा सूर्य पर्वत के नीचे होती है। इसकी पहचान यह है कि इस रेखा का उद्गम चाहे कही से भी हुआ हो, परन्तु इस रेखा की समाप्ति सूर्य पर्वत पर ही होती है। जो रेखा सूर्य पर्वत तक नहीं पहुंचती वह रेखा सूर्य रेखा नहीं कहला सकती। पाठकों के हित के लिए मैं इस रेखा के उद्गम स्थल स्पष्ट कर रहा हूं:

१. कुछ लोगों के हाथो में यह रेखा शुक्र पर्वत से प्रारम्भ होकर सूर्य पर्वत तक जाती है।

२. कुछ हथेलियों में यह रेखा जीवन रेखा के समाप्ति के स्थान से प्रारम्भ होकर सूर्य पर्वत तक जाती है।

३. इसका उद्गम मंगल पर्वत से भी देखा गया है। यहां से प्रारम्भ होकर यह रेखा हृदय रेखा को काटती हुई सूर्य पर्वत पर पहुंचती है।

४. कुछ हथेलियों में यह रेखा मस्तिष्क रेखा से प्रारम्भ होकर सूर्य पर्वत को स्पर्श करती है।

५. इसका उद्गम हृदय रेखा से भी होता देखा गया है। यहां से यह सूर्य पर्वत तक जाती है।

६. कभी-कभी यह रेखा हर्षल क्षेत्र से प्रारम्भ होकर सूर्य पर्वत तक पहुंच जाती है।

७. कभी-कभी यह रेखा चन्द्र पर्वत से प्रारम्भ होकर सूर्य पर्वत की ओर जाती हुई दिखाई देती है।

८. कुछ हाथों में यह रेखा मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर सूर्य पर्वत पर मार्ग की सभी रेखाओं को काटती हुई जा पहुंचती है।

९. हथेली में इस रेखा को केतु पर्वत से प्रारम्भ होकर भी अनामिका के मूल तक पहुंचते हुए देखा गया है।

१०. कई बार इस रेखा का उद्गम राहू क्षेत्र से भी देखा गया है।

११. कुछ हथेलियों में यह रेखा हथेली के बीच में से प्रारम्भ होकर सूर्य पर्वत पर पहुंच जाती है।

१२. कुछ हथेलियों में यह रेखा बुध पर्वत से प्रारम्भ होकर सूर्य पर्वत तक पहुंचने में सक्षम होती है।

जहां तक मेरी जानकारी है, इस रेखा के उद्गम यहीं हैं। परन्तु इसके अलावा भी इस रेखा के उद्गम हो सकते हैं, परन्तु पाठकों को यह ध्यान में रखना चाहिए कि सूर्य रेखा वही मानी जा सकती है जिसकी समाप्ति सूर्य पर्वत पर होती है।

अब मैं प्रत्येक उद्गम स्थल से प्रारम्भ होने वाली सूर्य रेखा का संक्षेप में वर्णन स्पष्ट कर रहा हूं :

१. **प्रथमा अवस्था :** यह रेखा शुक्र पर्वत से प्रारम्भ होकर सूर्य पर्वत तक पहुंचती है। ऐसी रेखा अपने आप में अत्यन्त अनुकूल मानी जाती है। ऐसी रेखा रखने वाला व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता है। जीवन में पत्नी के अलावा अन्य कई स्त्रियों से सम्पर्क रहता है और उनसे धन-लाभ करता है अथवा ऐसे व्यक्ति को ससुराल से विशेष धन प्राप्त होता है। सही शब्दों में कहा जाय तो ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय विवाह के उपरांत ही होता है और अधिकतर ऐसे लोगों के भाग्योदय प्रेमिका के माध्यम से होते देखे गये हैं। कई बार ऐसे व्यक्ति गोद चले जाते हैं जिससे उन्हें विशेष धन-प्राप्ति हो जाता है।

२. **द्वितीयावस्था :** बहुत कम हाथों में ऐसी रेखा देखने को मिलती हैं परन्तु जिन लोगों के हाथों में ऐसी रेखा होती है वे व्यक्ति उच्च कोटि के कलाकार तथा

भावुक होते हैं साथ ही कला के माध्यम से धन-संचय करते हैं। उनका भाग्य अपने आप में उज्ज्वल होता है। स्वभाव से ये व्यक्ति रसिक मिलनसार तथा सम्मोहक व्यक्तित्व वाले होते हैं।

३. **तृतीयावस्था** : इस प्रकार की सूर्य रेखा जिन हथेलियों में होती है वे व्यक्ति मिलिट्री में या पुलिस विभाग में उच्च पद पर पहुंचते हैं तथा अपने कार्यों से राज्यस्तरीय अथवा राष्ट्रस्तरीय सम्मान प्राप्त करते हैं। यद्यपि ऐसे व्यक्ति अपने ही प्रयत्नों से सफलता प्राप्त करते हैं, परन्तु धीरे-धीरे परिश्रम करते हुए अन्त में अपने लक्ष्य तक पहुंच जाते हैं।

४. **चतुर्थावस्था** : ऐसे व्यक्ति प्रमुख: बुद्धिजीवी होते हैं। इसके अन्तर्गत उच्च कोटि के वैज्ञानिक तथा तार्किक एवं दार्शनिक व्यक्ति होते हैं। ये जीवन में चाहे किसी भी प्रकार का कार्य प्रारम्भ करें इन्हें पूरी सफलता मिलती है और प्रत्येक क्षेत्र मे वे अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का प्रयोग करते हैं। इनके कार्य अपने आप में महत्त्व-पूर्ण होते हैं। जीवन के २८ वें वर्ष से इनका भाग्योदय होता है तथा समाज में इनको विशेष सम्मान तथा यश प्राप्त होता है।

५. **पंचमावस्था** : जिन हथेलियो में इस प्रकार की रेखा होती है, वे अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करते हैं। यद्यपि यह बात सही है कि इनका प्रारम्भिक जीवन जरूरत से ज्यादा कष्टमय होता है परन्तु अपने प्रयत्नों से ये इतनी अधिक प्रगति कर लेते हैं कि लोग दांतो तले उंगली दबाते हैं। जीवन के १५ वर्षों के बाद इनका सम्मान और ख्याति अत्यन्त उच्च स्तर का हो जाता है। इनके कार्य चमत्कार-पूर्ण ढंग से सम्पन्न होते हैं तथा जीवन में और मृत्यु के बाद भी इन्हें अक्षुण्ण यश मिलता है। परन्तु यदि यह रेखा मार्ग में ही टूट जाती है तो उसे जीवन में बदनामी का भी सामना करना पड़ता है।

६. **षष्ठावस्था** : ऐसे व्यक्ति को जीवन में बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ता है। न तो उसे जीवन में व्यवस्थित ढंग से शिक्षा मिलती है और न उसे जीवन में ऊंचा उठाने में कोई सहायता देता है। ऐसे व्यक्ति जीवन में जो भी उन्नति करते हैं अपने प्रयत्नों से ही कर पाते हैं। फिर भी आगे चलकर ये व्यक्ति न्यायधीश बैरिस्टर अथवा प्रमुख शिक्षा-शास्त्री बन जाते हैं। जीवन में कई बार विदेश यात्राएं करते हैं तथा विदेश में प्रेम सम्बन्ध के कारण बदनामी भी सहन करनी पड़ती है।

७. **सप्तमावस्था** : ऐसे व्यक्तियों का भाग्योदय विवाह के बाद ही होता है। विवाह के बाद ये व्यक्ति आश्चर्यजनक रूप से प्रगति करते हैं। अपने कार्यों में सफ-लता प्राप्त करते हैं, तथा अपने लक्ष्य तक पहुंचने की योग्यता जुटा पाते हैं। ऐसे व्यक्ति भावुक सहृदय एवं रसिक होते हैं। शान-शौकत, दिखावा आदि इनको प्रिय लगता है। आडम्बर-प्रिय ये व्यक्ति अपने चारों ओर भ्रम का वातावरण बनाये रखते हैं।

८. **अष्टमावस्था** : बहुत ही कम लोगों के हाथों में इस प्रकार की सूर्य रेखा देखने को मिलती है। ऐसे व्यक्तियों के जीवन में धन, मान, पद, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, यश, कीर्ति आदि का कोई प्रभाव नहीं रहता। ये व्यक्ति सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाले तथा धर्म में पूरी आस्था रखने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति उच्च कोटि के व्यापारी एवं सफल साहित्यकार होते हैं।

९. **नवमावस्था** : यह रेखा सुन्दर, स्पष्ट और लालिमा लिये हुए जिस व्यक्ति की हथेली में होती है उस व्यक्ति का बचपन अत्यन्त सुखमय व्यतीत होता है। उसके जीवन में धन, ऐश्वर्य की कोई कमी नहीं रहती। जीवन में ऐसे लोगों को बहुत अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता। थोड़े से प्रयत्नों से ही इनको जीवन में सफलताएं मिलती रहती हैं। ऐसे व्यक्ति ऊंचे स्तर के व्यापारी होते हैं। परन्तु इन लोगों में एक कमी यह होती है कि इनका सम्बन्ध निम्नस्तर के व्यक्तियों से विशेष होता है, जिसकी वजह से समाज में इनका सम्मान कुछ कम होता है। परन्तु ये अपने जीवन में न तो समाज की परवाह करते हैं और न अपने ऊपर किसी प्रकार का अंकुश ही मानते हैं।

१०. **दशमावस्था** : जिन हथेलियों में इस प्रकार के यश रेखा, या सूर्य रेखा देखने को मिलती है वे व्यक्ति चतुर तथा उत्साही होते हैं। बात के मूल में ये तुरन्त पहुंच जाते हैं, और सामने वाले व्यक्ति के चेहरे को देख कर ही उसके मन के भावों को पहिचान लेते हैं। जीवन में ये स्वतंत्र प्रकृति से बने रहते हैं। एक बार ये जो भी निर्णय ले लेते हैं, उस पर पूरी तरह से अमल करते हैं। जीवन में ऐसे व्यक्ति सफल एवं श्रेष्ठ मित्र कहे जा सकते हैं।

११. **एकादशावस्था** : जिन लोगों के हाथों में यह रेखा पाई जाती है, वे व्यक्ति प्रबल भाग्यशाली होते हैं, उनको जीवन में कई बार आकस्मिक धन-लाभ होता है। समाज में भौतिक दृष्टि से इनके जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती सभी दृष्टियों से ये व्यक्ति सुखी और सफल कहे जाते हैं।

१२. **द्वादशावस्था** : बहुत कम व्यक्तियों के हाथों में इस प्रकार की सूर्य रेखा देखने को मिलती है, जिन व्यक्तियों के हाथों में ये रेखा होती है वे सफल अभिनेता होता है, तथा अपनी कला के माध्यम से अतुल्य धन तथा यश प्राप्त करते हैं।

अब में सूर्य से सम्बन्धित कुछ नए तथ्य पाठकों के सामने स्पष्ट कर रहा हूं :

१. लम्बी स्पष्ट और सीधी सूर्य रेखा व्यक्ति को यश, मान, प्रतिष्ठा दिलाने में सहायक होती है।

२. यदि दोनों हाथों में यह रेखा स्पष्ट हो तो वह व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

३. यदि यह रेखा बिना कहीं से कटे हुए अपनी पूरी लम्बाई लिये हुए हो तो उसके जीवन में किसी प्रकार की कमी नहीं रहती।

४. छोटी सूर्य रेखा व्यक्ति के जीवन में परिश्रम एवं संघर्ष के बाद ही सफलता देने में सहायक होती है।

५. सूर्य रेखा जिस जगह कट जाती है आयु के उस भाग में वह व्यक्ति अपना व्यापार अथवा कार्य बदल लेता है।

६. यदि हथेली गहरी हो और सूर्य रेखा स्पष्ट हो तो उस व्यक्ति की प्रतिभा का सही रूप में उपयोग नहीं हो पाता।

७. यदि यह रेखा पतली या फीकी हो तो वह व्यक्ति अपनी कला का पूरा-पूरा उपयोग नहीं कर पाता।

८. यदि सूर्य रेखा के मार्ग में द्वीप के चिह्न हों तो वह जीवन में दिवालिया होता है तथा उसको समाज से अपयश मिलता है।

९. यदि हथेली में वृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और सूर्य रेखा गहरी हो तो उस व्यक्ति के संबंध अत्यन्त ऊंचे स्तर के व्यक्तियों से होते हैं।

१०. यदि सूर्य रेखा पर तारे का चिह्न हो तो वह व्यक्ति अपनी कला के माध्यम से विश्वव्यापी सफलता प्राप्त करता है।

११. हथेली में जिस स्थान पर सूर्य रेखा सबसे अधिक गहरी हो आयु के उस भाग में वह व्यक्ति विशेष धन लाभ प्राप्त करता है।

१२. यदि सूर्य रेखा की समाप्ति पर बिन्दु का चिह्न हो तो उसे जीवन में बहुत अधिक कष्ट उठाना पडता है और अन्त में सफलता मिलती है।

१३. यदि हथेली में सूर्य रेखा पतली हो परन्तु सीधी और स्पष्ट हो तो वह व्यक्ति समृद्धिवान होता है।

१४. यदि सूर्य रेखा के अन्त में नक्षत्र का चिह्न हो तो उसे राष्ट्रव्यापी सम्मान मिलता है।

१५. यदि सूर्य रेखा के प्रारम्भ में और अन्त में नक्षत्र का चिह्न हो तो उसे जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

१६. यदि सूर्य रेखा की समाप्ति कई छोटी-छोटी रेखाओं से हो तो उसे जीवन में असफलता ही मिलती है।

१७. यदि सूर्य रेखा की समाप्ति किसी तिरछी रेखा से हो तो वह जीवन में भली प्रकार से प्रगति नहीं कर पाता।

१८. यदि सूर्य रेखा की समाप्ति पर क्रॉस का चिह्न हो तो व्यक्ति का अन्त अत्यन्त दुखमय होता है।

१९. यदि सूर्य रेखा कई जगह से टूटी हुई हो तो उसमें प्रतिभा तो होती है परन्तु उसके माध्यम से न तो वह श्रेष्ठ धन लाभ कर सकता है और न उसे उच्च कोटि का सम्मान ही मिलता है।

२०. यदि सूर्य रेखा हाथ में नहीं हो तो उस व्यक्ति का जीवन लगभग बेकार रहता है।

२१. यदि सूर्य रेखा पर वर्ग का चिह्न हो तो उसे जीवन में कई बार अपमान सहन करना पड़ता है।

२२. यदि दोनों ही हाथों में यह रेखा जीवन रेखा से प्रारम्भ होती हो तो वह कला के माध्यम से सफलता प्राप्त करता है।

२३. यदि सूर्य रेखा का अन्त दो धाराओं से होता हो या अन्त में यह रेखाएं दो भागों में बंट जाती हो तो समाज में उसे सम्मान नहीं मिलता।

२४. यदि सूर्य रेखा के साथ-साथ कई और सहायक रेखाएं दिखाई दें तो वह जीवन में आश्चर्यजनक प्रगति प्राप्त करता है।

२५. यदि विवाह रेखा के द्वारा सूर्य रेखा कटी हुई हो तो उसका गृहस्थ-जीवन पूर्णतः दुखदायी होता है।

२६. यदि सूर्य रेखा से कोई एक रेखा मस्तिष्क रेखा की ओर जाती हो तो उसे जीवन में पूर्ण धन-लाभ रहता है।

२७. यदि इस रेखा पर चतुर्भुज का चिह्न हो तो उसे प्रारम्भ में बहुत ज्यादा असफलताएं मिलती हैं परन्तु अन्त में पूर्ण सफलता मिल जाती है।

२८. यदि इस रेखा को तीन-चार रेखाएं काटती हों तो वह जीवन में किसी भी कार्य में सफल नहीं होता।

२९. यदि शनि पर्वत से कोई रेखा निकलकर सूर्य रेखा को काटती हो तो आर्थिक कमी की वजह से वह जीवन में सफल नहीं हो पाता।

३०. यदि यह रेखा स्पष्ट हो पर साथ में कुछ लहरदार रेखाएं दिखाई दें तो उस व्यक्ति की प्रतिभा का कोई उपयोग नहीं होता।

३१. यदि सूर्य रेखा गहरी हो और इसके दोनों ओर जो सहायक रेखाएं चल रही हो तो उस व्यक्ति को उच्चस्तरीय सम्मान मिलता है।

३२. यदि सूर्य रेखा से कोई शाखा निकलकर शनि पर्वत की ओर जाती है तो उस पर्वत के विशेष गुण व्यक्ति को प्राप्त होते हैं।

३३. यदि सूर्य रेखा से कोई शाखा निकलकर गुरु पर्वत पर पहुंचे तो उस व्यक्ति को जीवन में श्रेष्ठ राज्य पद प्राप्त होते है।

३४. यदि इस रेखा के आस-पास बहुत सी छोटी-छोटी रेखाएं दिखाई दें तो उसके जीवन में आर्थिक बाधा रहती है।

३५. यदि हृदय रेखा से निकलकर कोई शाखा त्रिशूल वत बन कर सूर्य रेखा को स्पर्श करे, तो ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में स्वयं के प्रयत्नों से ही सफलता प्राप्त करता है।

३६. यदि अनामिका उंगली टेढ़ी-मेढ़ी हो पर सूर्य रेखा स्पष्ट हो तो उसे अपराध पूर्ण कार्यों से यश मिलता है।

३७. यदि सूर्य रेखा के अन्त में तीन रेखाएं दिखाई दें तो उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से कोई कमी नहीं रहती।

३८. यदि यह रेखा बार-बार टूट कर बढ़ रही हो तो वह अपने आलस्य के कारण ही सफलता प्राप्त नहीं कर पाता है।

३६. यदि यह रेखा जंजीरदार हो तो उस व्यक्ति के जीवन में काफी बाधाएं रहती हैं।

४०. यदि यह रेखा टेढ़ी-मेढ़ी हो तो उस व्यक्ति के कार्य ही उसके जीवन में बाधाएं उत्पन्न करते हैं।

४१. यदि हथेली में भाग्य रेखा तथा सूर्य रेखा दोनों ही श्रेष्ठ हों तो उसका जीवन सभी दृष्टियों से श्रेष्ठ होता है।

४२. यदि रेखा के अन्त में द्वीप हो तो वह जीवन-भर बीमार बना रहता है

वस्तुतः सूर्य रेखा व्यक्ति के जीवन को और उसके भाग्य को समझने के लिए बहुत अधिक उपयोगी है। अतः हस्तरेखा विशेषज्ञ को सूर्य रेखा का अत्यन्त सूक्ष्मता से और गहराई से अध्ययन करना चाहिए।

भाग्य रेखा

यदि मानव के जीवन में सब कुछ होता है पर यदि उसका भाग्य साथ नहीं देता है तो एक प्रकार से उसका पूरा जीवन व्यर्थ कहा जाता है। चाहे व्यक्ति के पास भव्य व्यक्तित्व, हो चाहे हृदय से वह कितना ही उदार हो, चाहे स्वास्थ्य की दृष्टि से उसमें सभी प्रकार की श्रेष्ठता हो, परन्तु यदि उसका भाग्य उसे साथ नहीं देता है तो उसका जीवन एक प्रकार से निष्क्रिय हो जाता है। कहा जाता है कि यदि व्यक्ति का भाग्य साथ देता हो और यदि वह मिट्टी भी छू ले तो वह सोना बन जाती है। इसके विपरीत यदि भाग्य साथ नहीं देता तो सोने को भी स्पर्श करने पर वह मिट्टी के समान हो जाता है।

वस्तुतः जीवन में भाग्य का महत्त्व सबसे अधिक माना गया है। इसीलिए हाथ में भी भाग्य रेखा या प्रारब्ध रेखा को महत्त्व दिया जाता है। अंग्रेजी में इसे 'फेट लाइन' कहते हैं। यह रेखा जितनी अधिक गहरी, स्पष्ट और निर्दोष होती है उसका भाग्य उतना ही ज्यादा श्रेष्ठ कहा जाता है। यदि व्यक्ति के हाथ में सभी रेखाएं दूषित एवं कमजोर हो परन्तु यदि उसकी भाग्य रेखा अपने आप में अत्यन्त श्रेष्ठ हो तो यह बात निश्चित है कि उसकी ये सारे दुर्गुण छिप जाते हैं और वह जीवन में पूर्ण प्रगति करने में समर्थ हो पाता है। अतः हस्त रेखा विशेषज्ञ को चाहिए कि वह हथेली का अध्ययन करते समय भाग्य रेखा का सावधानी से अध्ययन करे।

सभी हाथों में यह भाग्य रेखा नहीं पाई जाती है और मेरा तो यह अनुभव है कि लगभग ५० प्रतिशत हाथों में भाग्य रेखा का अभाव ही होता है। परन्तु मेरे कथन का यह अभिप्राय नहीं लिया जाना चाहिए कि जिसके हाथ में भाग्य रेखा नहीं होती वह व्यक्ति भाग्यहीन होता है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि भाग्य रेखा के अभाव में प्रयत्न करने पर भी व्यक्ति को पूर्ण सफलता नहीं मिल पाती। भाग्य रेखा होने से व्यक्ति थोड़ी-सी प्रतिभा और परिश्रम से ही कार्य को अपने मनोनुकूल बना लेता है।

इस रेखा को शनि रेखा भी कहा जाता है क्योंकि इस रेखा की समाप्ति शनि पर्वत पर होती है। यद्यपि यह रेखा व्यक्ति के हाथों में अलग-अलग स्थानों से प्रारम्भ होती है परन्तु इस रेखा की समाप्ति शनि पर्वत पर ही होती देखी गई है। इसलिए भी इसको शनि रेखा के नाम से पुकारते हैं।

जिन हाथों में यह रेखा कमजोर होती है या नहीं होती है उन व्यक्तियों की उन्नति तो होती है परन्तु उनकी उन्नति में भाइयों, सम्बन्धियों या रिश्तेदारों का किसी प्रकार का कोई सहयोग उसे उसके जीवन में नहीं मिलता। इस प्रकार से वह जो भी प्रगति करता है स्वयं के प्रयत्नों से ही कर पाता है। ऐसे लोगों को न तो समाज से किसी प्रकार का कोई सहयोग मिलता है और न परिवार से ही सहायता मिलती है। जिन लोगों के हाथों में शनि रेखा का अभाव हो तो यह समझ लेना चाहिए कि इसके जीवन में जो भी दिखाई दे रहा है वह सब इसके प्रयत्नों से ही संभव हुआ है।

यह रेखा नीचे से ऊपर की ओर बढ़ती है जैसा कि मैंने स्पष्ट किया है कि हथेली में इस रेखा के उद्गम स्थान अलग-अलग होते हैं परन्तु इस रेखा की समाप्ति शनि पर्वत पर ही आकर होती है। इस रेखा के माध्यम से मानव की इच्छाएं, भावनाएं उसका बौद्धिक एवं मानसिक स्तर तथा उसकी क्षमताओं का अनुमान हो जाता है। भाग्य रेखा के माध्यम से यह जाना जा सकता है कि यह व्यक्ति जीवन में कितनी प्रगति करेगा। इसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से क्या स्थिति होगी ? क्या इसको जीवन, में धन, मान, पद प्रतिष्ठा आदि मिल सकेंगे ? क्या इसका जीवन परेशानियों से भरा हुआ है ? क्या यह व्यक्ति अपने जीवन में इन बाधाओं को पार कर सफलता प्राप्त कर सकता है ? ये सारे तथ्य भाग्य रेखा के माध्यम से ही जाने जा सकते हैं।

मध्यमा उंगली के मूल में शनि पर्वत होता है। हथेली के किसी भी स्थान से कोई भी रेखा प्रारम्भ होकर शनि पर्वत को स्पर्श कर लेती है तो वह भाग्य रेखा कहलाने लगती है। हथेली के भिन्न-भिन्न स्थानों से प्रारंभ होने के कारण भाग्य रेखा का महत्त्व भी भिन्न-भिन्न हो जाता। इसलिये भाग्य रेखा का उद्गम तथा उसकी समाप्ति दोनों ही बिन्दुओं का भलीभांति सूक्ष्मता से अध्ययन करना चाहिये।

यदि यह रेखा कहीं से भी प्रारम्भ होकर बिना किसी अन्य रेखा का सहारा लिये शनि पर्वत पर पहुंच जाती है तो निःसन्देह ऐसी रेखा प्रबल भाग्य वर्द्धक एवं श्रेष्ठ मानी जाती है परन्तु यदि भाग्य रेखा शनि पर्वत को पार कर मध्यमा उंगली के पौर तक पहुंचने की कोशिश करती है तो ऐसी रेखा दूषित कहलाती है।

ऊपर मैंने भाग्य रेखा के बारे में कुछ तथ्य स्पष्ट किये हैं। मेरे अनुभव के आधार पर भाग्य रेखा का उद्गम निम्न प्रकार से हो सकते हैं :

१. हथेली में भाग्य रेखा मणिबन्ध के ऊपर से निकल कर अन्य रेखाओं का सहारा लेती हुई शनि पर्वत तक पहुंचती है।

२. कई बार यह रेखा जीवन रेखा के पास में से निकल कर शनि क्षेत्र पर पहुंच जाती है।

३. भाग्य रेखा शुक्र पर्वत से भी निकल कर शनि पर्वत तक पहुंचती है।

४. कभी-कभी यह रेखा मंगल पर्वत से भी निकलती हुई दिखाई दी है।

५. यह रेखा जीवन रेखा को काटती हुई शनि पर्वत तक पहुंचने का प्रयास भी करती है।

६. कुछ हाथों में मैंने भाग्य रेखा राहू क्षेत्र से भी निकलती हुई देखी है।

७. भाग्य रेखा हृदय रेखा से निकलकर शनि पर्वत को स्पर्श करती हुई अनुभव की है।

८. कई बार यह रेखा नेपच्युन क्षेत्र तक शनि पर्वत तक जाती है।

९. कुछ हाथों में यह रेखा चन्द्र पर्वत से भी निकलती है ।

१०. हर्षल क्षेत्र से भी इस रेखा का प्रारम्भ देखा जा सकता है।

११. कई बार यह रेखा मस्तिष्क रेखा से प्रारम्भ होकर शनि पर्वत की ओर जाती है।

ऊपर मैंने भाग्य रेखा के ग्यारह उद्गम स्थान बनाये हैं। अधिकतर हाथों में उद्गम स्थल इसी प्रकार के दिखाई देते हैं। परन्तु इसके अलावा भी उद्गम स्थल हो सकते हैं ।

आगे के पृष्ठों में मैं इन उद्गम स्थलों से संबंधित भविष्यफल स्पष्ट कर रहा हूं :

१. **प्रथमा अवस्था** :—इस प्रकार की भाग्य रेखा सर्वात्तक कहलाती है। यह रेखा जितनी अधिक स्पष्ट गहरी और निर्दोष होगी उतनी ही अच्छी कही जायेगी और उतना ही श्रेष्ठ मिल सकेगा। इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि भाग्य रेखा शनि पर्वत तक पहुंचती है तो वह शुभ कहलाती है। परन्तु यदि शनि पर्वत को पार कर मध्यमा उंगली पर चढ़ने लग जाती है तो वह विपरीत फल देने लग जाती है कुछ हाथों में मैंने यह भाग्य रेखा मध्यमा रेखा के दूसरे पौर तक पहुंचते हुए देखा है परन्तु इस प्रकार की रेखा बनने का यह तात्पर्य यह है कि ऐसे व्यक्ति में महत्त्वाकांक्षाएं तथा इच्छाएं जरूरत से ज्यादा होंगी परन्तु वह अपने जीवन में अपनी इच्छाओं को पूरी होते हुए नहीं देख पाता। यह बढ़ी हुई भाग्य रेखा व्यक्ति बने बनाये कार्य को बिगाड़ देती है।

परन्तु इस प्रकार की यह रेखा मध्यमा उंगली पर न चढ़े अपितु शनि क्षेत्र तक ही जाकर रुक जाय तो ऐसी रेखा शुभ फलदायक कही जाती है। यदि भाग्य रेखा शनि क्षेत्र तक जाते-जाते दुमुही हो जाती है तो यह विशेष सफलता का सूचक है। यदि भाग्य रेखा के अन्तिम बिन्दु पर दो सिराएं फटकर एक सिरा शनि पर्वत पर रुकता है और दूसरा सिरा गुरु पर्वत तक पहुंच जाय तो वह व्यक्ति अपने जीवन में बहुत अधिक ऊंचे पद पर पहुंचता है। ऐसे व्यक्ति सामान्य घराने में जन्म लेकर भी उच्चपद प्राप्त होते देखा गया है।

यदि भाग्य रेखा को शनि पर्वत पर तिरछी रेखाएं काटती हों तो उसे अपने जीवन में बाधाएं देखने को मिलती हैं। बहुत अधिक बाधाओं के बाद भी वह अपने जीवन में सफल हो पाता है। ये बाधक रेखाएं जितनी ही कम होती हैं उतनी ही ज्यादा अच्छी मानी जाती हैं।

यदि भाग्य रेखा का उद्गम मणिबन्ध के नीचे से हो तो ऐसी रेखा भी दोषपूर्ण मानी जाती है। ऐसे व्यक्ति दरिद्र तथा भाग्यहीन जीवन व्यतीत करते हैं।

२. **द्वितीयावस्था** :—सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार इस प्रकार की रेखा भी श्रेष्ठ मानी गई हैं। परन्तु यदि इस प्रकार की रेखा मध्यम उंगली पर चढ़ने का प्रयत्न करे तो यह बाधाओं को पैदा करने वाली मानी गई है। ऐसे व्यक्ति साहसी होते हुए भी परेशानियों से घिरे रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों को जीवन में सफलता बहुत मुश्किल से मिलती है।

जिसके हाथ में इस प्रकार की रेखा शनि पर्वत पर पहुंच जाती है तो यद्यपि वह व्यक्ति बचपन में परेशानियां उठाता है परन्तु आगे चलकर वह अपने प्रयत्नों से उन्नति करता है। और २८वें वर्ष में उसका पूर्ण भाग्योदय होता है।

ऐसे व्यक्ति संकोची स्वभाव के होते हैं तथा तुरन्त निर्णय लेने में समर्थ नहीं हो पाते। यदि इस प्रकार की भाग्य रेखा पर आड़ी-तिरछी रेखाएं हों तो उस व्यक्ति के जीवन में कई बार बाधाएं आती हैं। और अत्यन्त परिश्रम के बाद भी वह जीवन में सफल हो पाता है।

यदि भाग्य रेखा के साथ-साथ जीवन रेखा भी बढ़ रही हो तो ऐसी रेखा शुभ नहीं मानी जाती। जीवन रेखा और भाग्य रेखा का परस्पर मिलना या आपस में लिपटना ही अनुकूल नहीं कहा जाता।

३. **तृतीयावस्था** :—यह रेखा जितनी स्पष्ट होती है उतना ही ज्यादा शुभ माना जाता है। ऐसी भाग्य रेखा जीवन रेखा को काट कर ही आगे बढ़ती है परन्तु जिस जगह वह जीवन रेखा को काटती है। जीवन की उस अवधि में उसे बहुत अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति होने पर वह व्यक्ति भयंकर दुर्घटना में घायल हो सकता है। दिवालिया हो सकता है, अथवा आत्महत्या कर सकता है।

यह रेखा शुक्र पर्वत से निकलती है अतः यह बात सही समझनी चाहिए कि उस व्यक्ति का भाग्योदय विवाह के बाद ही होता है। ऐसा व्यक्ति प्रेम के क्षेत्र में बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ा होता है। तथा ससुराल से बहुत अधिक धन मिलता है। ऐसे व्यक्ति की स्त्री सुन्दर, आकर्षक तथा तड़क-भड़क से रहने वाली होती है।

परन्तु ऐसे व्यक्तियों का बुढ़ापा बहुत कष्ट का होता है। उनका वैवाहिक जीवन भी सुखमय नहीं माना जाता। इस प्रकार की भाग्य रेखा के बीच में यदि द्वीप का चिह्न दिखाई दे तो पति पत्नी मतभेद की वजह से एक साथ नहीं रह पाते।

४. **चतुर्थावस्था** :—यह भाग्य रेखा भी शुभ मानी गई है, परन्तु इसका भाग्योदय यौवनावस्था के बाद ही होता है। शिक्षा के क्षेत्र में इसको बार-बार बाधाएं देखनी पड़ती है तथा उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता।

यदि इस प्रकार की भाग्य रेखा के साथ कोई सहायक रेखा न हो तो व्यक्ति जीवन में अपनी ही की हुई गलतियों पर पछताता रहता है। मित्रों का सहयोग उसे नहीं मिल पाता जीवन में उन्नति के लिए उसे कठोर परिश्रम करना पड़ता है। उसका भाग्योदय अत्यधिक विलम्ब से होता है और किसी के सहयोग से ही यह उन्नति कर पाता है ऐसा व्यक्ति पुलिस या मिलिट्री विभाग में विशेष उन्नति कर सकता है।

यदि यह रेखा मार्ग में टूट गई हो तो व्यक्ति को अपने जीवन में बार-बार बाधाओं का सामना करना पड़ता है यदि इस रेखा पर द्वीप हो तो ऐसा व्यक्ति भाग्य-हीन होता है।

५. **पंचमावस्था** :—यह रेखा हथेली में अनुकूल कही जाती है, परन्तु यह यदि मध्यमा उंगली के छोर पर पहुंचने का प्रयत्न करती है तो वह व्यक्ति जीवन में सफलता नहीं प्राप्त कर पाता। यद्यपि यह आगे बढ़ने के लिए बराबर प्रयत्न करता रहेगा परन्तु उसे जीवन में बार-बार असफलता का सामना करना पड़ता है किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के सहयोग से ही यह उन्नति कर सकता है।

जीवन के मध्य काल में ये व्यक्ति विकास करते हैं, ऐसे व्यक्ति सफल चित्र-कार अथवा साहित्यकार होते हैं, मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसे व्यक्ति किसी एक क्षेत्र में पारंगत होते हैं।

यदि ऐसी रेखा जीवन रेखा के आगे बढ़ने पर टूटी हुई हो या लहरदार बन गई हो तो उस व्यक्ति की उन्नति नहीं हो पाती, और निरन्तर अपने भाग्य को कोसता रहता है। यदि ऐसी रेखा को आड़ी या तिरछी रेखाएं काटे तो उस जीवन में बाधाओं का सामना करना पड़ता है, ऐसे व्यक्ति सफल देश भक्त होते हैं तथा इनकी वृद्धावस्था अत्यन्त सुखमय होता है।

६. **षष्ठावस्था**:—जिसके हाथ में इस प्रकार की भाग्य रेखा होती है वह अत्यन्त सौभाग्यशाली माना जाता है, इस प्रकार के व्यक्ति का भाग्योदय ३६वें वर्ष के बाद से ही होता है जीवन के ३६ से ४२वें वर्ष के बीच आश्चर्यजनक रूप से उन्नति करता है।

ऐसे व्यक्ति का प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त कष्टदायक होता है, परन्तु उसका यौवनकाल और उसकी वृद्धावस्था अत्यन्त सुखकर मानी जाती है, और अपने जीवन के उत्तरकाल में उसे धन, मान, यश, प्रतिष्ठा, आदि प्राप्त होती है।

यदि ऐसी रेखा बीच बीच में टूटी हुई हो तो उसके भाग्य में बाधाएं आती हैं और यदि उस रेखा पर वृत्त का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति भाग्य हीन कहा जाता है यदि भाग्य रेखा से कोई सहायक रेखा निकल कर गुरु पर्वत की ओर जाती हो तो वह

व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

७. सप्तमावस्था :—हृदय रेखा से निकलने वाली यह भाग्य रेखा सीधी शनि पर्वत तक पहुंच जाती है पर कुछ लोगों के हाथों में यह रेखा आगे चलकर त्रिशूल की तरह बन जाती है जिसका एक सिरा सूर्य पर्वत की ओर दूसरा हिस्सा गुरु पर्वत की ओर जाता है। ऐसी भाग्य रेखा अत्यन्त शुभ मानी गई हैं। यदि इस प्रकार की भाग्य रेखा अन्त मे जाकर दो टुकड़ों में बंट जाय तो वह व्यक्ति अपने जीवन में अपूर्व धन मान, यश, पद, प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति सहृदय होता है अपने जीवन में वह निरन्तर दूसरों की सहायता करता रहता है। वह अपने प्रयत्नों से लाखो करोड़ों रुपये कमाता है और धार्मिक कार्यों में खर्च भी करता है। यदि इस रेखा के प्रारम्भ में द्वीप का चिह्न हो तो उसे अपने जीवन में बहुत बड़ी बदनामी उठानी पड़ती, है यदि यह रेखा बीच में टूटी हुई हो तो आयु के उस भाग में उसे विशेष आर्थिक हानी सहन करनी पड़ती है, यदि इस रेखा पर आड़ी-तिरछी रेखाएं हों तो उस व्यक्ति को जीवन में कई बार संघर्षों का सामना करना पड़ता है और अत्यन्त कठिनाई के बाद ही वह सफलता प्राप्त कर पाता है।

यदि इस रेखा के अन्तिम स्थान पर तारे का चिह्न हो तो उसकी अकाल मृत्यु होती है। यदि यह रेखा मध्यमा उंगुली पर चढ़ने का प्रयत्न करें तो वह जीवन में बराबर असफलता का सामना करता है।

८. अष्टमावस्था : यदि यह रेखा निर्दोष स्पष्ट और गहरी हो तो उस व्यक्ति का बचपन अत्यन्त सुखमय व्यतीत होता है। विद्या की दृष्टि से वह श्रेष्ठ विद्या प्राप्त करता है। इस प्रकार के बालक की बुद्धि तेज होती है और वे अपने स्वतंत्र विचारों के कारण पहिचाने जाते हैं। यद्यपि परिवार से इनको किसी प्रकार का कोई विशेष सहयोग नहीं मिलता। फिर भी ये प्रयत्न करके सफलता की ओर बढ़ जाते हैं। ऐसे व्यक्ति सफल साहित्यकार न्यायाधीश अथवा दार्शनिक होते हैं। ऐसे व्यक्तियों का गृहस्थ जीवन पूर्णत: सुखमय कहा जा सकता है।

विदेश यात्रा का योग इनके जीवन में कई बार होता है परन्तु इस प्रकार की भाग्य रेखा टूटी हुई या लहरदार हो तो उस व्यक्ति के जीवन में सफलता के अवसर कम रहते हैं। उसे जीवन में बार बार संघर्ष करना पड़ता है बहुत अधिक प्रयत्न के बाद ही सफलता मिल पाती है। यदि इस प्रकार की भाग्य रेखा अन्त में जाकर दो मुही बन जाती है तो यह श्रेष्ठ संकेत है, और ऐसा व्यक्ति निश्चय ही अपने उद्देश्यों में सफल होता है।

९. नवमावस्था : इस प्रकार की भाग्य रेखा को अत्यन्त शुभ माना गया है। यदि यह रेखा शनि पर्वत पर जाकर दो भागों में या तीन भागो में बंट जाती है तो वह व्यक्ति अतुलनीय धन का स्वामी होता है तथा जीवन में पूर्ण प्रगति करता है।

ऐसे व्यक्ति के जीवन में आय के स्रोत एक से अधिक होते हैं। यदि इस प्रकार की भाग्य रेखा का अन्तिम सिरा गुरु पर्वत की ओर जा रहा हो तो वह व्यक्ति साहित्य के माध्यम से श्रेष्ठ फल प्राप्त करता है। यदि इस प्रकार का सिरा सूर्य पर्वत की ओर जाता हो तो वह विदेश में व्यापार कर पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेता है तथा समाज में उसे सम्माननीय स्थान मिलता है।

यदि इस प्रकार की रेखा टूटी हुई या जंजीरदार हो तो उसे जीवन में बहुत अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यदि यह रेखा मध्यमा उंगली की पोर पर चढ़ रही हो तो उसे जीवन में जरूरत से ज्यादा हानि सहन करनी पड़ती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में ऐसी भाग्य रेखा होती है उनका भाग्योदय विवाह के बाद ही होता है। उनका मन अस्थिर तथा वृत्ति चंचल होती है। जीवन में एक से अधिक स्त्रियों से वह सम्पर्क रखता है। इनके जीवन में जलयात्रा के योग बहुत अधिक होते हैं। ऐसे व्यक्ति एकान्त प्रेमी सहृदय एवं मधुर स्वभाव के होते हैं।

१०. **दशमावस्था** : जिस व्यक्ति के हाथ में इस प्रकार की भाग्य रेखा होती है वह निश्चय ही उच्च पद प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में कई बार विदेश यात्राएं करता है अथवा वह वायु सेना में उच्च पद प्राप्त अधिकारी होता है। जीवन में ऐसा व्यक्ति राष्ट्र-स्तरीय सम्मान प्राप्त करता है। इनके जीवन में साहस तथा धैर्य की किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती। यदि ऐसी भाग्य रेखा जंजीरदार टूटी हुई या लहरियादार हो तो उसे जीवन में बहुत अधिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। यदि इस प्रकार की भाग्य रेखा अन्त में जाकर दो भागों में बंट जाय और उसका एक सिरा गुरु पर्वत तथा दूसरा सिरा सूर्य पर्वत की ओर जाता हो तो वह व्यक्ति प्रबल भाग्यशाली होता है।

११. **एकादशावस्था** : ऐसी भाग्य रेखा बहुत ही कम लोगों के हाथ में देखने को मिलती है। इन व्यक्तियों का व्यक्तित्व अपने आप में भव्य होता है। ये शुक्र की तरह जीवन में चमकते हैं। इनके कार्यों से समाज प्रभावित होता है। देश के दिशा-निर्देश में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इनके विचार इनके कार्य सभी कुछ योजना बद्ध होते हैं। एक साधारण कुल में जन्म लेकर भी ऐसा व्यक्ति सभी दृष्टियों से योग्य सम्पन्न और सुखी होता है।

यदि ऐसी रेखा अन्त में जाकर दो भागों में बंट जाय तो वह उच्च स्तर का अधिकारी होता है तथा उसके जीवन में भौतिक दृष्टि से किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

ऊपर मैंने ग्यारह प्रकार के भाग्य रेखा के उद्गम स्थल बतलाये हैं। परन्तु इसके अलावा भी उद्गम स्थल हो सकते हैं। पाठकों को एक बात ध्यान में रखनी

चाहिए कि जो भी रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती है वास्तव में वही रेखा भाग्य रेखा कहलाने की अधिकारी होती है।

यदि किसी के हाथ में एक से अधिक भाग्य रेखाएं हों और दोनों की समाप्ति शनि पर्वत पर होती हो तो उन दोनों रेखाओं का मिला-जुला फल उस व्यक्ति को जीवन में देखने को मिलेगा। शनि रेखा या भाग्य रेखा की समाप्ति पर यदि कई छोटी-छोटी रेखाएं निकलती हों तो ये रेखाएं व्यक्ति की महत्वाकांक्षाओं को सूचित करती हैं। यदि इस प्रकार की रेखाएं नीचे की तरफ गिरती हुई दिखाई दें तो वह व्यक्ति जीवन में बहुत अधिक परेशानियों का सामना करता है।

आगे के पृष्ठों में भाग्य रेखा से सम्बन्धित कुछ नए तथ्य स्पष्ट कर रहा हूं।

१. यदि भाग्य रेखा सीधी तथा स्पष्ट हो और शनि पर्वत से होती हुई सूर्य पर्वत की ओर जा रही हो तो वह व्यक्ति कला के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है।

२. यदि यह रेखा लाल रंग की हो तथा मध्यमा उंगली के प्रथम पोर तक पहुंच जाय तो उस व्यक्ति की दुर्घटना में मृत्यु होती है।

३. यदि यह रेखा हृदय रेखा को काटते समय जंजीर के समान बन जाय तो उसे प्रेम के क्षेत्र में बदनामी का सामना करना पड़ता है।

४. यदि हृदय रेखा हथेली के मध्य में फीकी या पतली अथवा अस्पष्ट हो तो व्यक्ति का यौवनकाल दुखमय होता है।

५. यदि व्यक्ति के हाथ में भाग्य रेखा के साथ-साथ सहायक रेखाएं भी हों तो उसका जीवन अत्यन्त सम्मानित होता है।

६. यदि भाग्य रेखा जंजीरदार अथवा लहरदार हो तो जीवन में उसे बहुत अधिक दुख भोगना पड़ता है।

७. जिस व्यक्ति के हाथ में भाग्य रेखा नहीं होती उसका जीवन अत्यन्त साधारण और नगण्य सा होता है।

८. यदि भाग्य रेखा प्रारंभ से ही टेढ़ी-मेढ़ी हो तो उसका बचपन अत्यन्त कष्टदायक होता है।

९. भाग्य रेखा अपने उद्गम स्थल से प्रारंभ होकर जिस पर्वत की ओर भी मुड़ती है या शनि पर्वत से उसमें से कोई शाखा निकलकर जिस पर्वत की ओर जाती है उस पर्वत से सम्बन्धित गुणों का विकास उस व्यक्ति को जीवन में मिलता है।

१०. यदि भाग्य रेखा चलते-चलते रुक जाय तो वह व्यक्ति जीवन में बहुत अधिक तकलीफ उठाता है।

११. हथेली में भाग्य रेखा जिस स्थान में भी गहरी, निर्दोष, और स्पष्ट होती है जीवन के उस भाग में उसे विशेष लाभ या सुख मिलता है।

१२. भाग्य रेखा हथेली में जितनी बार भी टूटती है जीवन में उतनी ही बार महत्वपूर्ण मोड़ आते हैं या कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

१३. यदि भाग्य रेखा मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर मध्यमा के ऊपर चढ़े तो वह दुर्भाग्यशाली होता है। जो भाग्य रेखा ऐसी होगी उसे जीवन में किसी प्रकार का कोई सुख या आनन्द नहीं मिलेगा।

१४. यदि भाग्य रेखा प्रथम मणिबन्ध से भी नीचे हो अर्थात् प्रथम मणिबन्ध से नीचे उसका उद्गम स्थल हो तो उसे जीवन में जरूरत से ज्यादा कष्ट उठाना पड़ता है।

१५. यदि भाग्य रेखा के साथ में कोई सहायक रेखा हो तो यह शुभ कहा जाता है। यदि उंगलियां लम्बी हों और भाग्य रेखा का प्रारंभ चन्द्र पर्वत से हो तो ऐसा व्यक्ति प्रसिद्ध तांत्रिक होता है।

१६. यदि चन्द्र पर्वत को काटकर भाग्य रेखा आगे बढ़ती हो तो वह जीवन में कई बार विदेश यात्रा करता है।

१७. यदि भाग्य रेखा के उद्गम स्थान पर त्रिकोण का चिह्न हो तो वह व्यक्ति अपनी ही प्रतिभा से उन्नति करता है।

१८. यदि भाग्य रेखा से कुछ शाखाएं निकल कर ऊपर की ओर जा रही हों तो उसे अतुलनीय धन लाभ होता है।

१९. यदि भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा से प्रारंभ हो और मार्ग में कई जगह आड़ी तिरछी रेखाएं हों तो उस व्यक्ति को बुढ़ापे में सफलता मिलती है।

२०. यदि भाग्य रेखा शनि पर्वत पर वृत्ताकार बन जाय तो उसके जीवन में अत्यधिक परिश्रम के बाद सफलता आती है।

२१. यदि भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा से प्रारंभ हो और उसकी शाखाएं गुरु सूर्य तथा बुध पर्वत पर जाती हों तो वह व्यक्ति विश्वविख्यात होता है।

२२. यदि भाग्य रेखा के उद्गम स्थान पर तीन या चार रेखाएं निकली हुई हों तो ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय विदेश में होता है।

२३. यदि भाग्य रेखा के उद्गम स्थान से एक सहायक रेखा शुक्र पर्वत की ओर जाती हो तो किसी स्त्री के माध्यम से उसका भाग्योदय होता है।

२४. यदि भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा के पास समाप्त हो जाती हो तो उसे जीवन में बार बार निराशा का सामना करना पड़ता है।

२५. भाग्य रेखा पर जितनी ही आड़ी तिरछी रेखाएं होती हैं वे उसकी प्रगति में बाधक कहलाती हैं।

२६. यदि भाग्य रेखा की समाप्ति पर तारे का चिह्न हो तो उसकी वृद्धावस्था अत्यन्त कष्टमय होती है।

२७. यदि भाग्य रेखा और विवाह रेखा परस्पर मिल जाय तो उसका गृहस्थ जीवन दुखमय रहता है ।

२८. यदि भाग्य रेखा से कोई सहायक रेखा निकलती हो तो वह भाग्य को प्रबल बनाने में सहायक होती है ।

२९. यदि इस रेखा के ऊपर या नीचे शाखाएं हों तो उसे आर्थिक कष्ट उठाना पड़ता है ।

३०. भाग्य रेखा के अन्त में क्रॉस या जाली हो तो उसकी क्रूर हत्या होती है ।

३१. यदि रेखा के अन्त में चतुर्भुज हो तो उस व्यक्ति की धर्म में विशेष आस्था होती है ।

३२. भाग्य रेखा पर धन का चिन्ह शुभ माना गया है ।

३३. भाग्य रेखा गहरी स्पष्ट और लालिमा लिये हुए होती है तो व्यक्ति जीवन में शीघ्र ही प्रगति करता है ।

वस्तुतः भाग्य में ही जीवन का सब कुछ सार संगृहीत होता है । अतः जिसकी हथेली में भाग्य रेखा प्रबल, स्पष्ट, और सुन्दर होती है वह व्यक्ति अपने भाग्य से शीघ्र उन्नति करता है और समाज में सम्माननीय स्थान प्राप्त करता हुआ पूर्ण भौतिक सुखों का भोग करता है ।

स्वास्थ्य-रेखा

मानव के जीवन में स्वास्थ्य का महत्व सबसे अधिक माना है। व्यक्ति के पास यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, तथा ऐश्वर्य हो परन्तु यदि उसके पास स्वास्थ्य की कमी हो तो उसका यह सारा वैभव एक प्रकार से व्यर्थ है। इसलिये शास्त्रों में स्वास्थ्य को सबसे उत्तम धन माना है। हस्तरेखा विशेषज्ञ को चाहिए कि वह जीवन रेखा का अध्ययन करने के बाद सबसे पहले स्वास्थ्य रेखा का ही अध्ययन करे।

उत्तम स्वास्थ्य का उसके पूरे जीवन और उसके कार्य-कलापों पर प्रभाव पड़ता है। यदि स्वास्थ्य उत्तम होता है तो वह सब कुछ कार्य कर सकता है, प्रत्येक कार्य में मानसिक और शारीरिक शक्ति लगा सकता है। परन्तु यदि स्वास्थ्य उसका साथ नहीं दे तो उसका जीवन एक प्रकार से व्यर्थ सा हो जाता है।

हथेली में स्वास्थ्य-रेखा का उद्गम किसी भी स्थान से हो सकता है परन्तु यह बात निश्चित है कि इसकी समाप्ति बुध पर्वत पर ही होती है। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि कोई एक रेखा प्रारंभ होकर बुध पर्वत की ओर आने का प्रयत्न करती है परन्तु बुध पर्वत तक नहीं पहुंच पाती। ऐसी स्थिति में वह रेखा स्वास्थ्य रेखा नहीं कहला सकती। स्वास्थ्य रेखा वह तभी कहला सकती है जबकि वह बुध पर्वत को स्पर्श करे या बुध पर्वत पर पहुंचे। कुछ रेखाएं बुध पर्वत को मात्र स्पर्श करके ही रह जाती हैं ऐसी रेखा को भी बुध रेखा या स्वास्थ्य रेखा मान लेना चाहिए।

यह रेखा हथेली के किसी भी भाग से प्रारंभ हो सकती है। मुख्य रूप से इसका प्रारंभ निम्न स्थानों से होता है;

१. शुक्र पर्वत से।
२. जीवन रेखा के पास से।
३. हृदय रेखा से।
४. चन्द्र पर्वत से।
५. मणिबन्ध से।
६. भाग्य रेखा से।
७. मंगल पर्वत से।

जैसा कि मैं ऊपर बता चुका हूं कि स्वास्थ्य रेखा का प्रारंभ कहीं से भी हो सकता है परन्तु उस रेखा की समाप्ति बुध पर्वत पर ही होती है।

इस रेखा का भली भांति अध्ययन करना चाहिए । हथेली में यह रेखा जितनी अधिक स्पष्ट, निर्दोष व गहरी होती है संबंधित व्यक्ति का स्वास्थ्य उतना ही ज्यादा श्रेष्ठ एवं उन्नत होता है । उसका शरीर सुगठित और व्यक्तित्व, प्रभावशाली होता है । यदि हथेली में स्वास्थ्य रेखा टूटी हुई हो या कटी-फटी, छिन्न-भिन्न, लहरदार, या जंजीर के समान हो तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य अपने आप में कमजोर होगा । जीवन में उसे किसी भी प्रकार का कोई आनन्द नहीं रह पायेगा । व्यक्ति की हथेली में स्वास्थ्य रेखा का स्पष्ट होना बहुत अधिक जरूरी है ।

कुछ हथेलियों में स्वास्थ्य रेखा का अभाव भी देखने को मिलता है । इस सम्बन्ध में मेरा यह अनुभव है कि स्वास्थ्य रेखा का न होना भी अपने-आप में एक शुभ संकेत है । जिन व्यक्तियों के हाथों में स्वास्थ्य रेखा नहीं होती । वे स्वस्थ आकर्षक और आनन्ददायक जीवन व्यतीत करने वाले होते हैं । ऐसे व्यक्ति किसी भी प्रकार के रोग से दूर रहते हैं तथा अपने पुरुषार्थ के बल पर सब कुछ करने के लिए तैयार रहते हैं ।

जिस हथेली में यह रेखा चौड़ी होती है उसका स्वास्थ्य जीवन भर कमजोर रहता है । यदि यह रेखा कड़ी के समान जुड़ी हुई हो तो उसे जीवन भर पेट की बीमारी रहती है । यदि लहर के समान यह रेखा ऊपर की ओर बढ़ रही हो तो उसे जिगर की बीमारी अवश्य ही होती है । इस रेखा का पीलापन इस बात को स्पष्ट करता है कि ऐसा व्यक्ति पीलिया या रक्त से संबंधित बीमारी से पीड़ित रहेगा । स्वास्थ्य रेखा पर जितने अधिक बिन्दु होते हैं उसका स्वास्थ्य उतना ही ज्यादा खराब रहता है । यदि किसी की हथेली में स्वास्थ्य रेखा कई जगह से कटी हुई हो तो वह व्यक्ति जीवन भर बीमार बना रहता है ।

आगे के पृष्ठों में मैं स्वास्थ्य रेखा से संबंधित कुछ विशेष तथ्य स्पष्ट कर रहा हूं ।

१. यदि स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा से मिली हुई न हो तो ऐसा व्यक्ति दीर्घायु होता है ।

२. स्वास्थ्य रेखा जितनी अधिक लम्बी, स्वस्थ और पुष्ट होती है उस व्यक्ति का स्वास्थ्य उतना ही अधिक श्रेष्ठ कहा जाता है ।

३. यदि स्वास्थ्य रेखा का प्रारंभ लाल हो तो उसे जीवन में हार्ट की बीमारी होती है ।

४. यदि यह रेखा मध्य में लाल हो तो उसका स्वास्थ्य जीवन भर कमजोर बना रहता है ।

५. यदि यह रेखा अन्तिम स्थल पर लाल रंग की हो तो उसे सिर दर्द की बीमारी बनी रहती है ।

६. यदि यह रेखा कई रंगों की हो तो उसे जीवन में पक्षाघात का सामना करना पड़ता है।

७. यदि यह रेखा पीले रंग की हो तो उसे गुप्त रोग होते हैं।

८. यदि स्वास्थ्य रेखा चन्द्र पर्वत से होती हुई हथेली के किनारे किनारे चल-कर बुध पर्वत तक पहुंचती हो तो वह जीवन में कई बार विदेश यात्राएं करता है।

९. यदि यह रेखा पतली तथा स्पष्ट हो एवं मस्तिष्क रेखा भी पुष्ट हो तो उस व्यक्ति की स्मरण-शक्ति अत्यन्त तीव्र होती है ।

१०. यदि इस रेखा पर तथा मस्तिष्क रेखा पर धब्बे हों तो व्यक्ति जीवन भर बीमार बना रहता है।

११. यदि हथेली में स्वास्थ्य रेखा सुर्ख रंग की हो तो ऐसा व्यक्ति जरूरत से ज्यादा भोगी तथा कामी होता है।

१२. यदि मस्तिष्क रेखा कमजोर हो या स्वास्थ्य रेखा लहरदार हो तो उसे पेट की बीमारी बनी रहती है।

१३. यदि बुध पर्वत पर यह रेखा आकर कट जाती हो तो ऐसे व्यक्ति को पित्त दोष होता है।

१४. यदि यह रेखा लाल रंग की होकर हृदय रेखा से बढ़ती हो तो उसका हृदय अत्यन्त कमजोर समझना चाहिए।

१५. यदि कोई स्वास्थ्य रेखा हृदय रेखा पर क्रास का चिह्न बनाती हो तो उसे मन्दाग्नि रोग रहता है।

१६. यदि स्वास्थ्य रेखा से कई सहायक रेखाएं निकलकर ऊपर की ओर बढ़ रही हों तो ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य अत्यन्त श्रेष्ठ माना जाता है।

१७. यदि स्वास्थ्य रेखा लम्बी तथा लहरदार हो पर भाग्य रेखा कमजोर हो तो उसे जीवन में दांतों की बीमारी होती है।

१८. यदि स्वास्थ्य रेखा कमजोर हो एवं हृदय रेखा भी कमजोर हो तो व्यक्ति दुर्बल मनोवृत्ति का होता है।

१९. यदि स्वास्थ्य रेखा के अन्तिम स्थल पर चतुर्भुज हो तो व्यक्ति दमे के रोग से पीड़ित होता है।

२०. यदि उंगलियां कोणदार हों तथा स्वास्थ्य रेखा कमजोर हो तो व्यक्ति लकवे के रोग से पीड़ित रहता है।

२१. यदि स्वास्थ्य रेखा से कई छोटी-छोटी शाखाएं नीचे की ओर जा रही हों तो उसका स्वास्थ्य जीवन भर कमजोर बना रहता है।

२२. यदि स्वास्थ्य रेखा से कोई प्रशाखा सूर्य पर्वत की ओर जा रही हो तो उस व्यक्ति के पास अतुलनीय धन होता है।

२३. यदि स्वास्थ्य रेखा की कोई प्रशाखा शनि पर्वत की ओर जा रही हो तो वह व्यक्ति स्वास्थ्य से गंभीर मननशील तथा दीर्घायु होता है।

२४. यदि स्वास्थ्य रेखा में चन्द्र रेखा आकर मिल रही हो तो वह व्यक्ति सफल कवि होता है तथा कई बार विदेश यात्राएं करता है।

२५. यदि स्वास्थ्य रेखा से कोई प्रशाखा अर्द्धवृत्त सा बनाती हुई मंगल पर्वत की ओर जा रही हो तो वह व्यक्ति सफल भविष्यवक्ता होता है।

२६. यदि मनुष्य की हथेली में स्वास्थ्य रेखा चलकर हृदय रेखा को काट रही हो तो उस व्यक्ति को मिर्गी का रोग होता है।

२७. यदि लहरदार स्वास्थ्य रेखा भाग्य रेखा को स्पर्श कर लेती है तो उस व्यक्ति का भाग्य जीवन भर कमजोर बना रहता है।

२८. यदि ऐसी रेखा मस्तिष्क रेखा को छूती हो तो उस व्यक्ति का दिमाग अत्यन्त कमजोर रहता है।

२९. यदि लहरदार स्वास्थ्य रेखा सूर्य पर्वत को स्पर्श करती हो तो वह जीवन में कई बार बदनामी उठाता है।

३०. यदि स्वास्थ्य रेखा लहरदार हो तथा बुध पर्वत को पार करती हो तो उसे व्यापार में जबरदस्त हानि सहन करनी पड़ती है।

३१. यदि उंगलियां नोकीली हों और हथेली में स्वास्थ्य रेखा का अभाव हो तो वह व्यक्ति क्रियाशील होता है।

३२. यदि बुध पर्वत अत्यन्त विक्षिप्त हो और स्वास्थ्य रेखा का अभाव हो तो वह व्यक्ति खुश मिजाज होता है।

३३. यदि लहरदार बुध रेखा मुडकर शुक्र पर्वत की ओर जा रही हो तो उसे प्रेम के क्षेत्र में जबरदस्त धक्का लगता है।

३४. यदि स्वास्थ्य रेखा पर द्वीप का चिह्न हो तो उसे रक्त संबंधी बीमारियां होती हैं तथा उसके फेफड़े कमजोर होते हैं।

३५. यदि स्वास्थ्य रेखा के आस-पास कई छोटी छोटी रेखाएं हों तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य हमेशा कमजोर रहता है।

३६. यदि स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा से बढ़कर मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा को स्पर्श करती हुई आगे बढ़ती है तो उसे जीवन में कमजोरी रहती है।

३७. यदि जीवन रेखा के साथ यह रेखा जुड़ी हुई हो परन्तु इस रेखा पर नीले धब्बे हों तो उसे हृदय रोग की शिकायत बनी रहती है।

३८. यदि मस्तिष्क रेखा के अन्त में तथा स्वास्थ्य रेखा के अन्त में क्रॉस हो तो वह व्यक्ति सफल होता है।

३६. यदि स्वास्थ्य रेखा कहीं पर चमकदार तथा कहीं पर फीकी हो अथवा टुकड़ों में बंटी हो तो उसका स्वास्थ्य जीवन भर कमजोर रहता है।

४०. यदि स्वास्थ्य रेखा कमजोर और अत्यन्त पतली हो तो उसके चेहरे पर सुस्ती बनी रहती है।

४१. यदि स्वास्थ्य रेखा और सूर्य रेखा का परस्पर सम्बन्ध बन गया हो तो उस व्यक्ति का मस्तिष्क अत्यन्त उर्वर होता है।

४२. यदि इस रेखा के अन्त में क्रॉस हो तथा मस्तिष्क रेखा पर भी क्रॉस का चिह्न हो तो व्यक्ति जीवन में अन्धा होता है।

४३. यदि स्वास्थ्य रेखा के मार्ग में कहीं पर तिरछी रेखा कटती हो तो आयु के उस भाग में जबरदस्त एक्सीडेन्ट (दुर्घटना) होता है।

४४. यदि रेखा पर तारे का चिह्न हो तो उसे जीवन में परिवार का सहयोग नहीं मिलता।

४५. यदि स्वास्थ्य रेखा के आस-पास क्रॉस का चिह्न हो तो उसके जीवन में कई बार दुर्घटनाएं घटित होती हैं।

४६. यदि राहु क्षेत्र पर गुजरते समय स्वास्थ्य रेखा पर द्वीप का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति टी० बी० के रोग से पीड़ित रहता है।

४७. यदि मस्तिष्क रेखा पर द्वीप का चिह्न हो और उस द्वीप के ऊपर से होकर स्वास्थ्य रेखा गुजर रही हो तो व्यक्ति का स्वास्थ्य जीवन में अत्यन्त कमजोर रहेगा।

४८ यदि भाग्य रेखा कटी हुई हो तथा स्वास्थ्य रेखा पर द्वीप का चिह्न हो तो व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से पीड़ित रहता है।

४६. यदि स्वास्थ्य रेखा हथेली के अन्दर धंसी हुई सी हो तो उसे गुप्त रोग रहते हैं।

५०. स्वास्थ्य रेखा पर क्रॉस स्वास्थ्य की हानि की ओर ही संकेत करते हैं।

५१. यदि स्वास्थ्य रेखा पर नक्षत्र हों तो व्यक्ति को पारिवारिक सुख नहीं मिलता।

५२. यदि बुध रेखा तथा प्रणय रेखा आपस में मिली हुई हों तो उस व्यक्ति की पत्नी का स्वास्थ्य जीवन भर कमजोर रहता है।

५३. यदि दोनों हाथों में स्वास्थ्य रेखा स्पष्ट हो तो वह व्यक्ति कामुक और भोगी होता है।

५४. यदि स्वास्थ्य रेखा दुहरी हो तो व्यक्ति श्रेष्ठ भाग्य का स्वामी होता है।

५५. यदि दुहरी स्वास्थ्य रेखा सूर्य पर्वत को भी स्पर्श करती हो तो वह व्यक्ति राजनीति में अत्यन्त श्रेष्ठ पद प्राप्त करता है।

५६. यदि स्वास्थ्य रेखा तथा हृदय रेखा का मिलन बुध पर्वत के नीचे हो तो उस व्यक्ति की मृत्यु हार्ट-अटैक से होती है।

५७. यदि स्वास्थ्य रेखा के साथ में कोई सहायक रेखा भी चल रही हो तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य अत्यन्त श्रेष्ठ समझना चाहिए।

५८. यदि स्वास्थ्य रेखा ठीक हो परन्तु नाखूनों पर पीली धारियां हो तो उस व्यक्ति की असामयिक मृत्यु होती है।

५६. यदि स्वास्थ्य रेखा नीचे से पुष्ट परन्तु ऊपर चलते-चलते क्षीण होती जाती हो तो व्यक्ति की यौवनकाल में ही मृत्यु हो जाती है।

६०. यदि स्वास्थ्य रेखा मणिबन्ध से निकल रही हो पर टूटी हुई हो तो उस व्यक्ति की मृत्यु शीघ्र ही समझनी चाहिए।

६१. यदि स्वास्थ्य रेखा पर जाली का चिह्न हो तो व्यक्ति पूर्ण आयु नहीं भोगता।

६२. यदि जीवन रेखा तथा स्वास्थ्य रेखा का आपस में संबंध हो जाय और ऊपर तारे का चिह्न हो तो व्यक्ति की मृत्यु यात्रा में होती है।

६३. यदि जरूरत से ज्यादा लम्बे नाखून हों तो व्यक्ति को स्नायु संबंधी बीमारी होती है।

६४. यदि नाखूनों का रंग नीला हो तो व्यक्ति पक्षाघात से पीड़ित रहता है। यदि नाखून छोटे-छोटे हों और स्वास्थ्य रेखा कटी हुई हो तो व्यक्ति को मिर्गी का रोग होता है।

६५. यदि जीवन रेखा कमजोर हो तथा बुध रेखा लहरदार हो तो उसे गठिया की बीमारी होती है।

६६. उत्तम स्वास्थ्य रेखा ही व्यक्ति के लिये सभी दृष्टियों से सुखदायक कही जाती है।

हस्तरेखा विशेषज्ञ को स्वास्थ्य रेखा का सावधानी के साथ अध्ययन करना चाहिए। इस रेखा से भविष्य में हम होने वाली बीमारियों तथा दुर्घटनाओं की जानकारी पहले से ही कर सकते हैं और इस प्रकार की चेतावनी देकर उसे सावधान कर सकते हैं।

वस्तुतः स्वास्थ्य रेखा का महत्व हथेली में अन्यतम है इसमें कोई दो राय नहीं।

विवाह-रेखा

हमारे शरीर में सबसे कोमल और विचित्र-सा जो अवयव है उसका नाम 'दिल' है। एक प्रकार से इसका शरीर में सबसे अधिक महत्व है। एक तरफ यह पूरे शरीर में खून पहुंचाने का कार्य करता है तो दूसरी तरफ यह अपने आप में इतना अधिक कोमल होता है कि कई भावनाओं को मन में संजोकर रखता है। कोमल विचार, विपरीत योनि के प्रति भावनाएं आदि कार्य इसी के माध्यम से सम्पन्न होते हैं। यह इतना अधिक कोमल होता है कि जरा-सी विपरीत बात से इसको ठेस पहुंच जाती है और टूट जाता है। मानवीय कल्पनाओं का यह एक सुन्दर प्रतीक है। करुणा, दया, ममता, स्नेह, और प्रेम आदि भावनाएं इसी के द्वारा संचालित होती हैं।

एक हृदय चाहता है कि वह दूसरे हृदय से सम्पर्क स्थापित करे, आपस में दोनों का प्यार हो। दोनों हृदय एक मधुर कल्पना से ओत-प्रोत हों और जब दोनों हृदय एक सूत्र में बंध जाते हैं तब उसे समाज विवाह का नाम देता है।

वस्तुतः मानव जीवन की पूर्णता तभी कही जाती है कि जब उसका अर्द्धाङ्ग भी सुन्दर हो, समझदार हो, प्रेम की भावना से भरा हुआ हो तथा दोनों के हृदय एक दूसरे से मिल जाने की क्षमता रखते हों। जिस व्यक्ति के घर में सुशील, सुन्दर, स्वस्थ और शिक्षित पत्नी होती है वह घर निश्चय ही इन्द्र भवन से ज्यादा सुखकर माना जाता है। इसलिए हस्तरेखा विशेषज्ञ को चाहिए कि वह जीवन रेखा को जितना महत्व दे लगभग उतना ही महत्व विवाह रेखा को भी दे, क्योंकि इस रेखा के अध्ययन से ही मानव जीवन की पूर्णता का ज्ञान हो सकता है।

मानव जीवन की यात्रा अत्यन्त कंटकमय होती है। इस पथ को भली प्रकार से पार करने के लिये एक ऐसे सहयोगी की जरूरत होती है जो दुख में सहायक हो परेशानियों में हिम्मत बंधाने वाला हो तथा जीवन में कंधे से कंधा मिलाकर चलने की क्षमता रखता हो।

हथेली में विवाह रेखा या वासना रेखा अथवा प्रणय रेखा दिखने में छोटी होती है पर इसका महत्व सबसे अधिक होता है। यह रेखा कनिष्ठिका उंगली के नीचे, हृदय रेखा के ऊपर, बुध पर्वत के बगल में हथेली के बाहर निकलते समय जो आड़ी रेखाएं दिखाई देती हैं वे रेखाएं ही विवाह रेखाएं कहलाती हैं।

हथेली में ऐसी रेखाएं दो-तीन या चार हो सकती हैं पर उन सभी रेखाओं में एक रेखा मुख्य होती है। यदि ये रेखाएं हृदय रेखा से ऊपर हों तो वे विवाह रेखाएं

कहलाती हैं और ऐसे व्यक्ति का विवाह निश्चय ही होता है। परन्तु ये रेखाएं हृदय रेखा से नीचे हों तो ऐसे व्यक्ति का विवाह जीवन में नहीं होता।

यदि हथेली में दो या तीन विवाह रेखाएं हों तो जो रेखा सबसे अधिक लम्बी पुष्ट और स्वस्थ हो उसे विवाह रेखा मानना चाहिए। बाकी की रेखाएं इस बात की सूचक होती हैं कि या तो विवाह से पूर्व उतने संबंध होकर छूट जायेंगे अथवा विवाह के बाद उतने अन्य स्त्रियों से सम्पर्क रहेंगे।

पर इसके साथ ही साथ जो छोटी-छोटी रेखाएं होती हैं वे रेखाएं प्रणय रेखाएं कहलाती हैं। ये जितनी रेखाएं होंगी व्यक्ति के जीवन में उतनी ही पर स्त्रियों का सम्पर्क रहेगा। यही बात स्त्रियों के हाथ में भी लागू होती है।

पर केवल ये रेखाएं देखकर ही अपना मत स्थिर नहीं कर लेना चाहिए, पर्वतों का अध्ययन भी इसके साथ-साथ आवश्यक है। यदि इस प्रकार की रेखाएं हों और गुरु पर्वत ज्यादा पुष्ट हो तो निश्चय ही ऐसा व्यक्ति प्रेम संबंध स्थापित करता है पर उसका प्रेम सात्विक और निर्दोष होता है। यदि शनि पर्वत विशेष उभरा हुआ हो और ऐसी रेखाएं हों तो व्यक्ति अपनी आयु से बड़ी आयु की स्त्रियों से प्रेम संबंध स्थापित करता है। यदि हथेली में सूर्य पर्वत पुष्ट हो और ऐसी रेखाएं हों तो व्यक्ति बहुत अधिक सोच विचार कर अन्य स्त्रियों से प्रेम सम्पर्क स्थापित करता है। यदि बुध पर्वत विकसित हो तथा प्रणय रेखाएं हाथ में दिखाई दें तो ऐसे व्यक्ति को भी प्रेमिकाओं से धन लाभ होता है। यदि हथेली में प्रणय रेखाएं हों और चन्द्र पर्वत विकसित हो तो व्यक्ति काम लोलुप तथा सुन्दर स्त्रियों के पीछे फिरने वाला होता है। यदि शुक्र पर्वत बहुत अधिक विकसित हो तथा प्रणय रेखाएं हों तो वह अपने जीवन में कई स्त्रियों से सम्बन्ध स्थापित करता है तथा उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

प्रणय रेखा का हृदय रेखा से गहरा सम्बन्ध होता है। ये प्रणय रेखाएं हृदय रेखा से जितनी अधिक नजदीक होंगी व्यक्ति उतनी ही कम उम्र में प्रेम सम्बन्ध स्थापित करेगा। और ये प्रणय रेखाएं हृदय रेखा से जितनी अधिक दूर होंगी जीवन में प्रेम सम्बन्ध उतना ही अधिक विलम्ब से होगा।

यदि हथेली में प्रणय रेखा न हो तो व्यक्ति अपने जीवन में संयमित रहते हैं तथा वे काम लोलुप नहीं होते।

यदि प्रणय रेखा गहरी तथा स्पष्ट हो तो उस व्यक्ति के प्रणय संबंध भी गहरे बनेंगे। परन्तु यदि ये प्रणय रेखाएं छोटी तथा कमजोर हों तो उस व्यक्ति के प्रणय संबंध भी बहुत कम समय तक चल सकेंगे।

यदि दो प्रणय रेखाएं साथ-साथ आगे बढ़ रही हों तो उसके जीवन में एक साथ दो स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध चलेंगे ऐसा समझना चाहिए। यदि प्रणय रेखा पर क्रॉस

का चिह्न हो तो व्यक्ति का प्रेम बीच में ही टूट जाता है। यदि प्रणय रेखा पर द्वीप का चिह्न दिखाई दे तो उसे प्रेम के क्षेत्र में बदनामी सहन करनी पड़ती है। यदि प्रणय रेखा सूर्य पर्वत की ओर जा रही हो तो उस व्यक्ति का प्रेम संबंध ऊंचे घरानों से रहेगा। यदि प्रणय रेखा आगे जाकर दो भागों में बंट जाती हो तो उस व्यक्ति के प्रेम संबंध जल्दी ही समाप्त हो जाते हैं। यदि प्रणय रेखा से कोई सहायक रेखा हथेली में नीचे की ओर जा रही हो तो वह इस क्षेत्र में बदनामी सहन करता है। यदि प्रणय रेखा से कोई सहायक रेखा हथेली में ऊपर की ओर बढ़ रही हो तो उसका प्रणय संबंध टिकाऊ रहता है तथा जीवन भर आनन्द उपभोग करता है। यदि प्रणय रेखा बीच में ही टूटी हुई हो तो उससे प्रेम संबंध बीच में ही टूट जायेंगे।

अब मैं विवाह रेखा से संबंधित कुछ तथ्य पाठकों के सामने स्पष्ट कर रहा हूं।

१. यदि विवाह रेखा स्पष्ट, निर्दोष तथा लालिमा लिये हुए हो तो उस व्यक्ति का वैवाहिक जीवन अत्यन्त सुखमय होता है।

२. यदि दोनों हाथों में विवाह रेखाएं पुष्ट हों तो व्यक्ति दाम्पत्य जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

३. यदि विवाह रेखा कनिष्ठिका उंगली के दूसरे पोर तक चढ़ जाय तो वह व्यक्ति आजीवन अविवाहित रहता है।

४. यदि विवाह रेखा नीचे की ओर झुककर हृदय रेखा को स्पर्श करने लगे तो उसकी पत्नी की मृत्यु समझनी चाहिए।

५. यदि विवाह रेखा टूटी हुई हो तो जीवन के मध्यकाल में या तो पत्नी की मृत्यु हो जायगी अथवा तलाक हो जायगा ऐसा समझना चाहिए।

६. यदि शुक्र पर्वत से कोई रेखा निकलकर विवाह रेखा से सम्पर्क स्थापित करती है तो उसका वैवाहिक जीवन अत्यन्त दुखमय होता है।

७. यदि विवाह रेखा आगे चलकर दो मुंह वाली बन जाती है तो इस प्रकार के व्यक्ति का दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं कहा जा सकता तथा उसका वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण बना रहता है।

८. यदि विवाह रेखा से कोई पतली रेखा निकल कर हृदय रेखा की ओर जा रही हो तो उसकी पत्नी से जीवन भर बनी रहती है।

९. यदि विवाह रेखा चौड़ी हो तो विवाह के प्रति उसके मन में कोई उत्साह नहीं रहता।

१०. यदि विवाह रेखा आगे जाकर दो भागो में बंट जाती हो और उसकी एक शाखा हृदय रेखा को छू रही हो तो वह व्यक्ति पत्नी के अलावा अपनी साली से भी वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करेगा।

११. यदि विवाह रेखा आगे जाकर कई भागों में बंट जाय तो उसका वैवाहिक जीवन अत्यन्त दुखमय होता है।

१२. यदि विवाह रेखा मस्तिष्क रेखा को छू ले तो वह व्यक्ति अपनी पत्नी की हत्या करता है। यदि बुध पर्वत पर विवाह रेखा कई भागों में बंट जाय तो बार बार सगाई टूटने का योग बनता है।

१३. यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को स्पर्श कर नीचे की ओर बढ़ती हो तो ऐसा विवाह अनमेल विवाह कहलाता है।

१४. यदि विवाह रेखा की एक शाखा नीचे झुककर शुक्र पर्वत तक पहुंच जाय तो उसकी पत्नी व्यभिचारिणी होती है।

१५. यदि विवाह रेखा पर काला धब्बा हो तो उसे अपनी पत्नी का सुख नहीं मिलता।

१६. यदि विवाह रेखा आगे चलकर आयु रेखा को काटती हो तो उसका वैवाहिक जीवन कला पूर्ण रहता है।

१७. यदि विवाह रेखा, भाग्य रेखा तथा मस्तिष्क रेखा परस्पर मिलती हो तो उसका वैवाहिक जीवन अत्यन्त दुखदायी समझना चाहिए।

१८. यदि विवाह रेखा को कोई आड़ी रेखा काटती हो तो व्यक्ति का वैवाहिक जीवन बाधाकारक होता है।

१९. यदि कोई अन्य रेखा विवाह रेखा में आकर या विवाह रखा स्थल पर आकर मिल रही हो तो प्रेमिका के कारण उसका गृहस्थ जीवन नष्ट हो जाता है।

२०. यदि विवाह रेखा के प्रारंभ में द्वीप का चिह्न हो तो काफी बाधाओं के बाद उसका विवाह होता है।

२१. यदि विवाह रेखा जहां से झुक रही हो उस जगह क्रॉस का चिह्न हो तो उसकी पत्नी की मृत्यु अकस्मात होती है।

२२. यदि विवाह रेखा को सन्तान रेखा काटती हो तो उसका विवाह अत्यन्त कठिनाई के बाद होता है।

२३. यदि विवाह रेखा पर एक से अधिक द्वीप हों तो व्यक्ति जीवन भर कुआंरा रहता है।

२४. यदि बुध क्षेत्र के आस-पास विवाह रेखा के साथ-साथ दो तीन रेखाएं चल रही हों तो जीवन में पत्नी के अलावा उसके संबंध दो-तीन स्त्रियों से रहते हैं।

२५. यदि विवाह रेखा बढ़कर कनिष्ठिका की ओर झुक जाय तो उसके जीवन साथी की मृत्यु उसके पूर्व होती है।

२६. विवाह रेखा का अचानक टूट जाना गृहस्थ जीवन में बाधा स्वरूप समझना चाहिए।

२७. यदि बुध क्षेत्र पर दो समानान्तर रेखाएं हों तो उसके दो विवाह होते हैं ऐसा समझना चाहिए ।

२८. यदि विवाह रेखा आगे चलकर सूर्य रेखा से मिलती हो तो उसकी पत्नी उच्च पद पर नौकरी करने वाली होती है ।

२९. दो हृदय रेखाएं हों तो व्यक्ति का विवाह अत्यन्त कठिनाई से होता है ।

३०. यदि चन्द्र पर्वत से रेखा आकर विवाह रेखा से मिले तो ऐसा व्यक्ति भोगी कामुक तथा गुप्त प्रेम रखने वाला होता है ।

३१. यदि मंगल रेखा से कोई रेखा आकर विवाह रेखा से मिले तो उसके विवाह में बराबर बाधाएं बनी रहती हैं ।

३२. विवाह रेखा पर जो खड़ी लकीरें होती हैं वे सन्तान रेखाएं कहलाती हैं ।

३३. सन्तान रेखाएं अत्यन्त महीन होती हैं जिन्हें नंगी आंखों से देखा जाना सम्भव नहीं होता ।

३४. इन सन्तान रेखाओं में जो लम्बी और पुष्ट होती हैं वे पुत्र रेखाएं होती हैं तथा जो महीन और कमजोर होती हैं उन्हें कन्या रेखा समझना चाहिए ।

३५. यदि इनमें से कोई रेखा टूटी हुई हो तो उस बालक की मृत्यु समझनी चाहिए ।

३६. यदि मणिबन्ध कमजोर हो तथा शुक्र पर्वत अविकसित हो तो ऐसे व्यक्ति को जीवन में सन्तान सुख नही रहता ।

३७. यदि स्पष्ट और सीधी रेखाएं होती हैं तो सन्तान स्वस्थ होती है परन्तु यदि कमजोर रेखाएं होती हैं तो सन्तान भी कमजोर समझनी चाहिए ।

३८. विवाह रेखा को ६० वर्ष का समझ कर इस रेखा पर जहां पर भी गहरा पन दिखाई दे आयु के उस भाग में विवाह समझना चाहिए ।

वस्तुतः विवाह रेखा का अपने आप में महत्व है । और इस रेखा का अध्ययन पूर्णतः सावधानी के साथ किया जाना चाहिए ।

गौण रेखाएं

हथेली में कई रेखाएं ऐसी होती हैं जिन्हें हम मुख्य रेखाएं तो नहीं कहते, परन्तु उनका महत्व किसी भी प्रकार से कम नहीं कहा जा सकता। इन रेखाओं का अध्ययन भी अपने आप में अत्यन्त जरूरी है। ये रेखाएं स्वतंत्र रूप से या किसी रेखा की सहायक बनकर अपना निश्चित प्रभाव मानव जीवन पर डालती हैं। आगे के पृष्ठों में मैं इन रेखाओं का संक्षेप में परिचय स्पष्ट कर रहा हूं :

१. **मंगल रेखा** :—ये रेखाएं हथेली में निम्न मंगल क्षेत्र से या जीवन रेखा के प्रारंभिक भाग से निकलती हैं और शुक्र पर्वत की ओर बढ़ती हैं। ऐसी रेखाएं एक या एक से अधिक हो सकती हैं। ये सभी रेखाएं पतली, मोटी, गहरी या कमजोर हो सकती हैं। परन्तु यह स्पष्ट है कि इन रेखाओं का उद्‌गम मंगल पर्वत ही होता है। इसीलिये इन्हें मंगल रेखाएं कहा जाता है।

इनमें दो भेद हैं। एक तो ऐसी रेखाएं जीवन रेखा के साथ-साथ आगे बढ़ती हैं अतः उन्हें जीवन रेखा की सहायक रेखा भी कह सकते हैं। कई बार ऐसी रेखा जीवन रेखा की समाप्ति तक उसके साथ-साथ चलती है।

मंगल रेखा

जिनके हाथ में ऐसी रेखा होती है वे व्यक्ति अत्यन्त प्रतिभाशाली एवं तीव्र बुद्धि के होते हैं। सोचने और समझने की शक्ति इनमें विशेष रूप से होती है। जीवन में ये जो निर्णय एक बार कर लेते हैं उसे अन्त तक निभाने की सामर्थ्य रखते हैं। ऐसे व्यक्ति पूर्णतः विश्वासपात्र कहे जाते हैं।

इस प्रकार के व्यक्ति जीवन में कोई एक उद्देश्य लेकर आगे बढ़ते हैं और जब तक उस उद्देश्य या लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो जाती तब तक ये विश्राम नहीं लेते। शारीरिक दृष्टि से ये हृष्टपुष्ट होते हैं तथा इनका व्यक्तित्व अपने आप में अत्यन्त प्रभावशाली होता है। क्रोध इनके जीवन में बहुत ही कम रहता है।

दूसरे प्रकार की मंगल रेखाएं वे होती हैं जो जीवन रेखा का साथ छोड़कर सीधे ही शुक्र पर्वत पर पहुंच जाती हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन में लापरवाह होते हैं। उनका स्वभाव चिड़चिड़ा होता है। आवेश में ये व्यक्ति सब कुछ करने के लिये तैयार होते हैं। इनका साथ अत्यन्त निम्न स्तर के व्यक्तियों से होता है।

यदि मंगल रेखा से कुछ रेखाएं निकल कर ऊपर की ओर बढ़ रही हों तो उनके जीवन में बहुत अधिक इच्छाएं होती हैं और इन इच्छाओं को पूरा करने का वे भगीरथ प्रयत्न करते हैं। यदि ऐसी रेखाएं भाग्य रेखा से मिल जाती हैं तो व्यक्ति का शीघ्र ही भाग्योदय होता है। हृदय रेखा से मिलने पर व्यक्ति जरूरत से ज्यादा भावुक तथा सहृदय बन जाता है।

यदि इस प्रकार की मंगल रेखाएं आगे चलकर भाग्य रेखा अथवा सूर्य रेखा को काटती हैं तो उसके जीवन में जरूरत से ज्यादा बाधाएं एवं परेशानियां रहती हैं यदि इन रेखाओं का सम्पर्क भाग्य रेखा से हो जाता है तो वह भाग्यहीन व्यक्ति कहलाता है। तथा यदि ये मंगल रेखाएं विवाह रेखा को छू लेती हैं तो उनका गृहस्थ जीवन बर्बाद हो जाता है।

यदि मंगल रेखा प्रबल पुष्ट हथेली में धंसी हुई तथा दोहरी हो तो ऐसा व्यक्ति निश्चय ही हत्यारा अथवा डाकू होता है। परन्तु यदि यह रेखा दोहरी नहीं होती तो ऐसा व्यक्ति मिलिट्री में ऊंचे पद पर पहुंचने में सक्षम होता है।
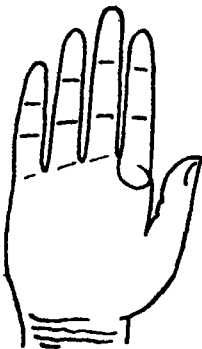
२. गुरुवलय :

तर्जनी उंगली को घेरने वाली अर्थात् जो रेखा अर्द्धवृत्ताकार बनती हुई गुरु पर्वत को घेरती है जिसका एक सिरा हथेली के बाहर की ओर तथा दूसरा सिरा तर्जनी और मध्यमा के बीच में जाता है तो ऐसे वलय को गुरु वलय कहते हैं। ऐसी रेखा बहुत ही कम हाथों में देखने को मिलती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में ऐसी रेखा होती है वे व्यक्ति जीवन में गम्भीर तथा सहृदय होते हैं। उनकी इच्छाएं जरूरत से ज्यादा बढ़ी-चढ़ी होती हैं विद्या के क्षेत्र में अत्यन्त सफलता प्राप्त करते हैं। परन्तु इन लोगों में यह कमी होती है कि ये अपने चारों ओर धन पूर्ण वातावरण बनाये रखते हैं तथा व्यर्थ की शान-शौकत का प्रदर्शन करते रहते हैं। ये जीवन में कम मेहनत से ज्यादा लाभ उठाने की कोशिश में रहते हैं। परन्तु उनके प्रयत्न ज्यादा सफल नहीं होते जिसकी वजह से आगे चलकर इनके जीवन में निराशा आ जाती है।

गुरुवलय

३. शनिवलय :

जब कोई अंगूठी के समान रेखा शनि के पर्वत को घरती है और जिसका एक सिरा तर्जनी और मध्यमा के बीच में तथा दूसरा सिरा मध्यमा और अनामिका के बीच में जाता हो तो उसे शनि वलय या शनि मुद्रा कहते हैं। सामाजिक दृष्टि से ऐसा वलय शुभ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि जिस व्यक्ति के हाथ में ऐसी मुद्रा होती है, वह व्यक्ति वीतरागी सन्यासी या एकान्त प्रिय होता है। ऐसा व्यक्ति इस संसार का मोह तथा सुख को छोड़कर परलोक को सुधारने की कोशिश में रहता है।
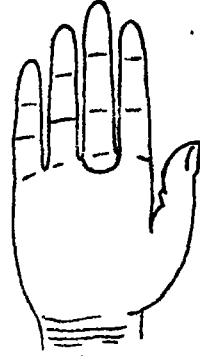
शनिवलय

ऐसे व्यक्ति तंत्र साधना तथा मंत्र साधना के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करते देखे गये हैं। यदि शनि वलय की कोई रेखा भाग्य रेखा को स्पर्श नही करती तो वह व्यक्ति अपने उद्देश्यों में सफलता प्राप्त कर लेता है। परन्तु यदि शनि वलय की कोई रेखा भाग्य रेखा को स्पर्श करती हो तो वह व्यक्ति जीवन में कई बार गृहस्थ बनता है, और कई बार पुनः घर बार छोड़कर सन्यासी बन जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने किसी भी उद्देश्य में सफलता प्राप्त नहीं करता। ऐसे व्यक्ति के सभी कार्य अधूरे तथा अव्यवस्थित होते है। तथा एक प्रकार से इन्द्रियों के दास होते हैं। कई बार ऐसे व्यक्ति अपनी ही कुण्ठाओं के कारण आत्म-हत्या कर डालते हैं।

जिनके हाथों में इस प्रकार का वलय होता है वे निराशा प्रधान व्यक्ति होते हैं। उनको जीवन में किसी प्रकार का कोई आनन्द नही मिलता। वे व्यक्ति चिन्तनशील एकान्तप्रिय तथा वीतरागी होते हैं।

४. रविवलय :

रविवलय

यदि कोई रेखा मध्यमा और अनामिका के बीच में से निकलकर सूर्य पर्वत को घेरती हुई अनामिका और कनिष्ठिका के बीच में जाकर समाप्त होती हो तो ऐसी रेखा को रविवलय या रवि मुद्रा कहते हैं।
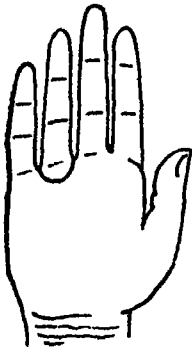
जिस व्यक्ति के हाथ में रवि मुद्रा होती है वह जीवन में बहुत ही सामान्य स्तर का व्यक्ति होता है उसे अपने जीवन में बार-बार असफलता का सामना करना पड़ता है। जरूरत से ज्यादा परिश्रम करने पर भी उसे किसी प्रकार का कोई यश नहीं मिलना अपितु यह देखा गया है कि जिनकी भी वह भलाई करता है या जिनको भी वह सहयोग देता है उसी की तरफ से उसको अपयश मिलता है। ऐसा वलय होने पर रवि पर्वत से संबंधित सभी फल विपरीतता में बदल जाते हैं।

ऐसा व्यक्ति समझदार तथा सच्चरित्र होने पर भी उसको अपयश का सामना करना पड़ता है, और सामाजिक जीवन में उसे कलंकित होना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन से निराश ही रहते हैं।

५. शुक्रवलय :

यदि कोई रेखा तर्जनी और मध्यमा से निकलकर शनि और सूर्य के पर्वतों को घेरती हुई अनामिका और कनिष्ठिका अंगुली के बीच में समाप्त होती हो तो ऐसी मुद्रा शुक्र मुद्रा या शुक्र वलय कहलाती है। जिनके हाथों में यह वलय होता है उन्हें जीवन में कमजोर और परेशान ही देखा है। जिनके हाथों में ऐसी मुद्रा होती है, वे स्नायु संबंधी रोगों से पीड़ित तथा अधिक से अधिक भौतिकवादी होते हैं। इनको जीवन में बराबर मानसिक चिन्ताएं बनी रहती हैं, और इनको जीवन में सुख या शान्ति नहीं मिल पाती।
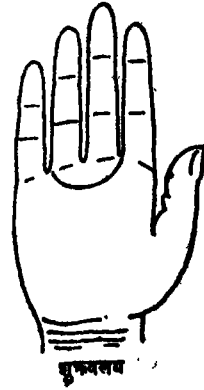
यदि यह मुद्रा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तो ऐसा व्यक्ति अपने पूर्वजों का संचित धन समाप्त कर डालता है। ऐसा व्यक्ति प्रेम में उतावली करने वाला तथा पर-स्त्री-गामी होता है। जीवन में इसको कई बार बदनामियों का सामना करना पड़ता है।

शुक्रवलय

यदि शुक्र वलय की रेखा पतली और स्पष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति समझदार एवं परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको ढालने वाला होता है। ये व्यक्ति बातचीत में माहिर होते हैं और बातचीत के माध्यम से सामने वाले व्यक्ति को प्रभावित कर लेते हैं।

यदि किसी के हाथ में एक से अधिक शुक्र वलय हों तो वह कई स्त्रियों से शारीरिक संबंध रखने वाला होता है। इसी प्रकार यदि किसी स्त्री के हाथ में ऐसा वलय हो तो वह कई पुरुषों से सम्पर्क रखती है।

यदि शुक्र मुद्रा मार्ग में टूटी हुई हो तो वह अपने जीवन में निम्न जाति की स्त्रियों से यौवन संबंध रखता है। परन्तु साथ ही साथ ऐसा व्यक्ति जीवन में अपने दुष्कर्मों के कारण पछताता भी है।

यदि शुक्र मुद्रा से कोई रेखा निकलकर विवाह रेखा को काटती हो तो उसे जीवन में वैवाहिक सुख नहीं के बराबर मिलता है। कई बार ऐसे व्यक्तियों का विवाह होता ही नहीं।

यदि शुक्र मुद्रा की रेखा आगे बढ़कर भाग्य रेखा को काटती हो तो वह व्यक्ति दुर्भाग्यशाली होता है, तथा उसे जीवन में किसी प्रकार का कोई सुख प्राप्त नहीं होता।

जिनके हाथों में चन्द्र पर्वत स्पष्ट हो और शुक्र वलय स्पष्ट गहरा तथा निर्दोष हो तो वह व्यक्ति यौवन संबंधी साहित्य का लेखक होता है।

यदि शुक्र वलय पर द्वीप के चिह्न हों तो वह व्यक्ति प्रेमिका के षड्यन्त्र के फलस्वरूप मारा जाता है।

यदि लम्बा अंगूठा हो तथा शुक्र वलय हो तो ऐसे व्यक्ति कवि होते हैं। परन्तु वे अपने जीवन में बहुत अधिक ऊंचे नहीं उठ पाते।

शुक्र वलय रखने वाले व्यक्ति रहस्यपूर्ण होते हैं। ऐसे व्यक्ति साहित्य के प्रति प्रेम रखने वाले तथा रचनात्मक कार्य करने वाले होते हैं।

यदि सूर्य रेखा बढ़कर शुक्र वलय को काटती हो तो वह व्यक्ति लम्पट होता है। यदि शुक्र वलय का एक सिरा बुध पर्वत पर जाता हो तो वह व्यापार के माध्यम से सफलता प्राप्त करता है। यदि शुक्र वलय कई छोटी-छोटी रेखाओं से कटता हो तो ऐसा व्यक्ति कामुक होता है।

शुक्र वलय का सावधानी पूर्वक अध्ययन करना हस्तरेखा विशेषज्ञ के लिए बहुत अधिक जरूरी है।
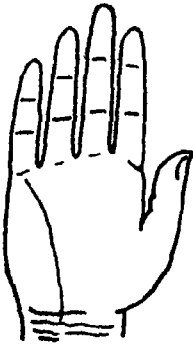
६. चन्द्र रेखा :

व्यक्ति के हाथ में इस रेखा को सबसे अधिक महत्त्व दिया जाता है। इसे अन्त: प्रेरणा रेखा भी कहते हैं। यह रेखा मणि-बन्ध या चन्द्र पर्वत से प्रारंभ होकर धनुष का आकार धारण करती हुई बुध क्षेत्र तक पहुंचती है।

जिनके हाथों में यह रेखा होती है वे व्यक्ति साधारण घराने में जन्म लेकर भी बहुत अधिक ऊंचे पद पर पहुंचते हैं। कई बार ऐसे व्यक्ति राष्ट्रपति या सेनाध्यक्ष बनते हैं। ऐसे व्यक्ति राष्ट्र से संबंधित महत्त्वपूर्ण पद को सुशोभित करते हैं।

ऐसे व्यक्तियों के लिए जल-यात्रा घातक होती है। कई बार तैरते समय इनको मृत्यु सम कष्ट उठाना पड़ता है। इनका स्वभाव सरल मधुर तथा गम्भीर होता है। इनका व्यक्तित्व अत्यन्त सम्मोहक होता है तथा शत्रुओं को भी अपने वश में करने की क्षमता इनमें होती है। ये व्यक्ति दूसरों की सहायता करने वाले होते हैं, और यदि जीवन में कोई इनके साथ भलाई का व्यवहार करता है, तो ये उसका उपकार जीवन-भर नहीं भूलते।

चन्द्र रेखा

ऐसे व्यक्ति समय पड़ने पर समाज को तथा देश को सही निर्देश देने में सक्षम होते हैं।

७. प्रभावक रेखाएं :

जिनके हाथ में प्रभावक रेखाएं होती हैं वे व्यक्ति को ऊंचा उठाने में बहुत अधिक सहायक होती हैं। ये रेखाएं कहीं से भी निकल कर शुक्र, सूर्य, गुरु, बुध या शनि पर्वतों को स्पर्श करती हैं।

जो रेखाएं बलवान होती हैं वे आगे की ओर बढ़कर बुध, सूर्य, शनि तथा गुरु पर्वत को स्पर्श कर लेती हैं। परन्तु कमजोर रेखाएं बीच में ही रह जाती हैं।

ऐसी रेखाएं यद्यपि व्यक्ति को आगे बढ़ाने में सहायक होती हैं। परन्तु यदि ये रेखाएं भाग्य रेखा को काटें तो वह व्यक्ति भाग्यहीन होता है। इसी प्रकार कोई प्रभावक रेखा स्वास्थ्य रेखा को काटती है तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य अत्यन्त कमजोर होता है। यदि कोई प्रभावक रेखा मस्तिष्क रेखा को काटे तो वह व्यक्ति अपने जीवन में अवश्य ही पागल होता है।
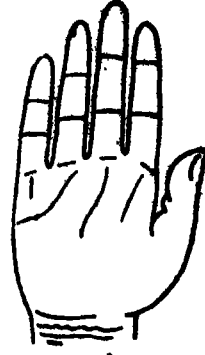
प्रभावक रेखाएं

परन्तु यदि कोई प्रभावक रेखा भाग्य रेखा से जाकर मिल जाती हो तो उस व्यक्ति का प्रबल भाग्योदय होता है। ऐसे व्यक्ति को आकस्मिक रूप से धन-लाभ होता है तथा अपने व्यक्तित्व के माध्यम से भी वे जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं।

यदि कुछ प्रभावक रेखाएं चन्द्र क्षेत्र से उठती हों तो ऐसा व्यक्ति कवि, भावुक, चित्रकार, या सौंदर्य प्रेमी होता है। ऐसे व्यक्ति का व्यक्तित्व अत्यन्त सम्मोहक होता है तथा जीवन में प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

यदि शुक्र पर्वत से कुछ प्रभावक रेखाएं उठ रही हों तो ऐसा व्यक्ति धूर्त, चालाक तथा पर-स्त्री-गामी होता है। मंगल रेखा से उठने वाली प्रभावक रेखा व्यक्ति को साहसी बना देती है।

८. विद्या रेखा :
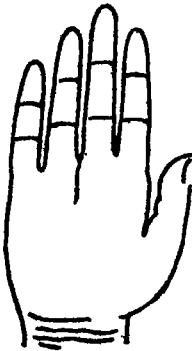
विद्या रेखा

यह रेखा मध्यमा और अनामिका के बीच में से निकलती है और रवि क्षेत्र की ओर झुकती हुई आगे बढ़ती है। जिन व्यक्तियों के हाथ में यह रेखा होती है वे व्यक्ति शिक्षा के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करते हैं।

कई बार ऐसा भी अनुभव हुआ है कि जिन व्यक्तियों के हाथों में यह रेखा पाई जाती है वे उच्च शिक्षा प्राप्त न करने पर भी अत्यन्त बुद्धिमान एवं ज्ञानवान होते हैं। सभ्य समाज में उनका आदर होता है तथा अपनी बुद्धि के बल से ये पूर्ण सफलता प्राप्त करने में सक्षम होते हैं।

९. विज्ञान रेखाएं :

जिस प्रकार बुध पर्वत के बगल में सन्तान रेखाएं होती हैं वहीं पर विज्ञान रेखाएं भी होती हैं। यदि बुध पर्वत पर पांच खड़ी रेखाएं हों तो वे विज्ञान रेखाएं कहलाती हैं। जिन व्यक्तियों के हाथों में ये रेखाएं होती है वे या तो स्वयं प्रसिद्ध वैज्ञानिक होते हैं अथवा विज्ञान से सम्बन्धित पुस्तकों के लेखन के माध्यम से वे धन, यश तथा सम्मान प्राप्त करते हैं। ऐसे व्यक्ति तुरन्त निर्णय लेने वाले चतुर तथा परिश्रमी होते हैं।
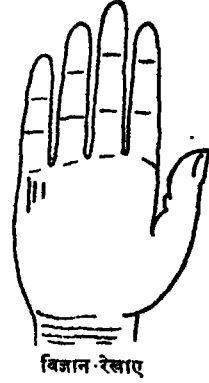
विज्ञान रेखाए

१०. यात्रा रेखाएं :

यात्रा रेखाएं वे कहलाती हैं जो व्यक्ति को यात्रा करने के लिए बाध्य कर देती हैं तथा यात्रा के माध्यम से सफलता प्राप्त करते हैं।

यदि कोई रेखा मंगल क्षेत्र से निकल कर जीवन रेखा पर मिलती हो और मध्यमा उंगली के नाखून पर सफेद अर्द्ध-चन्द्र हो तो वह व्यक्ति जीवन में कई बार यात्राएं करता है।

यदि मध्यमा उंगली के नाखून पर अर्द्धचन्द्र हो और वह लगभग तीन महीने तक रहे साथ ही इन्द्र क्षेत्र से निकल कर कोई रेखा सूर्य पर्वत पर पहुंचती है तो वह व्यक्ति निश्चय ही वायुयान से विदेश यात्रा करता है।

यात्रा रेखाएं

यदि शुक्र पर्वत से कोई रेखा धनुष के समान चन्द्र पर्वत पर पहुंचती हो तथा मध्यमा उंगली पर सफेद अर्द्धचन्द्र हो तो पानी के जहाज से वह व्यक्ति विदेश यात्रा करता है।

यदि चन्द्र क्षेत्र पर बराबर लम्बी दो रेखाएं ऊपर की ओर उठ रही हों तो वह व्यक्ति निश्चय ही यात्रा करता है।

यदि शुक्र क्षेत्र से तथा प्रजापति क्षेत्र से भी दो समानान्तर रेखाएं ऊपर की ओर बढ़ती हों तो निश्चय ही वह व्यक्ति यात्रा करता है।

११. भ्रातृ-भगिनी रेखाएं :

ये रेखाएं शुक्र पर्वत से निकलती हैं तथा मंगल क्षेत्र की ओर जाती हुई दिखाई देती हैं। ये संख्या में जितनी रेखाएं होंगी उसके उतने ही भाई बहिन होंगे। ये रेखाएं जितनी ही अधिक गहरी, स्पष्ट और निर्दोष होती हैं उस व्यक्ति के भाई बहिन उतने ही स्वास्थ्य की दृष्टि से अनुकूल होते हैं। यदि ये रेखाएं कमजोर या टूटी हुई हों तो उसके भाई बहिनों का स्वास्थ्य भी कमजोर समझा जाना चाहिए।

भ्रातृ-भगिनी रेखाएं

इन रेखाओं में जो रेखाएं गहरी और चौड़ी होती हैं वे भाई की सूचक होती हैं तथा पतली रेखाएं बहिन की संख्या बताती हैं।

इन रेखाओं में से जो रेखा मार्ग में टूटी हुई हों या छिन्न-भिन्न हो उस भाई या बहन की मृत्यु उसके जीवन काल में समझना चाहिए।

यदि किसी के हाथ में ये रेखाएं न हों तो उस व्यक्ति के कोई भाई या बहिन नहीं होता।

१२. मित्र रेखाएं :

मित्र रेखाएं

उंगली के पौरुओं पर कुछ खड़ी रेखाएं दिखाई देती हैं ये रेखाएं मित्रों की सूचक होती हैं। यदि पौरुओं पर खड़ी रेखाएं न हों तो समझना चाहिए कि यह व्यक्ति एकान्त-प्रिय है तथा इसके जीवन में मित्रों का सहयोग नहीं के बराबर है।

ये रेखाएं जितनी अधिक गहरी स्पष्ट और निर्दोष होती हैं उसके मित्र उतने ही अधिक विश्वासपात्र तथा समय पड़ने पर काम आने वाले होते हैं। इसके विपरीत यदि ये रेखाएं कमजोर हों तो ऐसे व्यक्ति के जीवन में मित्रों का सहयोग नहीं होता या मित्र उसे जीवन में धोखा देते हैं।
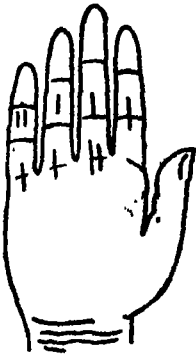
उंगलियों के पौरुओं पर आड़ी रेखाएं शत्रुओं की सूचक होती हैं। यदि ये रेखाएं गहरी और स्पष्ट हों तो उसके शत्रु भी मजबूत होंगे। इसके विपरीत यदि ये रेखाएं दुर्बल हों या टूटी हुई हों तो उस व्यक्ति के शत्रु कमजोर होंगे तथा शत्रुओं पर वह पूरी तरह से हावी हो सकेगा।

यदि तर्जनी उंगली पर खड़ी लकीरें हों तो वे नौकरी करने वाले मित्रों की सूचक होती हैं इस प्रकार तर्जनी उंगली पर आड़ी लकीरें नौकरी करने वाले शत्रुओं की संख्या बताती हैं।

मध्यमा उंगली पर खड़ी लकीरें कलाकार मित्र बताती हैं तथा आड़ी लकीरें विश्वासघात करने वाले शत्रुओं की सूचक होती हैं ।

अनामिका उंगली पर खड़ी लकीरें उच्च स्तर के मित्र बताती हैं जब कि आड़ी लकीरें उच्चपदस्थ अधिकारी शत्रु का दिग्दर्शन कराती हैं ।

कनिष्ठिका अंगुली पर खड़ी लकीरें इस बात की सूचक हैं कि उसके मित्र व्यापारी वर्ग से संबंधित होंगे जब कि आड़ी लकीरें व्यापारी वर्ग से संबंधित होकर धोखा देंगे ।

यदि खड़ी लकीरें पौरुओं को काटकर आगे बढ़ती हों तो ऐसे मित्र जीवन में धोखा देने का प्रयास करते हैं । इन रेखाओं का अध्ययन सावधानी के साथ करना चाहिए ।

१३. आकस्मिक रेखाएं :

हथेली में ये वे रेखाएं कहलाती हैं जो समय-समय पर पैदा होती हैं और अपना प्रभाव दिखाती हैं । जब उससे संबंधित कार्य समाप्त हो जाता है तब ये आकस्मिक रेखाएं भी समाप्त हो जाती हैं ये हथेली के किसी भी भाग में या किसी भी पर्वत पर उग सकती हैं या समाप्त हो सकती हैं ।

आकस्मिक रेखाएं

ये रेखाएं जिस रेखा के साथ भी आगे बढ़ती हैं उस रेखा के गुणों में वृद्धि करती हैं इसके विपरीत यदि ये रेखाएं किसी रेखा को काटती हैं तो उस रेखा के गुण में न्यूनता ले आती हैं ।

हस्तरेखा विशेषज्ञ को इन रेखाओं का अध्ययन भी सावधानी से करना चाहिए ।

१४. सुमन रेखा :

सुमन रेखा

हथेली में यह रेखा केतु पर्वत से निकल कर बुध क्षेत्र तक जाती हुई दिखाई देती है यदि यह रेखा स्वास्थ्य रेखा को स्पर्श करती है तो उस व्यक्ति को भयंकर बीमारी भोगनी पड़ती है । परन्तु यदि यह रेखा स्वास्थ्य रेखा के समानान्तर चलती हो तो उसका स्वास्थ्य अच्छा रहता है ।

यदि यह रेखा बिना किसी रेखा को काटे हुए बुध पर्वत तक पहुंच जाती है तो वह व्यक्ति देश का सम्माननीय व्यक्ति होता है तथा कूटनीतिक क्षेत्र में वह अत्यन्त उच्च पद पर पहुंचता है ।

यदि यह रेखा जंजीरदार हो तो उसे परिवार का सुख नहीं मिलता । इसी प्रकार यदि यह लहरदार हो तो वह पीलिये

के रोग से पीड़ित रहता है। यदि यह रेखा अन्त में दो भागों में बंट जाती है तोवह व्यक्ति नपुंसक होता है। यदि इस रेखा का एक सिरा शुक्र पर्वत पर पहुंचता हो तो वह व्यक्ति जरूरत से ज्यादा कामी तथा भोगी होता है।

१५. मणिबन्ध रेखाएं :

कलाई पर तीन आड़ी रेखाएं मणिबन्ध रेखाएं कहलाती हैं। कुछ लोगों के हाथों में दो मणिबन्ध रेखाएं होती हैं तो कुछ के हाथों में चार मणिबन्ध रेखाएं भी देखी गई हैं ये रेखाएं स्वास्थ्य धन, प्रतिष्ठा एवं सम्मान की सूचक होती हैं।

मणिबन्ध से यदि कोई रेखा निकलकर ऊपर की ओर जाती हो तो उसकी मनोकामनाएं उसके जीवन में ही पूरी हो जाती हैं। यदि मणिबन्ध से कोई रेखा निकलकर चन्द्र पर्वत की ओर जा रही हो तो वह जीवन में कई बार विदेश यात्राएं करता है।

मणिबन्ध रेखाएं

सामुद्रिक-शास्त्र के अनुसार यदि कलाई पर चार मणिबन्ध रेखाएं हों तो उसकी पूर्ण आयु १०० वर्ष होती है। जिसके हाथ में तीन मणिबन्ध रेखाएं होती हैं उसकी आयु ७५ वर्ष, दो रेखाएं होने पर ५० वर्ष तथा एक मणिबन्ध रेखा होने पर उसकी आयु २५ वर्ष होती है।

यदि मणिबन्ध रेखाएं टूटी हुई या छिन्न-भिन्न हों तो उस व्यक्ति के जीवन में बराबर बाधाएं आती रहती हैं। इसके विपरीत यदि ये रेखाएं निर्दोष तथा स्पष्ट हों तो उसका प्रबल भाग्योदय होता है।

यदि मणिबन्ध रेखा जंजीरदार हो तो उसके जीवन में बराबर बाधाएं आती रहती हैं। इस पर यव का चिह्न सौभाग्य सूचक है। यदि बिन्दु हो तो उसे जीवन में पेट से संबंधित रोग भोगने पड़ते हैं। यदि मणिबन्ध रेखा पर द्वीप का चिह्न हो तो उसे जीवन में दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ता है। जंजीर के समान मणिबन्ध रेखा दुर्भाग्य की सूचक कहलाती है।

यदि दो मणिबन्ध रेखाएं आपस में मिल जाती हों तो दुर्घटना से उसका अंग-भंग होता है। यदि ये रेखाएं नीली हों तो वह जीवन-भर बीमार बना रहता है। पीली मणिबन्ध रेखाएं इस बात की सूचक होती हैं कि विश्वासघात की वजह से उसे जीवन में जरूरत से ज्यादा कष्ट उठाना पड़ेगा। वास्तव में मणिबन्ध रेखाएं जितनी अधिक स्पष्ट गहरी तथा निर्दोष होती हैं उतनी ही ज्यादा श्रेष्ठ कही जाती हैं।

१६. शुक्र रेखाएं :

शुक्र रेखाएं

शुक्र पर्वत पर जो खड़ी तथा आड़ी रेखाएं होती हैं उन्हें शुक्र रेखाएं कहा जाता है। परन्तु इनके बारे में यह ध्यान रखना चाहिए कि जो रेखाएं अंगूठे से आयु रेखा की ओर जा रही हों मात्र वे ही शुक्र रेखाएं कहला सकती हैं।

यदि ये रेखाएं गहरी स्पष्ट तथा निर्दोष हों तो ऐसी रेखाएं शुभ फल देने में सहायक होंगी। इसके विपरीत यदि ये रेखाएं टूटी हुई, कमजोर तथा छिन्न-भिन्न हों तो ऐसे व्यक्ति को जीवन में कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। उसका भाग्योदय विलम्ब से होता है, तथा समाज से बदनामी का सामना करना पड़ता है।

१७. बुध वलय :

यदि कोई रेखा अनामिका और कनिष्ठिका के बीच में से निकल कर बुध पर्वत को घेरती हुई हथेली के पार पहुंचे तो इस प्रकार से जो वलय बनता है वह बुध वलय कहलाता है।

ऐसा बुध वलय बुध के गुणों को कमजोर करता है। बाल्यावस्था में उसे शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ज्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। यौवन में भौतिक सुख नहीं भोग पाता तथा आगे का पूरा जीवन दुखमय ही बना रहता है।

बुधवलय
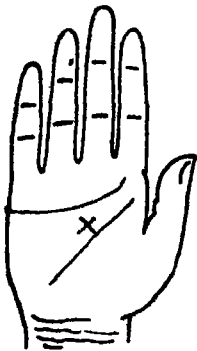
१८. रहस्य क्रॉस :

रहस्य क्रॉस

यह हृदय रेखा और मस्तिष्क रेखा के बीच में बनने वाला क्रॉस होता है। जिसको रहस्य क्रॉस कहते हैं। जिस व्यक्ति की हथेली में यह क्रॉस होता है वह वैज्ञानिक दृष्टि सम्पन्न व्यक्ति होता है।

यदि यह क्रॉस गुरु पर्वत के नीचे हो तो व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करके ही रहता है। यदि यह शनि पर्वत के नीचे हो तो वह व्यक्ति साहित्य के क्षेत्र में उच्चस्तरीय प्रसिद्धि प्राप्त करता है। यदि यह क्रॉस चन्द्र पर्वत के समीप हो तो वह व्यक्ति कवि होता है। इस क्रॉस से जो भी पर्वत प्रभावित होता है उस पर्वत के गुणों में विशेष वृद्धि होती है।
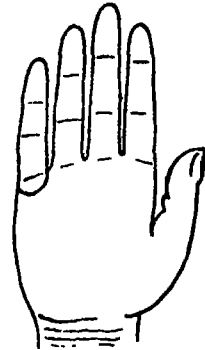
१९. दुर्घटना रेखाएं :

शनि पर्वत से जो रेखाएं निकल कर मस्तिष्क रेखा को काटती हैं वे दुर्घटना रेखाएं कहलाती हैं।

क्रॉस का चिह्न दुर्घटना की ओर संकेत करता है। यदि गुरु पर्वत पर क्रॉस का चिह्न हो तो वह शुभ फल देने वाला तथा भाग्यवर्द्धक होता है। शनि पर्वत पर क्रॉस का चिह्न दुर्घटना में मृत्यु का संकेत करता है। यदि मंगल पर्वत पर क्रॉस हो तो वह व्यक्ति युद्ध में मारा जाता है। यदि सूर्य पर्वत पर क्रॉस का चिह्न हो तो उसकी मृत्यु विश्वासघात से होगी। बुध पर्वत पर क्रॉस का चिह्न इस बात का सूचक है कि उसकी मृत्यु किसी तेज गति वाले वाहन से दुर्घटना के फल-स्वरूप होगी।
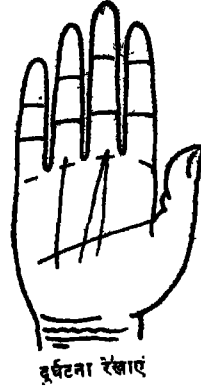
दुर्घटना रेखाएं

चन्द्र पर्वत पर क्रॉस का चिह्न जल में डूबने से मृत्यु का संकेत करता है। यदि मस्तिष्क रेखा पर क्रॉस हो तो वह व्यक्ति पागल होता है। हृदय रेखा पर क्रॉस विधुर जीवन का संकेत करता है।

२०. त्रिकोण :
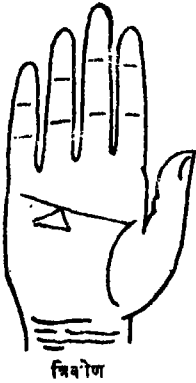
त्रिकोण

हथेली में मस्तिष्क रेखा जीवन रेखा, और बुध रेखा से मिलकर जो त्रिकोण बनता है वह त्रिकोण अतुलनीय धन-प्राप्ति का संकेत है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में आकस्मिक रूप से श्रेष्ठ धन लाभ होता है।

२१. आयत :

यदि हथेली में मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा मिलकर एक आयत की रचना करते हों तो ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान और सहृदय होता है। साथ ही उसे समाज से विशेष यश तथा सम्मान मिलता है। ऊपर मैंने छोटी-छोटी रेखाओं का संक्षेप में परिचय दिया है। वस्तुतः हथेली में पाई जाने वाली प्रत्येक छोटी रेखा का अपने आप में महत्त्व होता है। अतः हस्तरेखा विशेषज्ञ को चाहिए कि वह किसी भी रेखा को बेकार न समझे अपितु उसका सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन करे। ऐसा करने पर वह अपने उद्देश्यों में पूर्णतः सफलता प्राप्त कर सकेगा।
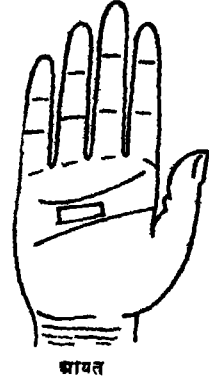
हस्त-चिह्न

पिछले अध्यायों में हमने हाथ की रेखाओं के बारे में विवेचन किया है। परन्तु इन रेखाओं के अलावा भी कई ऐसे चिह्न होते हैं जिनका अध्ययन भी मानव के लिये अत्यन्त आवश्यक होता है। हथेली में पाये जाने वाले ऐसे चिह्न प्रमुख रूप से आठ होते हैं।

१. त्रिभुज
२. क्रॉस
३. बिन्दु
४. वृत्त
५. द्वीप
६. वर्ग
७. जाल
८. नक्षत्र

अब मैं इनमें से प्रत्येक का संक्षेप में विवेचन कर रहा हूं।

१. त्रिभुज :
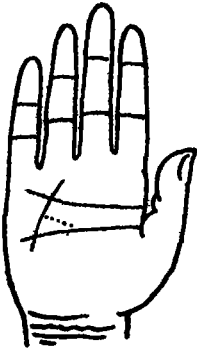
त्रिभुज

हथेली में अगर कहीं पर भी तीन तरफ से आकर रेखाएं परस्पर मिलती हों तो त्रिभुज का आकार बनता है। यह त्रिभुज छोटा या बड़ा हो सकता है। हथेली में ये त्रिभुज अलग-अलग स्थानों पर देखे जा सकते हैं।

१. जो त्रिभुज स्पष्ट, निर्दोष तथा गहरी रेखाओं से बनता है वह शुभ फलदायी कहा जाता है।

२. हथेली में जितना बड़ा त्रिभुज होगा उतना ही ज्यादा लाभदायक एवं सौभाग्यशाली कहा जायगा।

३. हथेली के मध्य में जो त्रिभुज पाया जाता है उससे यह ज्ञात होता है कि वह व्यक्ति भाग्यवान, ईश्वर में विश्वास रखने वाला तथा उन्नतिशील है। उसकी शारीरिक एवं मानसिक वृत्तियां शुद्ध होती हैं। ऐसा व्यक्ति शान्त एवं मधुर स्वभाव का होता है। समाज में उसका सम्मान होता है।

४. बड़ा त्रिभुज व्यक्ति के विशाल हृदय का परिचायक है।

५. संकीर्ण अस्पष्ट त्रिभुज व्यक्ति की संकीर्ण मनोवृत्ति को स्पष्ट करता है।

६. यदि किसी व्यक्ति की हथेली में बड़े त्रिभुज में एक और छोटा त्रिभुज बन जाय तो वह व्यक्ति निश्चय ही उच्च पद प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करता है।

७. यदि शुक्र पर्वत पर त्रिभुज हो तो वह व्यक्ति सरल, और मधुर स्वभाव वाला रसिक मिजाज, शान-शौकत से रहने वाला तथा ऊंचे स्तर का व्यक्ति होता है।

८. यदि हथेली में टूटा हुआ लहरदार या दूषित त्रिभुज हो तो वह व्यक्ति कामी एवं पर-स्त्री-गामी होता है। यदि स्त्री के हाथ में ऐसा त्रिभुज हो तो वह निश्चय ही कुलटा होती है।

९. यदि मंगल पर्वत पर त्रिभुज हो तो व्यक्ति रणकुशल तथा युद्ध में धैर्य दिखाने वाला होता है। वीरता में वह राष्ट्रीय पुरस्कारों से सुशोभित होता है। परन्तु यदि इस पर्वत पर दूषित त्रिकोण हो तो वह व्यक्ति निर्दयी तथा कायर होता है।

१०. यदि राहू क्षेत्र पर बिना दोष के त्रिभुज हो तो ऐसा व्यक्ति अपने यौवनकाल में अत्यन्त ऊंचे पद पर पहुंचता है। साथ ही वह व्यक्ति राजनीति के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है। यदि राहू क्षेत्र पर दो संयुक्त त्रिभुज हों तो वह व्यक्ति अभाग्य-शाली माना जाता है।

११. प्लूटो पर्वत पर यदि श्रेष्ठ त्रिभुज हो तो उसका बुढ़ापा आनन्द से व्यतीत होता है। परन्तु दो संयुक्त त्रिभुज होने पर उसकी बुढ़ापे में बदनामी होती है।

१२. यदि गुरु पर्वत पर निर्दोष त्रिभुज हो तो ऐसे व्यक्ति धूर्त कूटनीतिज्ञ तथा हमेशा अपनी उन्नति की इच्छा रखने वाले होते हैं। इसके विपरीत दोषयुक्त त्रिभुज होने पर वह घमण्डी तथा स्वार्थी होता है।

१३. शनि पर्वत पर निर्दोष त्रिभुज हो तो वह व्यक्ति तंत्र मंत्र के क्षेत्र में अधिकारी माना जाता है। सदोष त्रिभुज होने पर वह ऊंचे स्तर का ठग तथा धोखा देने वाला होता है।

१४. सूर्य पर्वत पर यदि निर्दोष त्रिभुज हो तो वह व्यक्ति धार्मिक परोपकारी, तथा दूसरों का हितचिन्तन करने वाला होता है। जबकि सदोष त्रिभुज होने पर समाज में निन्दा का पात्र बनता है। उसे जीवन में सफलता नहीं मिल पाती तथा उसकी भाग्यवृद्धि में बराबर बाधाएं आती रहती हैं।

१५ यदि बुध क्षेत्र पर त्रिभुज का चिह्न हो तो वह व्यक्ति अपने जीवन में एक सफल वैज्ञानिक होता है साथ ही व्यापार की दृष्टि से भी जीवन में अत्यन्त उच्च कोटि की सफलता प्राप्त करता है। ऐसे लोग विदेशों में अपना व्यापार फैलाकर

लाभ उठाते हैं। यदि दोष युक्त त्रिभुज हो तो वह संचित पूंजी समाप्त करता है, तथा व्यापार में दिवालिया होकर समाज में बदनामी उठाता है।

१६. यदि आयु रेखा पर त्रिभुज का चिह्न दिखाई दे तो व्यक्ति दीर्घायु होता है।

१७. मस्तिस्क रेखा पर त्रिभुज का चिह्न रखने वाला तेज बुद्धि तथा श्रेष्ठ शिक्षा प्राप्त करने वाला होता है।

१८. यदि हृदय रेखा पर त्रिभुज का चिह्न हो तो उस व्यक्ति का बुढ़ापे में भाग्योदय होता है।

१६. यदि त्रिभुज का चिह्न स्वास्थ्य रेखा पर हो तो व्यक्ति का स्वास्थ्य अत्यन्त श्रेष्ठ होता है।

२०. यदि सूर्य रेखा पर त्रिभुज का चिह्न दिखाई दे तो वह व्यक्ति किसी भी एक क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सफलता प्राप्त करता है।

२१. जिस व्यक्ति के भाग्य रेखा पर त्रिभुज का चिह्न हो तो वह भाग्यहीन होता है तथा जीवन में वह असफल ही होता देखा गया है।

२२. अगर विवाह रेखा पर त्रिभुज का चिह्न हो तो उसके विवाह में कई प्रकार की बाधाएं आती हैं तथा उसका गृहस्थ जीवन प्रायः असफल सा रहता है।

२३. यदि चन्द्र रेखा पर त्रिभुज का चिह्न हो तो वह अपने जीवन में कई बार विदेश यात्राएं करता है तथा सफलता प्राप्त करता है।

२४. यदि जीवन तथा मस्तिष्क रेखा से त्रिकोण बनता है तो ऐसा त्रिकोण शुभ होता है।

२५. यदि स्वास्थ्य तथा मस्तिष्क रेखा से मिलकर त्रिभुज का चिह्न बनता हो तो वह प्रखर बुद्धि का होता है।

२६. यदि स्वास्थ्य तथा जीवन रेखा से मिलकर त्रिभुज का चिह्न बनता हो तो वह व्यक्ति को बहुत अधिक ऊंचा उठाने में सहायक होता है।

२७. यदि हथेली में उभरा हुआ त्रिकोण हो तो वह व्यक्ति लड़ाकू स्वभाव का होता है।

२८. यदि त्रिकोण की रेखाएं उभरी हुई पुष्ट तथा चौड़ी हों तो वह व्यक्ति दूसरों की भलाई करने वाला होता है।

२६. यदि त्रिकोण की रेखाएं बहुत चौड़ी हों तथा मंगल पर्वत पुष्ट हो तो वह व्यक्ति बिना हिचकिचाहट के आगे बढ़ने वाला होता है।

३०. यदि दोनों हाथों में चपटा त्रिभुज हो तो उस व्यक्ति का जीवन एक प्रकार से महत्त्वहीन होता है।

३१. यदि रेखाएं गहरी और पतली हों तो वह व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

३२. यदि त्रिकोण की रेखाएं फीकी तथा कटी हुई हों तो वह व्यक्ति जरूरत से ज्यादा भौतिक तथा स्वार्थी होता है।

३३. यदि त्रिकोण से कुछ सहायक रेखाएं ऊपर की ओर बढ़ रही हों तो उस व्यक्ति को काफी बाधाओं के बाद सफलता प्राप्त होती है।

३४. यदि त्रिकोण के अन्दर का भाग चौड़ा हो तो वह व्यक्ति आलसी होता है।

३५. यदि स्वास्थ्य रेखा उन्नत हो तथा त्रिकोण भी बड़ा हो तो वह व्यक्ति दीर्घायु होता है।

३६. यदि त्रिकोण के ऊपर क्रॉस का चिह्न हो तो उस व्यक्ति के जीवन में कई प्रकार की दुर्घटनाएं घटित होती हैं।

३७. यदि त्रिकोण के नीचे के भाग में क्रॉस का चिह्न हो तो वह व्यक्ति अपने जीवन में महत्त्वपूर्ण होता है।

३८. यदि लम्बी उंगलियां हों तथा त्रिकोण के अन्दर क्रॉस हो तो व्यक्ति दूसरों को दुखी करता है।

३९. यदि त्रिकोण के मध्य में क्रॉस हो तथा स्वास्थ्य रेखा के पास तारा हो तो वह व्यक्ति अन्धा होता है।

४०. त्रिकोण के अन्दर तारे का चिह्न हो तो वह प्रेम में बदनाम होता है।

४१. यदि त्रिकोण में वृत्त का चिह्न हो तो वह प्रेमिका से धोखा खाता है।

४२. अच्छा पुष्ट और बड़ा त्रिकोण व्यक्ति को सभी दृष्टियों से ऊंचा उठाने वाला माना गया है।

२. क्रॉस :

गणित में धन का चिह्न या एक आड़ी रेखा पर दूसरी खड़ी रेखा का जो चिह्न होता है, उसे क्रॉस का चिह्न कहते हैं। यह चिह्न केवल वृहस्पति पर्वत पर ही शुभ फल देने वाला है। इसके अलावा हथेली में कहीं पर भी यह चिह्न अनुकूल फल नहीं देता है।

क्रॉस

१. यदि गुरु क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न हो तो वह व्यक्ति सुखमय जीवन व्यतीत करने वाला तथा सोच-समझ कर कार्य करने वाला होता है। उसकी पत्नी शिक्षित होती है। ससुराल से विशेष धन प्राप्त होता है। तथा उसका गृहस्थ जीवन पूर्णतः सुखमय रहता है।

२. यदि शनि पर्वत पर क्रॉस का चिह्न हो तो लड़ाई झगड़े में कई बार शरीर पर चोट के निशान लगते हैं। ऐसे व्यक्ति की अकाल मृत्यु होती है।

३. यदि सूर्य क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न हो तो समाज में उसे बहुत अधिक बदनामी का सामना करना पड़ता है। व्यापार में बाधाएं उठाता है तथा इसका भाग्य जीवन-भर इसका सहायक नहीं होता।

४. बुध पर्वत पर यदि क्रॉस का चिह्न दिखाई दे तो वह व्यक्ति धोखेबाज धूर्त तथा ठग होता है। ऐसा व्यक्ति कभी भी विश्वास पात्र नहीं माना जा सकता।

५. यदि चन्द्र क्षेत्र पर क्रास का चिह्न हो तो जल में डूबने से उसकी मृत्यु होती है, या जीवन-भर मस्तिष्क सम्बन्धी रोग बने रहते हैं।

६. यदि प्रजापति क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न हो तो वह व्यक्ति आलसी, कायर तथा डरपोक होता है। शत्रुओं से वह हरदम भयभीत रहता है।

७. केतु पर्वत पर क्रास का चिन्ह इस बात का सूचक है कि वह व्यक्ति दुख-मय बड़ा हुआ है तथा उसकी शिक्षा भली प्रकार से नहीं हो सकी है।

८. यदि शुक्र क्षेत्र पर क्रास का चिन्ह हो तो वह प्रेम के मामले में असफल होता है तथा उसकी बदनामी होती रहती है। ऐसे व्यक्ति जीवन-भर निन्दनीय कार्यों में संलग्न रहते हैं।

९. यदि मंगल पर्वत पर क्रॉस का चिह्न हो तो निश्चय ही उस व्यक्ति को जेल की यात्रा सहन करनी पड़ती है। ऐसा व्यक्ति लड़ाई झगड़े में विश्वास करता है तथा उसकी मृत्यु आत्महत्या से ही होती है।

१०. यदि राहू पर्वत पर क्रॉस का चिह्न दिखाई दे तो उसका यौवनकाल दुःखमय व्यतीत होता है तथा चेचक के रोग से वह व्यक्ति पीड़ित रहता है।

११. यदि गुरु पर्वत के अलावा और कहीं पर भी क्रॉस का चिह्न हो तो उस पर्वत का विपरीत फल मिलने लग जाता है।

१२. यात्रा रेखा पर यदि क्रॉस का चिह्न हो तो यात्रा में उसकी आकस्मिक मृत्यु होती है।

१३. यदि विवाह रेखा पर क्रॉस का चिह्न दिखाई दे तो उस व्यक्ति का विवाह जीवन में नहीं होता, और यदि होता भी है तो उसका गृहस्थ जीवन अत्यन्त दुख में होता है।

१४. सन्तान रेखा पर क्रॉस का चिह्न सन्तान के अभाव का सूचक होता है।

१५. स्वास्थ्य रेखा पर क्रॉस का चिह्न व्यक्ति के स्वास्थ्य के पतन का उत्तर-दायी है।

१६. यदि भाग्य रेखा पर क्रॉस हो तो जीवन में वह अत्यन्त साधारण जीवन व्यतीत करने को बाध्य होता है।

१७. यदि सूर्य रेखा पर क्रॉस हो तो उसकी उन्नति में बराबर बाधाएं बनी रहती हैं।

१८. यदि हृदय रेखा पर क्रॉस हो तो वह हार्ट अटैक का मरीज होता है तथा बराबर कमजोर बना रहता है।

१९. यदि मस्तिष्क रेखा पर क्रॉस का चिह्न हो तो वह जीवन-भर दिमाग सम्बन्धी बीमारियों से परेशान रहता है, तथा अन्त में पागल हो जाता है।

२०. यदि जीवन रेखा पर क्रॉस का चिह्न हो तो आयु के उस भाग में वह मरण-तुल्य कष्ट उठाता है।

२१. हाथ में छोटा या बड़ा, चौड़ा या पतला, किसी भी प्रकार का क्रास हानिकर ही माना गया है।

३. बिन्दु :

बिन्दु

हथेली में बिन्दुओं का प्रभाव भी महत्त्वपूर्ण देखा गया है। सफेद बिन्दु हमेशा उन्नतिकारक माने जाते हैं। हथेली में लाल रंग के बिन्दु व्यक्ति की बीमारियों के सूचक होते हैं। पीले रंग के बिन्दु शरीर में रक्त न्यूनता को बताते हैं। यदि हथेली में काले रंग के बिन्दु हों तो लक्ष्मीदायक माने गये हैं।

यहां काले रंग के बिन्दुओं से तात्पर्य हथेली में पाये जाने वाले तिलों या तिल से है। आगे की पंक्तियों में इन काले बिन्दुओं या तिलों के बारे में विचार स्पष्ट कर रहा हूँ :

१. यदि तिल हथेली में हो तथा मुट्ठी बन्द करने पर वह मुट्ठी में रहता हो तो ऐसे व्यक्ति के पास धन की कमी नहीं रहती।

२. यदि मुट्ठी में तिल न आता हो मुट्ठी के बाहर ही रहता हो तो ऐसे व्यक्ति के पास धन आता तो अवश्य है परन्तु वह टिक नहीं पाता ऐसा समझना चाहिए।

३. यदि काला तिल गुरु पर्वत पर हो तो उसके विवाह में बराबर बाधाएं आती हैं। समाज में प्रेम के क्षेत्र में उसे बदनामी उठानी पड़ती है। ऐसा व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं कर पाता।

४. यदि शनि क्षेत्र पर काला तिल हो तो प्रेम के क्षेत्र में वह बराबर बदनाम रहता है। गृहस्थ जीवन दुःखमय होता है तथा पति या पत्नी में से कोई एक आग में जलकर समाप्त होता है।

५. यदि सूर्य पर्वत पर काला तिल हो तो उस व्यक्ति की प्रतिष्ठा में बहुत बड़ा धक्का लगता है तथा वह समाज में निन्दनीय कार्य करने को बाध्य होता है।

६. यदि बुध क्षेत्र पर काला तिल हो तो वह व्यक्ति कुटिल तथा धोखेबाज होता है। ऐसे व्यक्ति को व्यापार में हानि उठानी पड़ती है।

७. यदि चन्द्र क्षेत्र पर काला तिल हो तो व्यक्ति का विवाह विलम्ब से होता है। जीवन में उसे एक से अधिक बार जलघात से भी पीड़ित होना पड़ता है।

८. यदि प्रजापति क्षेत्र पर तिल की उपस्थिति हो तो उसके शरीर का एक अंग शस्त्र से कट जाता है।

९. केतु क्षेत्र पर काला तिल व्यक्ति के बचपन को दुखमय बनाता है।

१०. यदि शुक्र क्षेत्र पर काला तिल हो तो वह व्यक्ति कामी होता है तथा जीवन भर उसके गुप्तांगों में रोग रहता है।

११. राहू क्षेत्र पर यदि काला तिल हो तो यौवनावस्था में उसे आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

१२. जीवन रेखा पर यदि काला तिल हो तो व्यक्ति को लम्बे समय तक टी०बी० का मरीज रहना पड़ता है।

१३. यदि मस्तिष्क रेखा पर काला तिल हो तो उसे सिर पर गम्भीर चोट लगती है तथा मस्तिष्क से सम्बन्धित रोग बराबर बने रहते हैं।

१४. यदि हृदय रेखा पर काला तिल हो तो वह व्यक्ति दुर्बल हृदय वाला होता है।

१५. सूर्य रेखा पर काला तिल व्यक्ति की उन्नति में बराबर बाधाएं डालता है।

१६. यदि हथेली में भाग्य रेखा पर काला तिल हो तो उसका जीवन दुर्भाग्य-पूर्ण ही रहता है।

१७. स्वास्थ्य रेखा पर काला तिल जीवन-भर उसके स्वास्थ्य को कमजोर बनाये रखता है।

१८. विवाह रेखा पर काले तिल की उपस्थिति विवाह में बाधाएं पैदा करती है।

१९. यदि मंगल रेखा पर तिल हो तो ऐसा व्यक्ति कायर तथा कमजोर हृदय वाला होता है।

२०. चन्द्र रेखा पर तिल मानव की उन्नति में बाधाएं देता है।

२१. यदि यात्रा रेखा पर तिल हो तो यात्रा में ही उस व्यक्ति की मृत्यु होती है।

२२. अनामिका उंगली पर तिल का चिह्न व्यापार में असफलता देता है।

२३. यदि कनिष्ठिका उंगली पर काला तिल हो तो वह व्यक्ति व्यापार में हानि उठाता है तथा व्यापार का विस्तार नहीं कर पाता।

२४. मध्यमा उंगली पर यदि तिल हो तो उसके भाग्य में बराबर बाधाएं बनी रहती हैं तथा भाग्य उन्नति के लिए उसे बराबर भटकना पड़ता है।

२५. यदि तर्जनी उंगली पर तिल का चिह्न हो तो नौकरी में पद त्याग करना पड़ता है। एवं बदनामी का सामना करना पड़ता है।

४. वृत्त :

हथेली में जो छोटे-छोटे गोल घेरे पाये जातेहैं उसे वृत्त या सूर्य या कन्दुक कहते हैं।

१. यदि हथेली में गुरु पर्वत पर वृत्त का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति प्रभावशाली होता है तथा निश्चय ही अपने प्रयत्नों से उच्च पद प्राप्त करने में सफल रहता है। ऐसे व्यक्ति को ससुराल से भी विशेष धन प्राप्ति होती है।

२. यदि शनि पर्वत पर वृत्त का चिह्न हो तो उस व्यक्ति को अनायास धन लाभ होता है तथा लॉटरी, जुए या सट्टे से विशेष धन प्राप्त करता है।

वृत

३. यदि सूर्य पर्वत पर वृत्त हो तो वह व्यक्ति उच्च एवं सात्विक विचारों वाला होता है तथा विश्व में वह प्रसिद्ध होता है।

४. बुध पर्वत पर वृत्त का चिह्न व्यक्ति को व्यापार में भारी सफलता देता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन विलासितापूर्ण होता है।

५. प्रजापति क्षेत्र पर वृत्त का चिन्ह मानव को कमजोर तथा आलसी बना देता है।

६. यदि चन्द्र पर्वत पर वृत्त का चिन्ह हो तो उसका स्वास्थ्य कमजोर रहता है तथा जल में डूबने से उसकी मृत्यु होती है।

७. यदि शुक्र पर्वत पर वृत्त का चिन्ह हो तो वह व्यक्ति भोगी तथा कामी होता है। कई बार ऐसे व्यक्ति नपुंसक भी होते देखे गये हैं।

८. मंगल क्षेत्र पर वृत्त की उपस्थिति व्यक्ति को कायर दिल वाला बना देती है।

९. यदि जीवन रेखा पर वृत्त का चिन्ह हो तो उसकी आंखें कमजोर होती हैं।

१०. मस्तिष्क रेखा पर वृत्त मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों को जन्म देता है।

११. हृदय रेखा पर वृत्त का चिन्ह होने से व्यक्ति हृदय रोग से पीड़ित रहता है।
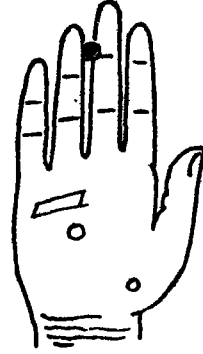
१२. सूर्य रेखा पर यदि वृत्त का चिन्ह हो तो वह अपने जीवन में असाधारण सफलता प्राप्त करता है तथा भौतिक दृष्टि से वह पूर्ण सुखी एवं सम्पन्न होता है।

१३. भाग्यरेखा पर वृत्त का चिन्ह व्यक्ति को भाग्यहीन बनाता है तथा जीवन-भर उसे परेशानियां भोगनी पड़ती हैं।

१४. यदि यात्रा रेखा पर वृत्त का चिन्ह हो तो यात्रा में वह मरण-तुल्य कष्ट उठाता है।

५. द्वीप :

हथेली में यह चिन्ह कहीं पर भी दिखाई दे सकता है। जिस स्थान पर भी यह चिन्ह होता है उस स्थान के प्रभाव को यह कमजोर करने में ही सहायक होता है।

द्वीप

१. गुरु पर्वत पर यदि द्वीप का चिन्ह हो तो उस व्यक्ति के आत्म-विश्वास में कमी आती है तथा उसे अपने आप पर ही भरोसा नहीं रहता।

२. शनि पर्वत पर द्वीप का चिन्ह व्यक्ति को पग-पग पर परेशानियां देने में सहायक होता है।

३. यदि रवि पर्वत पर द्वीप का चिन्ह हो तो वह व्यक्ति हमेशा निराशावादी भावना लिये हुए जीवित रहता है तथा उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है।

४. बुध पर्वत पर द्वीप का चिन्ह व्यापार या विज्ञान से सम्बन्धित कार्यों में हानि पहुंचाता है। ऐसे व्यक्ति को समाज में निन्दा का पात्र बनना पड़ता है।

५. यदि हथेली में चन्द्र पर्वत पर द्वीप हो तो उसका स्वभाव क्रूर तथा निर्दयी होता है।

६. शुक्र पर्वत पर द्वीप का चिन्ह पारिवारिक जीवन में घातक माना गया है। जीवन में चारों ओर से उसे निराशा का सामना करना पड़ता है।

७. जीवन रेखा पर यदि द्वीप हो तो व्यक्ति सैक्स की दृष्टि से कमजोर होता है।

८. मस्तिष्क रेखा पर द्वीप दिमाग से सम्बन्धित रोगों से पीड़ित रखता है।

९. हृदय रेखा पर यदि द्वीप का चिन्ह हो तो उसके जीवन में बराबर हृदय रोग बना रहता है।

१०. यदि सूर्य रेखा पर द्वीप हो तो उसे जीवन में कई बार बदनामियों का सामना करना पड़ता है।

११. भाग्य रेखा पर द्वीप का चिन्ह भाग्यहीनता की ओर संकेत करता है तथा उसे जीवन में जरूरत से ज्यादा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

१२. यदि यात्रा रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो तो उस व्यक्ति की मृत्यु यात्रा में ही होती है।

१३. चन्द्र पर्वत पर द्वीप का चिन्ह व्यक्ति के दिमाग को कुन्द बना देता है।

१४. विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो तो शीघ्र ही प्रिय की मृत्यु का आघात सहन करना पड़ता है।

१५. स्वास्थ्य रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो तो उसे जीवन में कई प्रकार की बीमारियों का सामना करना पड़ता है।

६. वर्ग :

चार भुजाओं से घिरे हुए स्थान या क्षेत्र को वर्ग कहते हैं। कुछ लोग इसको समकोण के नाम से भी पुकारते हैं।

१. यदि गुरु पर्वत पर वर्ग का चिन्ह हो तो वह व्यक्ति जीवन में सफल प्रशासक होता है। उसका सम्मान तथा कीर्ति पूरे संसार में फैलती है। एक साधारण घराने में जन्म लेकर के भी अत्यन्त उच्च पद पर पहुंचता है।

२. यदि शनि पर्वत पर वर्ग का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति बार-बार मृत्यु के मुंह से आश्चर्यजनक रूप से बच जाता है।

वर्ग

३. यदि सूर्य क्षेत्र पर वर्ग का चिन्ह हो तो वह धन, मान, यश, पद, प्रतिष्ठा की दृष्टि से अत्यन्त उच्च स्तरीय जीवन व्यतीत करता है, और उसके कार्यों की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैलती है।

४. यदि बुध पर्वत पर वर्ग हो तो वह जेल जाने से बच जाता है।

५. चन्द्र पर्वत पर वर्ग का चिन्ह उसकी कल्पना शक्ति को बढ़ाने में सहायक होता है। ऐसा व्यक्ति गम्भीर दयालु तथा विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य से कार्य करने वाला होता है।

६. यदि केतु पर्वत पर वर्ग हो तो ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय शीघ्र ही होता है तथा उसका यौवनकाल अत्यन्त सुखमय व्यतीत होता है।

७. यदि शुक्र पर्वत पर वर्ग हो तो वह प्रेम के क्षेत्र में सावधानी बरतता है और जीवन में उसे बदनामी का सामना नहीं करना पड़ता।

८. यदि मंगल पर्वत पर वर्ग का चिन्ह हो तो वह अपने क्रोध को सीमित रखने में सफल होता है तथा उसे जीवन में बहुत ही कम क्रोध आता है।
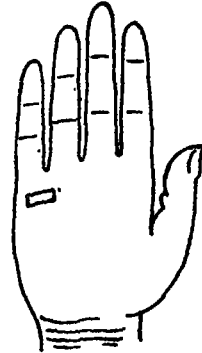
९. यात्रा रेखा पर वर्ग की उपस्थिति इस बात की सूचक होती है कि वह जीवन में कई बार यात्राएं करेगा तथा यात्राओं से विशेष धन लाभ लेगा।

१०. चन्द्र रेखा पर वर्ग की उपस्थिति मानव की सभी प्रकार की उन्नति में सहायक होती है।

११. यदि विवाह रेखा पर वर्ग का चिन्ह हो तो उसकी पत्नी पढ़ी-लिखी, सुन्दर, सुशील तथा शिक्षित होती है। तथा उसे ससुराल से विशेष धन लाभ होता है।

१२. यदि स्वास्थ्य रेखा पर वर्ग हो तो उसका व्यक्तित्व आकर्षक और जीवन भर स्वास्थ्य अनुकूल बना रहता है।

१३. यदि भाग्य रेखा पर वर्ग का चिन्ह हो तो ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय छोटी अवस्था में ही हो जाता है।

१४. सूर्य पर्वत पर अथवा सूर्य रेखा पर वर्ग का चिन्ह हो तो उसके जीवन में यश, मान, पद, प्रतिष्ठा आदि की कोई कमी नहीं रहती।

१५. यदि हृदय रेखा पर वर्ग का चिन्ह हो तो उसका गृहस्थ जीवन सुखमय होता है तथा वह हृदय से परोपकारी एवं दयालु होता है।

१६. मस्तिष्क रेखा पर वर्ग का चिन्ह इस बात का सूचक है कि ऐसे व्यक्ति का दिमाग सन्तुलित तथा निरन्तर क्रियाशील है।

१७. यदि जीवन रेखा पर वर्ग का चिन्ह हो तो वह व्यक्ति दीर्घायु होता है।

१८. यदि राहू पर्वत पर वर्ग का चिन्ह हो तो उसका काफी समय साधु के रूप में जंगलों में व्यतीत होता है।

वस्तुतः वर्ग का चिन्ह हथेली में कहीं पर भी हो वह पूर्णतः शुभ माना जाता है।

७. जाल :

जाल

खड़ी रेखाओं पर आड़ी रेखाएं होने से एक प्रकार का जाल-सा बन जाता है। यह व्यक्ति की हथेलियों में सभी स्थानों पर देखने को मिल जाता है। इन स्थानों पर पड़े इन जालों का फलादेश निम्न प्रकार से है :

१. यदि गुरु क्षेत्र पर जाल चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति क्रूर, निर्दयी, स्वार्थी, तथा घमण्डी होता है।

२. यदि शनि पर्वत पर जाल का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति आलसी होता है तथा समाज में कंजूस होने की वजह से बदनामी सहन करनी पड़ती है।

३. यदि यह रेखा जाल सूर्य पर्वत पर हो तो समाज में बार-बार निन्दा का पात्र बनना पड़ता है।

४. यदि बुध पर्वत पर जाल हो तो वह व्यक्ति अपने ही किये गये कार्यों पर पछताता है तथा परेशानियां उठाता है।

५. यदि प्रजापति क्षेत्र पर जाल का चिन्ह हो तो उस व्यक्ति के हाथ से अवश्य ही हत्या होती है तथा उसे कारावास का दण्ड भोगना होता है।

६. यदि चन्द्र क्षेत्र पर जाल का चिन्ह हो तो वह अस्थिर स्वभाव वाला तथा असन्तुष्ट व्यक्तित्व का स्वामी होता है।

७. यदि केतु पर्वत पर जाल हो तो वह जीवन भर बीमारियों से परेशान रहता है।

८. यदि शुक्र पर्वत पर जाल हो तो वह व्यक्ति जरूरत से ज्यादा भोगी तथा लम्पट होता है। समाज में उसका किसी प्रकार का कोई स्थान नहीं होता।

९. यदि मंगल क्षेत्र पर जाल हो तो वह जीवन भर मानसिक दृष्टि से अशान्त बना रहता है।

१०. यदि राहू पर्वत पर जाल का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति दुर्भाग्य पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिये बाध्य होता है।

११. यदि मणिबन्ध रेखा पर हो तो उसका जरूरत से ज्यादा पतन होता है।

१२. हथेली में कहीं पर भी जाल का चिन्ह अनुकूल फल देने वाला नहीं माना जाता।

८. नक्षत्र या तारा :

हथेली में कई स्थानों पर सूक्ष्मतापूर्वक देखने से नक्षत्र या तारे दिखाई देते हैं। अलग-अलग स्थनों में होने से इनके फलादेश में भी अन्तर आ जाता है।

१. यदि गुरु पर्वत पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। समाज में धन, मान, पद, प्रतिष्ठा, आदि की दृष्टि से उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती। वह निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर रहता है तथा सम्माननीय पद प्राप्त कर समाज में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

तारा

२. यदि शनि पर्वत पर नक्षत्र या तारे का चिन्ह हो तो ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय शीघ्र ही होता है। वह अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहता है तथा जीवन में पूर्ण यश तथा सम्मान प्राप्त करने में सफल होता है।

३. यदि सूर्य पर्वत पर नक्षत्र हो तो ऐसे व्यक्ति के जीवन में पूर्ण धन लाभ होता है। भौतिक दृष्टि से उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

४. शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से पूर्ण स्वस्थ रहता है।

५. यदि बुध पर्वत पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति एक सफल व्यापारी तथा उच्च कोटि की योजना बनाने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति एक सफल कवि तथा साहित्यकार भी हो सकता है।

६. यदि केतु पर्वत पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो उस व्यक्ति का बचपन अत्यन्त सुखमय बीतता है तथा जीवन में भौतिक दृष्टि से किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

७. यदि शुक्र पर्वत पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति भोगी होता है। पत्नी के अलावा अन्य स्त्रियों से भी सम्पर्क रहता है, तथा जीवन में उसकी पत्नी अत्यन्त सुन्दर तथा स्वस्थ रहती है।

८. मंगल पर्वत पर यदि नक्षत्र का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति धीरजवान तथा साहसी होता है। युद्ध में अतुलनीय साहस दिखाने से उसे देश व्यापी सम्मान मिलता है।

९. यदि राहू पर्वत पर चिन्ह हो तो हमेशा भाग्य साथ देता है तथा जीवन में पूर्ण यश तथा सम्मान प्राप्त करता है।

१०. यात्रा रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह इस बात का सूचक होता है कि उस व्यक्ति की मृत्यु घर से दूर तीर्थ स्थान पर होती है।

११. चन्द्र रेखा पर यदि तारे का चिन्ह हो तो वह पेट संबंधी रोगों से ग्रस्त रहता है तथा थोड़े बहुत रूप में वह बराबर बीमार बना रहता है।

१२. यदि मंगल रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो उस व्यक्ति की हत्या होती है।

१३. यदि विवाह रेखा पर नक्षत्र या तारे का चिन्ह हो तो उस व्यक्ति के विवाह में कई प्रकार की बाधाएं आती हैं तथा उसका गृहस्थ जीवन सुखमय नहीं कहा जा सकता।

१४. यदि स्वास्थ्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो व्यक्ति का स्वास्थ्य जीवन भर कमजोर बना रहता है। तथा उसकी मृत्यु अत्यन्त दुखदायी परिस्थितियों में होती है।

१५. यदि सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो उस व्यक्ति को व्यापार में विशेष सफलता मिलती है तथा आकस्मिक धन प्राप्त के योग जीवन मे कई बार होते हैं।

१६. यदि हृदय रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो वह हृदय से संबंधित रोगों से पीड़ित रहता है।

१७. यदि मस्तिष्क रेखा पर नक्षत्र या तारे का चिन्ह हो तो वह जीवन भर स्नायु संबंधी रोगों से ग्रस्त रहता है।

१८. यदि आयु रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो उस व्यक्ति की यौवनकाल में ही आकस्मिक मृत्यु हो जाती है।

१९. यदि अंगूठे पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो वह व्यक्ति परिश्रमी, सहनशील तथा सफल व्यक्तित्व का धनी होता है।

२०. तर्जनी उंगली पर नक्षत्र का चिन्ह सभी प्रकार से शुभ माना गया है।

२१. मध्यमा तथा अन्य उंगलियों पर नक्षत्र के चिन्ह से उससे संबंधित ग्रहों को विशेष बल मिलता है।

वस्तुत. हाथ में नक्षत्र या तारे के चिन्ह का सावधानी पूर्वक अध्ययन करना चाहिए। ये चिन्ह व्यक्तित्व के निर्माण में तथा भविष्यकथन में बहुत अधिक सहायक होते हैं।

काल-निर्धारण

पीछे के अध्यायों में मैंने हस्त रेखा से संबंधित तथ्य स्पष्ट किए हैं, साथ ही साथ सहायक रेखाओं तथा हस्त चिन्हों के बारे में भी जानकारी प्रस्तुत की है। परन्तु इसके साथ ही यह प्रश्न भी व्यक्ति के दिमाग में स्वाभाविक रूप से पैदा होता है कि जीवन में अमुक घटनाएं घटित होंगी, यह तो हस्तरेखा ज्ञान से स्पष्ट हो जाता है; परन्तु ये घटनाएं किस अवधि में घटित होंगी इसको समझना और जानना भी बहुत जरूरी है।

व्यक्ति के जीवन में ये प्रश्न निरन्तर चक्कर लगाते रहते हैं कि भाग्योदय कब होगा, किस प्रकार के कार्य से भाग्योदय होगा, भाग्योदय इसी देश में होगा या विदेश में होगा, विदेश यात्रा कब है नौकरी कब मिलेगी, व्यापारमें स्थिरता कब आ सकेगी, व्यापार में कितना लाभ होगा और कब होगा, किस वस्तु या किस कार्य से व्यापार में लाभ सम्भव है, आय वृद्धि कब होगी, नौकरी में प्रमोशन कब होगा, सन्तान सुख कैसा मिलेगा, विवाह कब होगा — आदि ऐसी सैकड़ों बातें हैं जो मानव मस्तिष्क में निरन्तर घुमड़ती रहती हैं इन सभी के लिये यह बहुत जरूरी है कि हम काल निर्धारण प्रक्रिया को समझें और उसके माध्यम से भविष्य कथन को स्पष्ट कर सकें।

पीछे के पृष्ठों में मैंने हृदय रेखा, भाग्य रेखा, स्वास्थ्य रेखा, मस्तिष्क रेखा तथा जीवन रेखा आदि के बारे में जानकारी दी है। इनमें जीवन रेखा का सर्वप्रथम अध्ययन जरूरी है।

जैसा कि मैं पीछे बता चुका हूं कि अंगूठे और तर्जनी के बीच में से जीवन रेखा प्रारंभ होकर शुक्र पर्वत को घेरती हुई मणिबन्ध तक पहुंचती है। यह जीवन रेखा कहलाती है।

पहले अभ्यास के लिये किसी धागे के माध्यम से जहाँ से यह जीवन रेखा प्रारंभ होती है वहां से लगाकर जीवन रेखा के अन्तिम स्थल अर्थात् मणिबन्ध की पहली रेखा तक नापिये और इस पूरे धागे को १०० वर्ष का समझकर इसके बराबर १० हिस्से कर लीजिये। इस प्रकार एक हिस्सा १० वर्षों का प्रतिनिधित्व करेगा। इन १० वर्षों में भी जो दूरी है उसको यदि १० भागों में बाटें तो प्रत्येक भाग एक वर्ष का प्रतिनिधित्व करेगा। यद्यपि ये चिन्ह नजदीक हो सकते हैं, परन्तु यह प्रत्येक

चिन्ह एक वर्ष को सूचित करेगा। अभ्यास के बाद चिन्ह लगाने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी और हाथ देखकर ही यह अनुमान हो सकेगा कि यह जीवन रेखा कितने वर्ष का प्रतिनिधित्व करती है। यदि जीवन रेखा बीच में ही समाप्त हो जाती है, तो आयु के उस भाग में जीवन समाप्त समझना चाहिए। इससे यह भली भाँति ज्ञात हो सकेगा कि व्यक्ति की आयु कितने वर्ष की है। इसी प्रकार जीवन रेखा पर जहाँ भी क्रॉस का चिन्ह या जहां भी रेखा कमजोर पड़ी है आयु के उस भाग में बहुत बड़ी बीमारी आयेगी या मरण तुल्य कष्ट भोगना पड़ेगा, ऐसा समझना चाहिए।

पूरे हाथ में घटनाओं को सूचित करने वाली जीवन रेखा ही है। अन्य जो भी रेखाएं हैं, उन पर बिन्दु लगा कर उससे एक सीधी रेखा जीवन रेखा की ओर खींचिये, जिस बिन्दु पर खींची हुई रेखा मिलेगी; आयु के उस भाग में ही वह घटना घटित होगी। उदाहरण के लिये भाग्य रेखा के मध्य में कटा हुआ हिस्सा है तो कटे हुए स्थान से यदि हम रेखा खींचें और वह रेखा जीवन रेखा के ४२वें वर्ष के बिन्दु से मिलती हो तो इससे यह सिद्ध हो जाता है कि इस व्यक्ति को ४२वें वर्ष में भाग्य-बाधा आयेगी और भाग्य से संबंधित कोई बहुत बड़ा कष्ट उठाना पड़ेगा।

इसी प्रकार आप अन्य रेखाओं पर पाये जाने वाले चिन्हों का फल ज्ञात कर सकते हैं एवं उन घटनाओं को घटित होने का समय भी स्पष्ट कर सकते हैं।

धीरे-धीरे इस संबंध में अभ्यास करना चाहिए। अभ्यास के बाद तो मात्र हथेली पर एक झलक पड़ने पर ही संबंधित घटना और उसका समय ज्ञात हो सकता है।

वस्तुतः एक सफल भविष्यवक्ता एवं हस्तरेखा विशेषज्ञ तभी माना जाता है जबकि वह घटनाओं का समय सही-सही रूप में स्पष्ट कर सके और इसके लिये मैंने ऊपर बिन्दु स्पष्ट कर दिये हैं।

हस्त-चित्र लेने की रीति

मेरे केन्द्र में हमेशा सैकड़ों पत्र आते हैं और उनका यह आग्रह रहता है कि हस्त-चित्रों के माध्यम से सही भविष्यफल स्पष्ट करके भेजा जाए। इस केन्द्र की सेवाएं देश में तथा विदेशों में सभी लोगों को सुलभ है और मेरे लिये यह प्रसन्नता का विषय है कि लोगों ने इस सेवा का भरपूर लाभ उठाया है। यद्यपि हस्तचित्रों की अपेक्षा व्यक्तिगत रूप से हाथ दिखाना और उससे भविष्य-फल ज्ञात करना ज्यादा अनुकूल होता है। क्योंकि इसके माध्यम से पर्वतों का उभार और छोटी से छोटी रेखाओं को भली प्रकार से जाना जा सकता है, परन्तु यह सभी के लिये सुलभ नहीं है। जो दूर हैं, या जो विदेशों में हैं उनके लिये हस्तचित्र ही एक ऐसा माध्यम होता है जिसके द्वारा वे अपना भविष्यफल ज्ञात कर सकते हैं।

जहां तक मेरा अनुभव है एक अच्छे कैमरे से ही हाथ का सही-सही फोटो लिया जा सकता है और इसमें भी ग्रहों के पर्वतों का उभार देखा जा सकता है। इसके साथ ही कैमरे की आंख से छोटी से छोटी रेखा भी छिपी नहीं रहती और हथेली में सभी रेखाएं पूर्ण रूप से फोटो में आ जाती हैं जिसके माध्यम से सही-सही भविष्यफल स्पष्ट किया जा सकता है। मेरी राय में जो सही भविष्यफल चाहते हैं, उन्हें अपने दोनों हाथों के फोटो कुशल फोटोग्राफर से खिंचवा कर भेजने चाहिए।

जहां फोटो की सुविधा न हो तो वे कागज पर हस्तचित्र उतार करके भी भेज सकते हैं। परन्तु इसके बारे में बहुत अधिक सावधानी बरतनी चाहिए। जैसे—

१. कागज सफेद हो तथा खुरदरा नहीं होना चाहिए। यह बात भी ध्यान रखनी चाहिए, कि कागज न तो बहुत पतला हो और न चिकना हो। स्याही सोखने वाला कागज भी नहीं लिया जाना चाहिए।

२. कागज पर चित्र उतारते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कागज की लम्बाई और चौड़ाई अपने आप में पूरी हो। हथेली का कोई भी हिस्सा या उंगली का कोई भी हिस्सा कागज के बाहर नहीं रहना चाहिए।

३. चित्र लेते समय हाथ साबुन से धुले हुए होने चाहिए तथा उंगली में किसी प्रकार की कोई अंगूठी पहनी हुई नहीं होनी चाहिए।

विधियां

नीचे की पंक्तियों में मैं तीन चार विधियों का परिचय दे रहा हूं जिनके माध्यम से हाथों का स्पष्ट चित्र ज्ञात किया जा सकता है।

१. **धुंएं के द्वारा चित्र उतारना** :—एक सफेद चिकना और थोड़ा सा कड़ा कागज लें जो कि व्यक्ति की हथेली से बड़ा हो और पूरा हाथ उस कागज पर रखते समय चारों तरफ ३-३ उंगल खाली रह सके। इसके बाद एक कटोरी में शुद्ध कपूर की टिकियाएं रखकर उस में लौ या आग या माचिस लगा देनी चाहिए और कागज को दोनों हाथों से पकड़कर कटोरी के थोड़ा ऊपर रखना चाहिए पर इसमें यह साव-धानी बरतनी बहुत जरूरी है कि कपूर की आग उस कागज को पकड़ न ले या आंच से कागज जल न जाय। हमारा उद्देश्य मात्र इतना ही है कि उससे उत्पन्न धुएं से कागज के नीचे का हिस्सा काला हो जाए। धीरे-धीरे कागज को इधर-उधर घुमाते रहना चाहिए जिससे चारों तरफ से वह काला हो जाय। साथ ही वह कागज सुरक्षित भी रहे।

यह भी ध्यान रखें कि बहुत जल्दी उस कागज को अलग न ले-लें बल्कि उस पर धुंएं की मोटी परत जमने दें। इसमें सावधानी यह बरतें कि सभी जगह धुंएं की परत बराबर जमें जिससे पूरे कागज में एक रूपता आ पायेगी।

यदि कटोरी में एक कपूर की टिकिया समाप्त हो जाए तो उसमें दूसरी टिकिया डाल दें। यह कार्य प्रारंभ करने से पूर्व ८-१० टिकियाएं अपने पास निकाल कर रख लेनी चाहिए।

जब कागज के नीचे का हिस्सा सभी जगह बराबर काला हो जाए तब उसे पलट कर किसी साफ चिकनी मेज पर रख दें। मेज पर कपड़ा बिछा हुआ नहीं होना चाहिए अर्थात् कागज के नीचे ठोस धरातल और साथ ही साथ चिकना धरातल होना आवश्यक है। कागज पर जो कालिख लगी हुई है वह ऊपर की ओर हो।

अब आप अपना हाथ फैला कर उस कागज के ऊपर जमा दें। यह ध्यान रखें कि आपकी सभी उंगलियां तथा मणिबन्ध तक का हिस्सा उस कागज पर पूरी तरह से आ जाएं। अब आप अपने हाथ को दबाव दें जिससे आपके हाथ की सभी रेखाएं उस कागज पर आ जाए।

अब आप बिना हिलाये अपने हाथ को सीधे ऊपर उठा लें। आप देखेंगे कि आपके हाथ का चित्र और हथेली की प्रत्येक छोटी से छोटी रेखा कागज पर सही रूप में उतर आई है। यदि कागज के बीच के हिस्से में नीचे छोटा सा रूमाल रख दिया जाए और रूमाल वाले भाग पर आपकी हथेली का बीच का हिस्सा टिके तो ज्यादा उचित रहेगा और कोई भी स्थान खाली नहीं रहेगा।

अब इस कागज के एक कोने पर नाम, पता, जन्म तारीख, तथा हस्तचित्र लेने की तारीख लिख कर उस पर एक सफेद कागज रख दें जिससे कि बीच की रेखाएं मिट न जाएं। अब इस कागज को सावधानी के साथ मोड़कर आप हस्त रेखा विशेषज्ञ के पास भविष्यफल प्राप्त करने के लिये भेज सकते हैं।

२. **प्रेस की स्याही से चित्र लेना** :—प्रेस में जहां पुस्तकों की छपाई होती है वहां एक बड़ा-सा रोलर लगा होता है, जिस पर स्याही लगी होती है। जब पुस्तकों की छपाई पूरी हो जाती है तो स्याही गहरी न होकर थोड़ी सी हल्की पड़ जाती है। हमें इस हल्की स्याही का ही प्रयोग करना चाहिए।

सबसे पहले एक मेज पर सफेद कागज बिछा लें जिसके बीच में कागज के नीचे की ओर छोटा सा रूमाल समेट कर रख लें। अब आप अपना दाहिना हाथ रोलर पर लगा लें और देख लें कि आपकी पूरी हथेली में स्याही लगी है अथवा नहीं। जब पूरी हथेली पर स्याही लग जाए तो उस स्याही लगे हाथ को सावधानी के साथ उस कागज पर रखकर दबा लें। इसमें भी यह सावाधानी बरतें कि अपनी हथेली का मध्य भाग उस रूमाल पर टिके जिससे कि आपके पूरे हाथ का चित्र स्पष्ट रूप से आ सके।

जब हाथ जम जाए तब आप हाथों के जोड़ों पर दूसरे हाथ से थोड़ा-थोड़ा दबाव दे दें जिससे कि कोई भी स्थान खाली न रहे। इसके बाद बिना हाथ को हिलाए ऊपर की ओर उठा लें। इस प्रकार आप देखेंगे कि आपके हाथ की रेखाएं भली प्रकार से कागज पर उतर आई हैं।

इसी प्रकार आप बायें हाथ का चित्र भी कागज पर उतार लें और कागज पर उतरी स्याही को हवा में दो मिनट सूखने दें। जब सूख जाय तब उस पर नाम, पता व जन्म की तारीख लिखकर हस्तरेखा विशेषज्ञ के पास भविष्यफल जानने के लिये भेज सकते हैं।

मेरी राय में प्रत्येक व्यक्ति को तीन-तीन हस्तरेखा चित्र भेजने चाहिए जिससे कि यदि किसी चित्र में कोई कमी रह गई हो तो दूसरे चित्र को देखकर उसके बारे में जाना जा सके।

३. **इंक पैड से हस्तचित्र उतारना** :—मुहर लगाने के लिये प्रत्येक घर में इंक पैड आसानी से प्राप्त हो सकते हैं। इक पैड के माध्यम से भी हस्तचित्र भली प्रकार से उतारा जा सकता है। इंक पैड से हस्तचित्र उतारने की विधि भी वही है जो कि ऊपर प्रेस की स्याही से हस्त चित्र उतारने की विधि मे स्पष्ट किया है।

४. **फोटो द्वारा चित्र लेना**:—यह विधि ज्यादा सही एवं प्रामाणिक मानी जा सकती है। इसके लिये कुशल फोटोग्राफर का चुनाव करना चाहिए और यह ध्यान

रखना चाहिए कि लाइट व्यवस्था इतनी तेज न हो कि छोटी और हल्की रेखाएं उस चकाचौंध में छिप जायें और न लाइट व्यवस्था इतनी हल्की हो कि सूक्ष्म रेखाएं स्पष्ट ही न हो सकें। फोटो खिचवाने से पहले फोटोग्राफर को यह बात अच्छी तरह से समझा देनी चाहिए। साथ ही पूरी हथेली तथा मणिबन्ध तक का फोटो आना चाहिए और फोटो में हाथों की उंगलियां थोड़ी-सी खुली हुई होनी चाहिए अर्थात् एक दूसरे से चिपकी हुई होना ठीक नहीं।

फोटो का कागज उत्तम कोटि का होना चाहिए तथा दोनों ही हाथों का एक चित्र या अलग-अलग लिया जा सकता है। मेरी राय में पोस्टकार्ड साइज से छोटा चित्र उपयुक्त नहीं माना जा सकता।

ऊपर लिखी चारों पद्धतियों में से कोई भी पद्धति अपना कर व्यक्ति अपने हाथ की रेखाओं का चित्र भविष्यवक्ता के पास भेज कर अपना भविष्यफल सही-सही रूप में ज्ञात कर सकता है।

पंचांगुली देवी

पीछे के अध्यायों में मैंने हाथ की रेखाओं तथा पर्वतों के बारे में विस्तार से स्पष्ट किया है। परन्तु पंचांगुली देवी के बारे में जानकारी स्पष्ट नहीं कर सका हूं। इस अध्याय में इससे सम्बन्धित संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत कर रहा हूं। जिस व्यक्ति को इसके बारे में विस्तार से अध्ययन करना हो उसे मेरी पुस्तक 'हस्तरेखा विज्ञान और पंचांगुली साधना' का अध्ययन करना चाहिए।

पंचांगुली देवी के बारे में अनेक प्राचीन ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है और उसमें यह स्पष्ट किया गया है, कि यदि कोई व्यक्ति नियम पूर्वक पंचांगुली देवी की साधना करे तो शीघ्र ही वह सफल भविष्यवक्ता बन सकता है। किसी भी व्यक्ति का हाथ देखते ही उस व्यक्ति का भूत, वर्तमान और भविष्य उसके सामने साकार हो जाता है। साथ ही वह अनेक सूक्ष्म रहस्यों से भी भली भांति परिचित हो जाता है।

यह स्पष्ट है कि पाश्चात्य हस्तरेखा विशेषज्ञ कीरो या चीरियो भी पंचांगुली देवी की साधना करते थे। कीरो भारत में लगभग ३ वर्ष तक रहा था और उसने यहां के एक योगी से पंचांगुली साधना का अध्ययन किया था और इसी साधना की वजह से वह विश्वविख्यात हो सका था। मेरा स्वयं का यह अनुभव है कि इसकी साधना से व्यक्ति को हस्तरेखाओं का पूर्ण और सहज ज्ञान हो जाता है।

पंचांगुली साधना में शुभ मुहूर्त का होना आवश्यक है।

मास :

यह साधना किसी भी महीने से प्रारंभ की जा सकती है। पर बैसाख, कार्तिक, आश्विन तथा माघ मास विशेष शुभ माने गये हैं।

तिथि :

यह साधना शुक्ल पक्ष की द्वितीया, पंचमी, सप्तमी, अष्टमी, दशमी, अथवा पूर्णमासी से प्रारम्भ की जा सकती है।

वार :

रवि, बुध, गुरु, तथा शुक्रवार इस कार्य को प्रारम्भ करने के लिये श्रेष्ठ माने गये हैं।

नक्षत्र :

कृतिका, रोहिणी, पुनर्वसु, हस्त, तीनों उत्तरा, अनुराधा, तथा श्रवण नक्षत्र विशष अनुकूल माने जाते हैं।

लग्न :

स्थिर लग्न, वृष, सिंह वृश्चिक, कुंभ।

स्थान :

तीर्थभूमि, गंगा यमुना संगम, नदी का तट, पर्वत गुफाएं तथा स्कांध देव मन्दिर इसके लिये शुभ हैं। पर यदि ये स्थान सुलभ न हों तो घर के एकान्त कमरे का उपयोग किया जा सकता है।

पंचांगुली यंत्र :

किसी भी तंत्र साधना में आवश्कता पड़ने पर यंत्र का उपयोग करना आवश्यक होता है। पंचागुली साधना सिद्ध करने के लिये प्राण प्रतिष्ठा युक्त तंत्र सिद्ध पंचांगुली यंत्र तथा पंचांगुली देवी का चित्र बहुत अधिक आवश्यक है। केन्द्र से सम्पर्क स्थापित करने पर इस प्रकार का यंत्र अथवा चित्र भेजने की व्यवस्था की जा सकती है।

पूजन सामग्री :

कुंकुम,	नारियल जटा वाले	दीपक
अबीर	चावल	दही
गुलाल	बादाम	शक्कर
मौली	अखरोट	पान
सुपारियां	काजू	भोज-पत्र
केशर	किसमिस	पीपल के पत्ते
बताशा	मिश्री	कच्चा दूध
दुग्ध प्रसाद	अगरबत्ती	घृत
कपूर	लोंग	पुष्प
इलायची	काली मिर्च	पुष्पमाला
यज्ञोपवीत	शहद	गंगा जल
फल	इत्र	कुएं का शुद्ध जल

इस साधना में कुछ बातें अत्यन्त आवश्यक हैं जो कि निम्नलिखित हैं :

१. स्त्री संसर्ग तथा स्त्री चर्चा साधना काल में त्याज्य है।

२. क्षौरकर्म न करें ।

३. संध्या गायत्री स्मरण निश्चित हो ।

४. नग्नावस्था में, बिना स्नान के, अपवित्र हाथ से, सिर पर कपड़ा रख कर भी जप करना निषिद्ध है।

५. जप के समय माला पूरी हुए बिना बातचीत नहीं करनी चाहिए।

६. छींक अप्रश्य, उपान वायु होने पर हाथ धोवें तथा कानों के जल स्पर्श करें।

७. आलस्य, जमहाई, छींक, नींद, थकना, डरना, अपवित्र वस्त्र, बातचीत क्रोध आदि जपकाल में वर्जित है।

८. पहले दिन जितना जप किया जाय रोज उतना ही जप करें। इसे घटाना बढ़ाना उचित नहीं।

९. जपकाल में शौच जाने पर पुनः स्नान कर जप में बैठें।

जपकाल में नियम :

जपकाल में निम्न नियमों का भी पालन किया जाना चाहिए :—

१. भूमि शयन
२. ब्रह्मचर्य
३. नित्य स्नान
४. मौन
५. नित्य दान
६. गुरु सेवा
७. पापकर्म परित्याग
८. नित्य पूजा
९. देवतार्चन
१०. इष्टदेव व गुरु में श्रद्धा
११. जप निष्ठा एवं
१२. पवित्रता

अब मैं आगे के पृष्ठो में पंचांगुली मंत्र तथा काल ज्ञान मंत्र के साथ-साथ संकल्प भी स्पष्ट कर रहा हूं। सबसे पहले साधक को संकल्प करना चाहिए। उसके बाद पांच बार काल ज्ञान मंत्र का उच्चारण करना चहिए और उसके बाद पंचांगुली यंत्र के सामने पंचांगुली का ध्यान करके एक सौ आठ बार पंचांगुली मंत्र का जप करना चाहिए, सबके अन्त में पंचांगुली ध्यान समाप्ति करनी चाहिए।

इस प्रकार ६० साठ दिन तक करने से निश्चय ही पंचांगुली साधना मंत्र सिद्ध होता है। या केवल एक लाख काल ज्ञान मंत्र जाने से भी भूत, भविष्य, सिद्धि हो जाती है।

पाठकों की सुविधा के लिये मैं पहले संकल्प फिर पंचांगुली ध्यान मंत्र तथा अन्त में काम शान्त मंत्र स्पष्ट कर रहा हूं।

संकल्प :

ओ३म अस्य श्री कस्यचित् सच्चिदानंद रूपस्य ब्रह्मणो निर्वाच्य मायाशक्ति विजृमिता विद्या योगात् कालकर्म स्व-भावाविर्मूत महत्तत्वो विताहं कारोद्भूत वियदादि पंच महाभूतेन्द्रिय देवता निर्मिते अंडकटाहे चतुर्दश लोकात्मके लीलया तन्मध्यवर्तिनी भगवतः श्री नारायणस्य नाभि कमलोद्भूत सकल लोक पितामहस्य ब्रह्मणः सृष्टिं कुर्वतस्तदुद्धरणाय प्रजापति प्रार्थितस्य श्री सित वाराह् वतारेण ध्रिय माणायां यस्यां धरित्र्याम् भुवर्लोक संहितायां सप्तद्वीप मंडितायां क्षीरोदार्णव्ध द्विगुणतीय वलयिकृत लक्षयोजन विस्तीर्ण जम्बूद्वीपे स्वर्गस्थिता अमराद्या-सा शितव-तारे गंगादि सरिद्भिः प्राविते: निखिल जन मुनिकृत निर्वसतिके नैमिषारण्ये कन्या कुमारिके क्षेत्रे पुष्कराण्ये श्री मन्मार्तण्डस्य कृपापात्र कालत्रित यज्ञ गर्गवाराह् गणितायां संख्याया श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्ध श्री श्वेत वाराह् नाम्नि प्रथम कल्पे, द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्त, चर्तुथ युगे, स्वायंभुवः स्वारोचितः उत्तमः तामसः रैवतः चाक्षुसेति षण्मनुना मतिक्रमोष्यात् क्रम्यमाणे संप्रति वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविशंति में वर्ष त्रिनवे त्रिग्नेयाते कलियुगे कलि प्रथम चरणे श्री मल्लवणाव्ये उत्तरे तीरे गंगा यमुनयो पश्चिमे तटे शालीवाहन बौद्धावतारे विक्रम भूपकृतः संवत्सरे संवत ····· नाम मंवत्सरे (एको न त्रशत्युत्तर द्वि सहस्र मे) वर्ष रविर्नारायण (उत्तरायने)...कृतौ महामांगल्यप्रद मासोत्तमे मासे शुम मासे .मासे...पक्षे आद्य तिथौ......वाराधिपति श्रीमद् . ... वासरे यथा नक्षत्र योगकारण लग्न एवं ग्रह विशेषण विशिष्टतायां अमुक राशिस्थिते सूर्य अमुक राशिस्थिते चद्रे अमुक राशिस्थिते देवगुरौ शेषेसु ग्रहेसु यथा-यथा राशिस्थिते सप्तसु एवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यस्थितौ .... गौत्रस्य श्री (यजमान का नाम) यजमानस्य शरीरे आयु आरोग्य ऐश्वर्यवां-छित फल प्राप्तये भार्यादि सर्व सम्पत्ये चिंतितार्थस्य आदि व्याधि जरा मृत्यु भय शोक निवृत्तये परमैश्वर्य संपत्यै निष्पत्यै अमुक कर्मण पंचांगुनीदेवी पूजन कर्मणी सामता सिद्धयर्थ ममः समस्त कुटुम्बस्य सपरिवारस्य सर्वविघ्नोपशांतये भूत भविष्यत् वर्तमान त्रिविधोत्पात् शांतये भूरिभाग्याप्तये पुनः कृतस्य करिष्यमाणः कर्मणः साम्य पुप्त महाफल वाप्तये नित्य नूतन आत्मनः क्षीरोदिपट फुलादिवास सुरभि चन्दनः कर्पूरः कस्तूरी केत्याद्य नेक शरीर भूषण समृद्धयर्थ सुवर्ण रौप्य निखिल धातु प्रवाल मौक्तिक माणिक्येन्द्र नीलवज्र वैदूर्यादि नाना रत्न बहुल प्राप्तये यवः व्रीही गोधुम तिल माष मुद्गमाद्य नेक धान्यानां संतताभि वृद्धये अश्वशाला गजशाला गौशाला सर्व चतुष्पदशाला प्रपाद्यादिशाला देवपूजास्थान, ब्राह्मण संतर्पणादि सर्वस्थानानाम् सर्व विघ्नोपशांतये ममः इह जन्मनि पंचांगुली प्रीति द्वारा सर्वापन्निवृत्ति पूर्वकः अल्पायु निवृत्ति

पूर्वक जन्म लग्नात् वर्ष लग्नात् गोचारत् चतुरस्त्र अष्ट द्वादश स्थान स्थित सूर्यादि क्रूर ग्रह तज्जनितारिष्ट निवृत्ति पूर्वक दशा अन्तर्दशा उपदशा जनितारिष्ट ज्वर दाह पीड़ा नेत्रकर्णादियो पीड़ा निवृत्ति पूर्वकं अल्पायु निवृत्ति पूर्वकश्चाधि दैविक भौतिक आध्यात्मिक जनित: क्लेश: कायिक वाचिक मानसिक त्रिविधाघौघ निवृत्ति पूर्वक शरीरारोग्यर्था धर्मार्थ काम मोक्ष चर्तुविध पुरुषार्थ सिध्यर्थ राजद्वारत: व्यापारतश्च लाभार्थं काम मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ सिध्यर्थ रजद्वारत: व्यापारतश्च लाभार्थं विजयार्थ जयार्थं क्षेमार्थं गतवस्तु प्राप्त्यर्थं स्थिर लक्ष्मी सचितार्थं पुत्र पौत्रा अविच्छिन्न धन समृद्धयर्थ वेदशास्त्रोक्त फला वाप्तये कीर्तिलाभ शत्रु पराजय सद्विष्ट सिद्धयर्थ श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं सद्विष्ट सिद्धयर्थ यथा संपादित सामग्रयां कलश स्थापन पंचांगुली पूजन महं करिष्ये ।

तदंगत्वेन निर्विघ्नतां परि समाप्त्यर्थं गणपति पंचौकार वास्तु दिव्यादि चतु: षष्टी योगिनी अजरादि पंचाणत् क्षेत्रपाल सप्त चिरंजीव सप्तवसोर्द्धारा सप्तऋषि गौर्यादि षोड्श मातृका वरुण कलश सूर्यादि नवग्रह तदंगभूत अधिदेवता प्रत्यधि देवता स्थापन पूजनांतर मित्ती पंचांगुलो आवाहनं कलशस्थापनं तस्योपरि पंचांगुली यहं पूजनं तदंगत्वैनादौ गणपति पूजनं महं करिष्ये ।

पंचांगुली ध्यान :

पंचांगुली महादेवी श्री सीमन्धर शासने ।
अधिष्ठात्री करस्यासौ शक्ति: श्री त्रिदशेशितु: ।

पचांगुली मंत्र :

ओ३म् नमो पंचागुली पंचांगुली परशरी परशरी माता मयंगल वशीकरणी लोहमय दंडमणिनी चौसठ काम विहंडनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रु मध्ये दीवानमध्ये भूतमध्ये पिशाचमध्ये झोटंगमध्ये डाकिनीमध्ये शंखिनीमध्ये यक्षिणीमध्ये दोषेणीमध्ये शाकनीमध्ये गुणीमध्ये गारुडी मध्ये विनारीमध्ये दोषमध्ये दोषशरणमध्ये दुष्टमध्ये घोर कष्ट मुझ ऊपरे बुरो जो कोई करावे जड़े जड़ावे तत चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्री माता श्री पंचांगुली देवी तणो वज्र निर्धार पड़े ओ३म ठं ठं ठं स्वाहा ।

कालज्ञान मंत्र :

ओ३म् नमो भगवते ब्रह्मानन्द पद: गोलोकादि असंख्या ब्रह्माण्ड भुवन नाथाय शशांक शंख गोक्षीर कर्पूर धवल गात्राय नीलांभोधि जलद पटलाधि-व्यक्तस्वरूपाय व्याधिकर्म निर्मूलोच्छेदन कराय, जाति जरायुमरण विनाशाय, संसारकान्तारोन्मूलनाय, अचिन्त्य बल पराक्रमाय, अतिप्रतिमाह चक्राय त्रैलोक्याधीश्वराय, ब्रह्म के

त्रैलोक्याखिलनिखिल भुवन कारकाय सर्वसत्व हिताय, निज भक्ताय अभीष्ट फल प्रदाय, भवत्याधीनाय सुरासुरेन्द्रादि मुकुटकोटि धृष्टवाद पीठाय अनन्त युग नाथाय, देवाधि-देवाय, धर्मचक्राधीश्वराय, सर्व विद्या परमेश्वराय, कुविद्याविघ्न प्रदाय, तत्पादपंकजा श्रयानि यवनी देवी सासन देवते त्रिभुवन संक्षोभनी, त्रैलोक्य शिवापहारकरिणीं श्री अद्भुत जातवेदा श्री महालक्ष्मी देवी (अमुकस्य) स्थावर जंगम कृत्रिम विषमुख संहारिणी सर्वाभिचार कर्मापहारिणीं परविद्योछेदनी परमंत्र प्रनाशिनीं अष्टमहानाग कुलोच्चाटनीं कालदष्ट्रं मृत कोत्यापिनीं (अमुकस्य) सर्वरोग प्रमोचनीं, ब्रह्मा विष्णु रुद्रेन्द्र चन्द्रादित्यादिग्रह नक्षत्रोत्पात मरण भय पीड़ा मर्दिन त्रैलोक्य विश्वलोक वशंकरि, भूविलोक हितकं महाभैरवि शस्त्रोपधारिणीं रौद्र, रौद्ररूप धारी प्रसिद्ध सिद्ध विद्याधर यक्ष राक्षस गरुड़ गन्धर्व किन्नर किं पुरुषो दैत्योरन्द्र पूजिते ज्वालापाल कराल दिगंतराले महावृषभ वाहिनीं, खेटक कृपाण त्रिशूल शक्ति चक्रपाश शरासन शिव विराजमान षोडशार्द्ध भुजे एहि एहि लं ज्वाला मालिनीं ह्रीं ह्रीं व्रं ह्री हीं ह्रं ह्रौं ह्रः देवान् आकर्षय आकर्षय नाग ग्रहान् आकर्षय आकर्षय यक्ष ग्रहान् आकर्षय आकर्षय: गंधर्व ग्रहान् आकर्षय आकर्षय ब्रह्मग्रहान् आकर्षय आकर्षय राक्षस ग्रहान् आकर्षय आकर्षय भूत ग्रहान आकर्षय आकर्षय दिव्यतर ग्रहान् आकर्षय आकर्षय चतुराशि जैन्य मार्ग ग्रहान् आकर्षय आकर्षय चतुर्विशति जिन ग्रहान् आकर्षय आकर्षय सर्व जटिल ग्रहान् आकर्षय आकर्षय अखिल मुंडित ग्रहान् आकर्षय जंगम ग्रहान् आकर्षय आकर्षय सर्व दुर्गशादि विद्यग्रहान् आकर्षय आकर्षय सर्व नग निग्रह वासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय सर्व जलाशय वासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय सर्वस्थल वासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय सर्वातिस्थि ग्रहान् आकर्षय आकर्षय सर्व श्मशान वासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय सर्व पवनी वासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय सर्व धर्म शापादि गौ शाप ग्रहान् आकर्षय आकर्षय सर्व गिरिगुहा दुर्गवासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय आपित् ग्रहान् आकर्षय आकर्षय सर्व दुष्ट ग्रहान् आकर्षय आकर्षय वक्र पिंड ग्रहान् आकर्षय आकर्षय कट कट कंपय कंपय शीर्ष चालय शीर्ष चालय गात्रं चालय गात्रं चालय बाहुं बाहुं चालय पादं चालय कर पल्लवान चालय बाहुं चालय पादं चालय पादं चालय कर पल्लवान चालय कर पल्लवान चालय सर्वांगचालय सर्वांगचालय लोलय धुन धुन कंपय कंपय शीघ्रं भव तारय तारय ग्रहि ग्रहि ग्राह्य ग्राह्य अक्षय अक्षय आवेशेय आवेशेय ज्वलूं ज्वालामालिनीं ह्रां क्ष्मीं क्ष्लूं द्रां द्रां ज्वल ज्वल र र र र र र र र प्रज्वल प्रज्वल धग धग धूमाक्ष करणीं ज्वल विशेषय विशेषय देवग्रहान् दह दह नाग ग्रहान् दह दह यक्ष ग्रहान् दह दह गंधर्व ग्रहान् दह दह ब्रह्म ग्रहान् दह दह राक्षस ग्रहान् दह दह भूत ग्रहान् दह दह दिव्यन्तर ग्रहान् दह दह चतुराशि जैन्य मार्ग ग्रहान् दह दह चतुर्विश जिन ग्रहान् दह दह सर्व जटिल ग्रहान् दह दह अखिल मुंडित ग्रहान् दह दह जंगम ग्रहान् दह दह सर्व दुर्गशादि विद्या ग्रहान् दह दह सर्व नगनिग्रह वासी

ग्रहान् दह दह सर्वस्थलवासी ग्रहान् दह दह सर्वान्तरिक्ष वासी ग्रहान् दह दह श्मशान वासी ग्रहान् दह दह सर्व गिरिगुहा दुर्गवासी ग्रहान् दह दह श्रापित ग्रहान् दह दह सर्वनाथ पंथि ग्रहान् दह दह सर्वभूवासी प्रेत ग्रहान् दह दह (अमुक गृहे) असद्गति ग्रहान् दह दह वक्रपिण्ड ग्रहान् दह दह सर्वदुष्ट ग्रहान् दह दह शतकोटि योजने दोष-दायी ग्रहान् दह दह सहस्र कोटि योजनान् दोषदायि ग्रहान् दह दह शतकोटि दोष दोष दह दह सहस्रकोटि दोष दह दह आसमुद्राथ् पृथ्वी मध्ये देवभूत पिशाचादि (अमु-कस्यो) परिकृत दोषान् तस्य दोषान् दह दह शत्रुकृतभिचार दोषान् दह दह घे घे स्फोटय स्फोटय मारय मारय धगि धगि धागत मुखे ज्वालामालिनी ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः सर्व ग्रहाणां हृदये दह दह पच पच छिंदि छिंदि भिंदिभिंदि दह दह हा हा स्फुट स्फुट घे घे।

क्ष्म्लुं क्षां क्षी क्षु क्षें क्षौं क्षः स्तंभपः स्तंभपः। भ्म्लुं भ्रां भ्रीं भ्रुं भ्रैं भ्रौं भ्रं भ्रः बाडय बाडय। भ्म्लूं भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रैं भ्रौं भ्रः नेत्रं स्फोटय स्फोटय दर्शय दर्शय। य्म्लूं यां यीं यूं यैं यौं यः प्रेषय प्रेषय। घ्म्लुं घ्रा घ्री घ्रूं घ्रैं घ्रौं घ्रंः जठेर भेदय। ग्म्लुं ग्रां ग्रीं ग्रुं ग्रें ग्रौ ग्रः मुखं बंधयः बधयः। ख्म्लुं खां खीं खूं खैं, खौं खः ग्रीवां भंजय भंजयः। छ्म्लुं छां छीं छुं छैं छौं छः अंत्रान् भेदय भेदयः। ढ्म्लुं ढां ढीं ढूं ढौं ढूः महाविद्युत्पाषापाणा स्त्रैहन स्त्रैहन। म्रु व्रा व्रीं व्रं व्रैं व्रौं व्रः समुद्रे भंजय भंजय। द्म्रुं द्रां द्री द्रु द्रौ द्रः सर्व डाकिनी सुन्दरी मर्दय मर्दय सर्व योगिनीं स्वर्ज्जंय स्वर्ज्जय। सर्वं शत्रु ग्रासय ग्रासय ख ख ख ख ख ख ख खादय खादय सर्वं दैत्यान् विध्वंसय विध्वंसय सर्व मृत्युं नाशय नाशय सर्वापद्रवान् स्तंभय स्तंभय जः जः जः जः जः जः जः ज्वरान् दह दह पच पच घुमु घुमु घुरु घुरु घुरु घुरु खरु खरु खंग रावण सुविघाथां घातय अखिल रुजान् दोषोदयान् कृत कार्यणाभिचारोत्थान (अमुकस्य) देहे स्थितान् अघुना रुज कारकान् चन्द्रहास शस्त्रेण छेदय छेदय भेदय भेदय उरु उरु छरु छरु स्फुट स्फुट घे आं क्रौं क्षीं क्षं क्षं क्षौं क्षः ज्वाला मालिनीं (अमुकस्य) सौख्यं कुरु कुरु निरुजं कुरु कुरु अभिलाषित कामना देहि देहि ज्वाला मालिनीं विज्ञापयते स्वाहा।

हस्त-परिचय

संसार में जितने भी पुरुष हैं उनके हाथों में कुछ न कुछ विशेषता पाई जाती है। परन्तु अनुभव में ऐसा आया है कि एक विशेष वर्ग के व्यक्तियों के हाथों में एक रूपता या समानता पाई जाती है। नीचे की पंक्तियों में मैं समाज के विभिन्न वर्गो से सम्बन्धित हाथ की विशेषताओं का संक्षिप्त परिचय स्पष्ट कर रहा हूं।

१. व्यवसायी :

जो व्यक्ति व्यापार या व्यवसाय करता है उसके हाथ का अंगूठा सीधा तथा पीछे की तरफ किंचित् झुका हुआ होता है इसके साथ ही हथेली में उसकी मस्तिष्क रेखा सीधी और स्पष्ट होती है एवं बुध पर्वत सामान्यत: उभरा हुआ होता है। यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि एक सफल व्यवसायी के बुध पर्वत पर किसी प्रकार का कोई जाल नहीं होता। बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका कुछ लम्बाई लिये हुए होती है।

व्यवसायी

बुध पर्वत की ओर यदि मस्तिष्क रेखा की कोई शाखा आ रही हो तो यह तुरन्त समझ लेना चाहिए कि यह व्यक्ति अपने क्षेत्र में पूर्ण सफल सम्पन्न व्यक्ति है। इसके साथ ही जिसके हाथ की उंगलियां हथेली की अपेक्षा लम्बाई लिये हुए हों तो उसके जीवन में व्यवसाय की दृष्टि से किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।
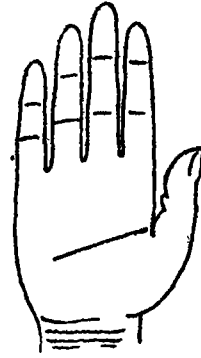
२. लखपती :

जिसके हाथ में सूर्य रेखा अपने आप में प्रबल हो, साथ ही जिसका शुक्र पर्वत विकसित हो और उस पर किसी प्रकार का कोई जाल या टूटी हुई रेखा न हो तो समझ लेना चाहिए कि यह व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से अनुकूल है परन्तु जब भाग्य रेखा सीधी स्पष्ट और लालिमा लिये हुऐ हो तथा उसकी कोई एक शाखा सूर्य पर्वत की ओर जा रही हो तथा मस्तिष्क रेखा पूर्णत: विकसित हो तो निश्चय ही वह व्यक्ति लखपति होता है तथा आर्थिक दृष्टि से पूर्ण अनुकूलता प्राप्त कर पूर्ण सुख उपभोग करता है।
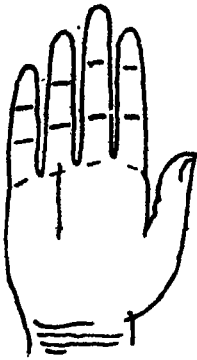
लखपति

३. **एकाउन्टेन्ट :**

एकाउन्टेन्ट या मुनीम के हाथ में यह विशेषता होती है कि उसका बुध पर्वत अपने आप में विकसित तथा ऊंचा उठा हुआ होता है। साथ ही उसका सूर्य पर्वत भी उभरा हुआ होता है एवं उस पर सूर्य रेखा पूरी तरह से देखी जा सकती है। साथ ही साथ भाग्य रेखा का भी अध्ययन किया जाना चाहिए। यदि भाग्य रेखा बिना कहीं से कटे मध्यमा के मूल में स्थित शनि पर्वत पर सफलता के साथ जा रही हो तो ऐसा व्यक्ति एक सफल एकाउन्टेन्ट होता है।
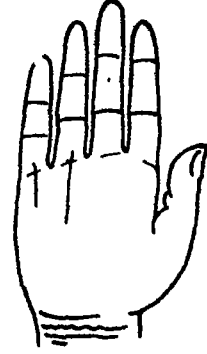
एकाउन्टेन्ट

यदि ऊपर लिखे तथ्य हों और मध्यमा उंगली एवं कनिष्ठिका उंगली सामान्यतः कुछ लम्बाई लिये हुए हो साथ ही अंगूठे मजबूत हों तो वह व्यक्ति बैंक में महत्वपूर्ण पद पर होता है। ऐसा व्यक्ति इनकमटैक्स अधिकारी भी हो सकता है।

यदि इन लक्षणों के अलावा चन्द्र रेखा पूर्णतः विकसित हो तथा भाग्य रेखा भी सहायक हो तो वह व्यक्ति चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट होता है।
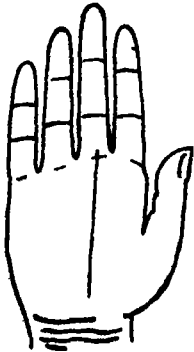
४. **न्यायाधीश :**

जिस व्यक्ति के हाथ में तर्जनी उंगली अनामिका से कुछ लम्बाई लिये हुए हो तथा कनिष्ठिका उंगली अनामिका के तीसरे पौर से ऊपर उठी हुई हो, साथ ही साथ सभी उंगलियां सुन्दर हों, गुरु पर्वत पूर्णतः विकसित हो तथा उस पर क्रॉस का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति विख्यात् वकील होता है।

ऊपर लिखे गुण होने के साथ-साथ यदि व्यक्ति की हथेली में भाग्य रेखा निर्दोष पतली तथा स्पष्ट हो, साथ सूर्य पूर्ण प्रभाव युक्त हो और अंगूठा लम्बा तथा पीछे की तरफ झुका हुआ हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही सफल न्यायाधीश होगा।

न्यायाधीश

ऊपर लिखे गुण होने के साथ-साथ यदि भाग्य रेखा से कोई शाखा गुरु पर्वत पर पहुंचती हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही मुख्य न्यायाधीश होता है।

५. शिल्पकार :

यदि हाथ की उंगलियां लम्बी हों तथा ऊपर के सिरे चौकोर हों साथ ही सूर्य रेखा पूर्णतः विकसित स्पष्ट तथा गहरी हो एवं शनि क्षेत्र पर किसी प्रकार की बाधक रेखाएं न हों और उसका अंगूठा पतला तथा कुछ लम्बाई लिये हुए हो तो निश्चय ही ऐसा व्यक्ति एक सफल मूर्तिकार अथवा शिल्पकार होता है ।

शिल्पकार
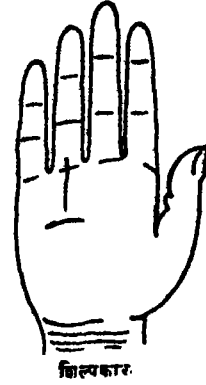
६. सैनिक :

सैनिक

जिस व्यक्ति का शरीर अपने आप में स्वस्थ, पुष्ट, प्रबल तथा पूरी लम्बाई लिये हुए हो और उसके हाथ सामान्यतः लम्बे हों तो ऐसे व्यक्ति में सैनिक के चिह्न देखने को मिलते हैं ।
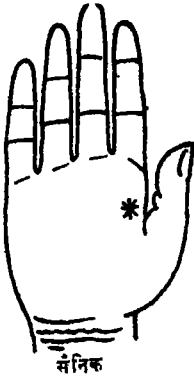
इसके साथ ही साथ उसकी हथेली में यदि मंगल क्षेत्र विस्तार लिये हुए हो तथा मंगल पर किसी उज्जवल तारे का चिह्न हो साथ ही उसकी भाग्य रेखा विकसित तथा स्पष्ट हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही एक सफल स्थल सैनिक बनता है ।

यदि ऊपर लिखे हुए गुणों के साथ-साथ दोनों मंगल हथेली मे बहुत अधिक विकसित हों एवं सूर्य पर्वत पर सूर्य रेखा स्पष्ट और निर्दोष रूप से अंकित हो तथा अंगूठा मजबूत लम्बाई लिये हुए तथा सामान्यतः पीछे की तरफ झुका हुआ हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही जनरल या ब्रिगेडियर होता है ।

ऊपर लिखे गुणों के अलावा यदि सूर्य रेखा पर सुन्दर त्रिकोण का चिह्न हो तथा सभी उंगलियां अपने आप में पूर्ण लम्बाई लिये हुए हों तो ऐसा व्यक्ति निश्चय ही स्थल सेनाध्यक्ष होता है ।

७. आई० ए० एस० :
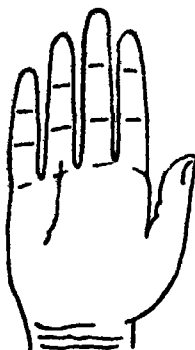
आई. ए. एस.

आई० ए० एस० व्यक्ति कलेक्टर, सेक्रेटरी या प्रशासन के महत्वपूर्ण पद पर रहते हैं और ऐसे व्यक्ति शासन में बहुत अधिक सहायक होते हैं।

जिनके हाथों में बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका लम्बाई लिये हुए हो और उसका अन्तिम सिरा अनामिका के तीसरे पौर से आगे अर्थात् आधे से अधिक हिस्से तक पहुंच चुकी हो इसके साथ ही साथ सूर्य रेखा अत्यन्त उच्च कोटि की हो तो वह व्यक्ति आई० ए० एस० अधिकारी होता है।

यदि सूर्य रेखा में कमजोरी होती है, या कटी हुई होती है, तो वह व्यक्ति मात्र आई० ए० एस० अधिकारी ही होकर रह जाता है।

यदि कनिष्ठिका लम्बी हो, सूर्य रेखा भी अपने आप में पुष्ट हो तथा मस्तिष्क रेखा पूर्ण विकसित हो और उसके साथ ही साथ भाग्य रेखा लम्बी निर्दोष तथा पूर्ण हो तो वह व्यक्ति केन्द्रीय सरकार में उच्च पदस्थ अधिकारी होता है।

भाग्य रेखा तथा गुरु पर्वत बहुत अधिक श्रेष्ठ हों तो वह व्यक्ति निश्चय ही केन्द्रीय सेवा में सेक्रेटरी या अत्यन्त उच्च पदस्थ व्यक्ति होता है, जिसके कार्यो का प्रशासन पर पूरा-पूरा प्रभाव पड़ता है।

८. नाविक :

(जल सेना) :—जो नाव पर या जहाज पर कार्य करने वाले होते हैं अथवा नेवी मे उच्चपदस्थ अधिकारी होते हैं उनको यहां नाविक के नाम से सम्बोधित कर रहा हूं। एक श्रेष्ठ तथा कुशल जलसेना नायक का हाथ पूर्ण लम्बाई लिये हुए होता है तथा उस पर चन्द्र पर्वत पूर्ण विकसित अवस्था में होता है। जिसकी हथेली में चन्द्र पर्वत विकसित हो तथा चन्द्रमा के पर्वत से रेखा निकलकर सूर्य की तरफ जा रही हो एवं भाग्य रेखा तथा मस्तिष्क रेखा अपने आप में पूर्ण विकसित हो तो वह व्यक्ति निस्संदेह जल सेनाध्यक्ष होता है।

नाविक

यदि चन्द्र पर्वत्त कम उभरा हुआ हो या चन्द्र रेखा कमजोर हो और अन्य सभी गुण हथेली में हों तो वह नेवी में उच्च पद पर कार्य करने वाला होता है।

यदि चन्द्र पर्वत अत्यन्त दबा हुआ हो तथा भाग्य रेखा कमजोर हो तो वह केवल नाव चलाने वाला नाविक होता है।

९. डाक्टर :

डाक्टर

जिस की हथेली में बुध पर्वत पूर्ण विकसित हो तथा कनिष्ठिका पूरी लम्बाई लिये हुए हो जिसका सिरा अनामिका के ऊपरी पौर के मध्य तक जाता हो तथा बुध क्षेत्र पर तीन चार खड़ी रेखाएं हों तो ऐसा व्यक्ति एक सफल डाक्टर होता है।
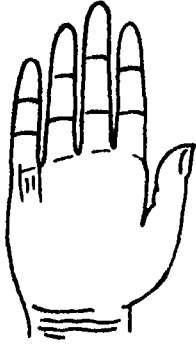
यदि ऊपर लिखे गुण हथेली में हों पर इसके साथ ही साथ मंगल पर्वत अत्यन्त विकसित हो तथा मंगल रेखा भी पुष्ट एवं प्रबल हो तो वह व्यक्ति एक सफल सर्जन होता है।

यदि मंगल पर्वत दबा हुआ हो इसके अलावा अन्य सभी गुण हथेली में हों तथा बृहस्पति पूर्ण विकसित हो और उस पर वर्ग का चिह्न हो तो वह व्यक्ति ख्याति प्राप्त वैद्य होता है।

१०. इंजीनियर :

यहां इन्जीनियर से मेरा तात्पर्य वैज्ञानिक एवं मैकेनिक से भी है। यदि किसी मनुष्य की सभी उंगलियां पूरी लम्बाई लिये हुए हों तथा शनि पर्वत विकसित हो तथा उस पर भाग्य रेखा निर्दोष रूप से आकर ठहरी हुई हो एवं पर्वत पर तीन-चार खड़ी रेखाएं हों तो वह व्यक्ति एक बुध सफल वैज्ञानिक होता है।

इंजीनियर

यदि ऊपर लिखे गुण हों पर वृहस्पति पर्वत कमजोर हो तो वह एक सफल इन्जीनियर होता है। यदि इन्जीनियर के चिह्न हों तथा चन्द्र पर्वत श्रेष्ठ हो तो वह वाटर वर्क्स में इन्जीनियर होता है।

यदि ऊपर लिखे चिह्न हथेली में हों तथा मस्तिष्क रेखा और शनि रेखा पूर्ण विकास लिये हुए हो तो वह एक सफल वायुयान चालक होता है पर उसमें चन्द्र पर्वत तथा चन्द्र रेखा अत्यन्त श्रेष्ठ होनी आवश्यक है।
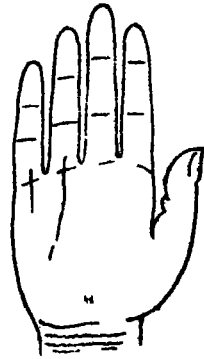
११. धर्माचार्य :

यदि किसी मनुष्य की हथेली में तर्जनी अनामिका से लम्बी हो तथा गुरु पर्वत पूर्ण विकास लिये हुए हो और उस पर क्रॉस का चिह्न हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही एक सफल पुरोहित या धार्मिक व्यक्ति होता है।

यदि ऊपर लिखे चिह्न हों तथा सूर्य पर्वत और सूर्य रेखा बहुत अधिक विकसित हो तो वह व्यक्ति प्रसिद्ध उपदेशक या धर्माचार्य होता है।

यदि ऊपर लिखे चिन्ह हों तथा जीवन रेखा कटी हुई हो तो ऐसा व्यक्ति निश्चय ही सन्यासी होता है और सन्यासी होने के बाद ही उसको यश तथा सम्मान मिलता है।
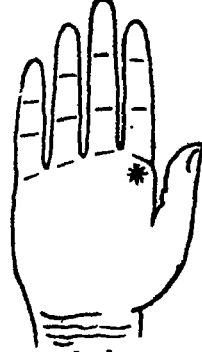
धर्माचार्य

१२. कलाकार :

जब किसी व्यक्ति की हथेलियां पूरी लम्बाई लिये हुए तथा गांठ रहित हों एवं उसकी उंगलियां ढलवीं हों और उंगली के ऊपर के सिरे नौकीले हों तो वह व्यक्ति सफल कलाकार होता है।
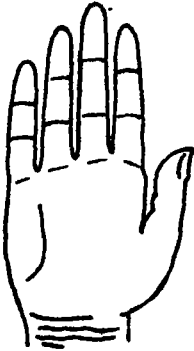
यदि ऊपर लिखे गुण हों साथ ही चन्द्र पर्वत पूर्ण विकसित हो तो वह व्यक्ति श्रेष्ठ चित्रकार माना जाता है। यदि बुध पर्वत विकसित हो तथा बुध रेखा भी पूर्ण लम्बी तथा निर्दोष रूप से बढ़ी हुई हो तो वह व्यक्ति सफल संगीतज्ञ होता है। यदि ऊपर लिखे गुण हों तथा शुक्र पर्वत पूरी तरह से विकास पर हो तथा उसका क्षेत्र अत्यन्त फैला हुआ हो तो वह व्यक्ति सफल नृत्यकार होता है तथा प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

कलाकार

इसके साथ-साथ भाग्य रेखा तथा सूर्य रेखा जितनी ही ज्यादा स्पष्ट, गहरी तथा लालिमा लिये हुए होगी वह व्यक्ति उतना ही ज्यादा सफल लोकप्रिय तथा विख्यात होगा।

१३. साहित्यकार :

जिस व्यक्ति की हथेली में गुरु पर्वत तथा चन्द्र पर्वत पूर्ण उभार लिये हुए हो तथा सूर्य की उंगली तर्जनी से लम्बी हो और उंगलियों में गाठें नहीं हों तो वह व्यक्ति एक सफल साहित्यकार होता है।

साहित्यकार

इसके साथ ही साथ सूर्य रेखा यदि लम्बी हो, निर्दोष हो तथा सूर्य पर्वत अपने स्थान पर हो तो वह लेखन के माध्यम से प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

यदि ऊपर लिखे गुण हों और चन्द्र रेखा धनुष रूप में होकर बुध पर्वत की ओर आ रही हो तो वह व्यक्ति एक सफल कवि होता है।

इसके साथ ही साथ यदि भाग्य रेखा तथा मस्तिष्क रेखा पूर्ण विकसित एवं स्पष्ट हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही अपने क्षेत्र में यश, सम्मान, तथा प्रसिद्धि प्राप्त करता है।
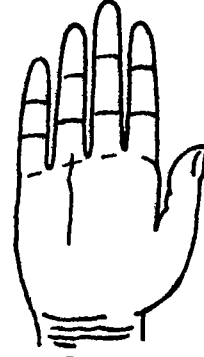
१४. अभिनेता अभिनेत्री :

अभिनेता

यदि हाथ की सभी उंगलियां कोमल तथा ढलवीं हों तथा सूर्य की उंगली विशेष लम्बी हो तथा ऊपर से नौकदार हों तथा मस्तिष्क रेखा एवं भाग्य रेखा पूरी लम्बाई लिये हो तो वह व्यक्ति सफल अभिनेता या अभिनेत्री होती है।
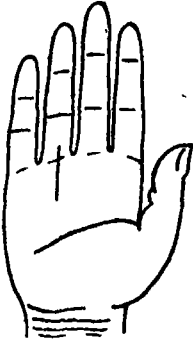
यदि सूर्य रेखा विशेष रूप से सुन्दर, लम्बी, स्पष्ट, मुलायम और निर्दोष रूप से लम्बाई लिये हुए हो तो वह अद्वितीय कलाकार होता है।

यदि सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिह्न हो तो वह कलाकार या अभिनेत्री विश्वविख्यात होती है।

१५. कामी हाथ :

यदि हथेली में शुक्र क्षेत्र बेडौल, जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ, कोमल तथा फला हुआ हो इसके साथ ही अंगूठे का पौर अधिक लम्बा हो तथा शुक्र पर्वत पर नक्षत्र चिह्न अंकित हो तो वह व्यक्ति जरूरत से ज्यादा कामी होता है।

यदि इसके साथ ही शनि रेखा पर बिन्दु या क्रॉस हो तो वह इस क्षेत्र में बदनामी उठाता है।

१६. हत्यारा :

यदि हथेली में हृदय रेखा का अभाव हो तथा शुक्रवलय दोहरा हो इसके साथ ही साथ पूरा हाथ सख्त तथा मजबूत हो और अंगूठा ठिगना, मोटा तथा थुलथुला हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही हत्यारा होता है।

यदि इसके साथ ही साथ हृदय रेखा मस्तिष्क रेखा और जीवन रेखा तीनों मंगल पर्वत पर मिलती हों तो वह व्यक्ति निश्चय ही क्रूर और निर्दयी हत्यारा होगा तथा जीवन में एक से अधिक हत्याएं करेगा।
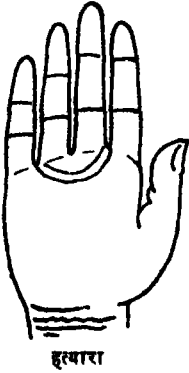
१७. गुप्तचर :

यदि हथेली मे शनि पर्वत अविकसित हो तथा बुध पर्वत दबा हुआ हो पर भाग्यरेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो और मंगल पर्वत पर त्रिभुज का चिह्न लिए हुए हो तो वह व्यक्ति सफल गुप्तचर होता है।
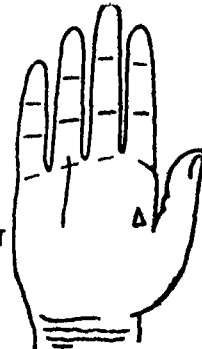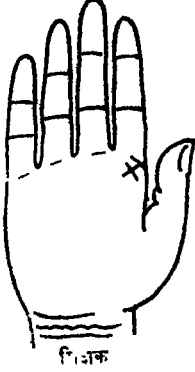
१८. शिक्षक :

१८. **शिक्षक हाथ** :—जिसके हाथ में जीवन रेखा, भाग्यरेखा तथा सूर्य रेखा विकसित हो तथा गुरु पर्वत विकसित हो और उस पर क्रॉस का चिह्न हो तथा अनामिका से तर्जनी उंगली लम्बी हो तो वह सफल शिक्षक (लेक्चरार) होता है।

हस्तरेखा योग

गजलक्ष्मी योग :

यदि दोनों हाथों में भाग्यरेखा मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर सीधी शनि पर्वत पर जा रही हो तथा सूर्य पर्वत विकसित होने के साथ-साथ उस पर सूर्य रेखा भी पतली लम्बी तथा लालिमा लिये हुए हो। इसके साथ ही साथ मस्तिष्क रेखा, स्वास्थ्य रेखा तथा आयु रेखा पुष्ट हो तो उसके हाथ में गजलक्ष्मी योग बनता है।

गजलक्ष्मी

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति साधारण घराने में जन्म लेकर के भी अत्यन्त उच्चस्तरीय सम्मान प्राप्त करता है। इसके साथ ही साथ वह अपने कार्यों से पहिचाना जाता है। आर्थिक एवं भौतिक दृष्टि से ऐसे व्यक्तियों के जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती। ऐसे व्यक्ति स्वभाव से नम्र, विवेकवान तथा गुणवान होते हैं। व्यापार तथा विदेशों में कार्य करने से वे व्यक्ति विशेष सफल होते हैं। वस्तुत. गजलक्ष्मी योग रखने वाला व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है तथा मृत्यु के बाद भी उसकी कीर्ति अपने क्षेत्र में अक्षुण्य रहती है।
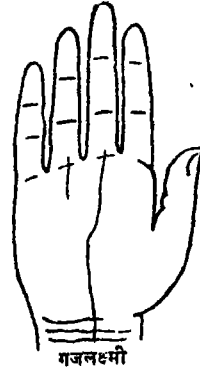
टिप्पणी : इस योग मे यह ध्यान रखने की बात है कि यदि ऐसी स्थिति दोनों ही हाथों में हो तभी यह योग पूर्ण माना जाता है। यदि एक ही हाथ में हो तो इसका आधा फल समझना चाहिए।

अमलायोग :

यदि हाथ में चन्द्र पर्वत विकसित हो और उसके साथ ही साथ सूर्य पर्वत तथा शुक्र पर्वत भी अपने पूर्ण उभार पर हो तथा चन्द्र रेखा बुध पर्वत की ओर जाती हो तो ऐसी स्थिति होने पर उसके हाथ में अमला योग बनता है।

अमला योग

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में अमला योग होता है, वह व्यक्ति बुद्धिमान चतुर तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला व्यक्ति माना जाता है। आर्थिक एवं भौतिक दृष्टि से ऐसा व्यक्ति पूर्ण सफल होता है तथा अपने जीवन में व्यापारिक कार्यों से कई बार विदेश यात्राएं करता है। यदि हाथ में शुक्र पर्वत पूर्ण विकास पर होता है तथा उस पर बाधक रेखाएं नहीं होतीं तो निश्चय ही ऐसा व्यक्ति भौतिक सुख प्राप्त करता है तथा उसके जीवन में पत्नी के अलावा भी अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रहते हैं। जीवन में उसे बदनामी का सामना नहीं करना पड़ता।

शुभ योग :

परिभाषा : यदि दाहिने हाथ में शनि का पर्वत विकसित हो तथा उस पर स्पष्ट भाग्य रेखा आकर बनी हो तो उसके हाथ में शुभ योग होता है।

शुभ योग

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में शुभ योग होता है वह प्रसिद्ध वक्ता, तथा जनता को सम्मोहित करने की क्षमता रखने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति के हाथ में इस प्रकार का योग होता है कि वह जो कुछ भी चाहता है जनता से प्राप्त कर लेता है। उसकी वाणी में मंत्र मुग्ध करने की शक्ति होती है। तथा जनता की भावनाओं को अपने पक्ष में करने की उसे पूर्ण कला आती है। ऐसे व्यक्ति का व्यक्तित्व अपने आप में आकर्षक एवं भव्य होता है।

टिप्पणी : शुभ योग से सम्पन्न व्यक्ति का भाग्योदय अपने जन्म स्थान से दूर जाने पर ही होता है।

बुध योग :

बुध योग

परिभाषा : यदि दाहिने हाथ में बुध पर्वत अपने आप में विकसित हो और चन्द्र पर्वत से धनुषाकार रेखा बुध पर्वत पर पहुंचती हो और वह रेखा मार्ग में कहीं पर भी टूटी हुई या कमजोर न हो अथवा जंजीरदार एवं बहुत अधिक मोटी न हो तो ऐसे व्यक्ति के हाथ में बुध योग बनता है।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में बुध योग होता है वह व्यापार के माध्यम से जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। उसके जीवन में धन का तथा सम्मान का किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। शारीरिक दृष्टि से वह पूर्णतः स्वस्थ एव
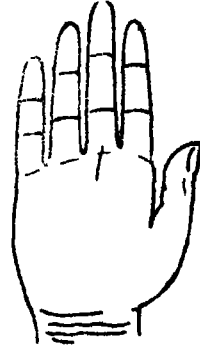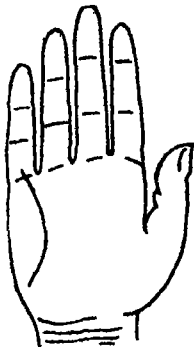
बांकबैंक होता है तथा वह अपने प्रयत्नों से अपने व्यापार का विस्तार विदेशों में भी करता है। ऐसा व्यक्ति शीघ्र निर्णय करने वाला तथा स्वस्थ मस्तिष्क का धनी होता है। शत्रुओं का प्रबल रूप से संहार करने वाला बुद्धिमान तथा चतुर होता है।

टिप्पणी : इस योग में यह बात ध्यान रखने की है कि उसके हाथ में बुध पर्वत विकसित हो, लालिमा लिए हुए तथा अपने स्थान पर स्थित हो। वह न तो हथेली के बाहर निकला हुआ हो और न सूर्य की ओर झुका हुआ हो।

इन्द्र योग :

परिभाषा : जिसके हाथ में मंगल पर्वत अपने स्वाभाविक रूप से विकसित हो तथा मस्तिष्क रेखा तथा भाग्य रेखा पूर्ण लम्बाई लिए हुए सीधी और स्पष्ट हो तो उस व्यक्ति की हथेली इन्द्र में योग होता है।

इन्द्र

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में इन्द्र योग होता है वह व्यक्ति बलिष्ठ, चतुर तथा सफल रणनीतिज्ञ होता है। ऐसा व्यक्ति मिलिट्री में या पुलिस में उच्च पद प्राप्त करता है एवं राजा के समान अपना जीवन व्यतीत करता है। ऐसा व्यक्ति बातचीत करने में चतुर एवं सरल स्वभाव का होता है तथा उसका भाग्योदय २८वें साल के बाद ही विशेष रूप से होता देखा गया है।
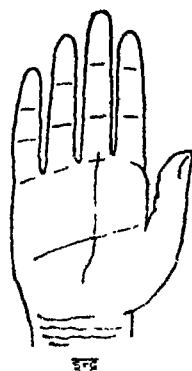
टिप्पणी : यह योग राज योग के समान है ऐसा अनुभव हुआ है कि जिसके हाथ में यह योग होता है, उसकी आयु बहुत अधिक बड़ी नहीं होती परन्तु फिर भी ऐसा व्यक्ति छोटी आयु में ही पूर्ण प्रसिद्धि प्राप्त करके अपना नाम चारों ओर फैला देता है। भौतिकता की दृष्टि से देखा जाय तो इनके जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती। ऐसे व्यक्ति जीवन में पूर्ण यश, सम्मान, तथा प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं।

मरुत योग :

मरुत् योग

यदि हाथ में शुक्र पर्वत पूर्ण विकसित हो और उस पर किसी प्रकार की बाधक रेखाएं न हों साथ ही गुरु पर्वत स्पष्ट हो और उस पर क्रास का चिह्न हो एवं चन्द्र रेखा बलवान एवं सीधी व स्पष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति के हाथ में मरुत् योग होताहै।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में मरुत् योग्य होता है वह व्यक्ति बातचीत की कला में अत्यधिक निपुण तथा योग्य होता है। उसका हृदय विशाल और दूसरों की सहायता करने में आनन्द

अनुभव करता है। जीवन में ये व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से पूर्णतः सुखी व सफल होते हैं। तथा अपने प्रयत्नों से व्यापार को बहुत अधिक फैला देते हैं। ऐसे व्यक्ति तुरन्त निर्णय लेने वाले व सही रूप में समय को पहचानने वाले होते हैं। निश्चय ही इन व्यक्तियों के हाथों में कोई चीज अप्राप्य नहीं रहती।

टिप्पणी : इस योग का अध्ययन करते समय यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि हाथ में शुक्र, गुरु तथा चन्द्र पर्वत अपने आप में पूर्ण विकसित हों तथा शुक्र रेखा एवं चन्द्र रेखा में किसी प्रकार की कोई न्यूनता न हो।

लग्नाधि योग :

परिभाषा : यदि हथेली में भाग्य रेखा पूर्ण विकसित हो और पूरी हथेली में सभी पर्वत अपने आप में विकसित हों और बुध रेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो तो उस व्यक्ति के हाथ में लग्नाधियोग होता है।

लग्नाधियोग

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में लग्नाधियोग होता है वह पूर्ण विद्वान् और चतुर वक्ता होता है। उसकी विद्वता का लोहा अन्य लोग भी मानते हैं। शारीरिक रूप से व्यक्ति स्वस्थ, सबल, और आकर्षक होता है। हृदय से यह उच्च विचारों वाला होता है। सांसारिक कार्य और प्रपंचों में इसकी रुचि नहीं होती। यह अपने कार्य से प्रसिद्धि प्राप्त करता है।
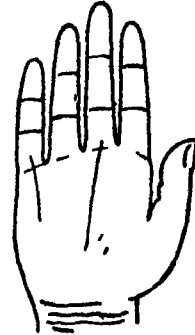
टिप्पणी : हथेली में यह योग तभी माना जायगा जब सभी पर्वत पूर्णतः विकसित हों और अपने-अपने स्थान पर स्थित हों। यदि पर्वत इधर-उधर विशृंखलित हों तो इस योग का लाभ व्यक्ति को नहीं मिल पाता।

अधि योग :
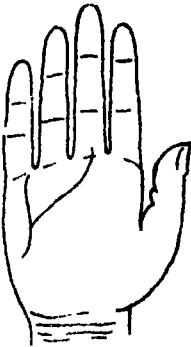
अधियोग

परिभाषा : यदि चन्द्र रेखा विकसित हो और बुध पर्वत तक पहुंची हो साथ ही उसकी एक शाखा शनि पर्वत को स्पर्श करती हो तो उसके हाथ में अधियोग होता है।

फल : इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति विनम्र होता है तथा अपने कार्य में चतुर, सावधान तथा समय को पहचान कर कार्य करने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन आनन्द के साथ व्यतीत होता है। भौतिक दृष्टि से उसे किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती। परन्तु कई बार ऐसे व्यक्ति शत्रु पर विश्वास करके धोखा भी खा जाते हैं।

टिप्पणी : इसमें चन्द्र रेखा पर विशेष बल है और ध्यान में रखने की बात यह है कि चन्द्र रेखा का झुकाव तो बुध पर्वत की ओर ही होना चाहिए, परन्तु उसकी एक शाखा ऊपर की ओर उठती हुई अन्य पर्वत की ओर अवश्य ही पहुँचनी चाहिए।

शकट योग :

परिभाषा : यदि हथेली में शनि पर्वत एवं चन्द्र पर्वत दबे हुए हों। शुक्र पर्वत पर जरूरत से ज्यादा आड़ी तिरछी रेखाएं हों तथा भाग्य रेखा अत्यन्त कमजोर हो तो उसकी हथेली में शकट योग बनता है।

फल : शकट योग में जिस व्यक्ति का जन्म होता है, वह जीवन भर अभाग्यशाली ही रहता है। उसके जीवन में बराबर संघर्ष बना रहता है, तथा कई बार जीवन में कर्ज लेकर के काम चलाना पड़ता है। समाज में इसका कोई सम्मान नहीं होता और इसका जीवन एक साधारण स्तर का ही व्यतीत होता है।

शकट योग

टिप्पणी : जिसके हाथ मे शकट योग होता है उसमें ऊपर लिखा फल ही अधिकतर मिलता है, परन्तु यदि उसके हाथ में बुध पर्वत तथा गुरु पर्वत विकसित हो और गुरु पर क्रॉस का चिह्न हो तो शकट योग का इतना बुरा फल उसे देखने को नहीं मिलता।

दरिद्र योग :

परिभाषा : यदि हथेली मे सभी पर्वत कमजोर हों तथा चन्द्र पर्वत पर बिन्दु हो साथही बुध की उंगली पर तारे का चिह्नहो तो उसकी हथेली में दरिद्र योग बनता है।

फल : दरिद्र योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति चाहे करोड़पति के घर में भी जन्म ले फिर भी वह अपने दुष्कर्मों के कारण संचित पूंजी समाप्त कर देता है। तथा उसे दरिद्र जीवन बिताने को बाध्य होना पड़ता है। उसका सम्पूर्ण जीवन सभी दृष्टियों से सामान्य स्तर का होकर रह जाता है।

दरिद्र योग

टिप्पणी : हस्तरेखा के विद्वानों ने ऊपर लिखे योग के अतिरिक्त निम्न योगों को भी दरिद्र योग माना है।

१. यदि हथेली मे सूर्य रेखा तथा भाग्य रेखा अत्यन्त कमजोर या टूटी हुई हो।

२. यदि भाग्य रेखा मोटी तथा हथेली में धंसी हुई हो और वह मध्यमा उंगली के प्रथम पौर तक पहुंच गई हो।

३. यदि शुक्र पर्वत दबा हुआ हो और उस पर जरूरत से ज्यादा बाधक रेखाएं हों।

४. यदि हथेली में बहुत अधिक रेखाएं ऊपर से नीचे की ओर जा रही हों।

५. यदि मध्यमा उंगली के सबसे नीचे के पौर पर तारे का चिह्न हो तथा भाग्य रेखा कमजोर हो।

६. यदि सूर्य रेखा मुड़कर शुक्र पर्वत की ओर जा रही हो।

७. यदि हथेली मोटी तथा भारी हो, साथ ही उस पर सभी पर्वत कमजोर और दबे हुए हों।

८. चन्द्र पर्वत कमजोर हो तथा उस पर एक से अधिक क्रास हों।

९. यदि हाथ की उंगलियां छोटी हों तथा उंगलियों के सिरे वर्गाकार हों एवं भाग्य रेखा पलट कर हथेली के बाहर जा रही हो।

इनमें से कोई भी योग होने पर व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त कमजोर रहता है।

दुरधरा योग :
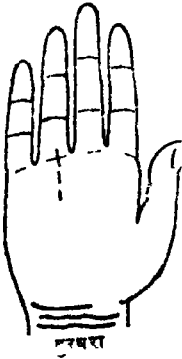
यदि हथेली में शुक्र पर्वत, सूर्य पर्वत एवं शनि पर्वत दबे हुए हों तथा सूर्य रेखा टूटी हुई हो तो दुरधरा योग बनता है।

फल : जिसके हाथ में दुरधरा योग होता है उस व्यक्ति का प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त कष्ट के साथ व्यतीत होता है। परन्तु उसका भाग्योदय जीवन के ३६वें साल से प्रारम्भ होता है और इस आयु के बाद वह आश्चर्यजनक रूप से प्रगति करता है।

टिप्पणी : वस्तुतः दुरधरा योग का फल विचित्र है, इस योग के होने से जीवन के पहले ३६ वर्ष अत्यन्त दुखदायी, कष्टप्रद तथा परेशानीपूर्ण होते हैं। परन्तु ३६ वर्ष से आगे की आयु पूर्णतः सुखमय एवं समृद्धिपूर्ण होती है। हकीकत में वह आगे चलकर धन, मान, यश, पद, प्रतिष्ठा आदि सभी कुछ प्राप्त करने में सफल होता है।

केमद्रुम योग :

परिभाषा : यदि हथेली में शुक्र पर्वत तथा सूर्य पर्वत अविकसितहों तथा सूर्य रेखा टूटी हुई हो तो उसकी हथेली में केमद्रुम योग बनता है।

केमद्रुम

फल : केमद्रुम योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति हमेशा दुखी बना रहता है। उसके हाथ में भले ही अन्य अच्छे योग हों परन्तु केमद्रुम उन सभी अच्छे योगों का नाश कर देता है। ऐसा व्यक्ति स्वयं गलतियां करता है, और अदूरदर्शी होने के कारण बाद में पछताता रहता है। आर्थिक दृष्टि से यह बहुत अधिक गरीब होता है तथा जीवन में आजीविका के साधन बार-बार बदलता है। ऐसा व्यक्ति हमेशा दूसरों पर निर्भर रहता है।

टिप्पणी : कुछ विद्वानों का विचार है कि यदि भाग्य रेखा पुष्ट हो तो केमद्रुम भंग हो जाता है। इसके अलावा कुछ विद्वानों ने केमद्रुम भंग के अन्य तथ्य भी स्पष्ट किये हैं।

निम्न स्थितियां हाथ में होने पर केमद्रुम योग का प्रभाव उसके जीवन में नहीं रहता। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि यदि हथेली मे केमद्रुम योग हो परन्तु निम्न स्थितियों में से कोई भी एक स्थिति हो तो केमद्रुम का असर उसके जीवन में नहीं रहता।

१. यदि हथेली में सूर्य रेखा पूर्णतः प्रबल, स्पष्ट तथा सीधी हो।

२. यदि सूर्य रेखा से कोई एक सहायक रेखा बुध पर्वत की ओर पहुंची हो।

३. शुक्र पर्वत पुष्ट तथा विस्तृत क्षेत्र वाला हो तथा उस पर किसी प्रकार की अन्य रेखाएं या जाल न हो।

४. चन्द्र पर्वत पूर्ण विकसित हो तथा उससे एक रेखा निकल कर बुध पर्वत पर पहुंची हो।

५. हथेली में चार मणिबन्ध पूर्ण एवं स्पष्ट हों।

६. हथेली में आयु रेखा स्वास्थ्य रेखा तथा मस्तिष्क रेखा सीधी और स्पष्ट हो तथा इन तीनों का परस्पर पूर्ण सम्बन्ध बना हो।

विशेष टिप्पणी : वस्तुतः हथेली में केमद्रुम योग होना अत्यन्त दुखमय होता है। सामुद्रिक सुधा में लिखा है कि यदि किसी के हाथ मे पूर्ण राज्य योग तथा प्रबल भाग्य योग भी हो परन्तु हथेली में केमद्रुम योग होने से उनका नाश हो जाता है तथा उन शुभ योगों का भी अशुभ फल मिलने लग जाता है।

अनफा योग :
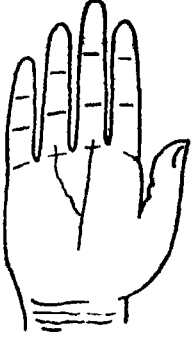
अनफा

परिभाषा : जिसके हाथ में शुक्र क्षेत्र विस्तार लिए हुए प्रभाव पूर्ण हो तथा इसके साथ ही साथ सूर्य रेखा तथा भाग्य रेखा का आगे चलकर सम्बन्ध बना हो तो हथेली में अनफा योग होता है।

फल : जिसके हाथ में अनफा योग होता है उसका व्यक्तित्व अपने आप में पूर्ण प्रभाव युक्त एवं चुम्बकीय होता है। वह दूसरों पर अपने व्यक्तित्व का प्रभाव डालने में समर्थ होता है। समाज में वह अपने कार्यों से विशेष सम्मानित होता है। ऐसा व्यक्ति अपने विचारों पर दृढ़ रहने वाला, समझदार, सद्‌गुणी तथा सुशील होता है। वह स्वयं का सम्मान चाहता है तथा दूसरों को भी सम्मानित करने की क्षमता रखता है। ऐसा व्यक्ति हमेशा प्रसन्नचित्त एवं सुखी रहता है।

टिप्पणी : यह योग शुक्र सूर्य तथा शनि से मिलकर बनता है। अतः अलग अलग ग्रहों के प्रभाव से उसके फलादेश में भी अन्तर आ जाता है। यदि एक से अधिक ग्रहों का फल सम्मिलित हो तो वहां मिश्रित फल समझना चाहिए।

शुक्र :—यदि हथेली में अनफा योग बन रहा हो और शुक्र पर्वत तथा शुक्र रेखा सबसे अधिक विकसित हो तो वह व्यक्ति प्रसिद्ध प्रेमी होता है तथा जीवन में अपनी पत्नी के अलावा अन्य कई स्त्रियों से सम्पर्क में आता है। वह व्यक्ति दूसरों के दिल को सम्मोहित करने की कला पूर्णतः जानता है।

शनि :—यदि हथेली में अनफा योग हो और शनि पर्वत पूर्णतः विकसित हो तथा शनि रेखा भी प्रभाव पूर्ण हो तो ऐसा व्यक्ति भाग्यवान होता है एवं प्रसिद्ध कुल में जन्म लेकर सुखमय जीवन व्यतीत करता है। वह अपने शब्दों के माध्यम से दूसरों पर प्रभाव डालने में समर्थ होता है। जनता को किस प्रकार से बातचीत के माध्यम से सम्मोहित किया जा सकता है, यह उसे बखूबी आता है। जीवन भर उसे वाहन सुख बना रहता है तथा जीवन में सुन्दर स्त्रियों से उसका सम्पर्क थोड़े बहुत रूप में रहता ही है। ऐसा व्यक्ति गुणवान, पुत्रवान तथा धनवान होता है।

सूर्य :—यदि हथेली में अनफा योग हो तथा सूर्य पर्वत एवं सूर्य रेखा अपने आप में पुष्ट एवं प्रबल हो तो वह व्यक्ति व्यापार में विशेष रुचि रखने वाला होता है। साथ ही साथ काव्य संगीत आदि कलाओं में भी वह निपुण होता है। ऐसा व्यक्ति नौकरी में विशेष सफलता प्राप्त करता है। तथा शीघ्र ही उच्च पद प्राप्त करने में सफल हो जाता है। उसका शरीर अपने आप में स्वस्थ एवं आकर्षक होता है। तथा

उसके व्यक्तित्व का प्रभाव उससे मिलने वालों पर पड़ता है, जिसकी वजह से समाज में वह अत्यन्त लोकप्रिय हो जाता है।

ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में सुखी, सफल एवं आनन्दमय जीवन व्यतीत करता हुआ समाज में सम्मानित होता है।

सुनफा योग :

यदि हथेली में सूर्य शनि तथा बुध पर्वत विकसित हो तथा ये तीनों ही रेखाएं स्पष्ट एवं बिना कटी हुई हों तो उसके हाथ में सुनफा योग होता है।
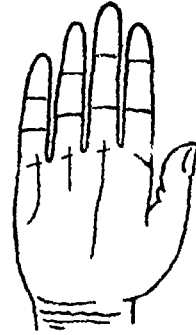
सुनफा

फल : जिस व्यक्ति की हथेली में सुनफा योग होता है वह जीवन में परिश्रमी होता है और परिश्रम के बल पर ही धन संचय करता है और समाज में सम्माननीय स्थान बनाता है। उसके प्रत्येक कार्य में सावधानी और चतुराई होती है। दूरदर्शी होने के कारण इसके सभी निर्णय सही होते हैं। ऐसा व्यक्ति जीवन में पूर्णत: सुखमय जीवन व्यतीत करता है।

टिप्पणी : यह योग मुख्यत: सूर्य, शनि, तथा बुध पर्वत की वजह से होता है। इसमें एक शर्त यह होती है कि बुध रेखा शनि रेखा तथा सूर्य रेखा का हथेली के बीच में परस्पर सम्बन्ध होना आवश्यक होता है। नीचे मैं प्रत्येक ग्रह से संबंधित विशेष फल स्पष्ट कर रहा हूँ :

बुध :—यदि हथेली में सुनफा योग हो और बुध पर्वत तथा बुध रेखा दूसरों की अपेक्षा ज्यादा विकसित हो, स्पष्ट हो तो वह व्यक्ति कलाओं में विशेष रुचि रखने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति सामाजिक परम्पराओं तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को पूरी तरह से निभाता है। साथ ही ऐसा व्यक्ति सामाजिक रूढ़ियों को मानने वाला बुद्धिमान सुन्दर एवं परोपकारी होता है।

शनि :—यदि हथेली में सुनफा योग हो परन्तु शनि पर्वत एवं शनि रेखा विशेष पुष्ट एवं सीधी हों तो वह व्यक्ति बुद्धिमान होता है तथा राजनीति में विशेष सफलता प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में धन की कोई चिंता नहीं रहती। मन में प्रत्येक बात छिपाकर रखने में सफल रहता है और जब तक कार्य सिद्धि नहीं हो जाती तब तक वह उस बात को उजागर नहीं करता। उसका व्यवहार सरल, सीधा तथा भेदपूर्ण होता है।

सूर्य:—यदि हाथ में सुनफा योग हो परन्तु सूर्य पर्वत विशेष रूप से विकसित हो तथा सूर्य रेखा बलवान हो तो वह व्यक्ति उच्च स्तर का सम्मानित अधिकारी

होता है। प्रशासन के क्षेत्र में वह पूर्णतः सफल होता है। तथा उत्तरदायित्वपूर्ण कार्यों को सही प्रकार से निपटाने में कुशल माना जाता है। ऐसे व्यक्ति साधारण पद से प्रारंभ होकर अत्यन्त उच्च पद पर पहुंचने में सफल होते हैं।

अशुभ योग :

अशुभ

परिभाषा : यदि हथेली में सूर्य रेखा टूटी हुई हो तथा सूर्य पर्वत का अभाव हो तो उसके हाथ में अशुभ योग होता है।

फल : जिसके हाथ में अशुभ योग होता है वह व्यक्ति कामी, क्रोधी तथा सामान्य स्तर का जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य होता है। वह दूसरों को धोखा देकर पैसा हड़पने में ज्यादा विश्वास रखता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में असफल होता है तथा हर कदम पर उसे बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

शुभकर्तरी योग :

शुभकर्तरी

परिभाषा :—यदि हथेली के बीच का हिस्सा गहरा हो और सूर्य एवं गुरु पर्वत उभरे हुए हो तो उसके हाथ में शुभकर्तरी योग बनता है।

फल :—जिसके हाथ में शुभकर्तरी योग होता है। वह व्यक्ति तेजस्वी एवं प्रभावपूर्ण जीवन व्यतीत करने में समर्थ होता है। उसके जीवन में आय के एक से अधिक स्रोत होते हैं, तथा धन संचय करने में वह योग्य होता है। शारीरिक दृष्टि से भी ऐसा व्यक्ति आकर्षक सबल, एवं पुष्ट होता है।
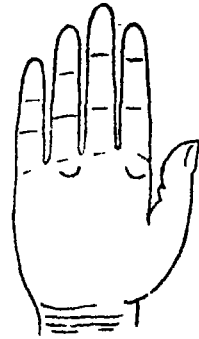
पापकर्तरी योग :

पापकर्तरी योग

परिभाषा :—यदि हथेली उथली हो तथा सूर्य एवं शनि पर्वत दबे हुए या कमजोर हों तो पापकर्तरी योग होगा

फल :—इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति पापपूर्ण कार्यों में व्यस्त रहता है। दूसरी को धोखा देने या दूसरों को हानि पहुंचाने में उसे आनन्द आता है। ऐसा व्यक्ति कठोर हृदय निर्धन तथा दुखमय जीवन व्यतीत करने को बाध्य होता है।
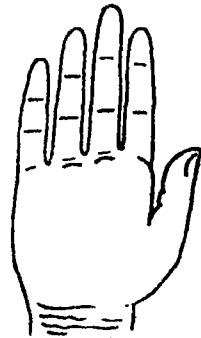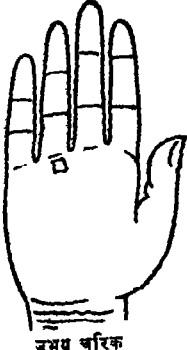
उभयचरिक योग :

उभय चरिक

परिभाषा :—यदि हथेली में सूर्य पर्वत पर वर्ग का चिह्न हो तथा कनिष्ठिका अंगुली का ऊपरी सिरा अनामिका के ऊपरी पोर से आगे बढ़ा हुआ हो तो उसके हाथ में उभयचरिक योग बनता है।

फल:—जिस व्यक्ति के हाथ में उभयचरिक योग होता है वह व्यक्ति दूरदर्शी होने के साथ-साथ परिस्थितियों को भली प्रकार से समझने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति न्यायशील होता है। तथा समाज में वह तटस्थता के कारण सम्मानित होता है। ऐसा व्यक्ति अविचलित पुष्ट, स्वस्थ शरीर तथा अपनी जबान का पक्का होता है और यदि किसी को वचन दे देता है तो उसे यथासंभव पूरा करने का प्रयत्न करता है।

टिप्पणी : —उभयचरिक योग में सूर्य पर्वत पर पूर्ण वर्ग का चिह्न होना आवश्यक होता है। परन्तु यह वर्ग का चिह्न जितना छोटा होता है उतना ही ज्यादा शुभ एवं अनुकूल प्रभाव वाला माना जाता है।

पर्वत योग :

परिभाषा :—यदि हथेली में भाग्य रेखा मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर सीधी शनि पर्वत तक पहुंचती हो : तथा यह रेखा पतली, गहरी, स्पष्ट तथा बिना कटी-फटी हो और अपने उद्गम स्थान पर मछली का आकार बनाती हो तो उसके हाथ में पर्वत योग का निर्माण होता है।

फल :—जिसके हाथ में पर्वत होता है, वह व्यक्ति अपने भाग्य का स्वयं ही निर्माता होता है। जीवन में वह जिस कार्य में भी हाथ डालता है उसे भाग्य साथ देता है। और वह उन कार्यों में सफलता प्राप्त करता है। शिक्षा के क्षेत्र में इसे पूर्ण सफलता मिलती है, तथा अपने यौवन काल में यह गरीबों, अनाथों एवं पीड़ितों की मदद करता है। मेरे अनुभव में यह आया है कि यह इन सभी गुणों से युक्त होने पर भी भोगी होता है। तथा अपनी पत्नी के अलावा अन्य कई स्त्रियों से उसके पत्नीवत् मधुर सम्बन्ध रहते हैं। समाज में उसकी प्रशंसा होती है, तथा जीवन में उसे किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।
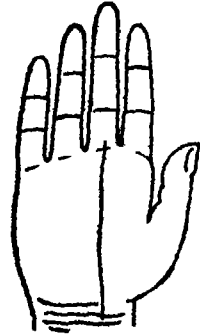
पर्वत

टिप्पणी :—सामुद्रिक ग्रन्थों में इसके बारे में यह लिखा हुआ है कि ऐसा व्यक्ति प्रयत्न करे तो सरपंच, म्युनिसिपल कमिश्नर या जिला बोर्ड के सदस्य का पद सुशोभित करता है। यद्यपि ऐसे व्यक्ति सफल राजनीतिज्ञ नहीं होते; परन्तु फिर भी ऊँचे स्तर के मंत्रियों एवं विधायकों का विश्वासपात्र होता है।

वासी योग :
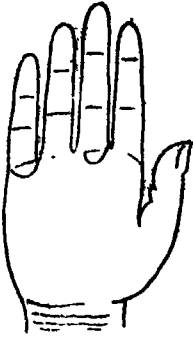
वासी

परिभाषा :—यदि हथेली में शनि मुद्रा एवं बुध मुद्रा विद्यमान हो तो वासी योग होता है।

फल :—जिसके हाथ में वासी योग होता है वह व्यक्ति अपने कार्य में चतुर एवं दक्ष होता है। ऐसा व्यक्ति हर समय मुस्कराने वाला प्रसन्नचित गुणी और चतुर होता है तथा उसके प्रत्येक कार्य में चतुराई स्पष्ट दिखाई देती है। परिवार की दृष्टि से भी ऐसे व्यक्ति के जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। पहले तो उसके सामने कोई शत्रु आता ही नहीं और यदि आता भी है तो स्वतः ही उसका पतन हो जाता है।

यदि हाथ में वासी योग हो, परन्तु भाग्यरेखा टूटी हुई हो तो वह व्यक्ति जीवन में कई ऐसी भयंकर भूलें कर लेता है जिससे वह दुखी और परेशान रहता है। उसके मन में हर समय बदला लेने की भावना बनी रहती है और धोखा देकर धन संचय करने की प्रवृत्ति ही उसके जीवन में विशेष रूप से रहती है।

यदि सूर्य रेखा टूटी हुई, कमजोर हो या सूर्य रेखा का अभाव हो तो वह व्यक्ति अत्यन्त साधारण एवं दुखमय जीवन व्यतीत करने के लिये बाध्य होता है।

टिप्पणी : वासी योग देखते समय सूर्य रेखा तथा शनि रेखा पर भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। इनका अध्ययन करने के बाद ही उसका फलाफल किया जाना ज्यादा उचित एवं प्रामाणिक रहता है।

वेशि योग :

परिभाषा : यदि हथेली में बुध मुद्रा तथा शनि मुद्रा हो पर इसके साथ ही साथ 'गर्डल आफ वीनस' अर्थात् शुक्र मुद्रा भी हो तो उसके हाथ में वेशि योग होता है।

फल : जिस व्यक्ति का जन्म वेशि योग में होता है वह व्यक्ति सौम्य स्वभाव वाला, चतुर, धीर तथा गम्भीर होता है। अपनी बातचीत के माध्यम से वह दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है तथा ऐसे व्यक्ति नेतृत्व करने में दक्ष होते हैं। परन्तु इतना होने पर भी उसके जीवन में आर्थिक अभाव
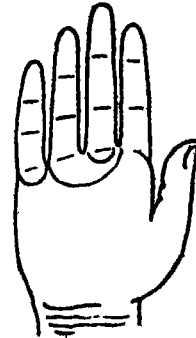
वेशि योग

बराबर बना रहता है। यद्यपि वह जीवन में लाखों कमाता है परन्तु उसका व्यय बढ़ा-चढ़ा होने के कारण लाखों खर्च भी कर डालता है। एक प्रकार से देखा जाय तो ऐसे व्यक्ति के जीवन में बैंक बैलेंस नहीं के बराबर होता है। इतना होने पर भी समाज में उसका सम्मान होता है तथा कई व्यक्ति उसके आदर्शों का अनुकरण करते हैं।

भास्कर योग :

परिभाषा : यदि हथेली में सूर्य रेखा का बुध रेखा से सम्बन्ध हो, बुध रेखा का चन्द्र रेखा से सम्बन्ध हो तथा गुरु पर्वत एवं गुरु रेखा अपने आप में स्पष्ट दीर्घ एवं पुष्ट हो तो भास्कर योग बनता है।
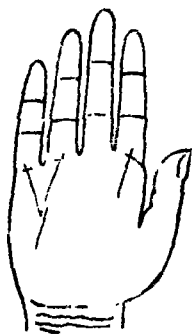
फल : भास्कर योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सफल होता है। जीवन में उसे भौतिक दृष्टि से किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती। वह एक से अधिक कलाएं जानता है जिसकी वजह से उसके आय के स्रोत भी एक से अधिक होते हैं। शारीरिक दृष्टि से ऐसा व्यक्ति पुष्ट तथा प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व लिये हुए होता है। शत्रु इससे भयभीत रहते हैं तथा मित्र बनाने की कला में यह विशेष चतुर होता है। साहित्य, संगीत, कला आदि में यह व्यक्ति रुचि रखने वाला होता है। तथा कलाकारों को धन एवं सहायता देकर समाज में यश, सम्मान तथा वाहवाही भी लूटता है। ऐसे व्यक्ति के पास एक प्रकार से चुम्बकीय आकर्षण होता है। जिसकी वजह से उसके जीवन में पुरुष मित्र एवं महिला मित्रों की कोई कमी नहीं रहती।

भास्कर योग

टिप्पणी :—इस योग में गुरु सूर्य, बुध, तथा चन्द्र पर्वत पूर्ण विकसित होने चाहिए, साथ ही साथ सूर्य रेखा तथा बुध रेखा अपने आप में निर्दोष होकर आपस में मिलती हो। इसी प्रकार चन्द्र रेखा से बुध रेखा का सम्बन्ध बनता हो परन्तु चन्द्र रेखा का सूर्य रेखा से सम्बन्ध होना उचित नहीं होता।

गन्धर्व योग :

परिभाषा :—यदि दाहिने हाथ तथा बायें हाथ की हथेलियों में शुक्र पर्वत पूर्ण विकसित हो तथा उन पर वर्ग का चिह्न हो, साथ ही सूर्य पर्वत एवं सूर्य रेखा पुष्ट एवं स्पष्ट हो तो गंधर्व योग होता है।

फल :—जिसके हाथ में गंधर्व योग होता है वह व्यक्ति प्रसिद्ध गायक, अथवा संगीतकार होता है। ऐसे व्यक्ति अपना पूरा जीवन कला की साधना में लगा देते हैं और इस क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करते हैं। कला के माध्यम से ये व्यक्ति

गंधर्व
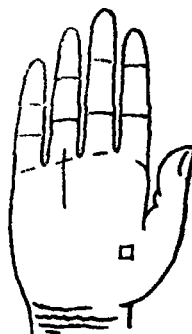
विदेशों में भी नाम कमाते हैं। इसके जीवन में धन, तथा यश की किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहती तथा जीवन में भौतिक दृष्टि से अपनी समस्त इच्छाएं पूर्ण करता है।

टिप्पणी : इस योग का अध्ययन करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसके हाथ में सूर्य रेखा तथा सूर्य पर्वत विकसित हो तथा सही हो। इसके अलावा शुक्र पर्वत दोनों ही हाथों में विकसित हो। आर्थिक दृष्टि से इन व्यक्तियों के जीवन में कोई बाधा नहीं रहती।

वसुमति योग :

परिभाषा : यदि उंगलियां बिना गांठ वाली तथा कुछ लम्बाई लिये हुए होती है, साथ ही गुरु सूर्य शनि तथा बुध पर्वत अपने-अपने स्थानों पर विकसित हों तो वसुमति योग बनता है।

फल : ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करता है तथा उसके जीवन में धन की कोई कमी नहीं रहती। ऐसा व्यक्ति अपने ही परिश्रम से धन उपार्जित कर समाज में यश, तथा सम्मान प्राप्त करता है।

टिप्पणी : इस योग में यह आवश्यक है कि हथेली मे गुरु, सूर्य, शनि तथा बुध के पर्वत विकसित हों पर इसके साथ ही साथ वे अपने स्थान से च्युत न हों। ऐसा होने पर ही वसु-मति योग सम्भव हो सकता है।
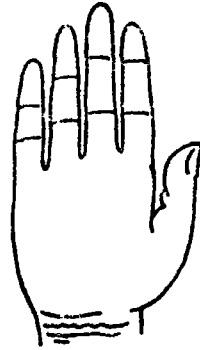
परश्चतुस्सागर योग :
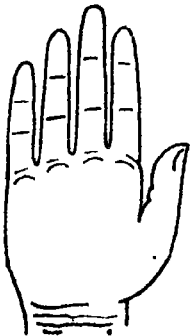
परिभाषा : यदि हथेली में सूर्य, बुध, गुरु, तथा शनि पर्वत दबे हुए हों या सभी पर्वत अपने-अपने स्थान से च्युत हों तो परश्चतुस्सागर योग बनता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह जीवन में आर्थिक अभावों से पीड़ित रहता है। साथ ही उसे अपने जीवन में मानसिक संतुष्टि अथवा आराम नहीं मिलता। वह जितना भी प्रयत्न करता है उतनी ही ज्यादा कठिनाइयां उसके जीवन में आती रहती हैं। वस्तुतः ऐसा व्यक्ति अपने जीवन को दरिद्रता के साथ ही व्यतीत करता है।

परश्चतुस्सागर

चतुस्सागर योग :

परिभाषा : यदि हथेली के सभी पर्वत विकसित हों तथा सभी रेखाएं पुष्ट एवं सीधी, सरल, तथा स्पष्ट हों तो ऐसे व्यक्ति के हाथ में चतुस्सागर योग बनता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति अपने ही कार्यों से प्रसिद्ध होते हैं और अपने प्रयत्नों से समाज का अथवा देश का नेतृत्व करने में सफलता प्राप्त करते हैं। ऐसे व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से पूर्णतः सुखी एवं सफल होते हैं। इनकी वाणी में ओज होता है तथा अपने भाषणों के माध्यम से लोगों को प्रभावित करने की पूरी क्षमता रखते हैं। ये व्यक्ति अपने प्रयत्नों को अपने अनुकूल बनाकर विदेश यात्राएं करते हैं तथा समुद्र पारीय देशों में भी ख्याति लाभ करते हैं। यदि ऐसे व्यक्ति राजकीय सेवा में होते हैं तो उनकी नौकरी ऐसी होती है जिसकी वजह से इनके जीवन में भ्रमण विशेष रूप से रहता है तथा उसमें सफलता प्राप्त कर लेते हैं। पारिवारिक दृष्टि से ये व्यक्ति पूर्णतः सन्तुष्ट होते हैं।

चतुस्सागर
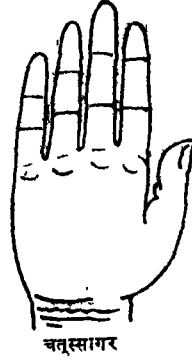
टिप्पणी : इस योग में राहू और केतु पर्वतों पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता, इसके अलावा सभी पर्वत अपने आप में पूर्ण विकसित अवस्था में होने चाहिए और उन पर किसी प्रकार का बिन्दु व जाल नहीं होना चाहिए। पर इसके साथ ही उस व्यक्ति की हथेली लचीली, कोमल तथा गुलाबीपन लिये हुए होनी आवश्यक है।

रोग योग :

परिभाषा : सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों के अनुसार निम्नलिखित योग यदि हथेली में पाये जाएं तो रोग योग होता है।

१. **दुर्बल शरीर** : यदि नाखून पतले हों तथा जीवन रेखा फीकी हो साथ ही वह जंजीरदार होकर नीचे की ओर झुकी हुई हो।

२. **अकाल मृत्यु** : यदि हृदय रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती हो, साथ ही मस्तिष्क रेखा के बीच में क्रॉस का चिह्न हो तथा जीवन रेखा कटी हुई हो।

रोग योग
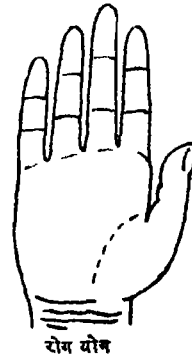
३. **बचपन में दुर्बलता** : यदि जीवन रेखा बहुत अधिक मोटी हो और गुरु पर्वत के नीचे जंजीरदार हो गई हो।

४. **वंशगत रोग** : जहां से जीवन रेखा प्रारम्भ हो रही हो वहीं पर द्वीप का चिह्न हो तो उस व्यक्ति को वंशगत रोग होता है।

५. **कमजोर शरीर** : यदि जीवन रेखा सीढ़ीदार तथा टूटी हुई हो।

६. **बचपन में दुर्घटना** : यदि भाग्य रेखा के प्रारम्भ में कोई बिन्दु का चिह्न हो।

७. **अविकसित शरीर** : यदि जीवन रेखा के बीच में कई शाखाएं नीचे की ओर बढ़ी हों तथा वह टूटी हुई हो।

८. **बुढ़ापे में कमजोरी** : यदि स्वास्थ्य रेखा चौड़ी हो और अन्त में वह जाकर गुच्छेदार हो गई हो अथवा टूट गई हो।

९. **आकस्मिक मृत्यु** :—यदि हृदय रेखा शनि पर्वत के नीचे जाकर अचानक से दिखाई देती हो या मस्तिष्क रेखा मणिबन्ध को स्पर्श करती हो।

१०. **हत्या** : यदि जीवन रेखा मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा अपने प्रारम्भिक स्थान पर परस्पर पूरी तरह से जुड़ी हुई हो और जंजीरदार हो गई हो।

११. **पशु से दुर्घटना** : यदि मस्तिष्क रेखा सूर्य पर्वत के नीचे या शनि पर्वत के नीचे अचानक टूट गई हो।

१२. **सिर पर चोट** : यदि मस्तिष्क रेखा पर लाल रंग के तारे का चिह्न हो।

१३. **यौवनकाल में भयंकर दुर्घटना** :—यदि मस्तिष्क रेखा नीचे की ओर झुकी हुई हो तथा लहरदार दिखाई देती हो।

१४. **फांसी** : यदि जीवन रेखा बीच में ही एकाएक समाप्त हो गई हो और हृदय रेखा, मस्तिष्क रेखा तथा जीवन रेखा से बने हुए त्रिकोण में क्रास या दो तारक चिह्न हों।

१५. **कारावास** : यदि भाग्य रेखा के प्रारम्भ में कई रेखाएं निकल कर नीचे की ओर जा रही हों और वह भाग्य रेखा मध्यमा के दूसरे पौर तक पहुंच गई हो।

१६. **जल में मृत्यु** : यदि चन्द्र पर्वत पर वृत्त का चिह्न हो अथवा चन्द्र पर्वत पर त्रिकोण हो अथवा बुध पर्वत पर बिन्दु, त्रिकोण या तारक चिह्न हो।

१७. **यात्राकाल में मृत्यु** : यदि यात्रा रेखाएं टूटी हुई तथा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हों।

१८. **कैंसर** : यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हुई हों या जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिह्न हो।

१९. **मिरगी** : यदि हृदय रेखा पर क्रास हो या स्वास्थ्य रेखा कई रंगों की दिखाई देती हो।

२०. **पक्षाघात** : यदि हृदय रेखा तथा चन्द्र पर्वत पर दो खड़ी लम्बी लाइनें हों।

२१. **मस्तिष्क रोग** : यदि मस्तिष्क रेखा लहरदार या सीढ़ीदार हो तथा उसका झुकाव स्वास्थ्य रेखा की ओर हो या मस्तिष्क रेखा स्वास्थ्य रेखा से जुड़ी हुई हो या जुड़ने के स्थान पर रेखाओं का गुच्छा सा बन गया हो।

२२. **दमा** : यदि हाथ लुजलुजा हो तथा जीवन रेखा पर द्वीप का चिह्न हो।

२३. **अन्धा** : यदि जीवन रेखा पर वृत्त हो या हृदय रेखा पर धब्बा हो अथवा स्वास्थ्य रेखा पर क्रॉस हो या सूर्य रेखा के प्रारम्भ में बड़ा काला धब्बा हो।

२४. **मस्तिष्क रोग** : यदि मस्तिष्क रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तथा उस पर काला धब्बा हो।

२५. **एनीमिया** : यदि हृदय रेखा चौड़ी और कमजोर हो तथा नाखूनों का रंग नीला सा हो।

२६. **जुकाम या नजला** : यदि चन्द्र पर्वत बहुत अधिक विकसित तथा उठा हुआ हो।

२७. **हृदय रोग** : यदि हृदय रेखाएं दो हों तथा बीच-बीच में आपस में मिल जाती हों अथवा हृदय रेखा शनि पर्वत पर पहुंच गई हो।

२८. **गठिया** : यदि चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा विकसित हो और पूरे चन्द्र पर्वत को कोई एक रेखा काटती हो या उसे दो भागों में विभाजित करती हो। अथवा जीवन रेखा के अन्तिम स्थल पर छोटी-छोटी रेखाओं का गुच्छा हो।

२९. **मूर्च्छा का रोग** : यदि स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा से प्रारम्भ हो रही हो तथा मस्तिष्क रेखा हृदय रेखा की ओर बढ़ रही हो तो उसे जीवन में मूर्च्छा के बार-बार दौरे आते हैं।

३०. **बहरापन :** बृहस्पति पर्वत कमजोर हो तथा इस पर्वत के नीचे मस्तिष्क रेखा पर बिन्दु का चिह्न हो।

३१. **क्षय रोग :** यदि नाखून लम्बे, पतले तथा मुड़े हुए हों साथ ही मस्तिष्क रेखा पर कई छोटे-छोटे द्वीप हों।

३२. **जलोदर :** चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो और उस पर एक से अधिक क्रॉस के चिह्न या बिन्दु के चिह्न हों।

३३. **कम्प रोग :** यदि मस्तिष्क रेखा पर काला धब्बा हो और जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिह्न हो तो उसके शरीर के अंग थोड़े बहुत रूप में कांपते ही रहते हैं।

३४. **डिपथीरिया :** यदि जीवन रेखा तथा मस्तिष्क रेखा कटी हुई हो एवं शनि पर्वत के नीचे चतुर्भुज तथा क्रॉस का चिह्न हो।

३५. **मोटापा :** यदि हृदय रेखा टूटी हुई हो और हाथ मोटा तथा गुदगुदा हो।

३६. **हिस्टीरिया :** यदि हाथ सामान्य स्तर का हो तथा चन्द्र पर्वत पर एक से अधिक तारे के चिह्न हों।

३७. **घातक रोग :** यदि जीवन रेखा टूटी हुई हो तथा उसका एक खण्ड शुक्र पर्वत से सम्बन्धित हो।

३८. **पाचनशक्ति में कमी :** मस्तिष्क रेखा तंग हो तथा स्वास्थ्य रेखा लहरदार हो।

३९. **स्मृति नाश :** यदि मस्तिष्क रेखा कई जगह से टूटी हुई हो तो उसकी स्मरण शक्ति बिल्कुल नहीं होती।

४०. **वायु रोग :** यदि जीवन रेखा के अन्त में कई शाखाएं निकल कर नीचे की ओर बढ़ रही हों।

४१. **प्लूरिसी :** यदि जीवन रेखा से कोई रेखा निकल कर शनि पर्वत पर पहुंचती हो तथा वहां त्रिकोण का चिह्न हो अथवा दो तारक चिह्न हों, तो ऐसे व्यक्ति को प्लूरिसी अर्थात् उसके फेफड़ों में पानी का जमाव हो जाता है।

४२. **हत्या :** यदि अनामिका के नीचे से पौर पर तारक चिह्न हो तो पिस्तौल की गोली खाकर उसकी मृत्यु होती है। गांधी जी के हाथ में यह चिन्ह स्पष्ट रूप से दिखाई देता था।

४३. **आत्म हत्या :** यदि दूसरी उंगली का पहला पौर बहुत ज्यादा लम्बा हो या भाग्य रेखा के अन्त पर तारे का चिन्ह हो।

४४. **दांत रोग :** यदि हृदय रेखा तथा स्वास्थ्य रेखा लहरदार हो तो उसे जीवन भर दांतों का रोग बना रहता है।

४५. **गुप्तांग रोग :** यदि मंगल पर्वत पर बहुत अधिक बारीक-बारीक लाइनें दिखाई दें तो उस व्यक्ति को गुप्तांगों के रोग रहते हैं।

नपुंसक योग :

परिभाषा :—यदि शुक्र पर्वत दबा हुआ हो तथा उस पर धब्बे का चिन्ह हो।

फल : जिनके हाथ में ऐसा योग होता है उसके शुक्राणु या तो बहुत अधिक कमजोर होते या मृतावस्था में होते हैं, जिसकी वजह से उसको सन्तान लाभ नहीं रहता।

नपुंसक योग :

चन्द्रमंगल योग :
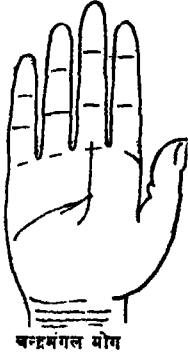
चन्द्रमंगल योग

परिभाषा : यदि व्यक्ति की हथेली में चन्द्र रेखा उभर कर मंगल से मिलती हो या भाग्य रेखा तथा चन्द्र रेखा का निर्दोष रूप से मिलन होता है तो उसके हाथ में चन्द्र मंगल योग होता है।

फल : जिसके हाथ में ऐसा योग दिखाई देता है वह अपने जीवन में आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक सम्पन्न और सुखी होता है। धन कमाने की कला उसको आती है। अपने संबंधियों तथा भागीदारों के साथ चालाकी भरा व्यवहार होता है तथा जीवन में कई स्त्रियों से सम्पर्क रहता है।

टिप्पणी : चन्द्र मंगल योग में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि ये दोनों रेखाएं अपने आप में पुष्ट तथा सही हों, तथा इन दोनों रेखाओं का आपस में संबंध बना हो पर किसी प्रकार से जंजीर के समान आकृति न बन गई हो।

सति योग :

परिभाषा : यदि किसी महिला के हाथ में गुरु पर्वत पूर्ण विकसित हो तथा सभी उंगलियां लम्बी, सुन्दर तथा स्वस्थ हों तो वह पतिव्रता होती है ।

फल : जिस महिला के हाथ में यह योग होता है वह पतिव्रत धर्म को निभाने वाली जीवन में पति को सहयोग एवं सुख देने वाली तथा पूर्णतः साध्वी महिला होती है ।

सति योग

कुलटा योग :
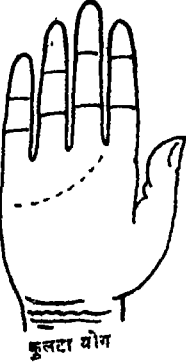
कुलटा योग

परिभाषा : विद्वानों ने नीचे लिखे योग कुलटा योग माने हैं । जिन महिलाओं के हाथों में यह योग होता है वह पति के अलावा अन्य पुरुष से पतिसम संबंध रखने वाली तथा पति को धोखा देने वाली होती है ।

१. यदि हथेली में शुक्र पर्वत जरूरत से ज्यादा विकसित हो तथा हृदय रेखा जंजीरदार हो ।

२. यदि हृदय रेखा पर झुकती हुई दो सामानान्तर रेखाएं हों ।

३. यदि हृदय रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो ।

४. यदि शुक्र पर्वत पर जाली हो तथा हृदय रेखा अत्यधिक कमजोर हो । ऐसे चिन्ह दोनों हाथों में हों ।

५. यदि हृदय रेखा, मस्तिष्क रेखा तथा स्वास्थ्य रेखा से बने त्रिकोण में बिन्दु हों ।

६. यदि हाथ में विशेषकर दोनों हाथों में शुक्र पर्वत तथा सूर्य पर्वत का लगभग अभाव सा हो ।

७. अंगूठे पर या अंगूठे के पहले पौर पर तारे का चिन्ह हो ।

८. यदि तर्जनी के पहले पौर पर तारक चिन्ह हो ।

९. यदि शुक्र पर्वत पर जरूरत से ज्यादा खड़ी और आड़ी रेखाएं हों ।

१०. यदि अंगूठे की जड़ पर क्रास हो ।

११. यदि शुक्र पर्वत पर तारे का चिन्ह हो ।

१२. यदि भाग्य रेखा के अन्त में कई शाखाएं निकल कर नीचे की ओर जा रही हों ।

१३. यदि हृदय रेखा बढ़ कर हथेली के दूसरी तरह पहुंच गई हो।

१४. यदि हृदय रेखा उंगलियों के पोरों को स्पर्श कर रही हो।

१५. यदि जीवन रेखा तथा हृदय रेखा का उद्गम स्थान अलग-अलग हो तथा दोनों रेखाएं चौड़ी हों।

१६. यदि स्वास्थ्य रेखा बुध रेखा के समानान्तर चलती हो।

१७. यदि शुक्र पर्वत सामान्य रूप से विकसित हो। उंगलियां नर्म हों तथा उनके ऊपरी सिरे नुकीले हो।

१८. यदि हृदय रेखा पर सफेद धब्बा हों।

१९. यदि गुरु पर्वत पर क्रास न हो परन्तु शुक्र पर्वत पर क्रास का चिन्ह हो।

२०. यदि मस्तिष्क रेखा नीचे की ओर झुकी हुई हो तथा आगे चलकर जीवन रेखा से मिल जाती हो।

२१. यदि विवाह रेखा पर द्वीप हो।

२२. यदि अंगूठा लम्बा हो तथा हृदय रेखा दोहरी हो।

२३. यदि हृदय रेखा संकीर्ण होकर गुरु पर्वत पर पहुंचती हो।

२४. यदि हृदय रेखा पर भाग्य रेखा से छोटी-छोटी रेखाएं आ रही हों।

२५. यदि वृहस्पति पर्वत के नीचे हृदय रेखा तथा भाग्य रेखा मिल रही हो।

२६. यदि शुक्र पर्वत से कोई एक रेखा निकल कर बुध पर्वत तक जाती हो।

२७. यदि हृदय रेखा तथा भाग्य रेखा एक जगह मिलकर जंजीरदार हो गई हो।

२८. यदि शुक्र पर्वत से रेखाएं निकल कर स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा तथा मस्तिष्क रेखा को काटती हों।

२९. जीवन रेखा पर शुक्र पर्वत के आसपास दो या तीन तारे के चिन्ह हों।

३०. यदि शुक्र पर्वत से दो समानान्तर रेखाएं चन्द्र पर्वत की ओर जा रही हों।

३१. यदि चन्द्र पर्वत पर स्वस्तिक का चिन्ह हो अथवा अर्द्धचन्द्र का चिन्ह हो।

३२. यदि भाग्य रेखा मणिबन्ध के पास जाकर समाप्त हो गई हो तथा शुक्र पर्वत पर तारे का चिन्ह हो।

३३. यदि भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से प्रारम्भ होती हो।

३४. यदि अंगूठे के दूसरे पर्व पर तारक चिन्ह हो।

३५. यदि हाथ में चतुर्भुज का आकार हो तथा उसमें तारे का चिन्ह हो।

३६. मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा मिलकर मेहराव का चिन्ह बनाती हों।

फल : ऊपर लिखे कोई योग यदि किसी पुरुष या स्त्री की हथेली में पाये जायं तो वह निश्चय ही पर पुरुष या स्त्री से संबंधित रहता है पर उसका प्रेम सामान्यत: गोपनीय ही रहता है।

अखण्ड साम्राज्यपति योग :

परिभाषा : यदि दोनों हाथों में भाग्य रेखा मणिबन्ध पर मत्स्याकार बना कर शनि पर्वत से मिलती हो तथा सूर्य रेखा लम्बी पतली स्पष्ट हो एवं चन्द्र पर्वत से पतली रेखा निकल कर बुध पर्वत को स्पर्श करती हो तथा सूर्य शनि एवं शुक्र के पर्वत पूर्ण विकसित हों तो उसके हाथ में अखण्ड सामाज्यपति योग होते हैं।

अखण्ड साम्राज्यपति
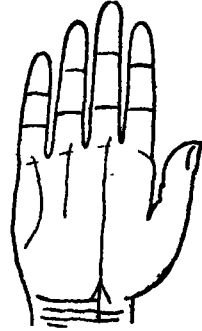
फल : जिस व्यक्ति का जन्म इस योग में होता है वह अपने जीवन में समस्त प्रकार के ऐश्वर्य तथा भोगों के भोग करता है और अपने कार्यों से विश्व विख्यात होता है। ऐसा व्यक्ति उच्चस्तरीय समाज सुधारक, देश नेता, किसी विशेष क्षेत्र में विशेषज्ञ, साहसी, और पराक्रमी होता है।

टिप्पणी : इस योग के लिए यह आवश्यक है कि सूर्य, शनि तथा शुक्र के पर्वत दोनों हाथों में विकसित हों तथा शनि रेखा एवं सूर्य रेखा दोनों हाथों में स्पष्ट तथा सुदृढ़ हो। इसके साथ ही साथ उस व्यक्ति की हथेली लालिमा लिए हुए हो तथा हथेली का आकार चौड़ाई की अपेक्षा कुछ लम्बाई लिए हुए होना चाहिए। यह योग सामुद्रिक शास्त्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है।

शश योग :

शश
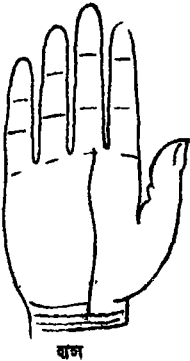
परिभाषा : हथेली में तीन मणिबन्ध हों। पहले मणिबन्ध पर मत्स्याकार होकर वहां से भाग्य रेखा शनि पर्वत के बिन्दु तक पहुंचती हो और शनि पर्वत पूर्ण विकसित अवस्था में हो तो उसके हाथ में शश योग होता है।

फल : जिसके हाथ में शश या शशक योग होता है वह व्यक्ति साधारण कुल में जन्म लेकर भी जीवन में अत्यन्त उच्च पद पर पहुंचता है। राजनीति में यह व्यक्ति अत्यन्त महत्वपूर्ण पद को सुशोभित करता है तथा राजनीति-विशारद

माना जाता है। ऐसे व्यक्ति के घर में नौकर-चाकर पशु वाहन आदि का पूर्ण सुख रहता है। वह गांव का प्रसिद्ध मुखिया नगरपालिकाध्यक्ष या देश का प्रसिद्ध नेता होता है। ऐसे व्यक्ति का स्वभाव अत्यन्त सरल तथा विवेकशील होता है। इसके व्यक्तित्व में कई प्रकार के गुणों का अद्‌भुत समन्वय होता है।

टिप्पणी : इस योग में शनि को बहुत अधिक प्रधानता दी गई है। अत: शनि पर्वत तथा शनि रेखा जितनी ही ज्यादा श्रेष्ठ होगी वह व्यक्ति उतना ही ज्यादा ऊंचा उठेगा। ऐसा व्यक्ति यद्यपि धीरे-धीरे उन्नति करता है परन्तु उसकी जो भी उन्नति होती है वह स्थाई होती है।

मालव्य योग :

परिभाषा : यदि हथेली मे शुक्र पर्वत न तो दबा हुआ हो और न अधिक विकसित हो परन्तु सामान्यत: विकसित चमकीला तथा स्वस्थ हो साथ ही जीवन रेखा मणिबन्ध की ओर आते हुए शुक्र पर्वत को पूर्ण विस्तार दिया हुआ हो तथा अंगूठा लम्बा किंचित पीछे की ओर झुका हुआ हो, शुक्र पर्वत पर किसी प्रकार का बिन्दु या जाल या बाधक रेखाओं के चिन्ह न हों तो उसके हाथ में मालव्य योग होता है।

मालव्य

फल : जिस व्यक्ति की हथेली में मालव्य योग होता है वह अत्यन्त सुन्दर तथा आकर्षक होता है। उसके व्यक्तित्व में कुछ ऐसी विशेषता होती है कि जिससे वह लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल हो जाता है। ऐसे जातक सुन्दर और आकर्षक चेहरे वाले लाल वर्ण पतली कमर चन्द्रमा के समान ओज एवं कांतिवाला लम्बी नाक, प्रकाशित नेत्र, सुदर्शन व्यक्तित्व का धनी होता है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान एवं चतुर भी होता है तथा कठिन से कठिन परि-स्थितियों मे भी विचलित नहीं होता। धन इसके पास स्वत: ही खिंचा चला आता है और बहुत कम परिश्रम करने पर आय के स्रोत एक से अधिक बना लेता है। इसे जीवन भर वाहन सुख बना रहता है तथा जीवन में सभी प्रकार के भोगों को भोगता है। सभ्यता की दृष्टि से ऐसे व्यक्ति उच्च कोटि के होते हैं तथा अपने कार्यों से देश तथा विदेश में सम्मानित होते हैं।

टिप्पणी : जिस व्यक्ति की हथेली में मालव्य योग होता है वह मूलत: कलाकार होता है। यदि शुक्र पर्वत तथा शुक्र रेखा दोनों ही पुष्ट एवं स्वस्थ हों तो व्यक्ति काव्य संगीत नृत्य आदि के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति कला के क्षेत्र में भी घुस जाते हैं उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त करके ही रहते हैं। हृदय से ये व्यक्ति उदार,

तथा परोपकारी होते हैं। इनके जीवन में शुक्र से सम्बन्धित किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहती।

हंस योग :

परिभाषा : यदि हथेली में तर्जनी उंगली अनामिका से लम्बी हो, गुरु पर्वत पूर्णत: विकसित तथा लालिमा लिए हुए हो उस पर क्रौस के चिन्ह के अलावा और अन्य कोई चिन्ह न हो तो उसके जीवन में हंस योग का निर्माण होता है।

फल :

जिस व्यक्ति के हाथ में हंस योग होता है वह व्यक्ति लम्बेतथा आकर्षक डीलडौल का स्वस्थ सुन्दर पुरुष होता है। उसका व्यक्तित्व हर समय खिला हुआ रहता है। हंसमुख चेहरा उन्नत ललाट, तीखी नासिका, विशाल वक्षस्थल तथा सुन्दर व्यक्तित्व वाला ऐसा व्यक्ति दूरदर्शी होने के साथ-साथ मित्रों परिचितों एवं संबन्धियों का सहायक होता है। यह सभी के साथ श्रेष्ठ व्यवहार करता है तथा समाज में सम्माननीय स्थान प्राप्त करने में सफल होता है। नौकरी के क्षेत्र में यह व्यक्ति अत्यन्त उच्च पद को प्राप्त करके ही रहते हैं।

टिप्पणी : यह योग गुरु की वजह से बनता है तथा यह पंचमहापुरुष योग में से एक योग है ऐसे व्यक्ति सफल न्यायाधीश होते हैं तथा निष्पक्ष निर्णण देने की वजह से समाज में उनका सम्मान रहता है। ऐसे व्यक्ति प्रलोभन या दबाव में आकर किसी प्रकार का कोई गलत समझौता अपने जीवन में नहीं करते। इसके साथ ही साथ ऐसे व्यक्ति अत्यन्त आकर्षक होते हैं तथा उनके व्यक्तित्व में कुछ ऐसी विशेषता होती है जिससे इनके परिचितों की संख्या जरूरत से ज्यादा रहती है। इनका बुढ़ापा अत्यन्त सुखदायक होता है।

रुचक योग :

परिभाषा : यदि हथेली में मंगल पर्वत पूर्णत: विकसित स्पष्ट तथा लालिमा लिए हुए हो साथ ही मंगल रेखा सीधी पतली तथा सुन्दर हो तो उस व्यक्ति के हाथ मे रुचक योग होता है।

फल : इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से बलवान तथा पुष्ट होता है। यह अपने कार्यों से समाज और देश का नाम रोशन करता है तथा समय पड़ने पर यह देश का नेतृत्व करने की भी क्षमता रखता है। इसका जीवन राजा के समान ही व्यतीत होता है। अपने देश के प्रति देश की संस्कृति और कला के प्रति यह हरदम जागरूक रहता है तथा अपने देश
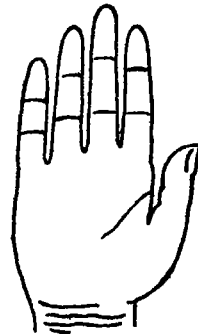
की प्रतिष्ठा को ऊंचा उठाने में बराबर सहायक बना रहता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन तथा चरित्र उच्चकोटि का होता है और किसी के दबाव में आकर कोई कार्य नहीं करता। आर्थिक दृष्टि से इस व्यक्ति के जीवन में कोई कमी नहीं रहती। ऐसा व्यक्ति दीर्घायु प्राप्त करता है तथा सेना, मिलिट्री या पुलिस विभाग में अत्यन्त ऊंचे पद पर पहुंचता है तथा अपनी योग्यता सूझबूझ तथा नेतृत्व करने की क्षमता के कारण सम्मानित होता है।

टिप्पणी : सामुद्रिक शास्त्र में इस योग को भी पंचमहापुरुष योग में से एक माना है। ऐसे व्यक्ति देश और विदेश में सम्मानित होते हैं तथा पूर्ण लाभ प्राप्त करते हैं।

भद्र योग :

भद्र योग।

परिभाषा : यदि हथेली में बुध पर्वत पूर्णतः विकसित हो तथा बुध रेखा सीधी पतली, गहरी तथा लालिमा युक्त हो तो उसके हाथ में भद्र योग होता है।

फल : भद्र योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति साहसी निर्भीक तथा पराक्रमी होता है। इसके सामने शत्रु टिकते ही नहीं हैं और एक हिसाब से यह प्रबल शत्रुहन्ता होता है। शत्रुओं को भी मित्र बनाने की कला इस व्यक्ति को अच्छी तरह से आती है। इसका व्यक्तित्व अपने आप में प्रभाव पूर्ण होता है तथा यह निरन्तर ऊंचा उठने की भावना रखता है इसके संपर्क में जो भी आता है उसकी सहायता करने को यह हर समय तैयार रहता है। इस व्यक्ति का मस्तिष्क अत्यन्त पैना और उर्वर होता है जिसकी वजह से यह पेचीदा से पेचीदा कार्य भी सुगमता से कर लेता है। जो कार्य दूसरों को अत्यन्त जटिल और असंभव लगते हैं उस कार्य को भी ये आसानी से सम्पन्न कर लेते हैं। यद्यपि ये व्यक्ति जीवन में धीरे 2 प्रगति करते हैं परन्तु अन्त में ये सर्वोच्च पद पर ही विश्राम लेते हैं। व्यापार की दृष्टि से इनके हाथ में प्रबल योग होता है तथा अपने प्रयत्नों से यह अपने व्यापार को विदेशों में भी फैलाने में समर्थ होता है।

टिप्पणी · यह योग मुख्यतः बुध पर्वत की वजह से बनता है। बुध व्यापार एवं बुद्धि का कारक ग्रह माना गया है। अतः यह बात निश्चित है कि ऐसा व्यक्ति प्रखर बुद्धि का स्वामी होता है तथा व्यापार के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति कठिन परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होते और बाधाओं के बीच भी अपना पथ चुन लेते हैं। तुरन्त निर्णय करने की क्षमता इनमें विशेष रूप में होती है।

वस्तुतः सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार रुचक योग, भद्र योग, हंस योग, मालव्य योग तथा शश योग ये पांचों योग पंचमहापुरुष योग के नाम से जाने जाते हैं।

ब्रह्मचर्य योग :

परिभाषा : यदि कनिष्ठिका उंगली के पहले पर्व पर क्रौस का चिन्ह हो तो ब्रह्मचर्य का योग होता है।

फल : जिसके हाथ में ब्रह्मचर्य योग होता है वह व्यक्ति जीवन भर स्त्रियों से दूर रहता है। विवाह नहीं करता तथा साधुवत् जीवन ही व्यतीत करने में सफल होता है।

ब्रह्मचर्य
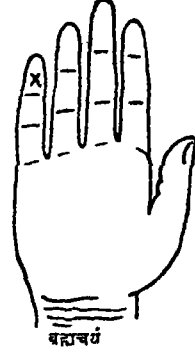
सन्तानहीन योग :

सन्तानहीन

परिभाषा : यदि हथेली में स्वास्थ्य रेखा पर तारे का चिन्ह हो तो सन्तानहीन योग होता है। इसी प्रकार मध्यमा उंगली के तीसरे पर्व पर भी तारक चिन्ह ऐसा ही योग बनाता है।

फल : जिसके हाथ मे यह योग होता है उसे जीवन में सन्तान सुख प्राप्त नहीं होता। यदि पति तथा पत्नी दोनों ही के हाथों में ऐसा योग हो तो निश्चय ही उसको सन्तान सुख का अभाव रहता है।

विवाह योग :

परिभाषा : यदि शुक्र पर्वत तथा गुरु पर्वत विकसित हो तो विवाह योग बनता है पर विद्वानो ने इसके अलावा अन्य तथ्य इस प्रकार से स्पष्ट किये हैं :

सुखी विवाह : १. यदि हथेली में भाग्य रेखा का उद्गम स्थान चन्द्र पर्वत हो।

२. यदि भाग्य रेखा हृदय रेखा पर समाप्त हो।

३. यदि गुरु पर्वत पर क्रास हो।

सुखहीन विवाह : १. यदि शुक्र पर्वत कम उभरा हुआ हो।

विवाह योग
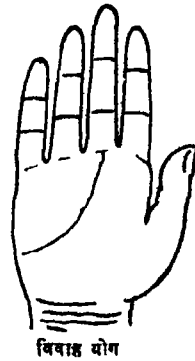
२. यदि शुक्र पर्वत पर लाल रंग का तारक चिन्ह हो।

३. यदि विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो।

४. यदि भाग्य रेखा पर क्रॉस हो।

अनमेल विवाह : १. यदि सूर्य रेखा तथा विवाह रेखा आपस में काटती हो।

२. यदि शुक्र पर्वत जरूरत से ज्यादा विकसित हो।

व्यापारी से विवाह : यदि मणिबन्ध से शुक्र पर्वत को कोई रेखा जाती हो।

२. यदि मणिबन्ध से कोई रेखा बुध पर्वत तक पहुंचती हो।

३. यदि सूर्य रेखा का शुक्र रेखा से सम्बन्ध हो।

बूढ़े व्यक्ति से विवाह : १. यदि कोई रेखा मणिबन्ध से निकल कर शुक्र पर्वत तथा शनि पर्वत पर जाती हो।

२. यदि हाथ कमजोर एवं संकीर्ण हो तथा भाग्य रेखा एवं प्रणय रेखा दूषित हो।

विवाह में बाधा : १. यदि विवाह रेखा कई स्थानों पर कटती हो।

२. यदि चन्द्र पर्वत पर आड़ी-तिरछी रेखाएं हों !

३. यदि शुक्र पर्वत पर दो तारक चिन्ह हो।

तलाक : १. शुक्र रेखा से हृदय रेखा को कोई रेखा जाती हो।

२. भाग्य रेखा पर द्वीप हो।

३. विवाह रेखा के अन्त में रेखाओं का गुच्छा हो।

क्लीव योग :

क्लीव योग
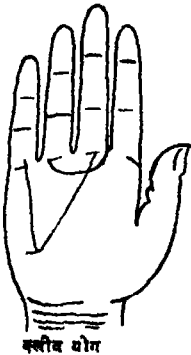
परिभाषा : १. यदि शुक्र पर्वत जरूरत से ज्यादा दबा हुआ हो।

२. यदि हथेली में 'गर्डल आफ वीनस' हो तथा बुध रेखा का शनि रेखा से सम्बन्ध हो।

३. हथेली के बीच में त्रिकोण हो तथा उस पर बिन्दु हो।

४. शुक्र पर्वत पर पीले रंग का तारक चिन्ह हो।

५. चन्द्र पर्वत अत्यन्त कमजोर हो तथा उस पर त्रिकोण का चिन्ह हो।

६. शनि रेखा तथा चन्द्र रेखा का परस्पर हो उंगलियां मध्यम आकार की हों।

फल : क्लीव योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति कायर, कमजोर तथा नपुंसक होता है। वह काम कला में अपनी पत्नी को सन्तुष्ट नहीं कर पाता तथा उस पर पत्नी का व्यक्तित्व हावी रहता है। ऐसा व्यक्ति जोखिम भरे कार्यों से दूर रहता है तथा कोई भी नया कार्य करते समय मन ही मन हिचकिचाता रहता है। यह व्यक्ति लड़ाई झगड़ों में विश्वास नहीं करता तथा दूसरों की अधीनता में कार्य कर अपने जीवन को गुजार देता है।

टिप्पणी : यदि हथेली में उत्तम राज योग अथवा पंचमहापुरुष योग में से भी कोई योग हो परन्तु उसके हाथ में क्लीव योग भी हो तो वह क्लीव योग उसके सभी श्रेष्ठ योगों का नाश कर देता है। ऐसा व्यक्ति अत्यन्त साधारण जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य होता है।

दत्तक पुत्र योग :

परिभाषा : यदि हथेली में शनि रेखा का मंगल रेखा से सम्बन्ध हो और ये दोनों ही पर्वत पूर्णतः विकसित हों तो दत्तक पुत्र योग बनता है।

फल : दत्तक पुत्र योग रखने वाला व्यक्ति कुछ विशेष कारणों से लालचवश या पालन पोषण हेतु अथवा किसी अन्य कारण से दूसरे पुरुष की गोद चला जाता है। तथा उसके द्वारा उसे अपने पिता से अथवा उसके पिता को उसके द्वारा कोई विशेष सुख नहीं मिलता।

दत्तक पुत्र

टिप्पणी : गोद लेने की अथवा गोद देने की प्रथा भारतीय समाज में प्रचलित है। स्वयं के पुत्र न होने पर या पुत्र की मृत्यु हो जाने के कारण वह अपने संबंधियों में से ही किसी के पुत्र को गोद ले लेता है। और इस प्रकार वह उसकी सम्पत्ति का पूर्ण रूप से अधिकारी हो जाता है।

मातृत्यक्त योग :
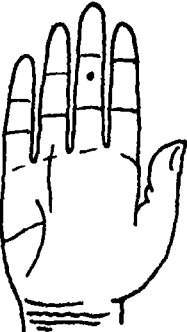
मातृत्यक्त

परिभाषा : यदि मंगल सूर्य तथा चन्द्र रेखाएं परस्पर मिलती हों तथा सूर्य पर्वत अपने आप में कमजोर एवं दबा हुआ हो तो मातृत्यक्त योग बनता है।

फल : जिस व्यक्ति की हथेली में मातृत्यक्त योग होता है उसके जन्म लेने के बाद उसकी माता किसी कारण से उस बालक को त्याग देती है तथा उसका जीवन अनाथ की तरह व्यतीत होता है।

टिप्पणी : भारतीय समाज में कई बार कंआरी के पुत्र हो जाने के कारण या विधवा हो जाने के बाद पुत्र हो जाने के
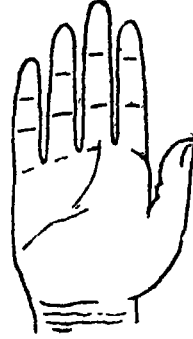
कारण लोक-लज्जा के भय से माता अपने पुत्र को त्याग देती है। कई बार गरीबी की स्थिति में या कोई अचानक घटना घटित हो जाने के कारण भी नवजात शिशु को त्यागना पड़ता है। ऐसा बालक बिना माता के ही बड़ा होता है।

मातृमरण योग :

परिभाषा : यदि हथेली में मंगल रेखा आगे बढ़कर चन्द्र पर्वत तथा चन्द्र रेखा को दो भागों में विभाजित करती हो तो उसके हाथ में मातृमरण योग होता है।

फल : इस योग में बालक के जन्म लेने के कुछ समय बाद ही उसकी माता की मृत्यु हो जाती है। ऐसा समझना चाहिए।
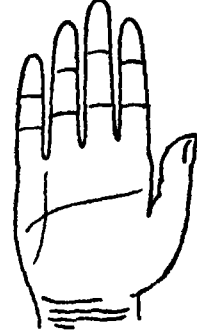
मातृमरण

पाद जातत्वप्रद

पादजातत्वप्रद योग :

परिभाषा : यदि हथेली में राहू पर्वत तथा चन्द्र पर्वत विकसित हों एवं राहू रेखा तथा चन्द्र रेखा का परस्पर सम्बन्ध बन गया हो तो पादजातत्व प्रद योग बनता है।

फल : जिसकी हथेली में यह योग होता है वह माता के गर्भ से पैरों द्वारा उत्पन्न होता है।

अनूढ़ापत्यत्व साधक योग :

परिभाषा : यदि शुक्र पर्वत एवं चन्द्र पर्वत विकसित हो तथा हथेली के शुक्र पर्वत के ऊपर से कोई रेखा निकलकर चन्द्र पर्वत पर स्थापित चन्द्र रेखा से मिलती हो एवं सूर्य रेखा कमजोर हो तो अनुढ़ापत्यत्व साधक योग होता है।

फल : जिसके हाथ में उपर्युक्त योग होता है वह कुमारी लड़की का पुत्र होता है या उसके कुंआरावस्था में अर्थात् अविवाहितावस्था में पुत्र हो जाता है।

टिप्पणी : यदि यह योग पुरुष के हाथों में होता है तो वह अपने पिता की संतान नहीं होता, किसी और की सन्तान होता है, या वह बालक कुमारी के गर्भ से उत्पन्न तथा त्याज्य होता है। इसी प्रकार यदि यह योग स्त्री के हाथों में हो तो वह परपुरुष से गर्भ धारण करती है अथवा अविवाहिता अवस्था में गर्भ रह जाता है।

अनूढापत्यत्व

वंचना चोरभेती योग :
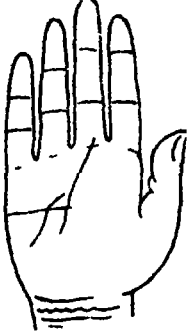
वंचना चोरभति

परिभाषा : यदि हथेली में राहू तथा शनि मंगल रेखाओं का परस्पर संबंध हो तथा ये तीनों ही पर्वत पूर्णतः विकसित हों पर साथ में गुरु और सूर्य पर्वत अपने स्थान से च्युत या दबे हुए हों तो उपर्युक्त योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह अपने मन में हीनभावना अनुभव करता रहता है। उसे कोई भी व्यक्ति आसानी से ठग लेता है तथा वह जीवन में कई बार धोखेबाज के संपर्क में आकर अपना सब कुछ गंवा देता है।

टिप्पणी : इस योग को रखने वाला व्यक्ति संशयालू प्रकृति का होता है। वह हर सयम डरा-डरा-सा सशंकित और भयभीत रहता है कि कोई उसे ठग न ले या उसे धोखा न दे दे। ऐसा व्यक्ति न तो खुल कर कोई कार्य कर पाता है न किसी पर विश्वास करता है और न अपने मन की बात दूसरों से कह पाता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में पूर्ण विकास नहीं कर पाता।

राज्यलक्ष्मी योग :
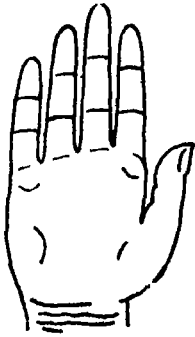
राज्य लक्षण

परिभाषा : यदि हथेली में गुरु, शुक्र, बुध और चन्द्रमा के पर्वत पूर्ण विकसित हों तथा लालिमा लिए हुए हों तो उस व्यक्ति के हाथ में राज्य लक्ष्मी योग होता है।

फल : जिस जातक के हाथ में राज्य लक्ष्मी योग होता है वह जीवन में अपने प्रयत्नों से बहुत अधिक उन्नति करता है जीवन की सभी भौतिक इच्छाएं समय-समय पर पूरी होती हैं और वाहन सुख, भवन सुख, तथा स्त्री सुख में किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहती। उसका व्यक्तित्व अपने आप में भव्य और आकर्षक होता है।

टिप्पणी : वस्तुतः चन्द्रमा और बुध ये ग्रह ही व्यक्ति को सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व देने में सहायक होते हैं। अतः जब हथेली में इन दोनों ग्रहों के पर्वत पूर्णतः विकसित होते हैं तो निश्चय ही वह व्यक्ति सुन्दर और समर्थ होता ही है। यदि ये दोनों ग्रह कमजोर हों तो उसकी सुन्दरता और व्यक्तित्व में न्यूनता समझनी चाहिए।

गुरुकृतोरिष्ट भंग योग :

परिभाषा : जीवन में गुरु का सबसे अधिक महत्व है। अतः यदि हथेली में गुरु पर्वत पूर्णतः विकसित हो तर्जनी उंगली लम्बाई लिए हुए मध्यमा की ओर थोड़ी-सी ढली हुई हो तथा पर्वत पर क्रॉस का चिह्न हो तो उपर्युक्त योग होता है।

फल : यदि हाथ में अन्य पर्वत या रेखाएं कमजोर हों अथवा अविकसित हों और उससे जीवन में बाधाएं आ रही हों परन्तु यदि ऊपर लिखा योग हथेली में होता है तो वह सभी अनिष्टों का नाश करने में समर्थ होता है।

गुरुकृतोरिष्टभग

राहुकृतोरिष्ट भंग योग :

राहुकृतो रिष्टभग योग

परिभाषा : यदि हथेली में राहू पर्वत विकसित हो तथा राहू रेखा की वजह से चन्द्र पर्वत या अन्य पर्वत कमजोर हो गये हों पर यदि हथेली में राहू पर्वत पर त्रिकोण का चिह्न हो तो उपर्युक्त योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति प्रबल, प्रतापी सामर्थ्यवान एवं शत्रुहन्ता होता है।
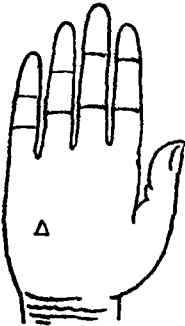
अशुभकृतोरिष्ट भंग योग :

परिभाषा : हथेली में भाग्य रेखा सूर्य रेखा तथा चंद्र रेखा पूर्णतः बलवान हो तो ऊपर लिखा योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उसके जीवन में अनिष्ट अपने आप शांत होते हैं और व्यक्ति अपने प्रयत्नों से तथा मित्रों के सहयोग से पूर्ण उन्नति करता है।

टिप्पणी : इस योग का तात्पर्य यह है कि यदि हथेली में शनि, राहू, केतु या मंगल पर्वत अथवा रेखाएं कमजोर हों या टूटी हुई हों अथवा अविकसित हों तो उन से सम्बन्धित जो अनिष्ट होते हैं वे सभी अनिष्ट उपर्युक्त योग होने पर नाश हो जाते हैं।
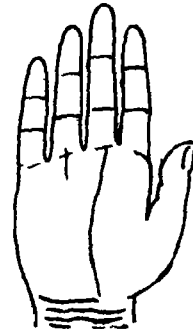
अशुभकृतो रिष्टभग योग

शुभकृतोरिष्ट भंग योग:

शुभकृतो रिष्ट भंग

परिभाषा : गुरु शुक्र और बुध पर्वतों में से कोई भी एक पर्वत और उससे सम्बन्धित रेखा बलवान, पुष्ट एवं स्पष्ट हो तो यह योग होता है।

फल : शुभ ग्रहों से उत्पन्न यदि कोई अनिष्ट हो तो इस योग के होने पर उसका संबंध हो जाता है।

टिप्पणी : यदि हथेली में कोई भी शुभग्रह से सम्बन्धित पर्वत दबा हुआ हो या शुभ ग्रह से सम्बन्धित कोई रेखा कमजोर अथवा टूटी हुई हो परन्तु ऊपर लिखा योग हो तो उस शुभ ग्रह से सम्बन्धित न्यूनता के दोष का परिमार्जन यह योग कर लेता है।
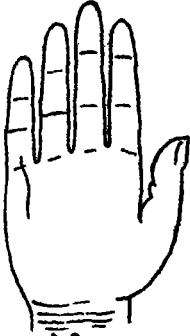
कला योग :

परिभाषा : यदि हथेली में मस्तिष्क रेखा से कोई सीधी रेखा अनामिका की जड़ तक पहुँची हो या दोनों हाथों में सूर्य रेखा जीवन रेखा से प्रारम्भ होती हो तो यह योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह कला के माध्यम से जीविकोपार्जन करता है तथा सफलता प्राप्त करता है।
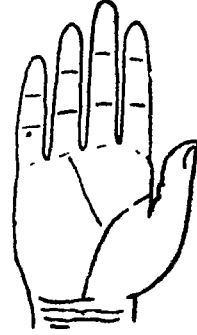
कला योग

टिप्पणी : यदि ऊपर लिखे अनुसार हाथ में कला योग हो परन्तु उंगलियों के अग्रभाग चपटे हों तो वह कला में असफलता प्राप्त करता है। इसी प्रकार यदि सूर्य पर्वत पर कई आड़ी-तिरछी रेखाए हों तो भी वह इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त नहीं कर पाता।

व्यापार योग :

व्यापार योग

परिभाषा : यदि अनामिका का ऊपरी सिरा वर्गाकार हो तथा बुध पर्वत विकसित हो तो व्यापार योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह जीवन में एक सफल व्यापारी बनता है।

रसायन शास्त्र योग :

रसायन शास्त्र योग

परिभाषा : बुध क्षेत्र पर बहुत अधिक खड़ी रेखाएं हों तो यह योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह रसायन शास्त्र के क्षेत्र में प्रसिद्ध विद्वान होकर नाम कमाता है।
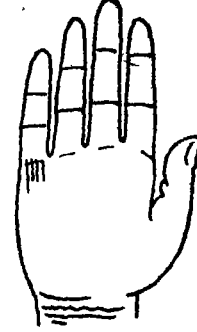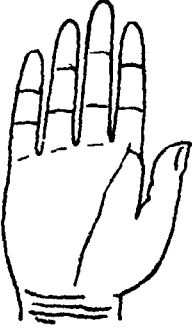
धार्मिक योग :

धार्मिक योग

परिभाषा : यदि मणिबन्ध से कोई रेखा गुरु पर्वत तक जाती हो तथा उंगलियों के सिरे नोकीले हों तो धार्मिक योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह धार्मिक क्षेत्र में उच्च पद को प्राप्त करता है तथा धार्मिक ग्रन्थ लिखकर प्रसिद्धि तथा सम्मान अर्जित करता है।

अन्तर्दृष्टि योग :

अन्तर्दृष्टि योग

परिभाषा : यदि मस्तिष्क रेखा पतली तथा लम्बी होकर चन्द्र पर्वत पर पहुँचती हो तो यह योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह दूसरों के मन को पढ़ने में या बिना पूछे ही दूसरों के मन की भावना को जानने में सक्षम होता है।
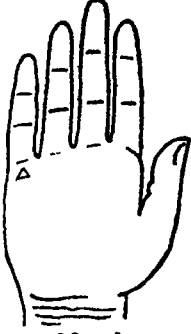
राजनीतिज्ञ योग :

राजनीतिज्ञ योग

परिभाषा : यदि मध्यमा उंगली का अग्र भाग नुकीला हो तथा सूर्य रेखा विकसित और लम्बी हो तो यह योग होता है। अथवा बुध पर्वत पर त्रिकोण का चिह्न हो तब भी यही योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह राजनीति के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति करता है तथा यश प्राप्त करता है।

अन्वेषण योग :

परिभाषा : जिसके हाथ में मस्तिष्क रेखा पर सफेद चिन्ह हों तो यह योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह नई-नई वस्तुओं की खोज करने वाला तथा सफल आविष्कारक होता है ।

टिप्पणी : इसके अलावा सूर्य और बुध पर्वत विकसित हों तब भी यही योग होता है या दोनों अंगूठे पीछे की ओर बहुत अधिक मुड़े हुए हों या बुध पर्वत हथेली के बाहर की ओर झुका हुआ हो तो तब भी यह योग बनता है ।
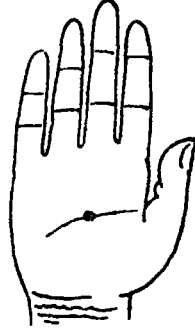
अन्वेषण योग

कानून योग :

कानून योग

परिभाषा : यदि शनि रेखा एवं गुरु रेखा विकसित हो अथवा मणिबन्ध से गुरु पर्वत तक कोई रेखा पहुंचती हो तो यह योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह होता है वह कानून को जानने वाला सफल वकील, अथवा श्रेष्ठ न्यायधीश होता है ।

चिकित्सक योग :

चिकित्सक योग

परिभाषा : यदि दोनों हाथों में बुध पर्वत विकसित हों तथा उस पर तीन खड़ी रेखाएं हों तो चिकित्सक योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह कुशल वैद्य अथवा श्रेष्ठ डाक्टर होता है ।
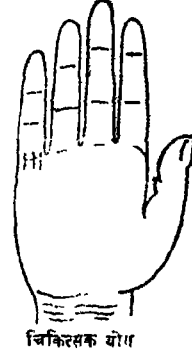
सैनिक योग :

सैनिक योग

परिभाषा : यदि दोनों हाथों में मंगल पर्वत पर त्रिकोण का चिन्ह हो तो उपर्युक्त योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह सेना में उच्च पद को प्राप्त करने में सफल होता है ।

साहित्यिक योग :

परिभाषा : यदि गुरु पर्वत चन्द्र पर्वत तथा सूर्य पर्वत विकसित हों एवं चन्द्र रेखा बुध पर्वत तक जाती हो तो यह योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह एक सफल साहित्यकार होता है ।

टिप्पणी : विद्वानो ने इसके अलावा निम्न लिखित योगों को भी साहित्यिक योग माना है ।

साहित्यिक योग

१. यदि तर्जनी उंगली के ऊपरी सिरेपर क्रॉस का चिह्न हो ।

२. यदि बुध पर्वत पर तारे का चिह्न हो ।

३. यदि मणिबन्ध से सूर्य पर्वत तक सीधी रेखा जाती हो ।
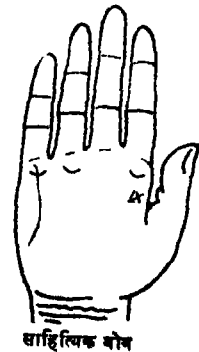
४. यदि सूर्य पर्वत के नीचे सफ़ेद धब्बे हों।

५. यदि ढाई या तीन मणिबन्ध रेखाएं हों।

भाग्य योग :
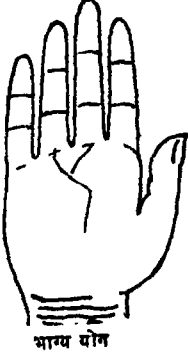
भाग्य योग

परिभाषा : यदि हथेली में भाग्य रेखा पुष्ट सूर्य पर्वत पर पहुंचती हो तो यह योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह प्रबल भाग्यशाली व्यक्ति माना जाता है।

टिप्पणी : सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने इसके अलावा निम्नलिखित योगों को भी भाग्य योग माना है :

१. यदि भाग्य रेखा गुरु पर्वत से प्रारम्भ होती हो।

२. यदि भाग्य रेखा शनि पर्वत से चलकर बृहस्पति पर्वत से नीचे समाप्त होती हो पर वहां सफेद बिन्दु हों।

३. भाग्य रेखा पुष्ट हो तथा सूर्य पर्वत पर तारे का चिह्न हो।

४. दोनों हाथों में स्पष्ट और लम्बी भाग्य रेखाएं हों

५. मणिबन्ध पर क्रॉस का चिन्ह हो तथा वहां से सीधी भाग्य रेखा बनी हो।

६. वृहस्पति पर्वत पर तारे का चिह्न हो।

७. यदि भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से प्रारम्भ होती हो।

८. यदि कोई रेखा अनामिका की जड़ से प्रारम्भ होकर पूर्ण रूप से ऊपर तक पहुंची हो।

९. मणिबन्ध की प्रथम रेखा जंजीरदार पर टूटी हुई न हो तथा वहां से भाग्य रेखा प्रारम्भ हुई हो।

१०. सूर्य रेखा के नीचे त्रिकोण का चिन्ह हो।

११. हृदय तथा मस्तिष्क रेखाएं गुरु पर्वत के नीचे मिलती हों।

१२. शुक्र पर्वत से बुध पर्वत तक कोई रेखा जाती हो।

१३. गुरु पर्वत पर एक सीधी खड़ी रेखा हो।

१४. बुध पर्वत पर कोई सीधी तथा स्पष्ट रेखा हो।

१५. दोनों हाथों में गुरु पर्वत विकसित हों तथा सूर्य रेखाएं गहरी हों।

भाग्योदय योग :

भाग्योदय योग

परिभाषा : यदि मणिबन्ध से भाग्य रेखा प्रारम्भ होकर मध्यमा के दूसरे पौर तक वह रेखा जाती हो तो वह उपर्युक्त योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उसका भाग्योदय जीवन के प्रारम्भ में ही हो जाता है और भाग्य के बल से ही वह जीवन में सभी दृष्टियों से सफलता प्राप्त करता है।

पूर्ण आयु योग :

पूर्ण आयु योग

परिभाषा : यदि हथेली में जीवन रेखा पूर्ण रूप से विकसित होकर अपने उद्गम स्थान से मणिबन्ध तक जाती हो और उस पर किसी प्रकार का क्रॉस बिन्दु, धब्बा या रेखा न हो तो वह पूर्ण आयु प्राप्त करता है।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में यह योग होता है वह स्वस्थ रूप से पूर्ण आयु भोगता है।

टिप्पणी : कुछ विद्वानों ने इसके अलावा निम्नलिखित योगों को भी पूर्ण आयु योग कहा है।

१. यदि तीन मणिबन्ध अपने आप में पूर्ण हों तथा पहला मणिबन्ध जंजीरदार हो।

२. जीवन रेखा मणिबन्ध से स्पर्श करती हो।

३. भाग्य रेखा तथा जीवन रेखा का परस्पर सम्बन्ध बन गया हो

४. सूर्य रेखा अपने आप में निर्दोष हो तथा मस्तिष्क रेखा के आगे बढ़ी हुई हो।

५. हाथों के पर्वत पूर्ण रूप से विकसित हों तथा अंगूठा लम्बा पतला दृढ़ पीछे की तरफ झुका हुआ और सुन्दर हो।

६. स्वास्थ्य रेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो तथा उस पर किसी प्रकार का बिन्दु या क्रॉस न हो।
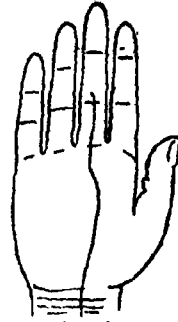
शताधिक आयुर्योग :

शताधिक आयुर्योग

परिभाषा : जिसके दोनों हाथों में जीवन रेखा अपने उद्‌गम स्थान से प्रारम्भ होकर शुक्र क्षेत्र को पूरा विस्तार देती हुई मणिबन्ध तक पहुंचती हो तो यह योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति सौ वर्ष से भी अधिक आयु भोगता तथा उसका जीवन आनन्दमय होता है।

अमितमायु योग :
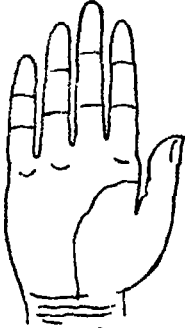
अमितमायु योग

परिभाषा : यदि दोनों हाथों में बुध, चन्द्र, गुरु तथा सूर्य पर्वत विकसित हों तथा जीवन रेखा निर्दोष लम्बी तथा स्पष्ट हो तो उसके हाथ में अमितमायु योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति अपने कार्यों से विश्व विख्यात होता है। एक दृष्टि से देखा जाय तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। उसका पारिवारिक जीवन सुखमय होता है आर्थिक दृष्टि से वह अत्यधिक सम्पन्न होता है तथा सौ से भी अधिक वर्षों तक स्वस्थ सानन्द व सुखमय आयु व्यतीत करता है।

टिप्पणी : सामुद्रिक शास्त्र में इस योग को अत्यन्त श्रेष्ठ माना है तथा यह योग होने से व्यक्ति लखपती बन जाता है। जीवन में भौतिक दृष्टि से उसे पूर्ण सुख मिलता है।

महाभाग्य योग :

महाभाग्य योग

परिभाषा : यदि व्यक्ति का जन्म दिन में हो तथा सूर्य रेखा पूर्ण लम्बाई लिए हुए हो, साथ ही सूर्य पर्वत अपने स्थान पर विकसित एवं पुष्ट हो, इसके अलावा चन्द्र और गुरु पर्वत सुदृढ़ हो तो उसके हाथ में महाभाग्य योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति उत्तम विचारों का धनी तथा समाज का नेतृत्व करने वाला होता है। उस व्यक्ति के सम्पर्क में जो भी व्यक्ति आता है वह अपने आपको सौभाग्यशाली समझता ह।। आर्थिक दृष्टि से इसके जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।
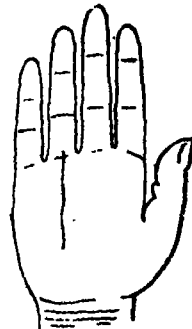
मित्रों का इसके जीवन में पूरा-पूरा सहयोग रहता है। बुढ़ापा बहुत अधिक सुखमय व्यतीत होता है और ऐसा व्यक्ति अपने ही प्रयत्नों से जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

यदि स्त्री के हाथ में यह योग हो तो उसका विवाह अत्यन्त उच्चस्तर के व्यक्ति से होता है तथा ऐसी स्त्री आचरण शील समाज में सम्मान प्राप्त करने वाली होती है।

मोक्ष प्राप्ति योग :
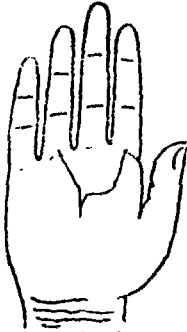
मोक्ष-प्राप्ति योग

परिभाषा : यदि गुरु पर्वत विकसित हो तथा गुरु रेखा अपने पर्वत से प्रारम्भ होकर सूर्य पर्वत तक जाती हो तो मोक्ष प्राप्ति योग होता है।

फल : यह योग जिस व्यक्ति के हाथ में होता है मृत्यु के पश्चात् उस व्यक्ति की सद्‌गति होती है।

टिप्पणी : हिन्दू धर्म शास्त्र के अनुसार मोक्ष प्राप्ति उत्तम स्थिति मानी जाती है। ऐसा व्यक्ति तभी हो सकता है जब वह अपने जीवन में सदाचारी धर्मात्मा तथा पुण्य करने वाला हो। साथ ही उस पर ईश्वर की पूरी-पूरी कृपा हो। जो व्यक्ति मोक्ष प्राप्त कर लेता है वह आवागमन के बन्धनों से छूट जाता है और उसका जीवन प्रभु के चरणों में समर्पित हो जाता है।

ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में ईश्वर पर पूरी आस्था रखने वाला न्यायपथ पर चलने वाला, ईश्वर भक्त, सदाचारी, परोपकारी कुलीन, एवं सत्यनिष्ठ होता है।

अस्वाभाविक मृत्यु योग :

परिभाषा : जिस व्यक्ति के दोनों हाथों मे जीवन रेखा पर क्रॉस का चिन्ह हो तो उस व्यक्ति की अस्वाभाविक मृत्यु होती है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उसकी मृत्यु स्वाभाविक नहीं होती।

टिप्पणी : सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने ऊपर लिखे योग के अलावा निम्न योगों को भी अस्वाभाविक मृत्यु योग बताया है।

१. यदि जीवन रेखा बीच में टूटी हुई हो।

२. यदि जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिन्ह हो।

अस्वाभाविक मृत्यु योग
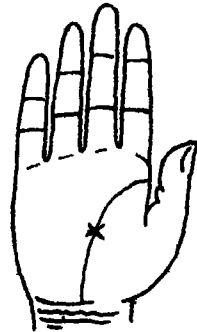
३. यदि जीवन रेखा बाल की तरह पतली तथा अस्पष्ट हो।
४. यदि जीवन रेखा का रंग पीलापन लिए हुए हो।
५. यदि जीवन रेखा पर धब्बे का चिन्ह हो।
६. यदि जीवन रेखा का प्रारम्भ गुच्छे के समान हो।
७. यदि जीवन रेखा के प्रारम्भ में दो रेखाएं बंटी हुई हों।
८. यदि जीवन रेखा पर त्रिकोण का चिह्न हो।
९. यदि जीवन रेखा शुक्र के क्षेत्र में धंसी हुई हो।
१०. यदि हथेली में जीवन रेखा अत्यन्त गहरी और चौड़ी हो :
११. यदि जीवन रेखा हथेली में बहुत छोटी हो।
१२. यदि जीवन रेखा अपने उद्गम स्थान से प्रारम्भ होकर मणिबन्ध के दूसरे पौर तक पहुंच गई हो।
१३. यदि चन्द्र पर्वत पर त्रिकोण का चिन्ह हो।
१४. यदि चन्द्र पर्वत पर एक से अधिक धब्बे हों।
१५. यदि चन्द्र रेखा पर त्रिकोण हो।
१६. यदि चन्द्र रेखा आगे बढ़कर जीवन रेखा को काटती हुई शुक्र पर्वत तक पहुंचती हो।
१७. यदि अनामिका के तीसरे पौर पर तारे का चिह्न हो।
१८. यदि स्वास्थ्य रेखा कई जगह से कटी हुई हो।
१९. यदि बुध पर्वत पर क्रॉस का चिन्ह हो।
२०. यदि जीवन रेखा तथा स्वास्थ्य रेखा जंजीरदार हो।
२१. यदि स्वास्थ्य रेखा पर दो त्रिकोण के चिन्ह हों।

ऊपर लिखे २१ योग भी अस्वाभाविक मृत्यु योग ही कहलाते हैं। यहां पर अस्वाभाविक मृत्यु से मेरा तात्पर्य निम्नलिखित प्रकार से है।

१. जंगल में भटक कर भूख प्यास से पीड़ित होकर मृत्यु प्राप्त करना।
२. पशुओं के पैरों से कुचल जाने के कारण।
३. पानी में डूबने से।
४. शूलपात से।
५. आपसी कलह से युद्ध होने पर।
६. जेल में रहने से।
७. किसी छूत की बीमारी से।
८. मकान के नीचे दब जाने से।
९. जंगल में रास्ता भटक जाने के कारण।
१०. वृक्ष से गिर जाने के कारण।
११. किसी बन्धन या रस्सी से।

१२. स्त्री के द्वारा ज़हर दिये जाने से।
१३. रोगमय या खराब अन्न खाने से।
१४. घाव सड़ जाने के कारण।
१५. लकड़ी से दब जाने के कारण।
१६. किसी पारिवारिक कुचक्र में उलझ जाने के कारण।
१७. बन्धन से।
१८. अन्य किसी भी कारण से जिससे कि स्वाभाविक मृत्यु न हो।

सर्प-दंश योग :

सर्पदंश योग

परिभाषा : यदि शुक्रवलय हो तथा उसमें त्रिकोण का चिन्ह हो तो यह योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उसकी मृत्यु सांप डसने से होती है।

दुर्मरण योग :

परिभाषा : यदि राहू क्षेत्र पर त्रिकोण का चिन्ह हो तथा सूर्य पर्वत अविकसित हो तो दुर्मरण योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उस व्यक्ति की मृत्यु स्वाभाविक रुप से नहीं होती। अपितु उसका दुर्मरण होना है।

दुर्मरण योग

टिप्पणी : विद्वानों ने इस योग के अलावा निम्न योग भी दुर्मरण योग बताए हैं।

१. यदि चन्द्र पर्वत पर एक बड़ा त्रिभुज हो और उसके अन्दर एक छोटा त्रिभुज और हो।
२. जीवन रेखा पर सफेद चिन्ह हो।
३. राहू रेखा आगे बढ़कर जीवन रेखा को काटती हो।
४. केतु पर्वत पर तारे का चिन्ह हो।
५. आयु रेखा बिल्कुल छोटी हो तथा उसके अन्त में क्रॉस का चिन्ह हो।
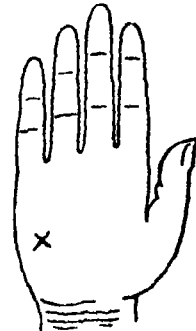
६. पूरे हाथ में बहुत अधिक त्रिभुज बिन्दु और धब्बे हो।

ऊपर लिखे योग भी दुर्मरण योग कहलाते हैं। इनमें से प्रत्येक की मृत्यु के निम्नलिखित कारण होते हैं।

१. शस्त्र से मृत्यु।
२. फांसी से मृत्यु।
३. जहर खाने से मृत्यु।
४. आग में जल जाने से मृत्यु।
५. पेट में शस्त्र लग जाने के कारण मृत्यु।
६. नाभी पर भीषण प्रहार से मृत्यु।

क्षय रोग योग :
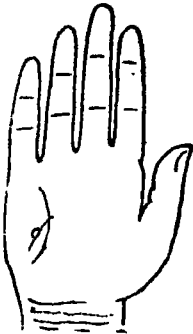
क्षय रोग योग

परिभाषा : यदि चन्द्र पर्वत पर वृत्त बन गया हो और उस वृत्त को चन्द्र रेखा काटती हो तो यह योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उसकी मृत्यु क्षय रोग की वजह से होती है।

अंगहीन योग :

परिभाषा : यदि शनि पर्वत पर तथा शनि रेखा पर दो या इससे अधिक वृत्त के चिन्ह हों तथा शनि रेखा और मंगल रेखा का सम्बन्ध बन गया हो तो अंगहीन योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उसके जीवन में उसका कोई एक अंग कटता ही है।

अंगहीन रोग
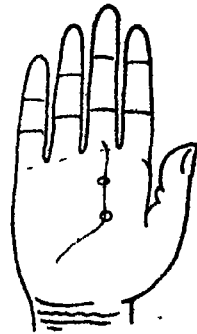
कूबड़ांग योग :

परिभाषा : यदि शनि रेखा चन्द्र रेखा तथा राहू रेखा मिलकर त्रिकोण का चिन्ह बनाते हों तो कूबड़ योग होता है।

फल : कूबड़ योग में जन्म लेने वाले व्यक्ति की पीठ बाहर निकल जाती है और उसका सीना अन्दर की ओर धंस जाता है।

एकपाद योग :

परिभाषा : एकपाद योग उस व्यक्ति के हाथ में होता है जिसमें स्वास्थ्य रेखा पर त्रिकोण हो तथा उस त्रिकोण से कोई रेखा प्रारम्भ होकर चन्द्र पर्वत तक पहुंचती हो।

फल : इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति एक पैर से लंगड़ा होता है।
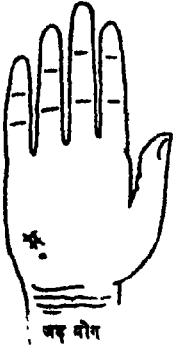
जड़ योग :

परिभाषा : यदि चन्द्र पर्वत पर बहुत अधिक धब्बे, बिन्दु और आड़ी तिरछी रेखाएं हों तो जड़ योग होता है।

फल : इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति बहरा होता है।

नेत्रनाश योग :

परिभाषा : यदि राहू रेखा तथा चन्द्र रेखा का सम्बन्ध हो तो नेत्र नाश योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उसकी आंखें कमजोर रहती हैं तथा वह नेत्र पीड़ा से पीड़ित रहता है ।

टिप्पणी : विद्वानों ने इसके अलावा निम्न योगों को भी नेत्र नाश योग माना है :

नेत्र नाश योग

१. यदि सूर्य पर्वत पर त्रिकोण का चिन्ह हो ।

२. यदि सूर्य रेखा तथा चन्द्र रेखा आपस में मिलकर गुच्छा बनाती हों ।

३. यदि सूर्य रेखा बिल्कुल कमजोर हो ।

४. यदि हथेली में चन्द्र रेखा का अभाव हो ।

५. यदि सूर्य पर्वत अपने स्थान से खिसककर शनि पर्वत से मिल गया हो ।

६. यदि चन्द्र पर्वत हथेली के बाहर की ओर बढ़ रहा हो ।

७. यदि चन्द्र रेखा पर दो त्रिभुज हों ।

८. यदि सूर्य रेखा अनामिका के दूसरे पौर तक पहुंचती हो ।

९. यदि हथेली के मध्य में लाल धब्बा हो ।

अंध योग :

अंध योग

परिभाषा : यदि हथेली में बुध एवं चन्द्र पर्वत का अभाव हो तो अंध योग होता है ।

फल : अंध योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति अंधा होता है ।

टिप्पणी : विद्वानों ने निम्नलिखित योग भी अंध योग माने हैं :
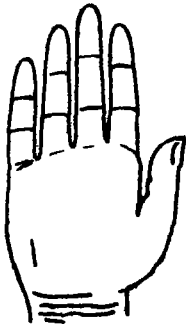
१. यदि सूर्य रेखा पर क्रॉस का चिन्ह हो ।

२. यदि सूर्य रेखा मंगल पर्वत तक जाती हो और अन्त में बिन्दु हो ।

३. यदि चन्द्र रेखा मुड़कर मणिबन्ध तक पहुंचती हो ।

४. यदि मंगल रेखा हथेली के दूसरी तरफ आ रही हो ।

५. यदि राहू रेखा का सम्बन्ध मंगल रेखा से हो गया हो ।

६. यदि केतु पर्वत तथा चन्द्र पर्वत में लाल बिन्दु हो ।

शीतला योग :

शीतला योग

परिभाषा : यदि गुरु पर्वत के नीचे सूर्य, शनि तथा मंगल रेखाओं का सम्बन्ध होता हो तो शीतला योग होता है।

फल : जिसके हाथ में शीतला योग होता है उसे अपने जीवन में चेचक के रोग से ग्रसित होना पड़ता है।

सर्पभय योग :

सर्पभय योग

परिभाषा : यदि हाथ में राहू रेखा जंजीरदार हो त सर्पभय योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उसे जीवन में सांप काटता है। और यदि रेखा दृढ़ हो तो सर्प के काटने से व्यक्ति की मृत्यु भी हो जाती है।

टिप्पणी : विद्वानों ने इसके अलावा निम्न योग भी सर्प भय योग बताये हैं।

१. यदि हाथ के सभी मणिबन्ध जंजीरदार हों।
२. यदि राहू और केतु पर्वत के बीच दो त्रिकोणों के चिह्न हों।
३. यदि स्वास्थ्यरेखा कई जगह से कटी हुई हो और अन्त में काला बिन्दु हो।

ग्रहण योग :

ग्रहण योग

परिभाषा : यदि राहू और चन्द्रमा की रेखाएं परस्पर सुदृढ़ रूप से मिलती हों तो ग्रहण योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह जीवन भर परेशानियों से ग्रस्त रहता है और उसके जीवन में निरन्तर बाधाएं आती रहती हैं। एक प्रकार से वह अपने जीवन में हीन भावना का शिकार हो जाता है।

चांडाल योग :

चाडाल योग

परिभाषा : यदि हथेली में गुरु और राहू की रेखाएं परस्पर मिलती हों तो चांडाल योग होता है।

फल : इस योग में उत्पन्न व्यक्ति भाग्यहीन होता है। वह आजीविका के लिये बहुत अधिक संघर्ष करता है। मन्द बुद्धि का ऐसा बालक निरन्तर कठोर संघर्षों में ही जीवित रहता है।

व्रण योग :

व्रण योग

परिभाषा : यदि मंगल रेखा पर त्रिकोण का चिह्न हो तथा उसके बीच में सफेद बिन्दु हो तो व्रण योग होता है।

फल : व्रण योग में उत्पन्न व्यक्ति की मृत्यु घावों के सड़ने से होती है।

गल रोग योग :

गलरोग योग

परिभाषा : यदि चन्द्र पर्वत दबा हुआ हो तथा उस पर जाली-सी हो, तो गल रोग योग होता है।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में यह योग होता है वह जीवन भर गले के रोग से पीड़ित रहता है।

लिगंश्छेदन योग :
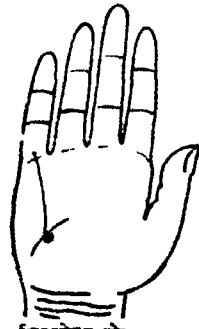
लिगश्छेदन योग

परिभाषा : यदि बुध रेखा तथा राहू रेखा का सम्बन्ध हो तथा सम्बन्ध के स्थान पर काला चिह्न हो तो यह योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उस व्यक्ति का लिंग या तो किसी वजनी वस्तु से कुचल जाता है या व्यक्ति स्वंय अपने लिंग को काट देता है।

कलह योग :

परिभाषा : यदि दोनों हाथों में चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरे हुए हों तथा उस पर वृत के चिह्न हों तो कलह योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उसका पूरा जीवन कलह में ही व्यतीत होता है और कलह से ही दुखी होकर उसकी मृत्यु होती है।

कलह योग

उन्माद योग :

उन्माद

परिभाषा : यदि सूर्य पर्वत पर त्रिकोण का चिह्न हो तथा सूर्य रेखा उस त्रिकोण को काटती हो तो उन्माद योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति जरूरत से ज्यादा बोलने वाला गप्पें लगाने वाला तथा बकवादी होता है।

कुष्ठ रोग योग :

परिभाषा : यदि हथेली में मंगल और बुध रेखाएं मिल कर मणिबन्ध तक जाती हों तो यह योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह कुष्ट रोग से पीड़ित रहता है।

टिप्पणी : विद्वानों ने इसके अलावा निम्न योगों को भी कुष्ट रोग योग माना है :

१. यदि चन्द्रमा तथा हर्षल का सम्बन्ध हो।
२. यदि हथेली के मध्य में दो त्रिकोण हों तथा आपस में एक दूसरे को काटते हों।

कुष्ट रोग योग

कुष्ट रोग एक भयानक रोग है इसके होने पर पूरे शरीर में सफेद-सफेद दाग पड़ जाते हैं। उसका शरीर बदरंग हो जाता है तथा घाव सड़ने से पीप पड़ जाती है।

जलोदर रोग योग :

जलोदर रोग योग

परिभाषा : यदि चन्द्र पर्वत बहुत अधिक विकसित हो तथा चन्द्र, रेखा सीढ़ीदार होकर प्रथम मणिबन्ध को स्पर्श करती हो तो जलोधर रोग योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उसे जलोदर रोग हो जाता है।

टिप्पणी : जलोदर रोग में पेट में बहुत अधिक पानी का जमाव हो जाता है और पेट निरन्तर फूलता रहता है। अन्त में इस रोग से उसकी मृत्यु हो जाती है।
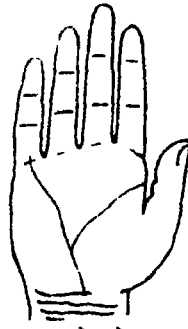
मुनि योग

परिभाषा : यदि हथेली में तर्जनी उंगली अनामिका से लम्बी हो, गुरु पर्वत अपने स्थान पर फूला हुआ हो तथा उस पर स्वस्तिक का चिह्न हो तो मुनि योग होता है।

मनि योग

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह सांसारिक छल प्रपंच से दूर हटकर साधुवत् जीवन व्यतीत करता है। तथा अधिक समय तक मौन ही रहता है।

टिप्पणी : यह योग होने पर व्यक्ति पूरी तरह से सामाजिक नहीं रह पाता। और न उसके जीवन में परिवार का सुख भी मिलता है। बचपन से ही उसकी प्रवृत्ति साधु की तरह हो जाती है। वह अधिक से अधिक एकान्त में रहना पसन्द करता है।
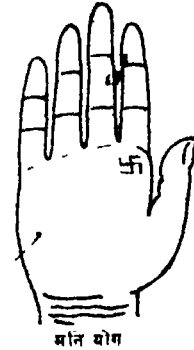
काहल योग :

काहल योग

परिभाषा : यदि मंगल पर्वत विकसित हो तथा उससे रेखाएं निकलकर शनि, सूर्य तथा बुध पर्वत को स्पर्श करती हों तो काहल योग होता है।

फल : इस योग में उत्पन्न व्यक्ति बलवान शरीर तथा दृढ़ चरित्र का व्यक्ति होता है। साहसिक कार्यों में उसकी बहुत अधिक रुचि रहती है। ऐसा व्यक्ति पुलिस या सेना में बहुत अधिक ऊंचे पद पर पहुंचता है। भौतिक दृष्टि से इसके जीवन मे कोई अभाव नहीं रहता। परन्तु मेरे अनुभव में यह आया है कि ऐसा व्यक्ति बहुत अधिक बुद्धिमान नहीं होता जिसकी वजह

से एक बार सर्वोच्च पद पर पहुंचकर भी उसका शीघ्र ही पतन हो जाता है। सही रूप में देखा जाय तो उसे उसके पद के अनुसार लोकप्रियता नहीं मिलती।

बुध आदित्य योग :

परिभाषा : यदि हथेली में सूर्य और बुध के पर्वत आपस में मिल गये हों तो यह योग होता है।

फल : जिसके हाथ में वह योग होता है वह व्यक्ति बुद्धिमान चतुर एवं परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको ढालने की क्षमता रखने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति अपने कार्यों से प्रसिद्ध होता है तथा सम्पूर्ण भोग भोगते हुए सुखपूर्ण जीवन व्यतीत करता है
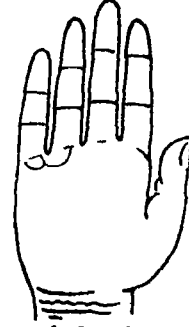
बुध आदित्य योग

दिवालिया योग :
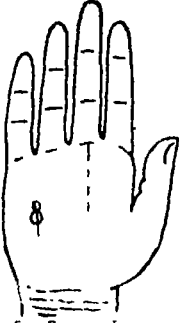
दिवालिया मार्ग

परिभाषा : यदि भाग्य रेखा छोटी तथा कई स्थानों पर कटी हुई हो, साथ ही स्वास्थ्य रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो उसके हाथ में दिवालिया योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह आर्थिक दृष्टि से हमेशा परेशान रहता है। और अन्त में उसको दिवाला निकालना पड़ता है।

जुआ योग :

परिभाषा : यदि मध्यमा और अनामिका बराबर लम्बाई लिए हुए हो तो यह योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह जुए के माध्यम से धन कमाता है।

जुआ योग
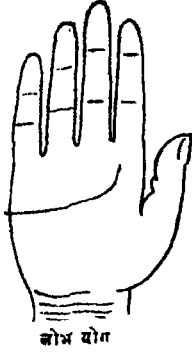
लोभ योग

लोभ योग :

परिभाषा : यदि हृदय रेखा सीधी चलकर हथेली के आरपार पहुंचती हो तो लोभ योग होता है ।

फल : जिसके हाथ मे यह योग होता है वह जरूरत से ज्यादा लोभी और कंजूस होता है ।

चोरी योग :

परिभाषा : यदि बुध पर्वत विकसित हो तथा उस पर जाल का चिह्न हो तो चोरी योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है जीवन में उसके घर पर कई बार चोरियां होती हैं ।

टिप्पणी : इसके अलावा विद्वानों ने निम्न योग भी चोर योग बताये हैं ।

१. बुध पर्वत अत्यन्त विकसित हो तथा स्वास्थ्य रेखा पर द्वीप हो ।

२. यदि कनिष्ठिका के अन्तिम पर्व पर बिन्दु या क्रॉस का चिन्ह हो ।

३. यदि अनामिका के तीसरे पर्व पर जरूरत से ज्यादा खड़ी रेखाएं हों ।

४. यदि कनिष्ठिका के अन्तिम पर्व पर क्रॉस हो ।
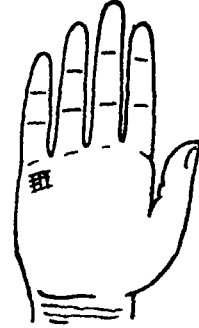
चोरी योग

चाप योग :

चाप योग

परिभाषा : यदि सूर्य रेखा अत्यन्त छोटी-छोटी रेखाओं में जुड़कर बनी हो तो चाप योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उसका बचपन कष्ट में बीतता है परन्तु जीवन में २८वें वर्ष के बाद से आगे जीवन पर्यन्त वह सभी दृष्टियों से पूर्ण सुखमय जीवन व्यतीत करता है । ऐसा व्यक्ति यात्रा का शौकीन होता है तथा यात्रा के माध्यम से ही धन-संग्रह कर पाता है । ऐसे व्यक्ति में घमण्ड भी जरूरत से ज्यादा होता है ।
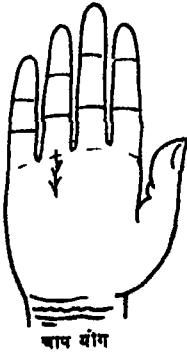
छाप योग :

परिभाषा : यदि गुरु पर्वत विकसित हो तथा उस पर छोटी-छोटी रेखाओं से क्रॉस का चिह्न बना हो तो वह व्यक्ति छाप योग से संबंधित होता है।

फल : जिसके हाथ मे छाप योग होता है वह व्यक्ति अपने जीवन में अत्यन्त उच्च पद पर पहुंचता है तथा आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करता है। आर्थिक दृष्टि से ऐसा व्यक्ति सौभाग्यशाली कहा जा सकता है।

छाप योग

भेरी योग :
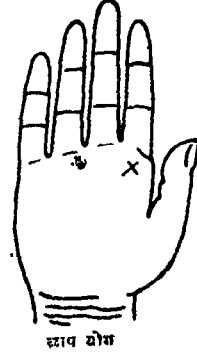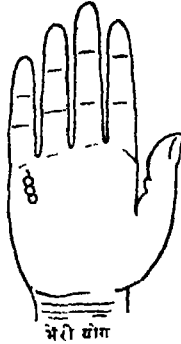
भेरी योग

परिभाषा : यदि दाहिने हाथ में बुध पर्वत विकसित हो तथा बुध रेखा छोटी-छोटी रेखाओं से मिलकर रज्जूवत बनी हो पर वह रेखा टूटी हुई न हो तो भेरी योग होता है।

फल : इस योग में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति स्वस्थ, सबल, दीर्घायु, धनवान, गुणवान, चतुर तथा परिश्रमी होता है। उसके जीवन में मित्रों की संख्या बहुत अधिक होती है और वह शत्रुओं को भी मित्र बनाने की कला जानता है।

मृदंग योग :

परिभाषा : यदि हथेली में शनि पर्वत पूर्ण विकसित हो तथा शनि रेखा छोटी-छोटी रेखाओं से बनकर आगे बढ़ी हो तो मृदंग योग होता है।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में मृदंग योग होता है वह अपने भाग्य के बल पर जीवन मे उन्नति करता है तथा अपने प्रयत्नों में सफल होने पर प्रसिद्धि प्राप्त करता है। उसका काम करने का अपना ही तरीका होता है। और इसी वजह से उसके कार्य में एक नई दिव्यता आ जाती है। ऐसे व्यक्ति का प्रभाव अन्य लोगों पर बहुत अधिक होता है।
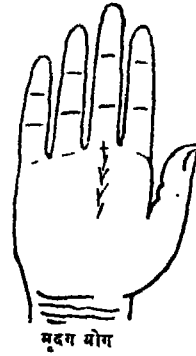
मृदंग योग

श्रीनाथ योग :
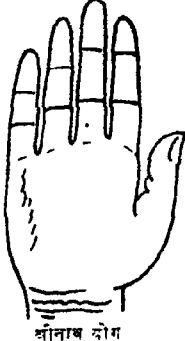
श्रीनाथ योग

परिभाषा : यदि हथेली में चन्द्र पर्वत विकसित हो तथा चन्द्र रेखा छोटी-छोटी रेखाओं से मिलकर ऊपर की ओर बढ़ी हो परन्तु कहीं से भी टूटी न हो तो श्रीनाथ योग होता है।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में श्रीनाथ योग होता है वह व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से पूर्ण धनवान, सुखी, एवं संपन्न होता है। उसके पारिवारिक जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता नही होती। उसका भाग्य निरंतर उसका सहायक रहता है तथा अपने प्रयत्नों से वह उच्चस्तरीय सफलता प्राप्त करता है।

विदेश यात्रा योग :

परिभाषा : यदि हथेली में चन्द्र पर्वत पुष्ट हो तथा उससे सीधी सरल रेखा बुध पर्वत की ओर जाती हो तो विदेश योग बनता है।

फल : जिसके हाथ मे यह योग होता है वह निश्चय ही किसी समुद्रपारीय देश की यात्रा करता है।

टिप्पणी : यदि इस रेखा से कोई सहायक रेखा निकलकर सूर्य पर्वत की ओर जाती हो तो वह विशेष क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त करने के कारण विदेश यात्रा करता है।

विदेश यात्रा योग

यदि इससे कोई रेखा निकल कर शनि पर्वत की ओर जाती हो तो वह व्यापारिक कार्यो से विदेश यात्रा करता है।

यदि इस रेखा से कोई रेखा निकलकर गुरु पर्वत की ओर जाती हो तो शिक्षा प्राप्त करने अथवा राजकीय कार्यों से वह विदेश यात्रा करता हैं।

यदि इससे कोई सहायक रेखा निकल कर मंगल पर्वत तक जाती हो तो वह मिलिट्री के कार्यों से या सेना में उच्च पद पर होने के कारण विदेश यात्रा करता है।

यदि इससे कोई सहायक रेखा निकलकर शुक्र पर्वत की ओर जाती हो तो वह व्यक्ति मनोरंजन के लिए विदेश यात्रा करता है।

यदि इससे कोई सहायक रेखा निकल कर प्रजापति पर्वत की ओर जा रही हो तो वह व्यापार करने के लिए या वहाँ पर स्थायी रूप से रहने के लिए विदेश यात्रा करता है।
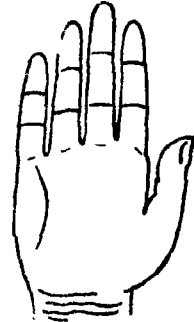
यदि इस रेखा से कोई सहायक रेखा निकल कर नीचे की ओर जा रही हो तो उसकी विदेश यात्रा कम समय की होती है और वहां बदनाम होकर आता है।

इसके अलावा विद्वानों ने निम्नलिखित योग भी विदेश यात्रा योग माने हैं :

१. यदि चन्द्र पर्वत से कोई सहायक रेखा शुक्र पर्वत की ओर जाती हो तथा शुक्र पर्वत एवं चन्द्र पर्वत पूर्णतः विकसित हों।

२. यदि चन्द्र पर्वत पर भंवर का चिह्न हो।

३. यदि बुध पर्वत पर बुध मुद्रा हो और उससे कोई रेखा निकल कर चन्द्र पर्वत की ओर जा रही हो।

पुष्कल योग :

पुष्कल योग

परिभाषा . यदि शनि पर्वत तथा शुक्र पर्वत बहुत अधिक पुष्ट तथा लालिमा लिए हुए हों और भाग्य रेखा का प्रारम्भ शुक्र पर्वत से होता हो जोकि शनि पर्वत के मध्य बिन्दु तक पहुंचती हो तो उसके हाथ में पुष्कल योग होता है।

फल : पुष्कल योग से सम्पन्न व्यक्ति अत्यन्त ही सुन्दर तथा आकर्षक होता है। उसके व्यक्तित्व का प्रभाव दूसरों पर आसानी से पड़ता है और एक बार जिसके सम्पर्क में आ जाता उस व्यक्ति के सुख-दुख में वह सहायक रहता है तथा जीवन भर निभाने का प्रयत्न करता है। आर्थिक दृष्टि से इसके जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहती। और अत्यन्त ही आनन्द पूर्ण जीवन व्यतीत करने में विश्वास रखता है। नौकरी में ऐसा व्यक्ति अपने प्रयत्नों से ऊंचा उठता है तथा सफलता प्राप्त करता है।

टिप्पणी : विद्वानों ने इसके अलावा निम्नलिखित योग भी पुष्कल योग माने है।

१. यदि भाग्य रेखा सीधी पतली तथा स्पष्ट होकर चन्द्र पर्वत से सम्बन्धित हो अर्थात् ऐसी रेखा का उद्गम चन्द्र पर्वत हो।

२. यदि भाग्य रेखा बुध पर्वत से प्रारम्भ होकर बिना किसी से कटे हुए शनि पर्वत तक पहुंचती हो।

३. यदि चन्द्र रेखा तथा भाग्य रेखा मिलकर शनि पर्वत तक जाती हो।

४. यदि भाग्य रेखा प्रथम मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर ऊपर जाती हो तथा उसकी एक सहायक रेखा सूर्य पर्वत तक पहुंचती हो।

चामर योग :

परिभाषा : यदि हाथ की उंगलियां लम्बी हों तथा उस पर नाखून रक्तिम आभा लिए हुए हो साथ ही सूर्य रेखा लम्बी पुष्ट हो तथा उसका उद्गम मणिबन्ध से हुआ हो। इसके साथ ही भाग्य रेखा का उद्गम भी मणिबन्ध से हुआ हो और दोनों रेखाएं उद्गम स्थान पर मिली हुई हों तो चामर योग होता है।
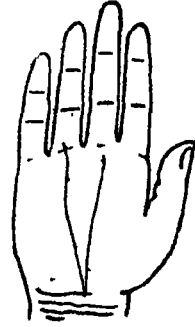
फल : इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य अत्यन्त उच्च प्रतिष्ठित एवं विद्वान लोगों के द्वारा पूजा जाता है तथा वह स्वयं भी अपने आप में विद्वान होता है और विद्वता के कारण ही वह देश तथा विदेश में सम्मानित होता है। ऐसा व्यक्ति अपने ही परिश्रम से सफल होता है और अपनी सफलता के बल पर यश उपार्जित करता है।

चामर योग

टिप्पणी : इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति दीर्घायु भी होता है। यहां दीर्घायु से मेरा तात्पर्य ७० से १०० वर्ष के बीच की आयु का व्यतीत करना है।

मालिका योग :
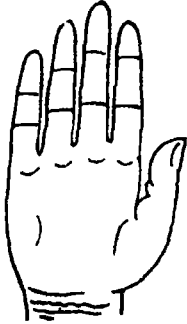
मालिका योग

परिभाषा : यदि हाथ में राहु केतु को छोड़कर अन्य सभी ग्रहों से सम्बन्धित पर्वत बलवान और पुष्ट हों तो मालिका योग होता है।

फल : यदि हथेली में मालिका योग हो तो ऐसा व्यक्ति राज्य में उंचे पद पर स्थापित होता है तथा वह नेतृत्व के कारण समाज में सम्मानित होता है।

यहां सात ग्रहों से तात्पर्य सूर्य, चन्द्र, मंगल बुध, गुरु, शुक्र, तथा शनि है। परन्तु इसमें ध्यान रखने की बात यह है कि प्रत्येक पर्वत का एक मध्य बिन्दु होता है और यदि उस ग्रह से संबन्धित रेखा उस मध्य बिन्दु को भली प्रकार से स्पष्ट कर रही हो अर्थात् उस मध्य बिन्दु को स्पर्श कर रही हो तो वह ग्रह सर्वाधिक बलवान माना जाता है। हाथ में इन सातो ग्रहों में से जो ग्रह सबसे अधिक बलवान हो तो उस ग्रह से सम्बन्धित मालिका योग समझना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि गुरु पर्वत के मध्य बिन्दु पर गुरु रेखा स्पर्श कर रही हो तो अन्य पर्वतों की अपेक्षा गुरु पर्वत ज्यादा श्रेष्ठ माना जायेगा और ऐसा होने पर उस हाथ में गुरु मालिका योग कहलाएगा। इसी प्रकार सूर्य मालिका योग, चन्द्र मालिका योग आदि हो सकते हैं। इनसे संबंधित फल इस प्रकार से हैं :

१. सूर्य मालिका योग : यदि सूर्य से मालिका योग बना हो तो वह व्यक्ति शासन में महत्वपूर्ण पद को सुशोभित करता है तथा अपने प्रयत्नों से सचिव के पद तक पहुंच जाता है।

२. चन्द्र मालिका योग : जिसके हाथ में चन्द्र मालिका योग होता है वह व्यक्ति नेवी में कमाण्डर बनता है। अथवा जल के समीप नगरों में व्यापार करने से विशेष लाभ उठाता है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में कई बार विदेश यात्राएं करता है।

३. भौम मालिका योग : यदि मंगल ग्रह से मालिका योग बनता है तो वह व्यक्ति पुलिस या सेना में उच्च पद सुशोभित करता है तथा उसे जीवन में धन एवं वाहन का पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

४. बुध मालिका योग : यदि हाथ में बुध मालिका योग हो तो ऐसा व्यक्ति दयालु, दानी एवं परोपकारी होता है। विदेश यात्राएं कई बार करता है तथा अपने प्रयत्नों से सम्मान एवं ख्याति अर्जित करता है।

५. गुरु मालिका योग : यदि हाथ में गुरु मालिका योग हो तो वह व्यक्ति वेद धर्म शास्त्र आदि में पूर्ण रुचि लेने वाला तथा दानी एवं परोपकारी होता है। ऐसा व्यक्ति सामाजिक कार्यों में अग्रणी रहता है तथा समाज में पूर्ण सम्मान प्राप्त करता है।

६. शुक्र मालिका योग : जिसके हाथ में शुक्र मालिका योग होता है वह सच्चा पितृ-भक्त होता है साथ ही उसे धन की कोई चिन्ता नहीं रहती। ऐसे व्यक्ति का शरीर सुन्दर एवं आकर्षक होता है तथा अपने कार्यों से वह प्रसिद्धि एवं यश, सम्मान प्राप्त करता है।

७. शनि मालिका योग : शनि मालिका योग रखने वाला व्यक्ति दीर्घायु होता है परन्तु ऐसे व्यक्ति के जीवन में संघर्ष जरूरत से ज्यादा होता है। जीवन मे ३६वें वर्ष के बाद से वह पूर्ण यश तथा सम्मान प्राप्त करता है।

शंख योग :

परिभाषा : यदि शुक्र पर्वत का क्षेत्र विस्तृत हो तथा उससे एक रेखा शनि पर्वत पर और दूसरी रेखा सूर्य पर्वत पर जाती हो तो शंख योग होता है।

शंख योग

फल : जिसके हाथ में शंख योग होता है वह व्यक्ति पूरा जीवन आनन्द से व्यतीत करता है। दूसरों के प्रति उसका व्यवहार अत्यन्त मधुर एवं सरल होता है तथा उसकी पत्नी सुन्दर, सुशील एवं शिक्षित होती है। ऐसा व्यक्ति धर्म विज्ञान आदि मे भी पूर्ण रुचि रखता है। एक प्रकार से देखा जाय तो उसके जीवन में भौतिकता और आध्यात्मिकता का अपूर्व समन्वय है।
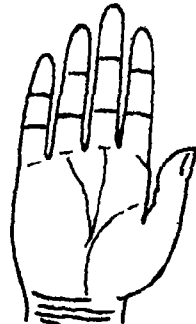
वीर योग :

वीर योग

परिभाषा : यदि मंगल पर्वत पुष्ट एवं दृढ़ हो तथा उस पर वृत्त का चिह्न हो तो वीर योग होता है।

फल : इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति मिलिट्री अथवा देश रक्षा से संबंधित कार्यों में अग्रणी होता है तथा अत्यन्त उच्च पद पर पहुंचता है।
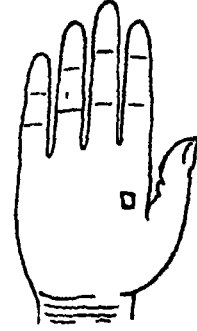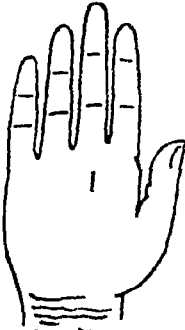
प्रेष्य योग :

प्रेष्य योग

परिभाषा : यदि हाथ में भाग्य रेखा का अभाव हो तो प्रेष्य योग होता है।

फल : प्रेष्य योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति गरीब, दुखी, दूसरों के कटु वचन सुनने वाला, विद्या से हीन, तथा उम्र भर गुलामी करने वाला होता है।

टिप्पणी : विद्वानों ने निम्न योग भी प्रेष्य योग बताये है।

१. यदि हाथ में सूर्य रेखा कई जगह टूटी हुई हो।

२. यदि सूर्य रेखा का उद्गम राहू पर्वत से अथवा केतु पर्वत से है।

३. यदि भाग्य रेखा जीवन रेखा के पास हथेली के बाहर जा रही हो।

भिक्षुक योग :

भिक्षुक योग

परिभाषा : यदि भाग्य रेखा पर क्रॉस का चिह्न ह तो भिक्षुक योग होता है।

फल : भिक्षुक योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति भाग्यहीन, स्त्री पुत्र तथा परिवार के सुख से वंचित, विपरीत स्थितियों में रहने वाला, अपनी आजीविका के लिए हर समय चिन्तित रहने वाला गरीब व्यक्ति होता है।

टिप्पणी : सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने इसके अलावा निम्न योग भी भिक्षुक योग बताये हैं।

१. यदि हाथ में शुक्र पर्वत दो भागों में विभाजित हो।

२. यदि केवल मात्र एक ही मणिबन्ध हो।

३. यदि बुध पर्वत हथेली के बाहर निकला हुआ हो तथा उस पर सफेद धब्बे हों।

४. यदि सूर्य रेखा अनामिका के दूसरे पर्वत तक पहुंची हुई हो।

५. यदि टूटी हुई स्वास्थ्य रेखा से कोई रेखा निकल कर नीचे मणिबन्ध तक जाती हो।

दरिद्र योग :

दरिद्र योग

परिभाषा : यदि सूर्य रेखा अत्यन्त कमजोर और टूटी हुई हो तो दरिद्र योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में दरिद्र योग होता है वह व्यक्ति आजीविका से वंचित, निर्धन, चिन्तातुर और निरन्तर कष्ट में रहने वाला होता है ।

टिप्पणी : इसके अलावा निम्नलिखित योग भी दरिद्र योग कहलाते हैं ।

१. यदि शुक्र पर्वत पर शंख का या भंवर का चिह्न हो ।

२. यदि मध्यमा के ऊपरी सिरे पर क्रॉस का चिन्ह हों।

३. यदि हाथ में बहुत अधिक आडी-तिरछी रेखाएं तथा जाल हो ।

रेका योग :

यदि हथेली उथली हो तथा हथेली के बीच में वर्ग का चिन्ह हो तो रेका योग होता है ।

फल : इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति कमजोर स्मरण शक्ति रखने वाला, मलीन बुद्धि एवं लगभग मूर्ख होता है। धन के लिए यह हमेशा परेशान रहता है तथा इसका स्वभाव चिडचिड़ा हो जाता है जिसकी वजह से यह हमेशा परेशान रहता है। एक प्रकार से देखा जाय तो यह व्यक्ति चतुर, विवादी चुगलखोर तथा आलस्य के कारण लापरवाही बरतने वाला तथा सौभाग्यहीन होता है ।

रेका योग

टिप्पणी : पंडितो ने इसके अलावा निम्नलिखित योग भी रेका योग माने हैं ।

१. यदि हाथ में शुक्र तथा गुरु पर्वत अत्यन्त कमजोर हों तथा उस पर सफेद बिन्दु हो ।
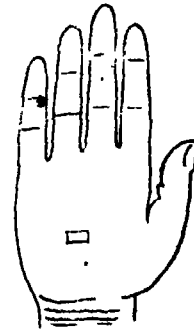
२. यदि हाथ में दो से अधिक त्रिभुज चिह्न हों।

३. बुध पर्वत पर क्रॉस का चिन्ह हो और उसके नीचे बिन्दु हो।

४. हाथ की उंगलियां तथा अंगूठा छोटा हो और उसके नाखून पीले छोटे तथा लगभग गोल हों।

राजभंग योग :

परिभाषा : हस्त रेखा शास्त्र के अनुसार निम्नलिखित योग राजभंग योग कहलाते हैं।

राजभग योग

१. यदि उंगलियों की गांठें फूली हुई हों तथा लगभग बाहर बढ़ी हुई हों।

२. यदि सभी उंगलियां चपटी हों तथा तर्जनी पर सफेद बिन्दु हो।

३. यदि नाखूनों के अग्र भाग चपटे तथा अन्दर की ओर धंसे हुए हों।

४. यदि अंगूठे के पहले पर्व पर ३-४ लम्बी रेखाएं हों।
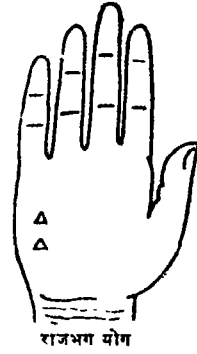
५. यदि उंगलियों के अग्रभाग आगे की ओर झुके हुए हो।

६. यदि हथेली बहुत मोटी और सख्त हो तथा उंगलिया छोटी-छोटी हों।

७. यदि सभी उंगलियां कठोर लम्बी तथा दबी हुई हों और उनके जोड़ भद्दे हों।

८. यदि चन्द्र पर्वत पर दो त्रिकोण हों तथा उन दोनों के बीच में बिन्दु का चिन्ह हो।

९. यदि शुक्र पर्वत हथेली के बाहर की ओर निकला हुआ हो।

१०. यदि स्वास्थ्य रेखा मे कई पतली-पतली रेखाएं निकल कर नीचे की ओर जा रही हों।

११. यदि मस्तिष्क रेखा कमजोर हो तथा उस पर काले बिन्दु हों।

१२. यदि गुरु तथा सूर्य की रेखाएं लहरदार हों।

१३. यदि हाथ के मध्य में जाली हो तथा इसी प्रकार की जाली सूर्य पर्वत पर भी हो।

१४. यदि सभी उंगलियों के प्रथम पर्व पर नक्षत्र के चिन्ह हों।

१५. यदि गुरु रेखा सीढ़ीदार हो।

१६. यदि सूर्य रेखा के नीचे द्वीप का चिन्ह हो।

१७. यदि शुक्र रेखा तथा चन्द्र रेखा धब्बेदार हो।

१८. यदि सूर्य रेखा का प्रारंभ फुन्दनेदार हो।

१६. यदि हाथ में बुध पर्वत पर जाली का चिन्ह हो तथा उसके प्रथम पर्व पर बिन्दु हो।

२० यदि शनि पर्वत पर एक दूसरे को काटती हुई अस्त-व्यस्त रेखाएं हों।

२१. यदि चन्द्र पर्वत पर शनि का चिन्ह हो।

२२. यदि सूर्य पर्वत तथा बुध पर्वत का हाथ में अभाव हो।

२३. यदि बुध पर्वत पर वृत्त का चिन्ह हो।

२४. यदि ऊर्ध्व मंगल पर क्रॉस धब्बा या जाली हो।

२५. यदि जीवन रेखा बीच में कटी हुई हो तथा उसके साथ ही साथ वह मोटी और लाल रंग की हो।

२६. यदि मस्तिष्क रेखा जंजीरदार हो।

२७. यदि जीवन रेखा के प्रारंभ में कई शाखाएं निकलती हों।

२८. जीवन रेखा से एक रेखा फुन्दनेदार होकर चन्द्र पर्वत को जा रही हो।

२९. यदि हृदय रेखा दो तीन जगहों से टूटी हुई हो।

३०. यदि वृहस्पति और शनि के बीच में चक्र का चिह्न हो।

३१. यदि मस्तिष्क रेखा पीली तथा कमजोर हो।

३२. यदि हृदय रेखा तथा जीवन रेखा के बीच क्रॉस का चिह्न हो।

३३. यदि मस्तिष्क रेखा कमजोर तंग-सी होकर हथेली के पार जा रही हो।

३४. यदि जीवन रेखा चन्द्र पर्वत की ओर झुक रही हो तथा तर्जनी पर तारे का चिह्न हो।

३५. यदि दोनों हाथों में मस्तिष्क रेखा जरूरत से ज्यादा कमजोर तथा टूटी हुई हो।

३६. यदि मस्तिष्क रेखा पर सफेद धब्बे हों।

फल : हाथ मे चाहे कितने ही अच्छे योग हों परन्तु यदि उसके हाथ मे राज-भंग योग भी हो तो वह जातक दुखी, परेशान, चिन्तित, तथा दरिद्र जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

राज राजेश्वर योग :

राज राजेश्वर योग

परिभाषा : यदि हथेली में सूर्य पर्वत विकसित हो तथा सूर्य रेखा हथेली के मध्य में आकर शुक्र पर्वत की ओर जाती हो तथा रेखा पर किसी प्रकार की बाधा न हो तो राज राजेश्वर योग होता है।

फल : जिसके हाथ में राज राजेश्वर योग होता है वह व्यक्ति पूर्ण सुखी, सफल, धनवान तथा विविध ऐश्वर्य का भोग करने वाला होता है।

टिप्पणी : निम्न योग भी इससे सम्बन्धित हैं :

१. यदि हथेली लम्बी हो तथा उंगलियों के बीच में सन्धि न हो।

२. यदि अनामिका और कनिष्ठिका उंगलियां बराबर हों।
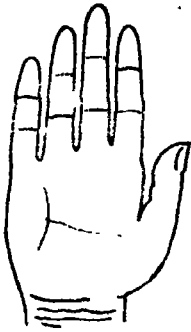
ब्रह्माण्ड योग :

ब्रह्माण्ड योग

परिभाषा : आदर्श हाथ हो तथा हाथ में चन्द्र पर्वत तथा शुक्र पर्वत का दो लम्बी रेखाओं से परस्पर सम्बन्ध हो तो ब्रह्माण्ड योग होता है।

फल : जिसके हाथ में ब्रह्माण्ड योग होता है वह व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त सम्पन्न होता है तथा राजा के समान जीवन व्यतीत करता है।

टिप्पणी : सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने निम्नलिखित योग भी ब्रह्माण्ड योग बताये हैं।

१. यदि मध्यमा उंगली के दूसरे पर्व पर तीन या चार खड़ी रेखाएं हों।

२. यदि हथेली की सभी उंगलियों के नीचे छोटे अर्द्ध चन्द्र हों।

३. यदि अंगूठा लम्बा, पतला और पीछे की तरफ झुका हुआ हो साथ ही शुक्र पर्वत पूर्ण विकसित हो।

४. यदि चन्द्र पर्वत से दो रेखाएं निकलती हों तथा एक रेखा शुक्र पर्वत तथा दूसरी रेखा बुध पर्वत की ओर जाती हो।

५. यदि हाथ में सूर्य रेखा के साथ-साथ सहायक रेखा भी चल रही हो।

लक्ष्मी योग :

लक्ष्मी योग

परिभाषा : यदि शनिवलय तथा बुध वलय हो और किसी एक रेखा से इन दोनों रेखाओं का आपस में सम्बन्ध होता हो तो लक्ष्मी योग माना जाता है।

फल : अपने हाथ में लक्ष्मी योग रखने वाला व्यक्ति समाज में प्रशंसा प्राप्त करने वाला तथा आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सम्पन्न होता है। ऐसे व्यक्ति में भाषण देने की अद्भुत कला होती है तथा वह शब्दों के माध्यम से लोगों को अपने पक्ष में करने की कला जानता है। ऐसा व्यक्ति गुणी, चतुर, तथा ख्याति प्राप्त करने वाला होता है।
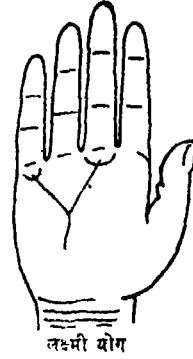
महालक्ष्मी योग :

महालक्ष्मी योग

परिभाषा : यदि हाथ में भाग्य रेखा अत्यन्त सीधी, स्पष्ट, पूरी लम्बाई लिए हुए तथा मणिबन्ध से निकलने वाली हो और शनि पर्वत पर जाकर उसके मध्य बिन्दु को स्पर्श करती हो तथा सूर्य रेखा चन्द्र पर्वत मे प्रारंभ होकर सूर्य पर्वत के मध्य बिन्दु तक पहुचती हो तो हाथ में महालक्ष्मी योग होता है।

फल : महालक्ष्मी योग रखने वाला व्यक्ति अतुल धन सम्पत्ति का मालिक होता है। उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से कोई कमी नहीं रहती। तथा वह पूर्ण रूप से भौतिक सुख प्राप्त करने मे सफल होता है।

भारती योग :

भारती योग

परिभाषा : यदि बुध पर्वत तथा गुरु पर्वत विकसित हो तथा हाथ में बुध रेखा और गुरु रेखा सीढ़ीदार हो तो भारती योग होता है।

फल : जिसके हाथ में भारती योग होता है वह सुन्दर, सजीला तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। ऐसा व्यक्ति स्वयं कलाकार होता है तथा कलाकारों को सहायता देकर उन्हें लाभ पहुंचाता है। ऐसा व्यक्ति गुणवान चतुर विद्यावान तथा संगीत आदि कलाओं में प्रसिद्ध होता है।

टिप्पणी : यह योग देखते समय जहां गुरु और बुध पर्वत देखे जाते हैं वहा साथ ही साथ इस बात का भी ध्यान

रखना चाहिए कि उसकी हाथ की अंगुलियां पतली, लम्बा, बिना गांठ की सुन्दर हों।

अरविन्द योग :
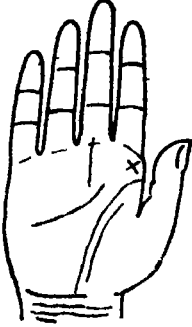
अरविन्द योग

परिभाषा : यदि हाथ में सभी पर्वत पुष्ट एवं उभरे हुए हों तथा जीवन रेखा के साथ में कोई सहायक रेखा साथ-साथ चल रही हो एवं गुरु पर्वत पर क्रॉस का चिह्न हो तथा स्वास्थ्य एवं भाग्य रेखा बलवान हो तो अरविन्द योग होता है।

फल : अरविन्द योग रखने वाला व्यक्ति राजा के समान जीवन व्यतीत करने वाला होता है। समाज में उसका पूर्ण सम्मान होता है तथा वह अपने कार्य से समाज व देश को नेतृत्व देने में सक्षम होता है। आर्थिक दृष्टि से इसके जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

टिप्पणी : विद्वानों ने निम्नलिखित योग भी अरविन्द योग माना है।

१. यदि जीवन रेखा के बीच में से भाग्य रेखा प्रारंभ होकर शनि पर्वत की ओर जाती हो।

२. यदि जीवन रेखा से दो शाखाएं निकलकर सूर्य पर्वत तथा बुध पर्वत की ओर जाती हो।

३. यदि तर्जनी उंगली मध्यमा की ओर झुकी हुई हो तथा हथेली में तर्जनी और अनामिका लम्बाई में बराबर हो।

तड़ित योग :

तड़ित योग

परिभाषा : यदि चन्द्र पर्वत से कोई पतली रेखा गुरु पर्वत की तरफ जाती हो तथा कनिष्ठिका अनामिका के लगभग बराबर हो तो तड़ित योग हाता है।

फल : जिसके हाथ में तड़ित योग देखा जाता है वह व्यक्ति अपने जीवन मे राजा के समान जीवन व्यतीत करने वाला होता है। समाज से उसे पूरा-पूरा यश सम्मान मिलता है है। तथा पूर्ण आर्थिक सुख उसके जीवन में रहता है।

फल : हस्त रेखा के विद्वानों ने निम्नलिखित योग भी तड़ित योग माने हैं।

१. यदि पतली और लम्बी उंगलियां हों तथा तर्जनी उंगली के तीसरे पर्व पर तिल का चिन्ह हो।

२. यदि सीढ़ीदार सूर्य रेखा बनी हो तथा उसमें स्वास्थ्य रेखा से संबंध स्थापित किया है।
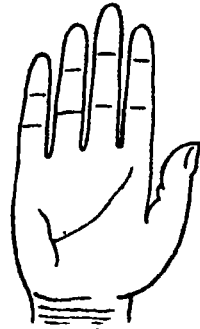
३. यदि कनिष्ठिका का झुकाव अनामिका की तरफ हो तथा सभी पर्वत अपने आप में विकसित हों ।

सरस्वती योग

सरस्वती योग

परिभाषा : यदि कोई एक रेखा वृहस्पति पर्वत से प्रारंभ होकर चन्द्र पर्वत तक पहुंचती हो और एक रेखा चन्द्र पर्वत से प्रारंभ होकर गुरु पर्वत तक पहुंचती हो तथा साथ में ये दोनों ही पूर्ण विकसित हो तो सरस्वती योग होता है ।

फल : सरस्वती योग जिसके हाथ में होता है वह व्यक्ति अत्यन्त प्रसिद्ध होता है तथा उस पर सरस्वती की विशेष कृपा मानी जाती है । काव्य संगीत, नृत्य आदि के क्षेत्र में वह पारंगत होता है तथा किसी एक काल में वह विशेष निपुणता प्राप्त करता है । अपनी कला के माध्यम से वह अपने देश में तथा विदेश में पूर्ण सम्मान तथा ख्याति अर्जित करता है । इस प्रकार के व्यक्ति के जीवन में सरस्वती और लक्ष्मी दोनों की विशेष कृपा रहती है । ऐसा व्यक्ति मन से भावुक तथा सहृदय होता है और गरीबों दुखियों तथा निर्धनों की सेवा करने के लिए तैयार रहता है ।

कैलाश योग :

परिभाषा : यदि हाथ में बुध पर्वत और सूर्य पर्वत से रेखाएं निकल कर स्वास्थ्य रेखा से नीचे जाकर परस्पर मिलती हों और इस प्रकार मे एक त्रिकोण का सा चिह्न बनता हो तो कैलाश योग होता है ।

फल : जिसके हाथ मे यह योग होता है वह व्यक्ति राजा के समान जीवन व्यतीत करने वाला होता है तथा भौतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से जीवन मे पूर्ण आनन्द लाभ करने मे समर्थ होता है ।

टिप्पणी : विद्वानों ने निम्नलिखित योग भी कैलाश योग माने हैं ·

कैलाश योग

१. यदि पहले मणिबन्ध के ऊपर मत्स्य का आकार हो तथा उस पर से एक रेखा चन्द्र पर्वत की ओर जा रही हो ।

२. यदि हाथ मे दो जीवन रेखाएं हों ।

३. यदि हाथ में दो भाग्य रेखाएं स्पष्ट दिखाई देती हों ।

रश्मि योग :

रश्मि योग

परिभाषा : यदि मणिबन्ध से कोई रेखा शुक्र पर्वत पर पहुँचती हो तथा शुक्र पर्वत अत्यन्त अधिक पुष्ट उठा हुआ सुन्दर गम्भीर तथा लालिमा लिए हुए हो तो रश्मि योग होता है।

फल : इस योग में जन्म लेने वाले व्यक्ति के जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता और वह अपने परिश्रम से पूर्ण वाहन सुख, धन, यश तथा सम्मान अर्जित करता है।

टिप्पणी : विद्वानों ने निम्नलिखित योग भी रश्मि योग माने हैं।

१. यदि हाथ में कहीं पर भी स्वस्तिक का चिन्ह हो।

२. हाथ में चन्द्र पर्वत पर एक खड़ी और एक आड़ी रेखा हो तथा उसके नीचे क्रॉस न हो।

३. हाथ में दो स्वास्थ्य रेखाएं हों।

दिव्य योग :

परिभाषा : जिसके दाहिने हाथ में गुरु रेखा शुक्र पर्वत पर पहुँचती हो तथा शुक्र पर्वत से एक रेखा गुरु पर्वत पर पहुँचती हो पर सूर्य रेखा तथा बुध रेखा अपने आप में बलवान हो तो दिव्य योग होता है।

फल : दिव्य योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति पूर्ण आनन्द उपयोग करता है। यद्यपि वह परिश्रम पूर्वक धन इकट्ठा करता है, परन्तु फिर भी समाज मे उसका सम्मान होता है तथा आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सम्पन्न एवं सुखी रहता है।
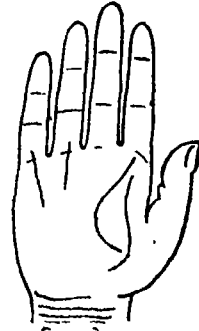
दिव्य योग

टिप्पणी : सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने निम्न योग भी दिव्य योग माने हैं।

१. यदि हाथ में मंगल पर्वत से सूर्य पर्वत तक रेखा जाती हो और सूर्य पर्वत से मगल पर्वत तक कोई रेखा जाती हो।

२. यदि हाथ में चन्द्रमा का पर्वत अत्यन्त पुष्ट और बलवान हो तथा उसका संबंध भाग्य रेखा से होता हो।

३. यदि हाथ में बुध और चन्द्रमा का परस्पर रेखा संबंध हो गया हो।

४. यदि हाथ में दो मस्तिष्क रेखाएं हों पर आपस में कहीं पर भी मिलती न हों।

महाराजाधिराज योग :

महाराजाधिराज योग

परिभाषा : यदि हाथ मे सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध गुरु, शुक्र तथा शनि के पर्वत पूर्णत: विकसित हों और इन से संबंधित सभी रेखाएं पुष्ट, बलवान, पतली, सीधी और स्पष्ट हों तो महाराजाधिराज योग होता है

फल : इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यन्त भाग्यवान माना जाता है तथा वह आर्थिक व्यापारिक तथा शारीरिक रूप से दृढ़ एवं बलवान होता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में समस्त प्रकार के ऐश्वर्य का भोग करता है साथ ही साथ यह अपने जीवन में तीर्थ यात्राएं करता है। दान देता है, तथा धार्मिक कार्यों मे बढ़-चढ़ कर भाग लेता है । सभी दृष्टियों से इसका जीवन पूर्ण माना जा सकता है ।

टिप्पणी . निम्नलिखित योग भी महाराजाधिराज योग माना जाता है ।

१. यदि भाग्य रेखा दोहरी हो तथा अत्यन्त पतली हो इसके साथ ही साथ जीवन रेखा, स्वास्थ्य रेखा तथा मस्तिष्क रेखा भी दोहरा हों। परन्तु ये रेखाएं आपस में नही टकराती हो ।

देवांश योग .

देवांश योग

परिभाषा यदि हाथ मे सात ग्रहों के पर्वतों में से पाच पर्वत विकसित हों एवं पुष्ट हो तथा उनसे संबंधित रेखाएं भी स्पष्ट एवं निर्दोष हों तो देवांश योग होता है ।

फल जिसके हाथ मे देवांश योग होता है वह व्यक्ति राजा के समान अपना जीवन व्यतीत करता है । उसके जीवन में भी समस्त प्रकार के ऐश्वर्य एव भोग बने रहते हैं ।
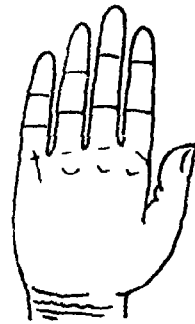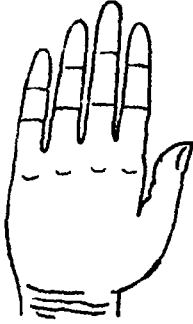
पारावत योग :

पारावत योग

परिभाषा: हथेली में सात ग्रहों में से चार ग्रहों के पर्वत विकसित हों बलवान और पुष्ट हों तथा उनसे संबंधित रेखाएं सरल, सीधी तथा निर्दोष हों तो वह पारावत योग होता है।

फल : जिस व्यक्ति की हथेली में पारावत योग होता है वह आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सम्पन्न होता है तथा उसके जीवन में सुख उपभोग की कोई कमी नहीं रहती।

नृप योग :

परिभाषा : यदि हथेली में सात ग्रहों में से तीन ग्रहों के पर्वत बलवान, पुष्ट तथा लालिमा युक्त हों तथा साथ ही उनसे संबंधित रेखाएं भी स्पष्ट हों तो नृप योग होता है।

फल : जिसके हाथ में नृप योग होता है वह आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता है तथा वाहन, भूमि, मकान, परिवार, आदि सभी दृष्टियों से पूर्ण सुख का उपभोग करता है।

नृप योग

गौरी योग :

गौरी योग

परिभाषा यदि हथेली में सात ग्रहों के पर्वतों में से दो ग्रह पर्वत बलवान और पुष्ट हो तथा उनसे संबंधित रेखाएं भी स्पष्ट हो तो हाथ में गौरी योग होता है।

फल : जिसके हाथ में गौरी योग होता है वह भूमि-पति होता है। कृषि कार्यों में उसकी विशेष रुचि होती है तथा परिवार के सभी सदस्यों को वह अत्यधिक स्नेह से रखता है। ऐसा व्यक्ति धार्मिक भावनाओं को मानने वाला तथा देवताओं की पूजा करने वाला होता है। इसके पुत्र भी योग्य, गुणवान तथा उच्च कोटि के होते हैं।

राज योग :

परिभाषा : यदि हथेली में सात ग्रहों में से कोई एक ग्रह का पर्वत बलवान पुष्ट तथा लालिमा युक्त हो तथा उससे संबंधित रेखा भी सीधी सरल और स्पष्ट हो तो राज योग होता है।

फल : जिसके हाथ में राज योग होता है वह अपने परिश्रम से ऊंचा उठकर अपने जीवन को सुखमय बनाता है। तथा यदि अन्य रेखाएं अच्छी हों तो गजेटेड अधिकारी बनता है ऐसा व्यक्ति परिश्रम पूर्वक धन संचय करता है तथा उसका पूरा आनन्द उठाता है।

राज योग

राज्य योग :
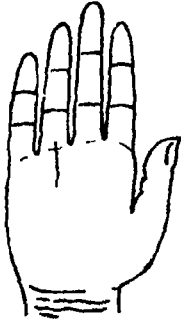
राज्य योग

परिभाषा : जिसके हाथ में सूर्य रेखा बलवान हो और गुरु पर्वत श्रेष्ठ हो तो राज्य योग होता है।

फल : राज्य योग में जन्म लेने वाले व्यक्ति सभी सुख-सुविधाओं से पूर्ण जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु जीवन के अन्तिम समय में और विशेषकर ४२वें साल के बाद से उसका भाग्योदय होता है तथा उसे भूमि, मकान तथा वाहन सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति चतुर, विपत्ति में भी धैर्य रखने वाला तथा योग्य होता है।

टिप्पणी : निम्नलिखित योग भी राज्य योग कहलाते हैं।

१. हाथ में गुरु पर्वत श्रेष्ठ तथा सभी उंगलियां लम्बी और पतली हों।

२. यदि कनिष्ठिका उंगली जरूरत से ज्यादा लम्बी हो।

३. यदि शुक्र पर्वत के नीचे स्वस्तिक का चिह्न हो।

४. यदि गुरु पर्वत बड़ा हो तथा उस पर से रेखा सूर्य पर्वत की ओर जा रही हो।

५. यदि मणिबन्ध से भाग्य रेखा का प्रारंभ हो।

६. यदि गुरु पर्वत हथेली के बाहर न निकला हुआ हो तथा अपने आप में श्रेष्ठ हो।

महेन्द्र योग :

परिभाषा : यदि दोनों हाथों में भाग्य रेखा तथा सूर्य रेखा का प्रारंभ मणिबन्ध से दिखाई दे तथा चन्द्र पर्वत पूर्णतः विकसित हो तो महेन्द्र योग होता है।

महेन्द्र योग

फल : जिसके हाथ में महेन्द्र योग होता है वह आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता है। राजा के समान जीवन व्यतीत करता है। उसके जीवन काल में ही उसकी समस्त इच्छाएं पूरी हो जाती हैं।

विद्वानों ने निम्नलिखित योग भी महेन्द्र योग माने हैं।

१. यदि चन्द्र पर्वत बलवान हो तथा उस पर स्वस्तिक का चिह्न हो।

२. यदि शुक्र पर्वत बलवान हो तथा जीवन रेखा की ओर बढ़ा हुआ हो, साथ ही उस पर स्वास्तिक का चिन्ह बना हो।
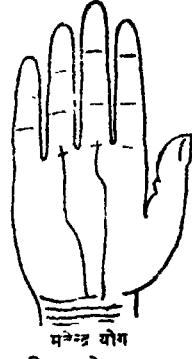
रुद्र योग :

रुद्र योग

परिभाषा : यदि हथेली में गुरु मुद्रा तथा शनि मुद्रा हो साथ ही सूर्य से कोई रेखा निकल कर इन दोनों मुद्राओं को स्पर्श करती हो तो रुद्र योग होता है।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में रुद्र योग होता है वह मस्त तबियत का आदमी होता है। यद्यपि यह जीवन में धन उपार्जित करता है, परन्तु साथ ही यह दोनों हाथों से खर्च करना भी जानता है। शान-शौकत, वैभव प्रदर्शन आदि में इसका विश्वास ज्यादा होता है।

मृगेन्द्र योग :

परिभाषा : यदि हथेली में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, तथा शनि इन सातों ही ग्रहों के पर्वत दबे हुए हों तथा इनसे संबंधित सभी रेखाएं कमजोर हों या उनमें से कई रेखाएं दिखाई ही नहीं देती हों तो मृगेन्द्र योग होता है।

मृगेन्द्र योग

फल : मृगेन्द्र योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति राजा के समान जीवन व्यतीत करने वाला तथा आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त उच्च कोटि का होता है। भौतिक दृष्टि से उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

देव योग :

देव योग

परिभाषा : यदि हथेली में सात ग्रहों के पर्वतों में से ६ पर्वत दबे हुए या अदृश्य हों तथा इनसे संबंधित रेखाएं भी अदृश्य या टूटी हुई हों तो उसके हाथ में देव योग होता है।

फल : इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी सुखों का भोग करता है, उसका जीवन अत्यन्त शान्त एवं सरल होता है तथा अपने विशेष क्षेत्र में वह व्यक्ति प्रसिद्धि प्राप्त करता है। एक प्रकार से इस योग को भी राज योग के समान ही समझना चाहिए।

विक्रम योग :

परिभाषा : यदि हथेली मे सात ग्रहो के पर्वतों मे से पांच पर्वत दबे हुए या अदृश्य हों तथा उनसे संबंधित रेखाएं भी अदृश्य या छिन्न भिन्न हों तो उसके हाथ मे विक्रम योग होता है।

फल : जिसके हाथ मे यह योग होता है वह भौतिक दृष्टि से पूर्ण उन्नति करता है तथा उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता नही रहती।

विक्रम योग

सुरपति योग :

सुरपति योग

परिभाषा : यदि हथेली मे सात ग्रहो के पर्वतों में से चार पर्वत दबे हुए कमजोर या अदृश्य हों तथा इनसे संबंधित रेखाएं भी अदृश्य या टूटी हुई हों तो सुरपति योग होता है।

फल: जिसके हाथ मे सुरपति योग होता है वह व्यक्ति अपने परिश्रम से धन एकत्र करता है तथा समाज मे सम्मान-नीय जीवन व्यतीत करने में समर्थ होता है। उसके जीवन में भौतिक दृष्टि से कोई न्यूनता नहीं रहती।

गजपति योग :

गजपति योग

परिभाषा : यदि हाथ में सात ग्रहों के पर्वतों में से तीन पर्वत अत्यन्त दबे हुए कमजोर या अदृश्य हों तथा इनसे सम्बन्धित रेखाएं भी अदृश्य या छिन्न-भिन्न हों तो गजपति योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह परिश्रमी और हमेशा उन्नति की ओर अग्रसर होने वाला व्यक्ति होता है। वह जीवन में कुछ करके दिखाना चाहता है। जीवन के ३२ वें वर्ष से उसका भाग्योदय होता है और उसके बाद से जीवन पर्यन्त वह सभी दृष्टियों से पूर्ण सुख भोग करता है।

मन्महेन्द्र योग :

मन्महेन्द्र योग

परिभाषा : यदि हथेली में प्रजापति, वरुण, हर्षल, प्लूटो नेपच्यून तथा पर्वत बलवान हों तथा राहू एवं केतु के पर्वतों का रेखा के द्वारा सम्बन्ध हो तो मन्महेन्द्र योग होता है।

फल : मन्महेन्द्र योग मे जन्म लेने वाला व्यक्ति बलवान, गुणवान तथा पूज्यनीय होता है। किसी एक क्षेत्र में वह अत्यन्त प्रसिद्धि प्राप्त करता है। अथवा उच्च शासकीय पद प्राप्त कर अपने जीवन को आनन्दमय बनाने में समर्थ होता है।

हरिहरब्रह्म योग :

हरिहर ब्रह्म योग

परिभाषा : यदि दाहिने हाथ में बुध, चन्द्र, शुक्र, तथा सूर्य पर्वतों का परस्पर रेखाओं के द्वारा सम्बन्ध होता हो और ये रेखाए आपस मे कहीं पर भी न कटती हों तो हरिहरब्रह्म योग होता है।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ मे हरिहरब्रह्म योग होता है वह व्यक्ति शुद्ध सांस्कृतिक जीवन व्यतीत करने वाला एवं सत्य बोलने वाला, वेद तथा संस्कृति को जानने वाला, एवं देवपूजक होता है। ऐसे व्यक्ति का समाज में विशेष सम्मान होता है।
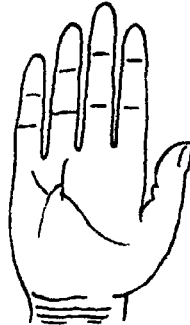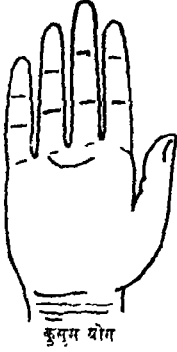
कुसुम योग :

कुसुम योग

परिभाषा : यदि हथेली में सूर्य पर्वत अपने स्थान से खिसक कर शनि पर्वत में मिल गया हो तो कुसुम योग होता है।

फल : कुसुम योग रखने वाला व्यक्ति विद्वान भाग्यशाली तथा उच्च पद पर पहुंचने वाला माना गया है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में कई आकस्मिक क्षण आते हैं जबकि वह जल्दी से जल्दी उन्नति करने में समर्थ होता है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहती।

अग्नि काण्ड योग :

परिभाषा : यदि मंगल पर्वत पर क्रॉस का चिह्न हो तथा इस पर्वत से एक रेखा निकलकर राहू पर्वत पर जाती हो तो अग्निकाण्ड योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उस व्यक्ति की मृत्यु आग से जलकर होती है।
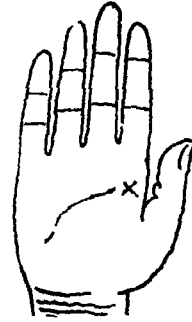
अग्निकाण्ड योग

मत्स्य योग :

मत्स्य योग

परिभाषा : यदि शुक्र पर्वत विकसित हो, अंगूठा पतला, लम्बा और थोड़ा सा पीछे झुका हुआ हो, साथ ही यदि सूर्य रेखा सीढ़ीदार हो तो मत्स्य योग होता है।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में मत्स्य योग होता है वह सही भविष्यवक्ता, समय का पाबन्द तथा सद्गुणों से युक्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी बुद्धि के द्वारा उन्नति करता है तथा जीवन में क्षमावान, दयावान तथा सद्गुण विवेकयुक्त माना जाता है।

अग्रजघातक योग :

परिभाषा : यदि हथेली मे राहू तथा हर्षल पर्वत पर त्रिकोण का चिह्न हो तो उसके जीवन में अग्रजघातक योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति अपने बड़े भाई से वैमनस्य रखता है अथवा उसकी हत्या कर देता है।

अग्रजघातक

कूर्म योग :
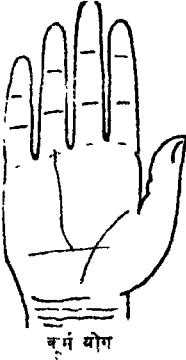
कूर्म योग

परिभाषा : यदि हथेली में सूर्य रेखा स्पष्ट चन्द्र पर्वत से होती हुई जीवन रेखा के मध्य मिलती हो तथा भाग्य रेखा बलवान हो तो कूर्मयोग होता है।

फल · कूर्म योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति अपने कार्यों से विख्यात तथा कीर्तिवान होता है। साथ ही ऐसा व्यक्ति विपत्ति मे धैर्य धारण करने वाला, भाषण देने में होशियार, दूसरों को प्रभावित करने वाला तथा राजा के समान जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

आत्मघात योग :

परिभाषा : यदि मध्यमा उंगली के सबसे निचले पौर पर तारक चिन्ह हो तो आत्मघात योग होता है।

फल : जिसके हाथ में आत्मघात योग होता है उसकी मृत्यु स्वयं के प्रयत्नों से होती है और वह आत्महत्या करके मरता है।
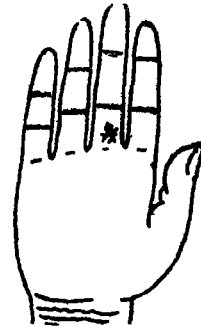
आत्मघात योग

देवेन्द्र योग :

परिभाषा : जिसके हाथ में कमल का चिह्न हो और विशेषकर ऐसा चिह्न जीवन रेखा के पास में चन्द्र पर्वत से कुछ हटकर हो परन्तु जिससे कोई प्रसिद्ध रेखा कटती न हो तो देवेन्द्र योग होता है।

देवेन्द्र योग

फल : जिसके हाथ में देवेन्द्र योग होता है वह व्यक्ति सूझ-बूझ वाला तथा चतुराई से काम करने वाला होता है। वह आकर्षक व्यक्तित्व रखता है तथा सामने वाले व्यक्तियों को पूरी तरह से प्रभावित करने की क्षमता रखता है। ऐसा व्यक्ति दीर्घायु, शासन प्रिय, सुन्दर, कुशल, तथा दक्ष होता है।
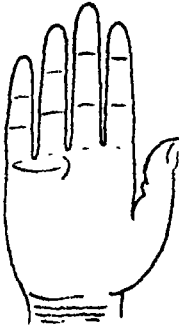
खंग योग :

खग योग

परिभाषा : यदि हथेली मे बुध पर्वत अपने स्थान से खिसक कर सूर्य पर्वत मे मिल गया हो और सूर्य पर्वत अपने भाग मे दृढ एवं श्रेष्ठ हो तो खंग योग होता है।

फल जिसके हाथ में यह योग होता है वह साधारण स्थिति मे भी जन्म लेकर अत्यन्त ऊचे स्तर तक पहुंचता है। ये जो भी बातें कहते हैं उसे अन्त समय तक निभाने का प्रयत्न करते है। ऐसे व्यक्ति भविष्य कथन करने मे भी श्रेष्ठ एव सफल होते हैं। आर्थिक दृष्टि मे इनके जीवन मे किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहती।

नवलक्ष्मी योग :

परिभाषा : यदि हथेली में भाग्य रेखा, सूर्य रेखा तथा बुध रेखा तीनों ही मणिबन्ध मे निकलती हों तथा सीधी, सरल और स्पष्ट हों तो नवलक्ष्मी योग होता है।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में यह योग होता है वह अटूट सम्पति का स्वामी, सम्पन्न, ऐश्वर्य युक्त तथा प्रसिद्धि प्राप्त होता है।
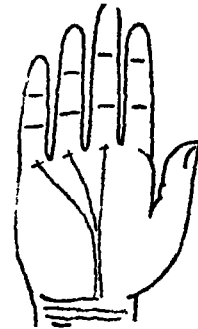
नव लक्ष्मी योग

ज्योतिर्विद योग :

ज्योतिर्विद योग

परिभाषा . यदि शुक्र पर्वत पर किसी प्रकार की बाधक रेखाएं न हों तथा यह पर्वत अपने आप में पुष्ट हो तो ज्योतिर्विद योग होता है।

फल : इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति सफल भविष्य वक्ता होता है।

भूमि योग :

परिभाषा : यदि मंगल तथा शुक्र पर्वत के बीच परस्पर रेखा संबन्ध हो तथा शुक्र पर्वत पर भाग्य रेखा की कोई सहायक रेखा आकर मिलती हो तो भूमि योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह भूमि सम्बन्धी कार्यों से विशेष लाभ उठाता है तथा अपने आप में भूमिपति होता है।
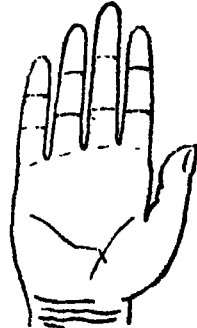
भूमि योग

पुत्रतः धनाप्ति योग :
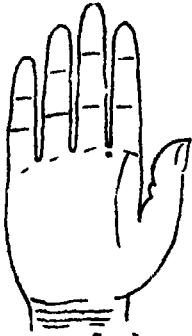
पुत्रतः धनाप्ति योग

परिभाषा : यदि गुरु पर्वत से कोई पतली रेखा शुक्र पर्वत तक जाती हो तथा तर्जनी और मध्यमा के बीच तिल चिह्न हो तो यह योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उसे जीवन भर पुत्र से धन प्राप्ति होती रहती है तथा सन्तान सुख मिलता है।

कोटीश योग :

कोटीश योग

परिभाषा : यदि हाथ में शनि वलय हो और वलय रेखा से छोटी-छोटी रेखाएं ऊपर की ओर उठ रही हों, साथ ही भाग्य रेखा मणिबन्ध से निकल कर शनि बिन्दु तक जाती हो तो कोटीश योग होता है।

फल : जिसके हाथ में कोटीश योग होता है वह व्यक्ति जीवन में निश्चय ही करोड़पति होता है।
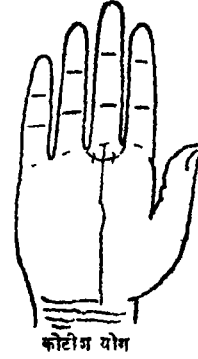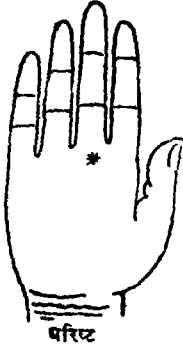
अरिष्ट योग :

अरिष्ट

परिभाषा : यदि शनि, पर्वत पर तारे का चिह्न हो तथा मध्यमा के सबसे ऊपरी पोर पर सफेद बिन्दु हो तो अरिष्ट योग होता है।

फल : जिसके हाथ में अरिष्ट योग होता है वह जीवन में कई बार जादू, टोना, मन्त्र तंत्र, भूत प्रेत आदि से पीड़ित रहता है।

कलह योग :

कलह

परिभाषा : यदि हथेली में चन्द्र पर्वत पर आड़ी तिरछी रेखाओं से जाल बना हो तो कलह योग होता है।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में कलह योग होता है वह जीवन भर प्रत्येक से कलह करता रहता है तथा हर एक से उसका मानसिक असंतुलन बना रहता है।
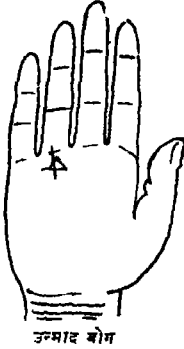
उन्माद योग :

परिभाषा : यदि चन्द्र, राहू, पर्वत का परस्पर रेखा सम्बन्ध हो या सूर्य और राहू पर्वतों का परस्पर सम्बन्ध हो तो उन्माद योग होता है ।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में उन्माद योग होता है वह विक्षिप्त स्वभाव का तथा उन्मादी प्रकृति का होता है ।

विष योग :

परिभाषा : यदि हाथ में बुध रेखा के नीचे कई काले बिन्दु हों तो विष योग होता है ।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में यह योग होता है उसे धोखे से या विश्वासघात से जहर दिया जाता है जिससे उसकी मृत्यु होती है ।
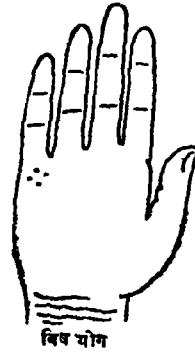
श्वान योग
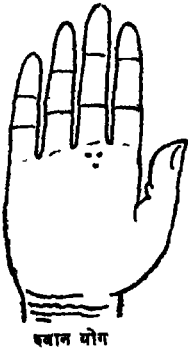
परिभाषा : यदि शनि पर्वत पर काला धब्बा या काले बिन्दु हों तो श्वान योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में श्वान योग होता है वह पागल कुत्ते के काटने से पीड़ित होता है या पागल हो जाता है अथवा उसकी मृत्यु हो जाती है ।

बृहद् बीज योग :

परिभाषा : यदि राहू पर्वत पर काले धब्बे या काले बिन्दु हों तो बृहद् बीज योग होता है ।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में यह योग होता है उसके अण्डकोष बढ़े हुए होते हैं तथा जीवन भर इस रोग से ग्रसित रहता है ।

विमल योग :

परिभाषा : यदि दो मणिबन्धों के बीच में सफेद बिन्दु हो तो विमल योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति अत्यन्त सर्व गुण सम्पन्न समस्त प्रकार के ऐश्वर्य भोग भोगने वाला, दयालु, परोपकारी तथा सुखी होता है ।

सरल योग :

परिभाषा : यदि सभी नाखूनों पर छोटे अर्द्धचन्द्र हों तो सरल योग होता है ।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ मे सरल योग होता है वह व्यक्ति दीर्घायु, शिक्षित, बात के मर्म को समझने वाला तथा निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर होने वाला व्यक्ति होता है ।

हर्ष योग :

परिभाषा : यदि हथेली के मध्य में चन्द्र पर्वत और जीवन रेखा के बीच मे तिल का चिन्ह हो तो हर्ष योग होता है ।

फल : हर्ष योग वाला व्यक्ति भाग्यवान गुणी, चतुर. दृढ़, तथा प्रसिद्ध होता है ।

हर्ष योग

प्रवृज्या

प्रवृज्या योग :

परिभाषा : यदि आयु रेखा पर त्रिकोण का चिन्ह हो तो प्रवृज्या योग होता है ।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में प्रवृज्या योग होता है वह किसी साधु से दीक्षा ले लेना है और गृहस्थ छोड़कर सन्यासी बन जाता है ।

टिप्पणी : विद्वानो ने निम्नलिखित योग भी प्रवृज्या योग से सबंधित माने हैं :

१. यदि सूर्य रेखा पर त्रिकोण का चिह्न हो ।

२. यदि पूरा हाथ लचकदार हो । सभी उगलियां लम्बी और सुन्दर हों तथा भाग्य रेखा पर त्रिकोण का चिह्न हो ।

३. यदि बुध पर्वत के नीचे त्रिकोण या जाल हो ।

४. यदि संतान रेखाओं एवं प्रणय रेखाओं पर जाल का चिह्न हो ।

शुक्र योग :

परिभाषा : यदि शुक्र पर्वत बलवान पुष्ट, उठा हुआ तथा सुन्दर हो एवं उस पर बाधक रेखाओं का जाल न हो तो शुक्र योग होता है ।

फल : शुक्र याग वाला व्यक्ति धनवान, विद्वान विख्यात तथा कीर्तिवान होता है । ऐसा व्यक्ति दीर्घायु तथा सुखी परिवार से युक्त होता है ।

शुक्र योग

दुर्योग :

परिभाषा : यदि स्वास्थ्य रेखा पर त्रिकोण का चिह्न हो तो दुर्योग होता है ।

फल : जिस जातक की हथेली में दुर्योग होता है वह व्यक्ति कमजोर शरीर वाला अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह दरिद्री जीवन व्यतीत करने वाला, स्वार्थी तथा अपने जन्म स्थान से दूर रहने वाला होता है ।

दुर्योग

गोल योग :

गोल योग

परिभाषा : यदि शुक्र पर्वत हथेली के बाहर की ओर निकला हुआ सा हो तो गोल योग होता है ।

फल : ऐसा व्यक्ति परिश्रमी, भाग्यहीन, तथा बराबर धन की चिन्ता करने वाला तथा तुच्छ बुद्धि का होता है ।

युग योग :

परिभाषा : यदि स्वास्थ्य रेखा हथेली के पार जाती हो तथा जीवन रेखा से उसका सम्बन्ध बना हो तो युग योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति चंचल स्वभाव वाला पाखण्डी एवं व्यभिचारी होता है । ऐसे व्यक्ति को समाज में किसी प्रकार का कोई सम्मान नहीं मिलता ।

युग योग
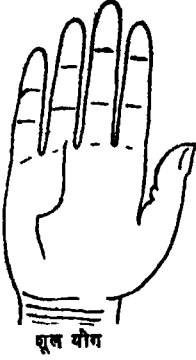
शूल योग :

परिभाषा : यदि मंगल रेखा चन्द्र पर्वत से होकर सूर्य पर्वत तक जाती हो तो शूल योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में शूल योग होता है वह व्यक्ति क्रोधी, क्रोध के आवेश में बना बनाया काम बिगाड़ने वाला, लड़ाकू स्वभाव वाला, दरिद्री तथा घमण्डी होता है ।

केदार योग :

परिभाषा : यदि सूर्य रेखा शनि पर्वत की ओर झुकी हुई तथा स्वास्थ्य रेखा से संबन्ध स्थापित करती है तो हाथ में केदार योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति आलसी, बन्धु-बान्धवों की सहायता करने वाला, कामी और कृषि कार्य मे निपुण होता है ।

टिप्पणी : इस योग में व्यक्ति में अच्छे और बुरे गुणों का मिश्रण होता है।
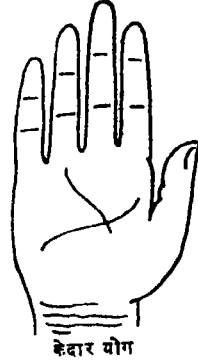
पाश योग :

परिभाषा : यदि गुरु पर्वत पर तिल का चिह्न हो तो पास योग होता है ।

फल : जिसके हाथ मे यह योग होता है वह व्यक्ति मित्रों में लोकप्रिय, नौकरी द्वारा सुख भोगने वाला, तथा धन-वान होता है ।

दामिनी योग :

दामिनी

परिभाषा : यदि मध्यमा और अनामिका उंगली के बीच तिल का चिह्न हो दामिनी योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति उच्च चरित्रवान, दूसरों का सहायक तथा बुद्धिमान व्यक्ति होता था ।

मुकुट योग :

मुकुट

परिभाषा : यदि दाहिने हाथ में मंगल पर्वत विकसित हो तथा वहां से एक रेखा सूर्य पर्वत की ओर जाती हो और उस पर स्वस्तिक का चिह्न हो तो मुकुट योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में मुकुट योग होता है वह व्यक्ति अपने जीवन में श्रेष्ठ खिलाड़ी होता है । जीवन में खिलाड़ी के रूप में ही उसे मान्यता मिलती है तथा वह समाज में प्रसिद्ध होता है । ऐसे व्यक्ति में वैर की भावना अत्यन्त प्रबल होती है । ऐसा जातक शिकारी और अपने लक्ष्य को सही रूप में पहिचानने वाला होता है ।

ऋण योग :

ऋण योग

परिभाषा : यदि हथेली में शनि रेखा के दाहिनी ओर काले रंग का तिल हो तो ऋण योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह थोड़े बहुत रूप में जीवन भर ऋणी बना रहता है तथा उसके जीवन में आय की अपेक्षा व्यय हमेशा बढ़ा-चढ़ा रहता है ।
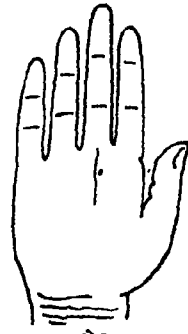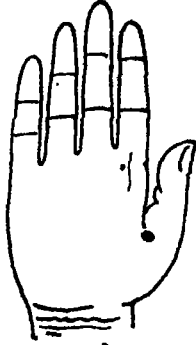
कारक योग :

कारक योग

परिभाषा : यदि गुरु रेखा के वाम भाग में लाल या काला तिल हो तो उसके हाथ में कारक योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह जातक अपने जीवन को सुखपूर्वक व्यतीत करता है। ऐसा जातक अपने व्यापार में उच्च स्तर प्राप्त करने में सफल रहता है। आर्थिक दृष्टि से तथा भौतिक दृष्टि से इसके जीवन में किसी प्रकार की कोई बाधा या परेशानी नहीं होती।

वल्लकी योग :

परिभाषा : यदि दाहिने हाथ में मंगल रेखा के नीचे या उसके दाहिनी ओर लाल तिल का चिन्ह हो तो वल्लकी योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह शांत, गम्भीर, जीवन में कई मित्रों का सहयोग प्राप्त करने वाला, प्रसन्नचित एवं अपने हुनर में ख्याति प्राप्त व्यक्ति होता है।
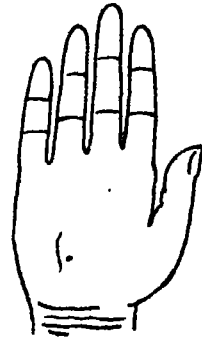
वल्लकी योग

शारदा योग :

शारदा

परिभाषा : यदि बुध पर्वत के नीचे या उसके बाईं ओर काला तिल हो तो शारदा योग होता है।

फल : जिसके हाथ में शारदा योग होता है वह व्यक्ति स्त्री, पुरुष, बन्धु आदि से सम्पन्न उन्नतिशील होता है। देवताओं का यह आदर करता है तथा विद्वान चतुर, एवं धार्मिक पुरुष होता है।

समुद्र योग :

परिभाषा : यदि सूर्य रेखा के नीचे या उसके दाहिनी ओर काले तिल का चिह्न हो तो समुद्र योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति विख्यात्, धार्मिक कार्य में आगे रहने वाला, राजा के समान सुख भोगने वाला तथा चिन्ता मुक्त होता है।

अर्द्ध चन्द्र योग :

परिभाषा : यदि चन्द्र रेखा के नीचे या दाहिनी ओर काले तिल का या लाल तिल का चिह्न हो तो अर्द्धचन्द्र योग होता है।

फल : जिसके हाथ मे यह योग होता है वह व्यक्ति जीवन भर प्रसन्नचित् रहने वाला, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न, सहृदय, सुन्दर आकर्षक व्यक्तित्व वाला तथा निरंतर उन्नति करने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहती।

छत्र योग :

परिभाषा : यदि शुक्र रेखा के पास में या उसके नीचे लाल तिल अथवा काले तिल का चिह्न हो तो छत्र योग होता है।

फल : यदि हाथ में छत्र योग हो तो ऐसा व्यक्ति साहसी, रसिक पूर्ण, गृहस्थ सुख को भोगने वाला तथा आनन्द पूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

कूट योग :

परिभाषा : यदि हाथ के मध्य में दो से अधिक तिल हो और मुट्ठी बन्द करने पर उसमें आते हैं तो कूट योग होता है।

फल : जिसके हाथ में कूट योग होता है वे व्यक्ति अत्यन्त साहसी पराक्रमी तथा निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर होने वाले होते हैं। विपरीत परिस्थितियों को देखकर व्यक्ति घब-राते नहीं, अपितु उनसे संघर्ष कर उन विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने की क्षमता रखते हैं।

इशु योग :

परिभाषा : यदि अंगूठे के ऊपरी पोर पर काले तिल का चिह्न हो तो इशु योग होता है।

फल : इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति राजपत्रित अधिकारी होता है। ऐसे व्यक्ति सामान्यत: जेल अधिकारी या पुलिस सुपरिंटेंडेंट होते हैं। अपने जीवन में ये व्यक्ति अपने उद्देश्यों में पूर्णत: सफलता प्राप्त करते हैं।

दिग्बल योग :

परिभाषा : यदि शनि पर्वत को छोड़कर अन्य तीन पर्वत अर्थात् सूर्य, बुध, और गुरु पर्वत पर या इनसे संबंधित रेखाओं के नीचे काले या लाल तिल का चिन्ह हो तो दिग्बल योग होता है।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में दिग्बल योग होता है वह व्यक्ति अपने जीवन में अत्ययन्त ऊंचे स्तर पर पहुंचता है तथा अपने कार्यों से समाज में सम्मानित होता है।

नीच भंग राज योग :

परिभाषा : यदि हाथ में शुक्र वलय हो और उस पर क्रॉस का चिह्न हो तो नीच भंग राज योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति अपने प्रयत्नों से उन्नति करता है तथा आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में सुख प्राप्त करता है।

नीचभग राज योग

टिप्पणी : विद्वानों ने इसके अलावा निम्नलिखित योग भी नीच भंग राजयोग से संबंधित बताए हैं .

१. यदि हाथ के मध्य में स्वस्तिक का चिह्न हो।
२. यदि मध्यमा उंगली के तीनों ही पर्वतों पर काले तिल का चिह्न हो।
३. यदि गुरु वलय हो तथा गुरु पर्वत पर क्रॉस का चिह्न भी हो।
४. यदि बुध वलय हो पर चन्द्रमा से कोई रेखा निकल कर बुध पर्वत तक पहुंची हो।
५. यदि हाथ के सभी पर्वत सामान्यत: उन्नत तथा श्रेष्ठ हो।
६. यदि भाग्य रेखा सीढीदार हो।
७. यदि जीवन रेखा पूर्ण हो तथा उस पर किसी प्रकार की बाधक रेखाएं न हों।
८. यदि शुक्र पर्वत उभरा हुआ हो और उस पर बाधक रेखाएं न हों।
९. यदि चार मणिबन्ध हों तथा पहला मणिबन्ध जंजीरदार हो।
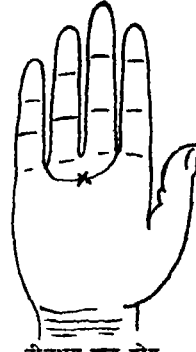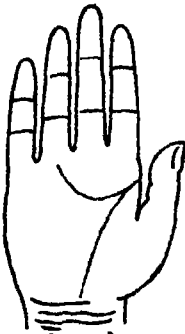
चण्डिका योग :

चण्डिका योग

परिभाषा : यदि हथेली चौड़ाई की अपेक्षा कुछ अधिक लम्बाई लिये हुए हो, हाथ की उंगलियां बिना गांठ की हों तथा हाथ में जीवन रेखा के प्रारम्भ से एक रेखा निकल कर सूर्य पर्वत अथवा बुध पर्वत तक जाती हो तो चण्डिका योग होता है।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में चण्डिका योग होता है वह व्यक्ति चरित्रवान, धनपति, दूसरों की भलाई करने वाला, निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर होने वाला तथा मन्त्री के समान जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

नाभस योग :

परिभाषा : यदि किसी भी उंगली के नीचे और पर्वत के ऊपर छोटा स्वस्तिक का चिह्न हो तो नाभस योग होता है।

नाभस्त योग

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति अत्यन्त श्रेष्ठ पूज्यनीय, ऐश्वर्यवान, परोपकारी तथा पूर्ण भौतिक सुख भोगने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति निश्चय ही अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करते हैं।

जय योग :

जय योग

परिभाषा : जिसके हाथ में मगल पर्वत पर दो या दो से अधिक तिल के चिह्न हो तो जय योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति प्रबल, भाग्यशाली, अपने हर कार्य में पूर्ण विजय प्राप्त करने वाला, शत्रुओं का तीव्रता से नाश करने वाला, क्षमता रखने वाला, गुणवान, धैर्ययुक्त एवं दीर्घायु होता है।
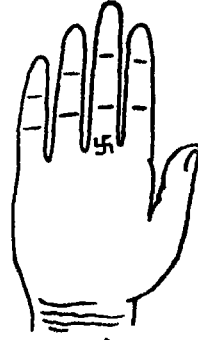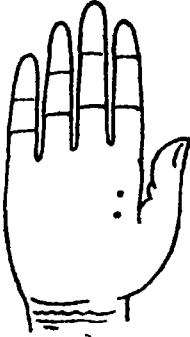
विद्युत योग :

परिभाषा : मणिबन्ध के ऊपर तिल का चिन्ह हो तो विद्युत योग होता है।

फल : ऐसा योग रखने वाला व्यक्ति राजा के समान जीवन व्यतीत करने वाला, धनवान तथा पूर्ण सुख को भोगने वाला होता है।
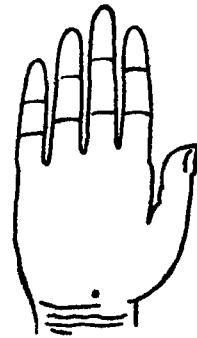
विद्युत योग

शिव योग :
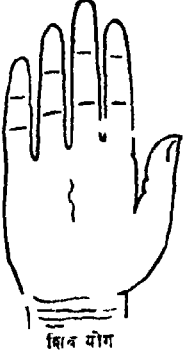
शिव योग

परिभाषा : यदि हाथ के मध्य में कोई छोटी सी लहराती हुई रेखा हो तो शिव योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति उच्च कोटि का व्यापारी होता है या सेना में उच्च पद को प्राप्त करने में सफल होता है। ऐसा व्यक्ति पुलिस आफिसर या सन्तुष्ट जीवन व्यतीत करने वाला देखा गया है।

विष्णु योग :

परिभाषा : यदि हथेली में कहीं पर कमल का सा चिह्न हो तो विष्णु योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में विष्णु योग हो वह व्यक्ति समस्त ऐश्वर्य का स्वामी, आर्थिक दृष्टि से पूर्णत: सम्पन्न प्रबल भाग्यशाली, सुखमय जीवन व्यतीत करने वाला, भाषण कला में दूसरों पर प्रभाव डालने वाला तथा सभी प्रकार से सुखमय जीवन व्यतीत करने वाला होता है ।
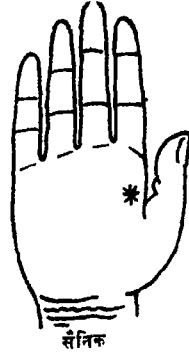
सैनिक

ब्रह्म योग :
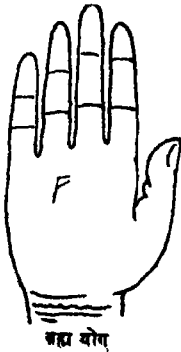
ब्रह्म योग

परिभाषा : यदि हथेली मे कही पर भी ध्वजा का चिह्न हो तो उसके हाथ में ब्रह्म योग होता है । ऐसा विद्वान कहते हैं ।

फल : ब्रह्म योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति समृद्ध जीवन व्यतीत करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति देवताओं, ब्राह्मणों तथा साधुओं पर पूर्ण श्रद्धा रखता है तथा चरित्रवान होने के साथ-साथ वह निरन्तर समाज से संबंधित शुभ कार्यों में रत रहता है ।

हरि योग :

परिभाषा : जिसके हाथ में अश्व का चिह्न हो वह हरि योग सम्पन्न होता है ।

फल : हरि योग रखने वाला व्यक्ति जीवन में सुखी ऐश्वर्य में जीवन व्यतीत करने वाला, विद्यावान चतुर, बात चीत में होशियार तथा अपने व्यक्तित्व से दूसरों पर प्रभाव डालने वाला होता है । इसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से कोई न्यूनता नहीं रहती ।

हरि योग

हर योग :

हर योग

परिभाषा : यदि जीवन रेखा के पास त्रिशूल का चिह्न हो पर उससे जीवन रेखा कटती नहीं हो तो हर योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह निरंतर अपनी उन्नति करने वाला, धार्मिक कार्यों में पूर्ण रुचि लेने वाला, परोपकारी, दयालु, सत्यवक्ता और निरंतर दूसरों का सहायक होता है ।

ब्रह्मा योग .

परिभाषा : जिसके हाथ में मणिबन्ध के पास शुक्र पर्वत पर हाथी का चिन्ह हो तो उसके हाथ में ब्रह्मा योग होता है ।

फल : हथेली में ब्रह्मा योग रखने वाला व्यक्ति तेजस्वी और प्रखर बुद्धि का धनी होता है । ऐसा व्यक्ति धीर, गम्भीर समाज सुधारक और अपने आप पर पूरा भरोसा रखने वाल होता है । उसमें आत्म विश्वास जरूरत से ज्यादा होता है ।

ब्रह्मा योग
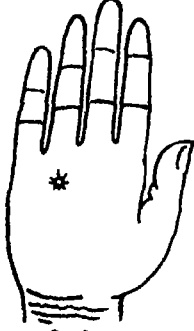
रवि योग :

रवि योग

परिभाषा : जिसके हाथ में सूर्य का चिह्न दिखाई दे योग होता है।

फल : जिसके हाथ मे यह योग होता है वह विज्ञान अनुसंधान आदि कार्यों में रुचि लेने वाला तथा तीव्र मस्तिष्क का स्वामी होता है। ऐसा व्यक्ति सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत को मानता है। इसका व्यक्तित्व भले ही साधारण होता है; परन्तु इसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक होती है और अपने जीवन में पूर्ण यश तथा सम्मान प्राप्त करता है।

पति त्याग योग .

परिभाषा : जिस स्त्री के हाथ में गुरु पर्वत पर चक्र का निशान हो तो पति त्याग होता है।

फल : जिस स्त्री के हाथ मे ऐसा योग होता है उस स्त्री को उसका पति या तो छोड़ देता है या तलाक दे देता है।

टिप्पणी : यदि पुरुष के हाथ में ऐसा चिन्ह हो तो पत्नी उसे छोड़ देती है और पत्नी आगे बढ़ कर उससे तलाक ले लेती है।
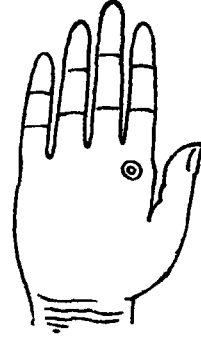
पतित्याग योग

गर्भपात योग :

गर्भपात योग

परिभाषा : जिसके हाथ में शुक्र पर्वत पर रेखाओं मे पर्वत का चिह्न बना हो तो गर्भपात योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह स्त्री कुछ विशेष कारणो से गर्भपात करा देती है।

टिप्पणी : इसके अलावा इससे सम्बन्धित निम्न योग भी है :

१. यदि संतान रेखा पर सफेद बिन्दु हो।
२. यदि सन्तान रेखा पर एक आड़ी रेखा हो।

यूप योग :

परिभाषा : यदि हथेली में कहीं पर वृक्ष का चिन्ह दिखाई दे तो यूप योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति आत्म केन्द्रित, निस्वार्थ भाव रखने वाला, थोड़े में ही सतोष रखने वाला तथा कमजोर चरित्र वाला व्यक्ति होता है ।

नव योग :

परिभाषा : जिसके हाथ में कही पर भी स्तम्भ का चिह्न हो तो नव योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति जीवन में सुखी, सफल एवं गृहस्थ जीवन में पूरी तरह से संतुष्ट रहने वाला व्यक्ति होता है ।

दण्ड योग :

परिभाषा : जिसके हाथ मे कही पर भी तलवार का चिन्ह हों तो उसके हाथ में दण्ड योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उसके जीवन में पत्नी से बराबर मतभेद बना रहता है । पूर्ण संतान सुख उसे प्राप्त नहीं होता तथा एक प्रकार से उसके गृहस्थ सुख में न्यूनता रहती है ।

शक्ति योग :
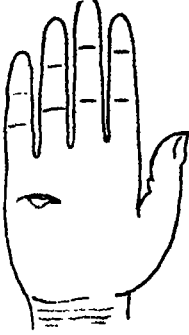
शक्ति योग

परिभाषा : जिसके हाथ में कहीं पर भी धनुष का चिह्न दिखाई दे उसके हाथ में शक्ति योग होता है।

फल : जिस जातक के हाथ में शक्ति योग होता है वह व्यक्ति स्वार्थी लोभी, आलसी, तथा अन्य लोगों द्वारा अपमानित होता है। ऐसे व्यक्ति के पास अगर द्रव्य होता भी है तो वह मूर्खतापूर्ण कार्यों में उड़ा देता है। समाज में ऐसे व्यक्ति का कोई सम्मान नहीं होता।

श्रीमहालक्ष्मी योग :

परिभाषा : जिसके हाथ में कहीं पर भी तराजू का चिन्ह दिखाई दे तो वहां श्री महालक्ष्मी योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह लाखों में खेलने वाला तथा धर्मात्मा होता है तथा उसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली हुई होती है। जीवन में वह सभी दृष्टियों से सुखी सम्पन्न एवं सन्तुष्ट रहता है।
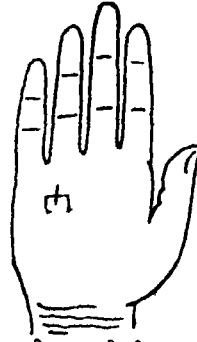
श्रीमहालक्ष्मी योग

धनवृद्धि योग :
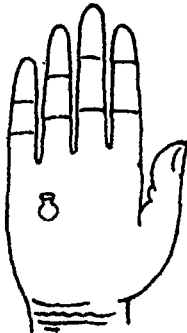
धनवृद्धि योग

परिभाषा : जिसके हाथ में कहीं पर भी कलश का चिन्ह दिखाई दे तो धनवृद्धि योग समझना चाहिए।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उस व्यक्ति को निरंतर धन की प्राप्ति होती रहती है तथा उनका बैंक बैलेंस बढ़ता ही रहता है।

अकस्मात् धन प्राप्ति योग :

अकस्मात धन प्राप्ति योग

परिभाषा : जिसके हाथ में कहीं पर भी कच्छप यानी कछुए का सा चिह्न हो तो अकस्मात् धन प्राप्ति योग बनता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है उसे जीवन में कई बार अचानक धन लाभ होता रहता है ।
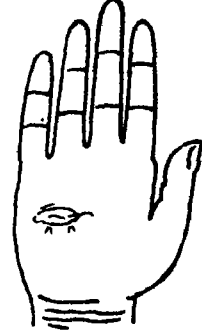
ऋषि योग :

ऋषि योग

परिभाषा : यदि हाथ में कहीं पर भी कुण्डल का चिह्न दिखाई दे तो ऋषि योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति परोपकारी, ईश्वर पर आस्था रखने वाला, सत्य वचन बोलने वाला एवं धार्मिक होता है ।

दुर्द्धर्ष योग :

परिभाषा : जिसके हाथ में कहीं पर भी अष्टकोण का चिह्न हो तो उपरोक्त योग होता है ।

फल : यह योग रखने वाला व्यक्ति अत्यन्त क्रोधी, खूंखार, दुष्ट तथा कुख्याति प्राप्त करने वाला व्यक्ति होता है । ऐसा योग डाकुओं के हाथ में देखा जा सकता है ।

दुर्द्धर्ष योग

गरुड़ योग :

गरुड़ योग

परिभाषा : यदि हाथ में कहीं पर भी वेदी का चिह्न हो तो गरुड़ योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह सुन्दर, सुशील, शिक्षित एवं आकर्षित व्यक्तित्व वाला जातक होता है परन्तु उसकी मृत्यु जहर खाने से होती है।

रज्जु योग :

परिभाषा : जिसके हाथ में कहीं पर भी सर्प का चिह्न हो या रस्सी का सा चिह्न हो तो रज्जु योग होता है।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में यह योग होता है वह जीवन में कई बार विदेश यात्राएं करता है। ऐसे व्यक्ति का एक लक्ष्य होता है और उस लक्ष्य की ओर वह निरन्तर गतिशील रहता है। ऐसा व्यक्ति निरन्तर कार्य करने वाला तथा ईर्ष्यालु प्रकृति का होता है।

रज्जु योग
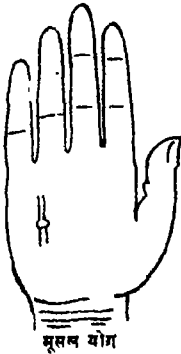
मूसल योग :

मूसल योग

परिभाषा : जिसके हाथ मे धान कूटने के मूसल के समान कोई चिह्न हो तो वहां मूसल योग होता है।

फल : जिसके हाथ में मूसल योग होता है वह जीवन में उच्च अधिकारियों के द्वारा सम्मान प्राप्त करता है तथा स्वयं भी श्रेष्ठ अधिकारी होता है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

नल योग :

परिभाषा : जिसके हाथ में रथ का चिह्न हो तो वहां नल योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति दूरदर्शी तथा दृढ़ निश्चयी होता है । ऐसा व्यक्ति अपने लक्ष्य की ओर बराबर ध्यान रखने वाला परन्तु स्वभाव से हठी होता है । इसके जीवन में धन की कमी नहीं रहती परन्तु जीवन के ३४ वें वर्ष में अंग-भंग होता है ।

नल योग

गौ योग :

गौ योग
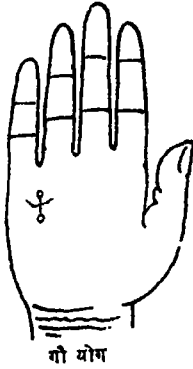
परिभाषा : यदि हाथ में कही पर भी अंकुश का चिह्न दिखाई दे तो वहां गौ योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में गौ योग होता है वह व्यक्ति श्रेष्ठ एवं सम्पन्न परिवार में जन्म लेता है तथा जीवन भर राजा के समान ऐश्वर्य का भोग करता है । ऐसा व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, मधुर तथा नम्रता पूर्ण व्यवहार करने वाला होता है । अतुलनीय धन सम्पत्ति का स्वामी होने के साथ साथ वह व्यक्ति नम्र परोपकारी और धार्मिक स्वभाव रखने वाला व्यक्ति होता है ।

गाल योग :

परिभाषा : जिसके हाथ में कहीं पर भी बिच्छू का चिह्न दिखाई दे तो वहां गाल योग होता है ।

फल : गाल योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति सहनशील, नम्र व्यवहार करने वाला, विरोधियों को भी क्षमा देने वाला, होनहार, सम्पत्तिवान तथा ऊंचे आदर्श का धनी होता है । समाज में ऐसे व्यक्ति का सम्मान होता है तथा जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्णतः सफल कहा जाता है ।

गाल योग

सन्यास योग :

सन्यास योग

परिभाषा : यदि जीवन रेखा के उद्गम के आसपास चिड़िया का सा चिह्न दिखाई दे तो सन्यास योग होता है।

फल : जिसके हाथ में सन्यास योग होता है वह व्यक्ति यौवनावस्था में ही घरबार छोड़कर सन्यासी बन जाता है और सन्यास के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

पद्म योग :

परिभाषा : जिस हाथ मे कहीं पर भी पद्म का चिह्न दिखाई दे तो उस जातक के जीवन मे पद्म योग होता है।

फल : पद्म योग से सम्पन्न व्यक्ति सुखी, धनवान, सफल एवं सम्मान प्राप्त व्यक्ति होता है।

पद्म योग

नागेन्द्र योग :
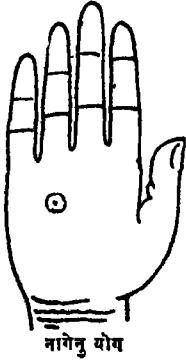
नागेन्द्र योग

परिभाषा : जिसके हाथ में कहीं पर भी कंकण का चिह्न दिखाई दे तो वहां नागेन्द्र योग होता है।

फल : जिसके हाथ में नागेन्द्र योग होता है वह व्यक्ति स्वस्थ, सबल एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है तथा जीवन में आर्थिक दृष्टि से पूर्णतः सुखी एवं सफल होता है।

त्रिलोचन योग :

त्रिलोचन योग

परिभाषा : जिसके हाथ में कहीं पर भी नरमुण्ड का चिह्न दिखाई दे तो त्रिलोचन योग माना जाता है।

फल : जिसके हाथ में त्रिलोचन योग होता है वह व्यक्ति दीर्घायु तथा समाज में पूर्ण सम्मानित व्यक्ति होता है। ऐसा व्यक्ति शत्रुओं का प्रबल संहारक होता है। राजनीति में यह व्यक्ति चतुर होता है तथा अपनी योग्यता एवं चतुराई के बल पर मन्त्री स्तर तक पहुँचने में सक्षम होता है।

चन्द्र योग :

चन्द्र योग

परिभाषा : जिसके हाथ में कहीं पर भी चन्द्रमा का चिह्न दिखाई दे तो वह चन्द्र योग होता है।

फल : जिसके हाथ में चन्द्र योग होता है वह व्यक्ति नेता या नेता के समान होता है। जीवन मे वह पूर्ण सुखों का भोग करता है। आर्थिक दृष्टि से कोई न्यूनता नहीं रहती। वह व्यक्ति साहसी, चतुर तथा प्रत्येक कार्य में दक्ष होता है।

चक्र योग :

चक्र योग

परिभाषा : यदि शनि पर्वत पर चक्र का चिह्न दिखाई दे तो वहां चक्र योग समझना चाहिए।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में चक्र योग होता है वह उच्च अधिकारी, धन सम्पत्ति का मालिक एवं निष्पक्ष न्याय करने वाला सम्माननीय व्यक्ति होता है।

चतुर्मुख योग :

परिभाषा : यदि मणिबन्ध के ऊपर मछली की सी आकृति हो तो वह चतुर्मुख योग होता है।

फल : जिस व्यक्ति के हाथ में यह योग होता है वह ऊंची शिक्षा प्राप्त, चतुर, एवं दूरदर्शी व्यक्ति होता है। वह कई कलाओं को भली प्रकार से जानता है तथा वह उदार, गुणवान, उच्च पदाधिकारी और मधुर भाषी होता है।

चतुर्मुख योग

अंशावतार योग :

अंशावतार योग

यदि हथेली में कहीं पर भी ग्राम का चिह्न दिखाई दे तो अंशावतार योग होता है।

अंशावतार योग रखने वाला व्यक्ति राजा के समान होता है। तथा अपने कार्यों से समाज में सम्मानित होता है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में कई स्त्रियों के संपर्क में रहता है तथा उनका भोग करता है। कला पूर्ण वस्तुओं का शौकीन यह व्यक्ति कलाकारों का सम्मान करता है तथा अपने आप में धनवान होता है।
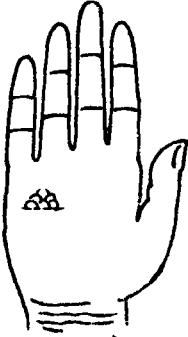
सार्वभौम योग :

यदि हाथ में कही पर भी बाण का चिह्न दिखाई दे तो वहा सार्वभौम योग होता है।

जिसके हाथ में कही यह योग होता है वह बचपन में यद्यपि गरीब होता है परन्तु यौवनावस्था मे पूर्णत: सुखी एवं सम्पन्न होता है तथा उसके जीवन की सभी भौतिक इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं।

सार्वभौम योग

व्याघ्रहन्ता योग :
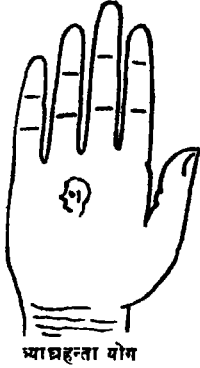
व्याघ्रहन्ता योग

यदि हाथ में कहीं पर भी पुरुष के चेहरे का सा चिन्ह होता है वहां यह योग होता है ।

जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति गुणवान, चतुर, तथा परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको ढालने वाला व्यक्ति होता है । सभा-चतुर, भाषण देने की कला में प्रवीण ऐसा व्यक्ति समाज में उचित सम्मान प्राप्त करता है । ऐसा व्यक्ति क्षमावान तथा गुणवान होता है और शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण समर्थ होता है ।

दृढ योग :

परिभाषा : जिसके हाथ में कहीं पर भी नेत्र का चिह्न दिखाई दे तो वहां दृढ़ योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति दृढ़ निश्चय वाला साहसी, बलवान, तथा शत्रुओं का मान मर्दन करने वाला होता है ।
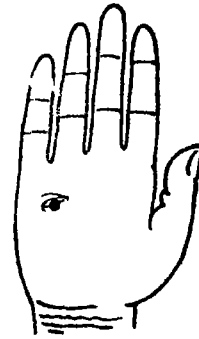
दृढ योग

भाग्यवान योग :

भाग्यवान योग

परिभाषा : जिसके हाथ में कहीं पर भी छतरी का सा चिह्न दिखाई दे तो वहा भाग्यवान योग होता है ।

फल : जिसके हाथ मे यह योग होता है वह व्यक्ति प्रसिद्धि प्राप्त चतुर, तथा बन्धु-बान्धवों का सहायक होता है । ऐसा व्यक्ति पूर्णतः भाग्यशाली कहा जाता है ।

कुल वर्द्धन योग :

कुलवर्द्धन योग

परिभाषा : जिसके हाथ में कहीं पर भी चक्र का चिह्न हो तो वहां कुलवर्द्धन योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति दीर्घायु, ऐश्वर्यशाली तथा अपने परिवार को ऊंचा उठाने वाला होता है।

विहग योग :

विहग योग

परिभाषा : जिसके हाथ में उड़ते हुए पक्षी का सा चिह्न हो तो वहां विहग योग होता है।

फल : जिसके हाथ में विहग योग होता है वह व्यक्ति झगड़ालू, गोपनीय कार्यों को करने वाला यथा सी० आई० डी० होता है।

शृंगाटक योग :

शृंगाटक योग

परिभाषा : जिसके हाथ में कहीं पर भी शंख का चिह्न दिखाई दे तो वहां शृंगाटक योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति अपनी साधारण स्थिति से ऊपर उठने वाला परिश्रम पूर्वक धन संचय करने वाला दीर्घायु तथा समस्त प्रकार के भोगों को भोगने वाला होता है।

हल योग :

परिभाषा : जिसके हाथ में हल का सा चिह्न दिखाई देता है तो वहां हल योग होता है ।

हल योग

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह भूमि का स्वामी होता है तथा भूमि सम्बन्धी कार्यों में वह विशेष लाभ उठाता है । पशु पालन कृषि, मकान बनाना, या उसका विक्रय करना आदि कार्यों से वह श्रेष्ठ धन लाभ करता है तथा धन-पति होता है ।

कमल योग :

कमल योग

परिभाषा : यदि हाथ की दस उंगलियों में से सभी उंगलियों पर चक्र के निशान हों तो कमल योग होता है ।

फल : जिसके हाथ में ऐसा योग होता है वह जातक विख्यात, समाज में सम्मान प्राप्त करने वाला, सुशिक्षित, बात चीत करने में चतुर, दीर्घायु, स्वस्थ एवं योग्य होता है ।

वापी योग :

परिभाषा : यदि दस उंगलियों में से नव उंगलियों पर चक्र के निशान हों तो वापी योग होता है ।

वापी योग

फल : जिसके हाथ में ऐसा योग होता है वह साधारण श्रेणी से ऊपर उठने वाला नम्र, गुणवान, चतुर, तथा सुखी होता है ।
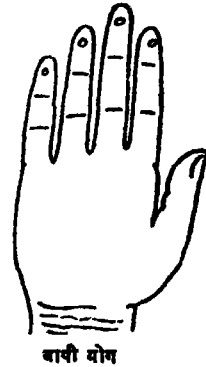
मरुत्वेग योग :

मरुत्वेग योग

परिभाषा : यदि मात्र दाहिने हाथ में चारों उंगलियों पर शंख के चिह्न हों तो मरुत्वेग योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह जीवन में कई विदेश यात्राएं करता है तथा समाज में पूर्ण सम्मानित जीवन व्यतीत करता है।

वायु योग :

परिभाषा : यदि दाहिने हाथ की चारों उंगलियों पर चक्र का चिह्न हो तो ऐसा योग कहलाता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति शुभ कार्यों को करने से एवं धार्मिक कार्यों में रुचि लेने से समाज मे सम्मान प्राप्त करता है तथा निरन्तर उन्नति करता रहता है।

वायु योग

प्रभन्जन योग :

प्रभजन योग

परिभाषा : जिसके दाहिने हाथ में तीन उंगलियों पर चक्र के चिह्न हों तो प्रमन्जन योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वे व्यक्ति जीवन में उन्नति करते हैं तथा व्यापार के कार्यों से विदेश यात्रा करते हैं।

पारिजात योग :

परिभाषा : जिसके दाहिने हाथ में तीन उंगलियों पर शंख के चिह्न दिखाई दें तो पारिजात योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वे व्यक्ति अपने जीवन के मध्य काल में और वृद्धावस्था में विशेष सुख प्राप्त करते हैं। अपने अधिकारियों से लाभ उठाते हैं, तथा उच्च पद प्राप्त करते हैं। ऐसे व्यक्ति सामाजिक रीति रिवाजों तथा रूढ़ियों का कट्टरता के साथ पालन करते हैं।

पारिजात योग

गज योग :

गज योग

परिभाषा : जिसके दोनों हाथों में पांच शंख तथा तीन चक्र के चिह्न हों तो गज योग होता है।

फल : जिसके हाथ में यह योग होता है वह व्यक्ति पशु पालक होता है। पशुओं के लेन देन अथवा कृषि कार्यों से वह सम्पन्न होता है तथा आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

नवेश योग :

परिभाषा : जिसके दोनों हाथों मे मिलाकर पांच चक्र तथा तीन शंख के चिह्न हों तो नवेश योग होता है।

फल : इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति दीर्घायु धन-वान, गुण-वान, चतुर, एवं प्रबल भाग्योदय वाला होता है। इसे जीवन मे कई बार आकस्मिक धन प्राप्ति होती रहती है।

टिप्पणी : शंख और चक्र के चिह्न हाथों की उंगलियों के अन्तिम सिरों पर ही देखने चाहिए।

नवेश योग

कालनिधि योग :

कालनिधि योग

परिभाषा : जिसके दोनों हाथो की उंगलियों में मिलाकर चार शंख तथा चार चक्र के चिह्न हों तो वह व्यक्ति कालनिधि योग सम्पन्न होता है।

फल : जिसके हाथ में ऐसा योग होता है उसका रहन-सहन ऊंचा होता है। वह उत्तम स्वभाव वाला तथा उच्च पदाधिकारी होन के साथ-साथ भाग्यशाली पुरुष कहा जाता है।

अष्ट लक्ष्मी योग ·

परिभाषा : जिसके हाथ में जीवन रेखा, स्वास्थ्य रेखा, भाग्य रेखा तथा सूर्य रेखा स्पष्ट व दृढ़ हो तो अष्ट लक्ष्मी योग होता है।

फल : जिसके हाथ मे यह योग होता है वह व्यक्ति अतुलनीय सम्पत्ति का स्वामी होताहै। भौतिक दृष्टि से उसके जीवन की सभी इच्छाएं पूर्ण होनी हैं तथा समाज में विशेष सम्मान होता है। ऐसा व्यक्ति विदेश यात्राएं करने वाला, देश विदेश में सम्मान पाने वाला तथा पूर्ण भाग्यशाली कहा जाता है।
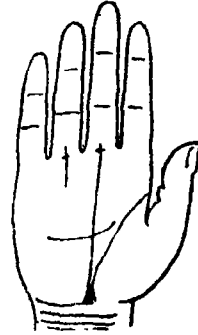
अष्टलक्ष्मी योग

ललाट रेखाएं

हाथ की रेखाओं के अध्ययन के साथ-साथ एक कुशल हस्तरेखा शास्त्री के लिये यह भी आवश्यक है कि वह उस व्यक्ति के शरीर के अन्य अंगों का भी एक दृष्टि में अवलोकन कर ले और उनसे सम्बन्धित फल कथन भी अपने मन में निश्चय कर ले। ऐसा होने पर एक पूरा अध्ययन उसके मानस में हो सकता है और इस प्रकार उसका जो भविष्य कथन होगा वह अपने आप में पूर्ण प्रामाणिक तथा श्रेष्ठ होगा।
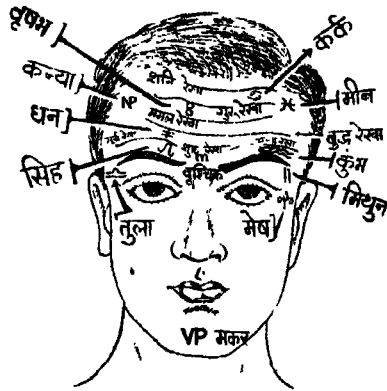
ललाट रेखा

प्राचीन मुनियों ने ललाट पर सात रेखाएं बताई हैं। उनके अनुसार इन रेखाओं तथा उनसे सम्बन्धित ग्रहों के नाम इस प्रकार हैं :

१ ललाट में केशों के निचले भाग में जो पहली रेखा है, उस रेखा के स्वामी शनि हैं।

२. इस रेखा के नीचे जो दूसरी रेखा है उसके स्वामी गुरु हैं।

३. तीसरी रेखा के स्वामी मंगल हैं।

४. चौथी रेखा के स्वामी सूर्य हैं।

५. पांचवी रेखा के स्वामी शुक्र हैं।

६. छठी रेखा के स्वामी बुध हैं। तथा—

७. सातवीं रेखा जो कि सबसे नीचे है इसके स्वामी चन्द्रमा हैं।

ललाट पर राशियों के चिन्ह तथा स्थान :

१. मेष — इसका स्वरूप अंकुश के समान होता है तथा बायें कान के ऊपर के भाग में इसका स्थान रहता है।

२. वृष — इसका चिह्न हिन्दी के चार के अंक के समान होता है तथा भाल के मध्य में इसका स्थान है।

३. मिथुन — इसका चिह्न सीधी दो खड़ी रेखाएं (॥) हैं। इसका स्थान बायें कान के ऊपर के भाग में मेष के पास में स्थित है।

४. कर्क — इसका चिह्न सात के जोड़ा का चिह्न है पर इसमें एक सात का अंक सीधा तथा दूसरे सात का अंक उल्टा होता है। इसका स्थान ललाट के ऊपर के भाग में होता है।

५. सिंह — उकार की मात्रा के समान इसका वृत्ताकार चिह्न होता है। यह दाहिनी भौं पर पाया जाता है।

६. कन्या — अंग्रेजी के जुड़े हुए एन पी के समान इसका चिह्न होता है। यह दाहिने भाल पर होना है।

७. तुला — नीचे सीधी रेखा और ऊपर धनुष के समान चिह्न तुला राशि का होता है। यह दाहिने कान के उर्ध्व भाग पर पाया जाता है।

८. वृश्चिक — इसकी आकृति एम के समान होती है। यह मुंह के ऊपर के हिस्से में दिखाई देता है।

९ धनु — इसका चिह्न खजूर की शाखा के समान होता है। यह दाहिने नेत्र के ऊपरी भाग में दिखाई देता है।

१० मकर अंग्रेजी के वी पी के समान इसका चिह्न होता है। यह ठोडी के पास मिलता है।

११. कुम्भ टेढ़ी दो रेखाओं वाला चिह्न कुम्भ का माना गया है। इसका स्थान बाई भौं होता है।

१२. मीन ३६ के अंक के समान इसका चिह्न होता है। शरीर के बायें भाल पर यह चिह्न मिलता है।

ललाट पर ग्रहों के चिन्ह तथा स्थान :
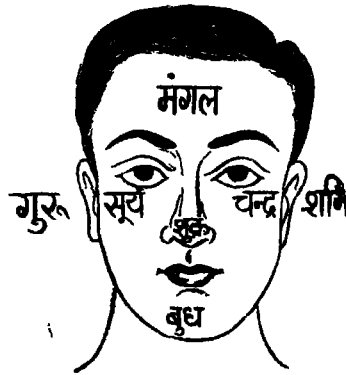
१ सूर्य इसका चिह्न मध्य बिन्दु युक्त वृत्त का चिह्न होता है। इसका स्थान दाहिने नेत्र में रहता है।

२. चन्द्र धनुष के आकार का इसका चिह्न होता है। बायें नेत्र में इसका निवास होता है।

३. मंगल तीन शाखाओं वाला मंगल का चिह्न सिर के ऊपरी भाग पर दिखाई देता है।

४ बुध एक खडी रेखा पर तिरछी रेखा जैसा चिह्न बुध का होता है। यह मुंह पर वास करता है।

५ गुरु दो के समान चिह्न गुरु का होता है। इसका निवास दाहिने कान पर होता है।

६. शुक्र धन के चिह्न के चारों ओर गोलाकार हो ऐसा चिह्न शुक्र का होता है। इसका निवास नासिका पर होता है।

७. शनि ईकार के समान इसका चिह्न होता है। इसका निवास बायें कान पर रहता है।

ललाट रेखा फल :

ऊपर ललाट पर सात रेखाओं का वर्णन पीछे की पंक्तियों में किया जा चुका है। इसके अलावा और अधिक सूक्ष्मता से विचार करने पर ज्ञात होता है कि दाहिने नेत्र के ऊपरी भाग में जो छोटी-सी रेखा होती है वह सूर्य की रेखा कहलाती है। इसी प्रकार बायें नेत्र के ऊपरी भाग में चन्द्र की रेखा मानी जाती है। भौंहों के बीच में शुक्र की रेखा तथा नासिका के अग्र भाग में विद्वान् लोग बुध रेखा मानते हैं।

इनके फल इस प्रकार कहे गए हैं :—

१. ललाट के मध्य में गुरु रेखा टेढ़ी तथा वृत्ताकार हो तो वह व्यक्ति दुखों से पीड़ित रहता है।

२. यदि गुरु की रेखा बीच में टेढ़ी तथा किनारों पर सीधी हो तो वह व्यक्ति यशस्वी होता है।

३. यदि शनि की रेखा टेढ़ी हो तो वह व्यसनी होता है।

४. जिसके ललाट में तीन रेखाएं सीधी सरल और स्पष्ट हों वह व्यक्ति सौभाग्यशाली होता है।

५. यदि गुरु रेखा छोटी हो तथा शनि रेखा छिन्न-भिन्न हो तो चिन्ता करने वाला, गुणवान तथा सम्मानीय व्यक्ति होता है।

६. यदि गुरु की रेखा सर्पाकार हो तो वह व्यक्ति लोभी होता है।

७. जिसके ललाट में बहुत अधिक रेखाएं टूटी-फूटी हों तो वह व्यक्ति दुर्भाग्यशाली एवं रोगी होता है।

८. यदि मंगल की रेखा छोटी हो तो वह दरिद्री होता है।

९. यदि गुरु और मंगल की रेखाएं बीच में टूटी हुई हों तो उसके पास निरन्तर धन का अभाव रहता है।

१०. यदि शनि और गुरु की रेखाएं धनुष के आकार की हों तो वह व्यक्ति दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

११. यदि शनि रेखा बहुत अधिक लम्बी और गहरी हो तो पर-स्त्री से सम्पर्क होता है।

१२. यदि मंगल रेखा सर्पाकार हो तो वह हत्यारा होता है।

१३. जिसके ललाट में एक ही रेखा होती है तो वह नीच स्वभाव वाला तथा निरन्तर भटकने वाला होता है।

१४. यदि गुरु रेखा में शाखायें निकलती हों तो वह व्यक्ति असत्य भाषी तथा दुष्ट होता है।

१५. यदि ललाट में चार रेखाएं हों तो वह सच्चरित्र तथा बुद्धिमान होता है।

१६. यदि गुरु शनि और मंगल की रेखाएं टूटी हुई हों तो वह सौभाग्यहीन कहलाता है।

१७. यदि ललाट में बालों के नीचे कई छोटी-छोटी रेखाएं हों तो वह जल में डूब कर मृत्यु को प्राप्त होता है।

१८. यदि शनि व मंगल की रेखाएं टूटी हुई हों तथा गुरु की रेखा नीचे की तरफ झुकी हुई हो तो वह सौभाग्यशाली एवं धनवान होता है।

१९. यदि गुरु और शनि की रेखाएं परस्पर मिल गई हों तो उसकी मृत्यु फांसी से होती है।

२०. यदि शनि की रेखा बहुत अधिक गहरी और झुकी हुई हो तो वह हत्यारा होता है।

२१. यदि ललाट में सर्प के आकृति की एक ही रेखा हो तो वह बलवान होता है।

२२. यदि मंगल और शनि की रेखाएं सर्प के फन की तरह हों तो उस व्यक्ति की फांसी से मृत्यु होती है।

२३. यदि शनि रेखा लचीली हो गुरु रेखा झुकी हुई हो तथा सूर्य रेखा लम्बी हो तो वह व्यक्ति दीर्घायु, गुणवान तथा सौभाग्यशाली होता है।

२४. यदि सूर्य रेखा छोटी और शुक्र रेखा लम्बी हो तो वह व्यक्ति सच्चरित्र चतुर और सौभाग्यशाली होता है।

२५. यदि शनि रेखा छोटी हो, गुरु रेखा टूटी हुई हो तथा मंगल रेखा शाखा दार हो तो वह व्यक्ति हत्यारा होता है।

२६. यदि सूर्य रेखा बीच में कटी हुई हा तो वह क्रोधी, कामी तथा झगड़ालू होता है।

२७. यदि सूर्य रेखा वक्राकार हो तो वह कठोर स्वभाव वाला होता है।

२८. यदि सूर्य की रेखा धनुष के आकार की और शुक्र की रेखा बीच में से कटी हुई हो तो वह नम्र रसज्ञ और धनी होता है।

२९. यदि मंगल और सूर्य रेखा सर्पाकार हो तो वह धनहीन होता है।

३०. यदि शनि रेखा लम्बी हो तथा मंगल की रेखा सर्पाकार हो तो वह धर्मात्मा दयालु और उच्च समाज मे रहने वाला होता है।

३१. यदि शनि और गुरु की रेखाएं ऊपरी भाग में अर्द्ध चन्द्राकार हों तो वह व्यक्ति बहुत अधिक सौभाग्यशाली होता है।

३२. यदि दोनों भौंहों के बीच में त्रिशूल का चिह्न होता है तो जीवन में उसका निश्चय ही भ्रंग-भंग होता है ।

३३. यदि शनि और गुरु की रेखा सर्पाकार हो तो वह धूर्त स्वभाव वाला होता है।

३४. यदि सर्पाकार गुरुकी रेखा शनि रेखा के पास पहुँचती हो तो वह कलह-प्रिय होता है ।

३५. यदि शनि रेखा पतली और गुरु रेखा मोटी तथा लम्बी हो तो वह नर घातक होता है ।

३६. यदि मंगल की रेखा झुकी हुई हो तथा शुक्र रेखा दाहिनी ओर कटी हुई हो तो वह अभिमानी क्रोधी तथा पर-स्त्री-सेवी होता है ।

३७. यदि शनि रेखा गहरी हो तथा दोनों भौंहों के बीच में अधिक रोम हों तो वह एक से अधिक विवाह करता है तथा सम्पत्तिशाली होता है ।

३८. यदि गुरु की रेखा लम्बी और लचीली हो तो वह सुन्दर और सौभाग्य-शाली माना जाता है ।

३९. यदि शनि तथा गुरु की रेखाएं धनुष के आकार की हों तो वह व्यक्ति पराक्रमी होता है ।

शनि रेखा :
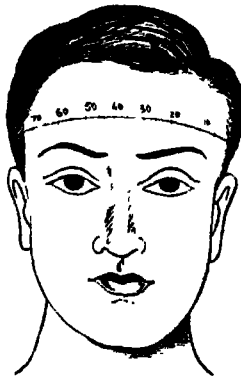
यदि शनि रेखा सीधी हो तो व्यक्ति बुद्धिमान होता है। यदि यह टेढ़ी-मेढ़ी हो तो वह चिड़चिड़े स्वभाव का होता है ।

गुरु रेखा :

यदि यह सीधी हो तो वह व्यक्ति ईमानदार होता है और टेढ़ी-मेढ़ी या टूटी हुई हो तो वह अनैतिक कार्य करने वाला होता है।

मंगल रेखा :

यदि यह रेखा सीधी हो तो वह व्यक्ति प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने वाला होता है। और यदि यह टेढ़ी-मेढ़ी हो तो वह प्रत्येक कार्य में असफल व्यक्ति माना जाता है।

सूर्य रेखा :

यदि यह रेखा सीधी हो तो व्यक्ति बुद्धिमान तथा जीवन में सफलता प्राप्त करने वाला होता है। और यदि-टेढ़ी मेढ़ी हो तो लोभी लालची और कंजूस होता है।

चन्द्र रेखा :

यदि यह रेखा सीधी हो तो वह बुद्धिमान, चतुर तथा सूक्ष्मदर्शी होता है परन्तु यदि यह टेढ़ी-मेढ़ी हो तो कमजोर दिमाग वाला माना जाता है।

शुक्र रेखा :

यदि यह रेखा सीधी हो तो पुरुष सत्य पथ पर चलने वाला तथा समस्त प्रकार के सुखों को भोगने वाला होता है। तथा इसके विपरीत यह रेखा टेढी-मेढ़ी हो तो वह व्यक्ति प्रेम के क्षेत्र में बदनाम होता है।

बुध रेखा :

यदि यह रेखा सीधी हो तो वह सफल भाषण देने वाला तथा सामने वाले लोगों को प्रभावित करने वाला होता है। इसके विपरीत यदि यह रेखा टेढ़ी-मेढ़ी हो तो वह व्यक्ति असत्यवादी तथा धोखा देने वाला होता है।

१. यदि ललाट में त्रिशूल का चिह्न हो तो वह दीर्घायु होता है।

२. जिसके ललाट में सीप का चिह्न होता है वह अध्यापक तथा आदर्श व्यक्ति होता है।

३. जिसके ललाट में नीली नसें दिखाई देती हों वे पापी होते हैं।

४. यदि ललाट में स्वस्तिक का चिह्न दिखाई दे तो वह करोड़पति होता है।

५. जिसकी ललाट छोटी होती है वे मन्द बुद्धि तथा धनहीन होते हैं।

६. जिसकी ललाट ऊंची होती है वे राजा के समान जीवन व्यतीत करते हैं।

७. जिनको ललाट गोलाकार हो वे कंजूस होते हैं।

८. जिनकी ललाट में अर्द्ध चन्द्र योग हो वे प्रसिद्ध उद्योगपति होते हैं।

९. जिनकी ललाट में वज्र या धनुष का चिह्न हो वे अतुल सम्पत्ति के स्वामी होते हैं।

१०. जिमकी ललाट में त्रिशूल और शंख का चिह्न हो तो वह सौभाग्यशाली माना जाता है।

ललाट पर तिल व उनका फल :

प्रायः दो प्रकार के तिल देखने को मिलते हैं। १. काला तिल २. लाल तिल।

प्रायः लाल तिल को शुभ और काले तिल को अशुभ माना गया है। कहीं-कहीं काला तिल भी अनुकूल माना जाता है।

१. यदि ललाट में शनि रेखा के दाहिनी ओर लाल तिल हो तो वह व्यक्ति परिश्रमी और धनी होता है।यदि काले रंग का तिल हो तो वह चतुर होता है।

२. शनि रेखा के ऊपर भाग में लाल तिल हो तो वह स्त्रियों से विशेष प्रेम करने वाला और अपने कार्य को पूर्णता देन वाला माना जाता है। यदि यहां पर काले रंग का तिल हो तो स्त्री के प्रेम में फंसकर बदनाम होता है।

३. यदि शनि रेखा के मध्य में या उसके नीचे तिल हो तो वह डरपोक होता है। लाल तिल होने पर भी यही फल पाया जाता है।

४. यदि काला तिल शनि रेखा के बाईं ओर हो तो वह व्यक्ति जीवन में कई यात्राएं करता है। यदि लाल तिल हो तो इन यात्राओं से धन कमाता है।

५: यदि गुरु रेखा के दाहिनी ओर तिल हो तो वह उन्नति करने वाले होते हैं। यहां पर लाल तिल का भी यही फल है।

६. यदि गुरु रेखा पर ललाट के मध्य में काला या लाल तिल हो तो वह व्यक्ति बुद्धिमान और चतुर होता है।

७. यदि गुरु रेखा के बायें काला या लाल तिल हो तो वह व्यक्ति जीवन में सभी दृष्टियों से सुखी रहता है।

८. यदि मंगल रेखा से दाहिने भाग में लाल या काला तिल हो तो वह व्यक्ति यशस्वी, धनवान तथा सुखी होता है।

९. यदि मंगल रेखा के मध्य में तिल हो तो वह सन्तानहीन होता है। यहां पर दोनों तिलों का एक ही फल समझना चाहिए।

१०. यदि मंगल रेखा के बाईं ओर तिल हो तो ऐसा व्यक्ति लड़ाई झगड़ा करने वाला तथा बहादुर होता है। लाल और काले तिल का एक ही फल समझना चाहिए।

११. यदि सूर्य रेखा के दाहिनी ओर तिल हो तो वह व्यक्ति जमीन, जायदाद आदि से लाभ उठाता है।

१२. यदि सूर्य रेखा के मध्य मे तिल हो तो वह व्यक्ति वैभव सम्पन्न सुखी तथा यशस्वी होता है।

१३. यदि सूर्य रेखा के बाईं ओर तिल हो तो उसका गृहस्थ जीवन बराबर समस्या-प्रधान बना रहेगा।

१४. यदि शुक्र रेखा के दाहिनी ओर काला या लाल तिल हो तो उनका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त सुखी माना जाता है।

१५. यदि ललाट में शुक्र रेखा के ऊपर लाल या काला तिल हो तो वह व्यक्ति भौतिक दृष्टि से पूर्ण सुखी व सम्पन्न होता है।

१६. यदि शुक्र रेखा के बाईं ओर काला तिल या लाल तिल हो तो ऐसा व्यक्ति कामी या पर-स्त्री-गामी होता है।

१७. यदि बुध रेखा के दाहिनी ओर काला या लाल तिल हो तो वह व्यक्ति सफल व्यापारी होता है।

१८. यदि बुध रेखा के मध्य में तिल हो तो ऐसे व्यक्ति दूरदर्शी तथा सम्पन्न होते हैं।

१९. यदि बुध रेखा के बाईं ओर काला या लाल तिल हो तो ऐसा व्यक्ति डरपोक कायर तथा अपना काम स्वयं बिगाड़ने वाला माना जाता है।

२०. यदि चन्द्र रेखा के दाहिनी ओर तिल हो तो ऐसा व्यक्ति समाज में यशस्वी और आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता है।

२१. यदि चन्द्र रेखा पर लाल या काला तिल का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति अल्पआयु होता है और उसे गुप्त रोग रहते हैं।

२२. यदि चन्द्र रेखा के बाईं ओर लाल या काले तिल का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति दूसरो को तकलीफ देने वाला होता है।

२३. यदि बायें कान के ऊपर कनपटी पर तिल हो तो उनका पूरा जीवन दुखमय व्यतीत होता है।

२४. यदि बायें नेत्र की भौंहों के पास में तिल हो तो ऐसा व्यक्ति एकान्त-वासी तथा सामान्य जीवन निर्वाह करने वाला होता है।

२५. यदि बरोनी के पास में तिल हो तो वे असफल व्यक्ति माने जाते हैं।

२६. यदि ललाट की दाहिनी कनपटी पर तिल हो तो ऐसा व्यक्ति प्रेमी समृद्ध तथा सुखपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

२७. यदि दाहिने कान के पास तिल हो तो ये व्यक्ति साहसी होते हैं।

२८. यदि दाहिने भाग के भौंह के पास में तिल हो तो इनकी आंखें कमजोर होती हैं।

२९. यदि दाहिनी नासिका की ओर तिल हो तो वह व्यक्ति धनवान, सुखी और सफल होता है।

३०. यदि दाहिनी आंख के नीचे तिल का चिह्न हो तो वे समृद्ध तथा सुखी होते हैं।

३१. यदि नासिका के मध्य भाग में तिल हो तो वह व्यक्ति यात्रा करने वाला तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

३२. यदि नासिका के बायें भाग पर तिल हो तो बहुत अधिक प्रयत्न करने के बाद सफलता प्राप्त करता है।

३३. यदि ऊपर के होठ पर तिल का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यधिक विलासी और स्त्रियों का शौकीन होता है।

३४. यदि नीचे के होठ पर तिल का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति निर्धन होता है तथा जीवन भर गरीबी में दिन व्यतीत करता है।

३५. यदि ठोडी पर तिल हो तो वह व्यक्ति अपने काम में ही लगा रहने वाला होता है तथा लगभग स्वार्थी होता है।

३६. यदि गर्दन पर तिल हो तो वे व्यक्ति बुद्धिमान होते हैं तथा अपने प्रयत्नों से धन संचय करते हैं।

३७. यदि बायें गाल पर तिल का चिह्न हो तो उसके जीवन में धन का अभाव रहता है। परन्तु उसका गृहस्थ जीवन सामान्यतः सुखमय रहता है।

३८. यदि दाहिने गाल पर तिल का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान तथा उन्नति करने वाला होता है।

३९. यदि बायें कान के ऊपरी सिरे पर तिल का चिह्न हो तो वे व्यक्ति दीर्घायु पर कमजोर शरीर के होते हैं।

४०. यदि दाहिने कान के ऊपरी सिरे पर तिल का चिह्न हो तो वे व्यक्ति सरल स्वभाव के तथा युवावस्था में पूर्ण उन्नति करने वाले होते हैं।

४१. यदि सिर पर तिल का चिह्न हो तो व्यक्ति धनवान होता है।

४२. यदि सिर के दाहिनी ओर तिल का चिह्न हो तो समाज में उसका सम्मान बहुत अधिक होता है।

४३. यदि सिर के बायें भाग की ओर तिल का चिह्न हो तो वह जीवन भर परेशानियां उठाता है।

४४. यदि दोनों भौंहों के बीच में तिल का चिह्न हो तो वे दीर्घायु धार्मिक तथा उदार हृदय के होते हैं।

४५. यदि आंख के ऊपर या नीचे तिल हो तो वह व्यक्ति धनवान, बुद्धिमान एवं चतुर होता है।

४६. यदि गाल पर लाल तिल का चिह्न हो तो वे धनवान होते हैं, परन्तु अपनी मूर्खता से धन बरबाद कर देते हैं।

४७. यदि दाहिनी हथेली पर लाल तिल का चिह्न होता है तो वह धनवान होता है।

४८. यदि बायें हाथ में तिल होता है तो वह बुद्धिमानी से व्यय करने वाला होता है।

वस्तुतः हाथ की रेखाओं के साथ ही साथ चेहरे पर या अन्य स्थानों पर दिखाई देने वाले तिलों का भी अध्ययन करना चाहिए जिससे उस व्यक्ति के बारे में पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त की जा सके।

शरीर लक्षण

हाथ की रेखाओं के अध्ययन के साथ ही साथ व्यक्ति के शरीर का सामान्य ज्ञान भी होना आवश्यक है। शरीर की आकृति को देखते ही उसके बारे में आधा भविष्य कथन तो स्वतः ही हो जाता है।

नीचे मैं पाठकों की जानकारी के लिये शरीर के सामान्य लक्षणों को संक्षिप्त रूप में स्पष्ट कर रहा हूं :

कान :

१. यदि कान उभरे हुए हों तथा कान की नोंक सुडौल तथा बड़ी हो तो वह सौभाग्यशाली होता है।

२. यदि कान जन्म से ही लम्बे हों तो वह सुखी व्यक्ति होता है।

३. जिसके कान मोटे हों वह कोमल स्वभाव का होता है।

४. जिसके कान छोटे-छोटे हों वह बुद्धिमान होता है।

५. शंख के समान कान वाला व्यक्ति मिलिट्री में ऊंचे पद पर पहुंचता है।

६. चपटे कानों वाला व्यक्ति भोगी होता है।

७. बड़े-बड़े रोम युक्त कान दीर्घायु को स्पष्ट करते हैं।

८. बहुत मोटे कान नेतृत्व करने वाले का सूचक होता है।

९. अत्यन्त छोटे कान वाला व्यक्ति कंजूस होता है।

१०. सूखे हुए कान दरिद्रता की निशानी है।

११. लम्बे और फैले हुए कान क्रूर व्यक्ति का परिचय देते हैं।

१२. बड़े कान वाला व्यक्ति पूजनीय होता है।

१३. चिकनाई रहित कान कमजोरी का सूचक है।

१४. स्त्रियों के कानों पर केश होना विधवापन का सूचक है।

१५. स्त्री के कान लम्बे हों तो अच्छे होते हैं।

नाक :

नाक की आकृतियां

1	2	3
4	5	6
7	8	9
10	11	12
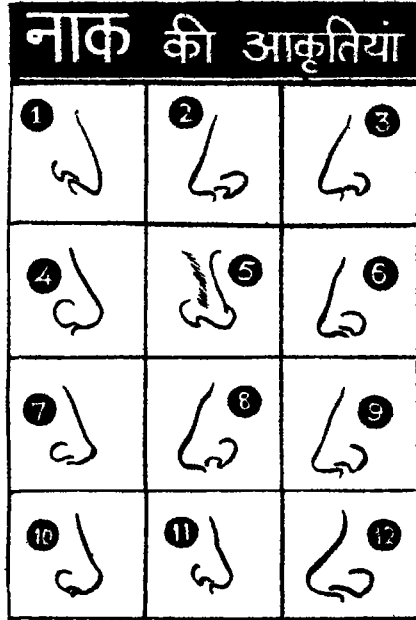
१. यदि चार अंगुल लम्बी नाक हो तो वे दीर्घायु होते हैं।
२. जिसकी नाक उभरी हुई हो वे सदाचारी होते हैं।
३. हाथी के समान नाक वाला व्यक्ति भोगी होता है।
४. तोते के समान नाक रखने वाला व्यक्ति सुखी होता है।
५. जिसकी नाक सीधी हो वह सौभाग्यशाली होता है।
६. जिनके नथुने छोटे हों वह भाग्यवान पुरुष होते हैं।
७. जिसके नाक का आगे का हिस्सा टेढ़ा हो वह आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता है।
८. नुकीली नाक वाला राजा होता है।
९. छोटी नाक वाला धर्मात्मा होता है।
१०. जिसकी नाक का आगे का हिस्सा दो भागों में बंटा हुआ हो वह दरिद्र होता है।
११. चपटी नाक वाला व्यक्ति सरल स्वभाव वाला होता है।
१२. कटी हुई नाक वाला व्यक्ति पापी होता है।
१३. दाईं ओर झुकी हुई नाक कमजोरी का चिह्न है।

१४. बड़े नथुने श्रेष्ठ कहलाते हैं।

१५. स्त्रियों में यदि नाक छोटी हो तो वह मजदूर स्वभाव वाली होती है।

१६. चपटी और लम्बी नाक वाली स्त्री विधवा होती है।

१७. यदि नाक के आगे का हिस्सा लम्बाई लिए हुए हो तो वह रानी के समान सुख भोगती है।

१८. यदि नाक के आगे की नोंक पर काला तिल या मस्सा हो तो वह दुराचारिणी होती है।

१९. अत्यधिक लम्बी नाक वाली स्त्री सुखहीन होती है।

२०. सुडोल और समान छिद्र वाली नाक श्रेष्ठता की सूचक है।

मुख :
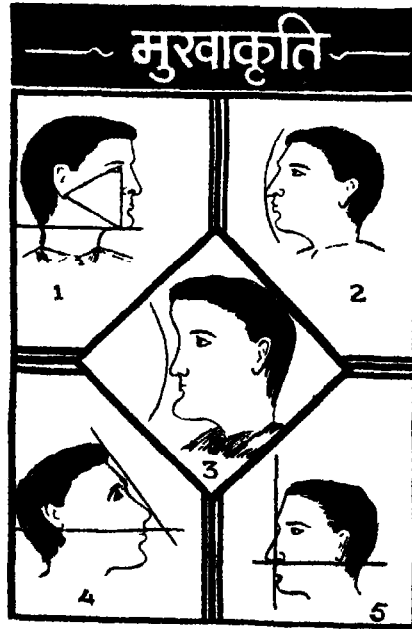
१. यदि छोटा मुंह हो तो वह अच्छा कहलाता है।

२. यदि बहुत अधिक फैला हुआ तो यह दरिद्रता का सूचक है।

३. यदि मुंह चौड़ाई लिए हुए हो तो अशुभ कहलाता है।

गर्दन :

१. छोटी गर्दन वाला भाग्यशाली होता है।

२. गोल और मजबूत गर्दन वाला व्यक्ति धनवान होता है।

३. शंख के समान गर्दन वाला व्यक्ति राजा होता है।

४. भैंसे के समान मोटी गर्दन वाला व्यक्ति बलवान होता है।

५. बैल के समान गर्दन वाला व्यक्ति अल्पायु होता है।

६. लम्बी गर्दन वाला व्यक्ति भोगी होता है।

७. टेढी गर्दन वाला चुगलखोर होता है।

८. लम्बी और चपटी गर्दन वाला दुःखी होता है।

९. मांसहीन गर्दन निर्धनता की सूचक है।

१०. चार अंगुल वाली गर्दन सबसे श्रेष्ठ मानी गई है तथा गर्दन का घेरा २४ से २६ अंगुल का अत्यन्त श्रेष्ठ होता है।

११. बड़ी-बड़ी हड्डियों से युक्त गर्दन निर्धनता की सूचक होती है।

१२. यदि स्त्रियों के गले का मणियां सीधा हो तो वह दीर्घायु होती है।

१३. यदि गले की गुटकी ऊंची हो तो वह सौभाग्यदायी होती है।

१४. मांस से भरी हुई सुन्दर गर्दन श्रेष्ठता की सूचक होती है।

१५. तीन रेखाओं से युक्त गर्दन वाली स्त्री धनी होती है।

१६. जिस स्त्री के गले में हड्डियां दिखाई देती हों वे दुर्भाग्य युक्त होती हैं।

१७. मोटी गर्दन वाली स्त्री विधवा होती है।

१८. जिसके गले में नाड़ियां दिखाई देती हों वे दरिद्री होती हैं।

१९. जिस स्त्री की गर्दन बहुत अधिक लम्बी हो वह कुल का नाश करने वाली मानी जाती है।

२०. जिसकी गर्दन सुन्दर, सुडौल चार अंगुल वाली हो वह श्रेष्ठ होती है।

चिबुक : (ठोढ़ी)

१. यदि चिबुक गोल या मांस से भरी हो तो वह धनवान होता है।

२. लम्बी पतली और दुबली चिबुक दरिद्रता की सूचक होती है।

३. यदि जबड़े गोल हों तो शुभ कहे जाते हैं।

४. यदि ठोढ़ी का अग्रभाग सुन्दर और कोमल हो तो शुभ है।

५. यदि ठोढ़ी के आगे के भाग में ललाई दिखाई दे तो अशुभ होता है।

६. यदि स्त्री की चिबुक दो उंगुली की मांसल तथा सुन्दर हो तो वह सौभाग्यशाली स्त्री होती है।

७. रोम युक्त चिबुक रखने वाली स्त्री दुराचारिणी होती है।

कपोल :

१. यदि फूले हुए गाल हों तो वह व्यक्ति सुखी होता है ।

२. मांसल कपोल भोगी होने की सूचना देते हैं ।

३. जिनके गाल सिंह के समान उभरे हुए हों वे राजा होते हैं ।

४. मांस रहित पिचके हुए गाल दुख भोगी होते हैं .

५. फूले गाल वाला व्यक्ति मंत्री होता है ।

६. निर्मल तथा सुन्दर गाल जिन स्त्रियों के होते हैं वे श्रेष्ठ कही जाती हैं ।

७. जिन स्त्रियों के गालों पर रोम हों वे दुखी होती हैं ।

८. यदि गालों पर नाड़ियां न दिखाई देती हों तो वह देवी के समान होती है ।

९. जिसके गाल गड्ढेदार हों वह पूर्ण भौतिक तथा शौकीन मिजाज की स्त्री होती है ।

होंठ :

१. लाल होंठ वाले व्यक्ति धनवान होते हैं ।

२. गुलाबी होंठ वाले व्यक्ति बुद्धिमान होते हैं ।

३. मोटे होठ वाला व्यक्ति धर्मात्मा होता है ।

४. लम्बे होंठ वाला व्यक्ति भोगी होता है ।

५. ऊबड़ खाबड़ होठ वाला व्यक्ति दुख पाता है ।

६. रूखे-सूखे पतले तथा कान्तिहीन होठ निर्धनता के सूचक होते हैं ।

७. जिस स्त्री के होठ लाल तथा चिकने हों वह श्रेष्ठ होती है ।

८. जिसके होठ के बीच में रेखा दिखाई दे वह सौभाग्यशाली दिखाई देती है ।

९. आड़े-तिरछे होंठ वाली दुर्भाग्यशालिनी होती है ।

१०. काले और मोटे होंठ वाली स्त्री पति-सुख-हीन होती है ।

११. बहुत अधिक मोटे होठ वाली स्त्री कलह करने वाली होती है ।

१२. ऊपर का होठ कोमल झुका हुआ तथा चिकना हो तो वह सौभाग्यदायी होती है ।

१३. यदि नीचे का होंठ ऊपर की ओर उठा हुआ हो तो वह विधवा होती है ।

१४. गोल तथा लालिमा लिए हुए होंठ वालीपूर्ण पति सुख प्राप्त करती है ।

दांत :

१. जिस व्यक्ति के दांत सीधी रेखा में समान रूप से उठे हुए और चिकने हों तो वह व्यक्ति धनवान होता है ।

२. लम्बे दांत वाले व्यक्ति धनी होते हैं।

३. अन्दर की तरफ झुके हुए दांत वाले व्यक्ति दरिद्री होते हैं।

४. काले ऊबड़-खाबड़ दांत वाले व्यक्ति परेशानी उठाते हैं।

५. बत्तीस दांत वाले व्यक्ति भाग्यवान होते हैं।

६. तीस दांत वाले धन के अभाव में चिन्तित रहते हैं।

७. इकत्तीस दांत वाले भोगी होते हैं।

८. इससे कम दांत वाले व्यक्ति हमेशा दरिद्री रहते हैं।

९. जिनके दांत धीरे-धीरे उखड़ते हैं वे दीर्घ जीवी होते हैं।

१०. जिस व्यक्ति के दांत एक दूसरे से अलग अलग हों वह व्यक्ति दूसरों के धन पर मौज करता है।

११. जिन स्त्रियों के दांत नोंकदार एक सीध में सफेद और आपस में मिले हुए हों वे स्त्रियां सौभाग्यशाली होती हैं।

१२. जिन स्त्रियों के ऊपर तथा नीचे सोलह-सोलह दांत हों तथा गौ दूध के समान श्वेत रंग के हों वे पति की अत्यन्त प्रिय होती हैं।

१३. जिन स्त्रियों के दांत बहुत छोटे-छोटे हों वे दुखी रहती हैं।

१४. जिनके नीचे के जबड़े में अधिक दांत हों उनको मां का सुख नहीं मिलता।

१५. भयंकर तथा टेढ़े-मेढ़े दांत वाली स्त्री विधवा होती है।

१६. सफेद मसूढ़े वाली स्त्री कुटिल होती है।

१७. मोटे और डरावने दांत वाली स्त्री कष्ट भोगने वाली होती है।

१८. यदि दांत अलग-अलग हों और बीच में दूरी हो तो वह दुराचारिणी होती है।

१९. यदि दांत के ऊपर दांत आये हुए हों तो वह चतुर, स्वार्थी, तथा पति को उंगली पर नचाने वाली होती है।

२०. जिनके मसूढ़े काले हों वह चोर होती हैं।

जीभ :

१. जिस पुरुष की जीभ लाल पतली और नरम हो वह ज्ञानवान चतुर तथा ईश्वर भक्त होता है।

२. जिसका आगे का भाग नुकीला हो तथा ललाई लिये हुए जीभ हो वह पूर्ण वैभव सुख प्राप्त करता है।

३. जिसकी जीभ सफेदी लिये हुए हो वे बदमाश होते हैं।

४. काली या नीली जीभ वाले व्यक्ति निर्धन होते हैं ।

५. मोटी और एक समान चौड़ी अथवा पीले रंग की जीभ हो तो वह व्यक्ति मूर्ख होता है ।

६. जिस पुरुष की जीभ नाक को छूती हो वह उच्च कोटि का साधक या योगी होता है ।

७. लम्बी जीभ वाला व्यक्ति स्पष्टवादी होता है ।

८. चौड़ी जीभ वाला व्यक्ति जरूरत से ज्यादा खर्च करने वाला होता है ।

९. जिन स्त्रियों की जीभ कोमल, लाल तथा पतली होती है वे सौभाग्यशाली होती हैं ।

१०. जिन स्त्रियों की जीभ संकीर्ण होती है वे अशुभ कहलाती हैं ।

११. जिस स्त्री की जीभ मोटी हो वह पूर्ण आयु नहीं प्राप्त करती ।

१२. लाल रंग की जीभ रखने वाली स्त्री श्रेष्ठ पति से शादी करती है ।

१३. काली जीभ वाली स्त्री झगड़ालू होती है ।

१४. बहुत अधिक चौड़ी जीभ वाली स्त्री निरन्तर दुख उठाने वाली होती है ।

हास्य :

१. हंसते समय जिनके दांत बाहर नहीं आते वे उत्तम व्यक्ति होते हैं ।

२. जो व्यक्ति हंसते समय सिर और कंधा फड़काते हैं वे भोगी अथवा पापी होते हैं ।

३. आंख मूंदकर हंसने वाले व्यक्ति अधार्मिक होते हैं ।

४. जिसका मुख हमेशा मुस्कराता रहता है वह जीवन में निरन्तर उन्नति करता रहता है ।

५. जिस स्त्री के हंसते समय दांत न दिखाई पड़ें और थोड़ा-सा मुह खुले वह स्त्री सौभाग्यशाली होती है ।

६. यदि हंसते समय स्त्री बार-बार कांपती हो या जोरों से खिलखिलाती हो वह रसिक मिजाज की तथा पर पुरुष से सम्बन्ध रखने वाली होती है ।

७. जिस स्त्री के हंसते समय गाल में गड्ढे पड़ते हों वह पर पुरुष की इच्छा रखने वाली होती है ।

स्वर : (स्त्रियों के लिए)

१. बोलते समय जिस स्त्री का स्वर वीणा के समान हो वह श्रेष्ठ होती है ।

२. कोकिल-सा स्वर वाली भाग्यशाली स्त्री मानी जाती है ।

३. जिसकी ध्वनि मोर के समान हो उसका धनी पुरुष से विवाह होता है।

४. फटे बांस सी आवाज रखने वाली स्त्री दुखी होती है।

५. घरघराहट सी आवाज वाली स्त्री दुखी होती है।

विशेष तथ्य : (स्त्रियों के लिए)

१. लम्बी और काली पुतली लिये हुए जिस स्त्री की आंख हो वह श्रेष्ठ होती है।

२. छोटे छोटे और काले बालों वाली पलक जिस स्त्री के हों वह सौभाग्यशाली होती है :

३, हरिण के समान नैन वाली स्त्री शुभ लक्षण वाली मानी गई है।

४. गोल या बिल्ली की तरह आंख रखने वाली स्त्री कुटिल होती है।

५. जिस स्त्री की दोनों आंखें पीली होती हैं वह कामातुर होती है।

६. जिस स्त्री के दोनों नेत्र ललायी लिये हों वह पर-पुरुष के साथ विचरण करने वाली होती है।

७. जिस स्त्री के नेत्र जल से भरे हुए होते हैं वे शुभ कहलाते हैं।

८. जो स्त्री देखते समय आंख फाड़ती हो वह कुटिल स्वभाव की होती है।

९. पुरुष के समान आंख वाली या धंसे हुए नेत्र वाली स्त्री चंचल होती है।

१०. जो स्त्री बात करते समय बाईं आंख दबाती है वह व्यभिचारिणी होती है।

११. जो बात करते समय दाहिनी आंख दबाती हो वह कम सन्तान वाली होती है।

१२. कमाणीदार भौहें रखने वाली स्त्री शुभ मानी गई है।

१३. खुरदरे बालों वाली भौहें अशुभ होती हैं।

१४. जिन स्त्रियों की भौहें न हों, वे निर्धन होती हैं।

१५. जिनकी भौहें मोटी हो वे पर पुरुष में रत रहती हैं।

१६. जिस स्त्री के भौहों के बाल बड़े-बड़े हों वह सन्तान-हीन होती है।

१७. जिस स्त्री के बायें गाल पर मस्सा या तिल होता है वे श्रेष्ठ कही जाती हैं।

१८. कण्ठ पर तिल हो उसके पहला पुत्र होता है।

१९. जिसके नख सुन्दर हों वह दयालु होती है।

२०. जिसके नेत्र लम्बे चौड़े हों तथा चौड़ी छाती एवं पतली कमर हो वह समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करती है।

२१. जिस स्त्री की लम्बी और पतली उंगलियां हों वह दीर्घायु होती है।

२२. जिस स्त्री के गले में तीन रेखाएं दिखाई दें वह ऐश्वर्य-शालिनी होती है।

२३. जिस स्त्री के होठ लम्बे और मोटे हों वह पति को धोखा देने वाली होती है।

२४. जिस स्त्री के नख तथा होठ कालापन लिए हुए हों उसका चरित्र उज्ज-बल नहीं होता।

२५. सोते समय जिस स्त्री के मुंह से लार टपकती हो वह कुलटा होती है।

२६. जिस स्त्री के हंसते समय गालों में गड्ढे पड़ते हों और नेत्र घूमते हों वह व्यभिचारिणी होती है।

२७. बहुत छोटे मुंह वाली पति को धोखा देती है।

२८. बहुत लम्बे मुंह वाली स्त्री निर्धन होती है।

२९. जो स्त्री सोते समय दांत पीसती हो वह लक्ष्मीहीन होती है।

३०. जिस स्त्री के नेत्र छोटे हों वह शुभ लक्षण वाली नहीं मानी जाती।

३१. जिस स्त्री का सिर समान तथा गोल हो वह दीर्घायु होती है।

३२. जिस स्त्री के ललाट में चार रेखाएं होती हैं वह सौभाग्यशाली होती है।

३३. जिस स्त्री के ललाट में तीन रेखाएं हों वह दीर्घायु होती है।

३४. एक रेखा वाली स्त्री शुभ नहीं कहलाती।

३५. जिन स्त्रियों के तलवे चिकने कोमल तथा समान हों वे सुख उठाती हैं।

३६. रूखे और कठोर तलवे वाली स्त्री दुर्भाग्यशील होती है।

३७. जिन स्त्रियों के चलते समय थप-थप की आवाज आती है वे मूर्ख होती हैं।

३८. जिनके पैरों में शंख, कमल, ध्वजा या मछली का चिह्न हो वे करोड़पति से शादी करती हैं।

३९. जिस स्त्री के चरण में पूरी उर्ध्व रेखा हो वह अखण्ड भोग उठाती है।

४०. जिस स्त्री के पैर का अंगूठा मांसल तथा गोल हो वह भोग कारक होता है।

४१. यदि अंगूठा चपटा और टेढ़ा-मेढ़ा हो वह सौभाग्य नाश करता है।

४२. जिस स्त्री के पैर का अंगूठा लम्बा होता है वह दुर्भाग्यशालिनी होती है।

४३. जिस स्त्री के पैर की उंगलियां कोमल तथा जुड़ी हुई हों तो वे शुभ फल प्राप्त करने वाली होती हैं।

४४. जिस स्त्री के पैर की उंगलियां लम्बी होती हैं वे दुराचारिणी होती हैं।

४५: यदि पैर की उंगलियां पतली हों तो वे धनहीन होती हैं।

४६. टेढ़ी उंगलियों वाली स्त्री कुटिल होती है।

४७. चपटी उंगलियों वाली स्त्री नोकर के समान जीवन व्यतीत करने वाली होती हैं।

४८. यदि पैर की उंगलियों के बीच में दूरी हो तो वह दरिद्री होती है।

४९. जिस स्त्री के मार्ग में चलते समय धूल उड़ती हो वह व्यभिचारिणी होती है व बदनाम होती है।

५०. चलते समय जिस स्त्री की सबसे छोटी उंगली भूमि का स्पर्श न करती हो वह निश्चय ही पर-पुरुष से रत रहती है।

५१. जिस स्त्री की दो उंगलियां पृथ्वी को स्पर्श नहीं करतीं वह पति को धोखा देती है।

५२. यदि पैर का ऊपर का हिस्सा चिकना कोमल और मांसल होता है वह सौभाग्यशाली होती है।

५३. यदि स्त्री के टखने गोलाकार हों तो शुभ होते हैं।

५४. यदि ये टखने नीचे की ओर ढीले हों तो दुर्भाग्यसूचक होते हैं।

५५. जिस स्त्री की ऐड़ी चौड़ी हो वह दुर्भाग्यशालिनी होती है।

५६. जिस स्त्री की जंघाएं रोमहीन चिकनी तथा गोल हों वह राज्य-लक्ष्मी के समान होती है।

५७. जिस स्त्री के दोनों घुटने गोल और मांस युक्त हों वह धनवान होती है।

५८. जिस स्त्री की पिंडलियां हाथी की सूंड के समान हों वे श्रेष्ठ होती हैं।

५९. बड़े-बड़े रोम वाली पिंडली जिस स्त्री के हो वह शीघ्र ही विधवा होती है।

६०. जिसकी पिंडलियां चपटी होती हैं वे अभाग्यवान होती है।

६१. जिनकी पिंडलियों का चर्म कठोर हो वे धनहीन होती हैं।

६२. जिस स्त्री की कमर चौबीस अंगुल की हो वह श्रेष्ठ होती है।

६३. लम्बी तथा चपटी कमर संकट देने वाली होती है।

६४, रोमयुक्त कमर वाली स्त्री विधवा होती है।

६५. जिस स्त्री के नितम्ब चौड़े हों वह भोगी तथा कामी होती है।

६६. यदि नितम्ब गोल कोमल तथा मांसल हों वह शुभ कहा जाता है।

६७. जिस स्त्री की नाभी गहरी तथा रेखाओं से युक्त हो वह सम्पत्ति देने वाली होती है।

६८. जिसकी नाभी ऊंची तथा मध्य भाग स्पष्ट दिखता हो, ऐसी स्त्री अशुभ-कारिणी होती हैं।

६९. जिस स्त्री की पसलियां कोमल और मांसल होती हैं वह सुख उठाने वाली मानी जाती हैं।

७०. जिस स्त्री की पसलियों पर रोम हों वह बुरे स्वभाव वाली होती है।

७१. जिस स्त्री का पेट छोटा तथा कोमल त्वचा वाला हो वह श्रेष्ठ होती है।

७२. घड़े के समान पेट वाली स्त्री दरिद्री होती है।

७३. यदि पेट बहुत चौड़ा हो तो वह दुर्भाग्यशाली होती है।

७४. लम्बे पेट वाली स्त्री ससुर या जेठ का नाश करती है।

७५. जिसके पेट पर तीन बल या तीन रेखाएं पड़ती हों वह भाग्यवान होती है।

७६. जिसके रोम सीधे और पतले हों वह सुख उठाने वाली होती है।

७७. जिसकी रोम पंक्ति टेढ़ी-मेढ़ी हो वह विधवा होती है।

७८. जिसका सीना बिना रोम का हो वह अपने पति की प्रिय होती है।

७९. जिसका सीना विस्तृत हो वह निर्दयी होती है।

८०. अठारह अंगुल चौड़ा सीना शुभ माना गया है। अर्थात् स्त्री का सीना छत्तीस अंगुल का होना चाहिए।

८१. यदि स्तन कठोर गोल तथा दृढ़ हों तो वे शुभ हैं।

८२. यदि स्तन मोटे तथा सूखे हुए हों तो वे दुख देने वाले होते हैं।

८३. यदि स्त्री का दाहिना स्तन ऊंचा हो तो सौभाग्यशाली होती है।

८४. जिस स्त्री के दोनों स्तन दबे हुए हों वह कुलटा होती है।

८५. जिस स्त्री के स्तनों के अग्र भाग काले तथा गोल हों वह शुभ माना गया है।

८६. जिस स्त्री की हंसुली मोटी हो वह ऐश्वर्य भोगी होती है।

८७. जिसकी हंसुली ढीली-ढाली हो वे दरिद्री होती है।

८८. यदि स्त्री के कंधे झुके हुए न हों तो शुभ है।

८९. यदि स्त्री के कंधे टेढ़े मोटे और बाल युक्त हों तो वह विधवा होती है।

९०. यदि आगे को कुछ झुके हुए और मजबूत हों तो वह आनन्द करती है।

९१. यदि उसकी भुजाएं कोमल तथा सीधी और रोम रहित हों तो यह शुभ माना गया है।

९२. यदि भुजाएं बालों से भरी हुई हों तो वह विधवा होती है।

९३. जिन स्त्रियों की भुजाएं छोटी हों वे दुख उठाती हैं।

९४. यदि हथेली लाल तथा छिद्र रहित हो तो वह सौभाग्यशालिनी होती है।

९५. यदि हथेली बहुत-सी नसों वाली या बहुत अधिक रेखाओं वाली हों तो दरिद्री होती है।

९६. यदि नख लाल और उभरे हुए हों तो शुभ है।

९७. पीले नख दरिद्रता के सूचक हैं।

९८. नखों पर सफेद बिन्दु कुलटा का संकेत करते हैं।

९९. जिसकी पीठ झुकी हुई हो वह दुख उठाने वाली होती है।

१००. जिस स्त्री की पीठ में बहुत अधिक बाल हों वह विधवा होती है।

१०१. सीधी दृष्टि वाली स्त्री पुण्यवान होती है।

१०२. जिस स्त्री की दृष्टि नीचे की ओर झुकी हुई हो वह अपराधिनी होती है।

१०३. यदि दोनों आंखें अधिक निकट हों तो वह स्त्री धोखा देने वाली होती है।

१०४. जिसकी आंखें बहुत दूर वह मूर्ख होती है।

१०५. यदि ललाट में तिल हो तो वह जीवन भर आनन्द उठाती है।

१०६. यदि हृदय पर तिल हो तो यह सौभाग्यदायक होता है।

१०७. जिस स्त्री के दाहिने स्तन पर तिल हो वह अधिक कन्याएं पैदा करने वाली होती है।

१०८. यदि बायें कुच पर लाल तिल हो तो वह विधवा होती है।

१०९. जिसकी नाक के अग्र भाग में लाल तिल हो वह पति की प्रिय होती है।

११०. जिसकी नाक के आगे के भाग में काला तिल हो वह दुराचारिणी होती है।

१११. जिसकी नाभी के नीचे तिल हो वह शुभ है।

११२. जिसके बायें हाथ में तिल हो वह सौभाग्यशाली होती है।

११३. जिसके गाल होठ, हाथ, कान, या गले पर तिल हो तो वह जीवन भर सुख पाती है।

स्त्री की इक्कीस जातियां :

स्त्री की २१ जातियां होती हैं जिनका वर्णन संक्षेप में नीचे की पंक्तियों में स्पष्ट किया जाता है।

पद्मिनी स्त्री :—ऐसी स्त्री दया और स्नेह रखने वाली, चित्त को मोहित करने वाली, हंस के समान चलने वाली तथा माता-पिता की सेवा करने वाली होती है। इसके शरीर से कमल के समान सुगंध निकलती है। वह सुन्दर, सामने वाले को प्रभावित करने वाली तथा पति सेवा में लीन रहती है। इसके नाक, कान, तथा होठ छोटे होते हैं। शंख के समान गर्दन और कमल के समान चेहरा होता है। ये स्त्री सौभाग्यवती, कम सन्तान उत्पन्न करने वाली और पतिव्रता होती है।

२ **चित्रणी**:—ऐसी स्त्रियां पतिव्रता और सब पर स्नेह करने वाली होती हैं। श्रृंगार आदि में उनकी रुचि रहती है। ये ज्यादा परिश्रम नहीं करतीं पर बुद्धिमान होती हैं। इनका मस्तिष्क गोल तथा नेत्र चंचल होते हैं। इनकी चाल हाथी के समान स्वर मोर के समान होता है। ऐसी स्त्रियां कोमल अंगों वाली तथा लज्जा रखने वाली होती हैं। ऐसी स्त्रियां नृत्य प्रेम तथा सुन्दरता से पति को प्रसन्न रखने वाली होती हैं।

३. **हस्तिनी :** ये पुरुष के मनोनुकूल होती हैं। तथा इनमें भोग की इच्छा विशेष होती है। इनका शरीर मोटा और थोड़ा बहुत आलस से भरा हुआ होता है। इनमें लज्जा धर्म आदि कम होता है। इनकी कपोल नासिका कान और गर्दन मोटी होती है। आंखें छोटी और पीली होती हैं। होठ मोटे और लम्बे होते हैं तथा चाल हाथी के समान होती है। इन्हें क्रोध अधिक आता है और लड़ाकूवृत्ति की होती हैं। ये अपने पति से सन्तुष्ट नहीं होती तथा पति के अलावा अन्य पुरुषों से सम्बन्ध बनाने को लालायित रहती हैं।

४. **शंखिनी :** ये लम्बी होती हैं तथा चलते समय पृथ्वी पर आवाज होती है। ये अपने कूल्हे हिला-हिला कर चलती हैं। इनकी आंखें टेढ़ी और शरीर बेडौल होता है। इनमें क्रोध की भावना अधिक होती है। तथा प्रत्येक क्षण भोग की इच्छा बनी रहती है। इनका मन दुष्ट होता है तथा मादक द्रव्यों का सेवन इन्हें रुचिकर लगता है। ये दुराचारिणी तथा पर पुरुष में रत् रहती हैं।

५. **सर्पिणी :** ये सरल स्वभाव वाली तथा डरपोक होती हैं। ऐसी स्त्रियां हंसमुख और लज्जायुक्त होती हैं। उनकी बोली कोमल होती है तथा प्रत्येक दृष्टि से पति को प्रसन्न करने की कला इन्हें आती है।

६. **मेत्रायणि :** ये सुन्दर रूपवती, गौर-वर्ण, अभिनय के साथ काम करने वाली और भौव्या होती है। पर उन्हें पति दुष्ट या कमजोर मिलते हैं। इस वजह से इनका गृहस्थ जीवन ज्यादा सुखमय नहीं होता। इनके रूप को देखकर प्रत्येक पुरुष मोहित हो जाता है। ये पर पुरुष से दूर रहती हैं।

७. **कलहकारिणी :** ऐसी स्त्री की भौंहें हमेशा चढ़ी हुई रहती हैं। इसके दांत ऊंचे-नीचे तथा भैंस के समान शरीर होता है। रास्ते में चलते समय इसके पैरों से धूल उड़ती रहती है। यह द्वेष रखने वाली तथा धोखे से पति को मारने वाली होती है। यह किसी भी प्रकार का पर पुरुष से सम्बन्ध जोड़ने में ही अपनी चतुराई समझती है।

८. **गृहस्थिनी :** ऐसी स्त्री आदर्श रूप से घर को चलाने वाली तथा पति में ही अनुरक्त रहती है। न तो यह अधिक बोलती है न किसी को धोखा देती है। न यह पर पुरुषों को चाहती है और न अधिक बनी ठनी रहती है। कुकर्मों से दूर रहने वाली यह स्त्री अपने दोनो पक्षों का नाम ऊंचा उठाती है।

९. **आतुरा :** ऐसी स्त्री प्रत्येक कार्य को तुर्त-फुर्त करने में विश्वास रखती है। यह साधारण रूप रंग वाली स्त्री पति से प्रेम करने वाली होती है तो कभी पति से भयंकर लड़ाई भी कर लेती है। इस स्त्री को समझना अत्यन्त कठिन होता है।

१०. भयातुरा : यह गौर वर्ण-नाजुक-लज्जा से सिकुड़ सिमट कर बात करने वाली तथा थोड़ी-थोड़ी बातों से डरने वाली होती है। यह कभी अकेली नहीं रहती। यह सबसे प्रेम करने वाली, मधुर भाषण करने वाली तथा अपने धर्म को निभाने वाली होती है।

११. डाकिनी : यह हंसकर बातें करने वाली तथा धोखा देने में चतुर होती है। इसके नेत्र लाल होते हैं। ऊपर से यह बहुत प्यार दिखाती है पर निकट से यह लालची तथा धोखा देने वाली होती है। इससे प्रेम करना और सांप से प्रेम करना बराबर होता है। इसका पति इसकी बदनामी से हर समय दुखी रहता है।

१२. हंसिनी : यह सुखी तथा समझदार होती है। इसकी चाल हंस के समान मनमोहक होती है। यह सत्य बोलने वाली तथा रति के समान सुन्दर होती है। यह मधुर प्रीति करने वाली होती है। ऐसी स्त्रियां सौभाग्यशाली पुरुषों को ही मिलती हैं।

१३. बहुवंशिनी : ऐसी स्त्री गेहुंएं रंग वाली तथा पूरी तरह से गृहस्थ धर्म को निभाने वाली होती है। यह असत्य नहीं बोलती तथा पति सेवा में ही प्रसन्न रहती है। समाज में इसका सम्मान होता है।

१४. कृपणी : ऐसी स्त्री निर्लज्ज, कमजोर शरीर वाली तथा कंजूस होती है। यह थोड़े बहुत रूप में बदनाम होती है तथा किसी से भी किसी भी प्रकार की बात करने में इसको शर्म नहीं आती। यह धन के लिये किसी भी पुरुष के साथ सोने को तैयार हो जाती है।

१५. घातिनी : यह स्त्री चालाक, तथा दूसरों को धोखा देने में होशियार होती है। प्रकट में यह प्रेम जताती है परन्तु इसके हृदय में जहर भरा हुआ रहता है। यह कुशल धोखा देने वाली होती है तथा बात-बात पर असत्य भाषण करती है।

१६. प्रेमिणी : यह सुन्दर प्रेम को निभाने वाली तथा पतिप्रिय होती है। यह हमेशा मन्द-मन्द मुस्कराती रहती है तथा जो भी इसकी भलाई करता है उस पर यह सब कुछ न्यौछावर करने के लिये तैयार रहती है। इसके केस लम्बे सुन्दर तथा चेहरा आकर्षक होता है।

१७. कृशतन्वी : यह स्त्री दुबली पतली तथा क्रोध करने वाली होती है यह अपने आपको बहुत अधिक चतुर समझती है तथा जब बोलती है तो इसका शरीर थरथराता रहता है।

१८. मदमस्तिनी : यह घमंड में चूर तथा कामपिपासू होती है। काम कला में हमेशा पुरुष ही पराजित होता है। यह कभी भी हार नहीं मानती। यह अत्यधिक कामी होती है तथा अन्त में यह वैश्या के समान हो जाती है। एक स्थान पर टिक कर बैठना इसको अच्छा नहीं लगता।

१९. कुलक्लेशिनी : यह स्त्री जिस घर में भी जाती है उसको दरिद्र बना देती है। यह पाप कर्म से प्रेम करती है। पति को बात-बात पर धोखा देती है। माता, पिता, पति, भाई, ससुर, आदि की किसी की इज्जत की यह परवाह नहीं करती और लगभग दुराचारिणी होती है।

२०. नारकी : ऐसी स्त्री छोटी आंखों वाली तथा पाप कार्यों में रत रहने वाली होती है। यह आपस में एक दूसरे की लड़ाई कराने में प्रसन्न होती है। ऐसी स्त्री दगाबाज तथा असत्यभाषिणी होती है।

२१. स्वर्गिणी : ऐसी स्त्री उत्तम विचार रखने वाली, धर्म को मानने वाली, तथा सभी के साथ मधुर व्यवहार करने वाली होती है। ईश्वर में इसका चित्त बहुत अधिक रहता है। यह छोटे बड़े का सम्मान करना जानती है। इसकी वाणी मीठी होती है। समाज में इसका सम्मान होता है। पति को ईश्वर से भी ज्यादा सम्मान देती है।

ऊपर मैंने स्त्रियों के कुछ भेद स्पष्ट किये हैं। इसके अलावा माननी, धारकी, दुष्टा, पातकी आदि भी स्त्रियों के भेद होते हैं। कुल भेद ६४ माने गये हैं जिनमें ऊपर लिखे हुए इक्कीस भेद मुख्य होते हैं।

हस्त रेखा व्यावहारिक ज्ञान

हस्त रेखा ग्रन्थों में हस्तरेखा से संबंधित तथ्य होते हैं। परन्तु किसी में भी व्यावाहारिक ज्ञान का उल्लेख नहीं मिलता। जिसकी वजह से हस्त रेखा के विद्यार्थी इससे संबंधित थ्योरी तो सीख जाते हैं। परन्तु उन्हें प्रेक्टिकल ज्ञान नहीं होता।

इस पुस्तक में पहली वार प्रेक्टिकल ज्ञान देने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए एक अनजान महिला का हाथ डा० श्रीमाली के समाने रख दिया गया और उस महिला के हाथ को देखकर उन्होंने जो विश्लेषण किया वह नीचे की पंक्तियों में स्पष्ट है।

डा० श्रीमाली को जिस महिला का हाथ दिया गया था वह इसी पृष्ठ पर प्रकाशित है। उनके पास जो हाथ का चित्र भेज गया था उस पर न तो महिला का नाम लिखा गया था और न इससे संबंधित कुछ भी तथ्य स्पष्ट किया गया था।

डा० श्रीमाली ने उस हाथ को देखकर ज्यों का त्यों उसके बारे में पूर्ण विवरण स्पष्ट कर दिया।

दूसरी बार उनके द्वारा पूर्ण सही भविष्यकथन को देखकर मैं अपनी एक परिचित महिला को लेकर उनके निवास स्थान पर पहुंचा और उनसे निवेदन किया कि मैं प्रकाशक महोदय की तरफ से आ रहा हूं और आप द्वारा प्रकाशित पुस्तक के अन्तिम पृष्ठों में व्यावाहारिक हस्तरेखा ज्ञान से संबंधित एक परिशिष्ट देने का विचार है। कृपया आप इस महिला का हाथ देखें और इस से संबंधित जानकारी देने का कष्ट करें।

डा० श्रीमाली ने उस महिला के हाथ को देखकर जो भविष्यफल स्पष्ट किया उसका विवरण निम्न प्रकार से है। पाठक भी इस जानकारी को हस्त रेखा के माध्यम से समझें। इसके लिए उस महिला का हाथ का चित्र यहाँ पर दिया जा रहा है। इससे पहले यह ध्यान रहे कि जब मैं और संबंधित महिला डा० श्रीमाली से मिले तब न तो उस महिला के नाम व अन्य बातों के बारे में जानकारी दी और न उन्होंने इस संबंध में कुछ भी पूछा।

हाथ को स्पर्श करते ही डा० श्रीमाली ने बताया कि हाथ में गुरु, शनि, सूर्य तथा बुध पर्वत पूर्णतः विकसित हैं और यह कोमल, मुलायम तथा आदर्श श्रेणी का हाथ है। इससे यह स्पष्ट होता है कि महिला सुसंस्कृत घराने की है और इसके पिता के घर में और पति के घर में अनुकूल तथा सभ्यतापूर्ण वातावरण रहता है। साथ ही इस महिला के संस्कार अपने आप में सांस्कृतिक धार्मिक तथा अनुकूल रहे हैं।

वस्तुत: यह एक सुन्दर और भाग्यशाली हाथ दिखाई देता है। परन्तु सूर्य रेखा सीधी होते हुए भी बीच मे से कट गई है; अत: शिक्षा सामान्य रही होगी। यद्यपि बचपन में शिक्षा के लिए प्रयत्न किया होगा परन्तु इस महिला की मामूली शिक्षा ही दिखाई देती है। ज्यादा से ज्यादा यह महिला आठवीं कक्षा से अधिक नहीं पढ़ी होगी। यद्यपि चेहरे से यह महिला पूर्ण शिक्षित तथा विदुषी दिखाई देती है और ऐसा प्रतीत होता है कि महिला कम से कम ग्रेजुएट होनी चाहिए। परन्तु हाथ की रेखाएं असत्य नहीं बोलतीं और ये रेखाएं इस बात की साक्षी हैं कि शिक्षा में निरन्तर व्यवधान आता रहा और इसी कारण यह महिला बहुत ही कम शिक्षा ले पाई होगी।

जीवन रेखा को देखने पर आश्चर्यजनक तथ्य ज्ञात हो रहे हैं। जीवन रेखा का प्रारंभ ही कई रेखाओं से मिलकर हुआ है अत: बचपन के प्रारंभिक वर्ष रोग-ग्रस्त रहे होंगे और संक्षेप और सूक्ष्मता से देखने पर यह भली-भांति स्पष्ट हो जाता है। कि जीवन के ५वें वर्ष में ही कोई बहुत बड़ी बीमारी आई होगी; क्यों कि यहां पर जीवन रेखा कटी हुई है और उसका संबंध मस्तिष्क रेखा से बन गया है। अत: यह

बात तो स्पष्ट है कि इस समय कोई बहुत बड़ी बीमारी आई होगी और लगभग मरते मरते ही बची होगी। क्यों यह बात ठीक है?

महिला ने स्वीकृति में गर्दन हिलाते हुए बताया कि मैं पाँचवें वर्ष में बहुत अधिक बीमार हो गई थी घर वालों ने ऐसा समझ लिया था कि अब यह बालिक शायद ही बचे पर म लगभग महीने भर बीमार रहकर पुनः स्वस्थ हो गई।

पंडितजी ने जीवन रेखा का अध्ययन करते हुए आगे बताया कि यह जीवन रेखा आगे भी दो तीन स्थानों पर कटी है। अतः यह बात भी सही है कि दसवें वर्ष में भी कोई विशेष घटना घटित होनी चाहिए और इस बार यह घटना जलघात जैसी दिखाई देती है।

महिला ने उत्तर दिया—वस्तुतः दसवें वर्ष ही मैं अपनी मां के साथ तालाब पर गई थी और वहां पर फिसल जाने के कारण मैं बहुत गहरे पानी में चली गई थी। यदि उस समय किनारे पर खड़े कुछ लोगों ने मुझे नहीं बचा लिया होता तो अब तक मैं समाप्त हो गई होती।

'बहुत खूब'—पंडित जी उत्तर दिया परन्तु अब आपको आगे के जीवन में किसी प्रकार का कोई खतरा नहीं है। आगे जीवन रेखा पूर्णतः सीधी स्पष्ट और साफ है और वह मणिबन्ध तक पहुंच गई है। अतः अब आगे घात या दुर्घटना जैसी कोई बात नहीं है। और पूरी आयु लगभग ६५ और ६६ वर्ष के बीच में है।

एक सेकण्ड ठहरिये, सूक्ष्मता से देखने पर ज्ञात होता है कि आपकी पूर्ण आयु ६५ साल ४ महीने २१ दिन स्पष्ट होती है।

महिला ने मुस्कराकर पंडित जी की ओर कृतज्ञता से देखा।

परन्तु इस जीवन रेखा पर शुक्र पर्वत से बहुत अधिक रेखाएं आ रही हैं और उनमें से लगभग दो रेखाओं ने तो जीवन रेखा को ही काट दिया है। इसके साथ ही छोटी-छोटी कई रेखाएं निकल कर आई हैं और ये सभी बाधक रेखाएं इस तथ्य की परिचायक हैं कि आपके जीवन में जरूरत से ज्यादा बाधाएं, परेशानियां और समस्याएं रही हैं। एक प्रकार से देखा जाय तो आपका बचपन अभावों में संघर्षों में तथा कठिनाइयों में ही बीता होगा। यद्यपि आपकी मातृ रेखा और पितृ रेखा पूर्ण है इससे वे दीर्घायु होने चाहिए परन्तु इस : कोई दो राय नहीं कि इन माता पिता से आगे के जीवन में कोई विशेष सुख या सहयोग नहीं मिला होगा।

यद्यपि मैं यह कहता हूं कि आपके लालन-पालन में माता पिता ने पूरा सहयोग दिया परन्तु विवाह के बाद माता पिता की तरफ से किसी प्रकार का कोई विशेष सहयोग मिला हो ऐसा प्रतीत नहीं होता। क्यों यह सच है न?

महिला ने स्वीकृति में सिर हिलाया और मुंह से कुछ भी नहीं कहा।

ठहरिये, अब मैं यह बता दूं कि आप माता-पिता के अभिभावकत्व में कब तक रहीं, अर्थात आपका विवाह कब हो गया ?

पंडितजी ने गणना करते हुए बताया कि आपका विवाह १४ वर्ष की छोटी-आयु में ही हो जाना चाहिए और गहराई से देखने पर यह ज्ञात होता है कि आपकी विवाह रेखा सीधी है अतः जीवन का कम हिस्सा ही आपने अपने पिता के घर में व्यतीत किया होगा। अतः ज्यों ही आपके १४ वर्ष पूरे हुए होंगे कि आपका विवाह हो गया होगा। ज्यादा से ज्यादा १४ वर्ष तथा एक या दो महीने बीते होंगे कि आप का विवाह हो गया होगा। मुझे आश्चर्य होता है कि आपका विवाह इतनी छोटी उम्र में ही कैसे हो गया ? क्या आपके समाज में छोटी उम्र में ही विवाह हो जाते हैं।

महिला ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई और बताया कि वास्तव में मेरा विवाह १४ वर्ष और एक महीने के बाद ही हो गया था।

पंडितजी ने रेखाओं का अध्ययन जारी रखते हुए बताया कि आपका पति प्रारम्भ में अत्यन्त सामान्य श्रेणी का होना चाहिए अर्थात् आपको जो ससुराल मिला होगा वह आपके पीहर के स्तर के अनुरूप ही होगा। आर्थिक दृष्टि से भी और सामाजिक दृष्टि से भी और एक प्रकार से देखा जाय तो जिस समय आपकी शादी हुई उस समय आपके पति की सामाजिक प्रतिष्ठा अत्यन्त नगण्य होनी चाहिए। आपके हाथ में शुक्र वलय भी दिखाई दे रहा है। यद्यपि यह वलय पूरा तो नहीं बना है परन्तु यह वलय इस बात की साक्षी तो दे ही रहा है कि आपके जीवन में ससुराल में आने के बाद से बराबर परेशानियां, मानसिक कठिनाइयां तथा चिंताएं रही होंगी। शारीरिक रूप से आप इतनी परेशान भले ही न रही हों, परन्तु मानसिक दृष्टि से तो आप जरूरत से ज्यादा चिन्ताओं तथा परेशानियों में रही होंगी और एक क्षण के लिए भी आपको आराम नहीं रहा होगा।

महिला ने स्वीकृति में सिर हिलाया और पूछा—यह स्थिति कब तक है ?

श्रीमाली जी हंसे, और बोले कब तक है ? का कोई तात्पर्य नहीं क्योंकि यह स्थिति भी और अब तक आपकी आयु लगभग ४२ को पार कर रही है अतः ज्यादा से ज्यादा इस प्रकार की मानसिक परेशानियां विवाह के १५ वर्षों तक रही होंगी। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि १४वें वर्ष से ३१ वें वर्ष की आयु तक आपका जीवन जरूरत से ज्यादा मानसिक संघर्षों में व्यतीत हुआ होगा। एक क्षण के लिए भी आप को अपने जीवन में आराम नहीं मिला होगा और ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इस अवधि में आपको पति की तरफ से भी किसी प्रकार का कोई सहयोग मिला हो ऐसा दिखाई नहीं देता।

परन्तु ३२ वें वर्ष से आपकी यह स्थिति सुधरनी चाहिए। इस समय तक पति समाज में अपना स्थान बना चुके होंगे और वे इस योग्य हो गये होंगे कि आपको मानसिक शांति दे सकें, आपको आराम दे सकें, आपको स्नेह और सहयोग दे सकें।

मस्तिष्क रेखा नीचे की तरफ झुकी हुई है और बीच में आकर बिल्कुल कट गई है। इसके साथ ही मुझे एक बिन्दु भी दृष्टिगोचर हो रहा है। यह बिन्दु उसी स्थान पर है जहां पर यह मानसिक रेखा कटी है। यह समय आपके जीवन का लगभग ३८ वां वर्ष आता है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि जीवन के ३८ वे वर्ष में एक बार फिर आपको बहुत अधिक मानसिक सदमा पहुंचा होगा। एक प्रकार से देखा जाय तो आपके चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा छा गया होगा और आप मानसिक रूप से बिल्कुल टूट गई होंगी। ऐसा ज्ञात होता है कि जीवन के ३२वें साल से लगाकर ३८वे साल तक आपका जीवन मानसिक दृष्टि से सामान्यतः अनुकूल रहा होगा परन्तु यह घटना आपके पूरे जीवन को झकझोर गई होगी। जहां पर यह रेखा कटी है वहीं पर सूर्य रेखा से एक सहायक रेखा निकल कर मिली है। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह मानसिक झंझावात पुत्र की तरफ से रहा होगा और इसमें कोई दो राय नहीं कि इस उम्र में आकर आपको अपने सबसे बड़े पुत्र का वियोग सहना पड़ा होगा और यह घटना इस प्रकार से घटित हुई होगी कि आपका पूरा जीवन अस्त-व्यस्त सा हो गया होगा। निश्चय ही यह घटना आपके सबसे बड़े पुत्र की मृत्यु का संकेत करती है।

सामने बैठी युवती की आंखें डबडबा आई, उसने अपना हाथ खींच लिया। दो क्षण तक वह मौन रही और उसने पुन. अपना हाथ सामने फैला दिया।

पंडित जी ने हाथ की रेखाओं का अध्ययन चालू रखते हुए कहा—अब आगे के जीवन में ऐसी कोई दुर्घटना आपके जीवन में नहीं है जिससे मानसिक दृष्टि से आप परेशान हों। यद्यपि यह बात सही है कि आपका चन्द्र पर्वत अपने आप मे कमजोर और दबा हुआ है जिसकी वजह से निरन्तर मानसिक परेशानियां रहती है और आपके जीवन में कोई न कोई ऐसी घटना बराबर घटित होती रहती है जिससे आपका मानसिक द्वन्द्व बना रहे। मेरी राय में आपके लिए यह ज्यादा अनुकूल एवं उचित रहेगा कि आप चांदी की अंगूठी में मोती धारण करें और आगे के जीवन में बराबर पहने रहें। यह मोती आपकी मानसिक समस्याओं तथा परेशानियों को कम करने में बहुत अधिक सहायक रहेगा।

महिला ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई और पूछा कि किस प्रकार का मोती पहनना मेरे लिए ज्यादा उचित रहेगा।

पंडित जी ने उत्तर दिया—आपको श्रेष्ठ स्तर का बसरे की खाड़ी का मोती पुष्य नक्षत्र में धारण करना चाहिए। यह मोती चांदी की अंगूठी में हो और यदि आप दाहिने हाथ की कनिष्ठिका उंगली में पहनें तो ज्यादा उचित एवं अनुकूल रहेगा।

पंडित जी ने बिना सिर उठाए ही आगे कहा, मुझे ऐसा दिखाई दे रहा है आपकी स्वास्थ्य रेखा प्रारम्भ में जंजीरदार हो गई है और आगे इस रेखा से छोटी-छोटी रेखाएं निकलती रही हैं परन्तु ये रेखाएं हथेली में नीचे की ओर बढ़ी हैं जो कि शुभ नहीं कही जा सकतीं। ये रेखाएं इस तथ्य की परिचायक है कि आपका स्वास्थ्य भी सामान्यत: कमजोर रहा होगा और निरन्तर कोई न कोई छोटी-मोटी बीमारी आपको बनी ही रही होगी। हकीकत में देखा जाय तो जीवन में बीसवें वर्ष से इकतालीसवें वर्ष तक आपका स्वास्थ्य बराबर कमजोर रहा होगा और घर में हर समय डाक्टर का आना जाना बना रहा होगा। क्योंकि इस स्वास्थ्य रेखा में जो नीचे की तरफ रेखाएं गई हैं उसमें अन्तिम रेखा ४१ वर्ष को ही स्पष्ट करती है। अत: तब तक आपका स्वास्थ्य कमजोर रहा होगा। इन रेखाओं का सम्बन्ध चन्द्र पर्वत तथा शुक्र पर्वत से रहा है। चन्द्र पर्वत से सम्बन्ध होने के कारण ऐसा ज्ञात होता है कि आपकी परेशानियां पेट से संबंधित रही होंगी। इसमें दुर्बलता एनीमिया गैस्टिक ट्रबल, अपच, आदि रोग सम्भव हैं तथा शुक्र पर्वत से जो सम्बन्ध बना है उससे ऐसा ज्ञात होता है कि इसके साथ ही साथ प्रदर लुकोरिया तथा स्त्रियों से संम्बधित बीमारी भी थोड़े बहुत रूप में आपके जीवन में बराबर बनी रही होगी। क्यों यह बात सही है न ?

महिला ने सिर झुकाते ही स्वीकृति में अपनी पलकें नीचे गिराई।

परन्तु अब आगे के जीवन में आपके स्वास्थ्य से सम्बन्धित कोई विशेष परेशानी नहीं है। यद्यपि पेट से सम्बन्धित थोड़ी बहुत कठिनाइयां रह सकती हैं परन्तु वह परेशानी भी मोती पहनने से कुछ अनुकूल हो जायगी। आगे के समय में स्वास्थ्य की दृष्टि से आपके जीवन में अनुकूलता ही दिखाई देती है। यद्यपि जीवन के ५८वें वर्ष में फिर एक शाखा नीचे की ओर झुक रही है और उस शाखा ने मस्तिष्क रेखा से सम्बन्ध भी बनाया है, अत: उस अवधि में आप फिर बीमार पड़ेंगी और लगभग ३ या ४ महीने तक इस सम्बन्ध में कष्ट उठाना पड़ेगा।

इसके अलावा आपके आगे के पूरे जीवन में किसी प्रकार की स्वास्थ्य से सम्बन्धित कोई बाधा या परेशानी नहीं है।

आपकी प्रणय रेखा को भी साथ ही साथ अध्ययन कर लें। जैसा कि मैंने अभी आपको बताया कि आपके जीवन में लगभग ३१वें वर्ष में ही पति की तरफ से अनुकूलता प्राप्त हुई होगी और यह बात भी सही है कि इस समय में आकर ही सामाजिक दृष्टि से तथा आर्थिक दृष्टि से आपके पति की उन्नति हुई होगी। इसके बाद अर्थात् ३२वें वर्ष से आज तक आप आर्थिक तथा पति सुख की दृष्टि से पूर्ण अनुकूल स्थिति में ही रही हैं। और जब हम इस रेखा को आगे के जीवन में देखते हैं तो यह ज्ञात होता है कि आगे के समय में आपके पति आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से बरा-

बर उन्नति करते रहेंगे तथा आपको ज्यादा से ज्यादा पति-सुख मिलता रहेगा। आपके जीवन में इस दृष्टि से किसी प्रकार की कोई चिन्ता नहीं है। और यदि मैं सही शब्दों में कहूँ तो आगे के जीवन में यह रेखा जितनी स्पष्ट सरल और निर्दोष है उतनी अन्य कोई रेखा नहीं। अतः इसमें कोई दो राय नहीं कि आगे के पूरे जीवन में आपको पति की तरफ से पूर्ण सुख सम्मान और श्रेष्ठता मिलेगी। इस दृष्टि से आप एक सौभाग्यशाली महिला कही जा सकती हैं।

अब मैं इसके साथ ही साथ सन्तान रेखा पर भी अपना दृष्टिकोण स्पष्ट कर दूं। आपके हाथ में सही रूप में छः रेखाएं दिखाई दे रही हैं। इसमें चार रेखाएं मोटी हैं तथा दो रेखाएं पतली हैं। इससे यह भली भांति स्पष्ट हो जाता है कि आपके छः सन्तान होंगी, जिनमें चार पुत्र होंगे तथा दो पुत्रियां होंगी। परन्तु आप स्वयं देख सकती हैं कि आपकी प्रथम सन्तान रेखा बीच में से टूटी हुई है। अतः आपको अपनी प्रथम सन्तान का सुख प्राप्त नहीं होगा। और जैसा कि मैंने अभी कुछ समय पहले ही आपको स्पष्ट किया है कि आपकी प्रथम सन्तान का दुख आपको जीवन के ३८वें वर्ष में झेलना पड़ा होगा, और यह तथ्य इसी सन्तान से स्पष्ट होता है। इसके बाद गणना करने के बाद यह ज्ञात होता है कि आपके आगे के जीवन में ३ पुत्र तथा २ पुत्रियों का सुख बराबर मिलता रहेगा।

परन्तु इसके साथ ही साथ मैं यह बता दूं कि सांसारिक दृष्टि से आपकी सन्तान से आपके सुख में किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं है। परन्तु यदि आप यह विचार रखें कि ये पूर्णतः आपकी आज्ञा में रहेंगे या पूर्णतः आज्ञाकारी होंगे तो यह भ्रम आपको अपने दिमाग से निकाल देना चाहिए। हां यह बात सही है कि आपका स्वभाव जरूरत से ज्यादा सहनशीलता का है और इसी वजह से इन सबसे निभ जायगी। यद्यपि कई बार इनसे मतभेद रहेंगे और इसकी वजह से भी आपको मानसिक परेशानियां रहेंगी।

आपके जीवन के ४४वें वर्ष में एक पुत्र तथा एक पुत्री का विवाह होगा। इसके बाद ४८वें वर्ष में एक और पुत्र के विवाह का योग है। इसके बाद ५४वें वर्ष में एक पुत्री का विवाह और ५७वें वर्ष में पुत्र का विवाह आपके हाथों से होगा। इसमें से भी दूसरे तथा तीसरे नम्बर के पुत्र से विशेष सुख मिलेगा। और इसी प्रकार सबसे छोटी पुत्री से आप मानसिक दृष्टि से ज्यादा सन्तुष्ट रह सकेंगी।

यों आपके आगे के जीवन में सन्तान सुख है। सन्तान योग्य होगी और अपने कार्यों से वे अपने क्षेत्र में अनुकूलता भी प्राप्त करेंगी। अतः इस दृष्टि से आपके जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं है।

गणना करने पर यह भी ज्ञात होता है कि ४७वें वर्ष के प्रारम्भ में आपको पौत्र-सुख तथा दौहित्र सुख मिलेगा। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि आप ४७वें वर्ष

में दादी व नानी एक साथ एक ही वर्ष में बन सकेंगी।

युवती का चेहरा दो क्षण के लिये प्रसन्नता से खिल उठा और फिर दूसरे ही क्षण लज्जा के मारे आंखें नीचे उतर गईं।

आपके हाथ में गुरु पर्वत अपने आप में श्रेष्ठ है, यद्यपि गुरु पर्वत का झुकाव शनि की ओर झुक रहा है परन्तु फिर भी गुरु पर्वत अपने आप में निर्दोष और स्पष्ट है। इससे ऐसा ज्ञात होता है कि आप अपने जीवन में सच्चरित्र और धार्मिक महिला रही हैं। भौतिक तथ्यों की अपेक्षा धार्मिक तथ्यों की ओर आपका झुकाव ज्यादा रहता है। आपके मन में यह इच्छा भी बराबर बनी रहती है कि आप अपने जीवन में ज्यादा से ज्यादा धार्मिक कार्य करें। गौ, ब्राह्मण तथा साधु सन्तों की सेवा करें तथा जीवन में तीर्थ यात्राएं करें।

पर ऐसा योग आपके जीवन में ३६वें वर्ष के बाद से ही संभव है। और यह बात भी सही है कि आपके आगे के जीवन में बराबर धार्मिक भावना आपके मन में बनी रहेगी। यथा संभव आपके हाथों से दान तथा सत्कार्य भी होंगे। तीर्थ यात्राएं भी जीवन के ३६वें वर्ष के बाद से बराबर हैं और आगे के जीवन में बनी रहेंगी। इस दृष्टि से आपके जीवन में कोई कमी नहीं। यद्यपि शनि की ओर झुकाव होने के कारण इस क्षेत्र में ही बीच बीच में सांसारिक बाधाएं आती हैं। परन्तु फिर भी थोड़े बहुत रूप में ये कार्य आपके जीवन में बराबर बने रहेंगे।

शनि पर्वत अपने स्थान पर सुदृढ़ है और मध्यमा उंगली भी पूरी लम्बाई लिये हुए है। अतः आप सौभाग्यशाली महिला होनी चाहिए। जब तक आप अपने पिता के घर में रहीं तब तक आपके पिता की बराबर उन्नति होती रही। और जब से आपने पति के घर में कदम रखा उसी दिन से निश्चय ही आपके पति की भी निरन्तर उन्नति बनी रही होगी। मुझे यह कहने में भी कोई संकोच नहीं है कि आगे के जीवन में यदि आपके पति आर्थिक सामाजिक अथवा अन्य क्षेत्रों में उन्नति करेंगे या श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे तो उसके पीछे निश्चय ही आपके इस शनि पर्वत का सहयोग होगा। अतः जब तक पति आपसे सम्पर्क बनाये रहेंगे या परस्पर मधुर व्यवहार बना रहेगा तब तक उनकी उन्नति बराबर होती रहेगी। साथ ही आपको भी इस माध्यम से सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

आपके हाथ में सूर्य पर्वत भी बलवान है, परन्तु एक तो उसका झुकाव शनि पर्वत की ओर हो गया है दूसरे सूर्य रेखा कई रेखा से मिलकर बनी है। यद्यपि ये सहायक रेखाएं तो सूर्य रेखा को बल ही देती हैं परन्तु कुछ रेखाएं इस सूर्य रेखा को काटती भी हैं। इससे यह भली-भांति स्पष्ट होता है कि आप अपने जीवन में चाहे कितना ही कार्य करें परन्तु यश कम ही मिलेगा। मैं सही शब्दों में कहूं तो न तो आपको अपने पिता के घर में ही यश मिला होगा और न आपको अपने ससुराल में

ही किसी प्रकार का यश मिला होगा। यद्यपि यह बात सही है कि आप अपने जीवन में बराबर ससुराल पक्ष से सम्बन्धित लोगों की सेवा करेंगी, समय-समय पर उनको सहायता भी देंगी, उनके साथ अनुकूल एवं मधुर व्यवहार रखेंगी। परन्तु समय पड़ने पर न तो उनकी ओर से आपको कोई सहयोग मिलेगा और न उनकी तरफ से यश ही मिलेगा। यद्यपि आपके हाथ के देखने से ऐसा ज्ञात होता है कि आपको विवाह के बाद ससुर का सुख तो मात्र १४ वर्ष तक ही मिला होगा परन्तु सासू दीर्घायु होगी। परन्तु इसमें कोई दो राय नहीं कि सास और ससुर की तरफ से आपको बाधाएं परेशानियां, अड़चनें तथा कठिनाइयां व मानसिक यंत्रणाएं मिली होंगी। आपने जितना ही ज्यादा उनको सुख और सहयोग देने का प्रयत्न किया होगा, उतना ही ज्यादा उनकी तरफ से कष्ट और मानसिक परेशानियां मिली होंगी। यही तथ्य आपके जीवन में देवर, ननद सास, भाई, माता और पिता के साथ भी लागू होता है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि आप यथा संभव इन सबकी सहायता करेंगी, परन्तु इनकी तरफ से आपको न तो किसी प्रकार का कोई यश और सम्मान मिला है और न आगे के जीवन मे मिलने की उम्मीद ही है।

इतना होने पर भी आप उनकी बराबर मदद करती रहेंगी और जीवन के अन्तिम क्षण तक आप उन्हें सुख और सहयोग देती रहेंगी।

आपने अपने हाथ में एक बात नोट की होगी कि आपके हाथ में गुरु पर्वत से एक रेखा आकर सूर्य रेखा से मिलती है। अतः आपको जो भी सम्मान और सहयोग मिलेगा, वह आपके पति की तरफ से मिलेगा। जीवन भर आपको पति का स्नेह और सहयोग मिलता रहेगा, और इसी तथ्य की वजह से आपकी मानसिक परेशानियां कुछ कम रहेंगी।

जहां तक बुध पर्वत का प्रश्न है वह सामान्यतः ठीक है। परन्तु एक तो वह हथेली के बाहर की ओर कुछ बढ़ गया है; दूसरे बुध रेखा कनिष्ठिका उंगली की तरफ ऊपर बढ़ गई है। इसमे यह स्पष्ट है कि आप सूक्ष्मदर्शी तथा समझदार महिला होंगी। यह बात भी सही है कि आप अनजान से अनजान आदमी या महिला को देखते ही मन में समझ जाती हैं कि यह प्राणी किस प्रकार के चरित्र का है, किस स्तर का है तथा आगे चलकर यह प्राणी लाभदायक रहेगा या धोखा देगा ? ये सारी बातें आपके दिमाग में एक ही क्षण में स्पष्ट हो जाती हैं और आपने यह अनुभव किया होगा कि आने वाले समय में आप उसके बारे में जो अनुमान लगाती हैं वह बिल्कुल सत्य सिद्ध होता होगा।

इसके साथ ही साथ यह बुध पर्वत इस बात को भी सूचित करता है कि प्रभु की तरफ से आपमें यह विशेष गुण प्राप्त होगा कि कई बार आप आने वाली घटनाओं को पहले से ही जान जाती है और उसके साथ ही साथ आपने यह भी अनु-

भव किया होगा कि वे घटनाएं आगे चलकर बिल्कुल सही उतरी हैं। यह आपके सरल और निश्छल हृदय का परिचायक है। साथ ही साथ यह तथ्य इस बात का भी सूचक, है कि आप पर प्रभु की विशेष कृपा है।

आपके इस बुध पर्वत पर चन्द्र से एक रेखा आकर मिलती है। अतः आपके जीवन में विदेश यात्रा योग भी स्पष्ट दिखाई दे रहा है। यद्यपि भाग्य रेखा का सम्बन्ध भी यहीं स्पष्ट होता है अतः आपके जीवन के ४१वें वर्ष में, ४३वें वर्ष में तथा ४६वें वर्ष में विदेश यात्रा योग स्पष्ट है। इन विदेश यात्राओं में अन्तिम दो यात्राएं अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं अनुकूल रहेंगी। इनमें से अधिकतर विदेश यात्राएं पति के साथ होंगी परन्तु ऐसा भी ज्ञात हो रहा है कि जीवन के ५६वें वर्ष में पुत्र के साथ भी विदेश यात्रा योग दिखाई दे रहा है।

इन विदेश यात्राओं से आप अधिकतर यूरोप तथा अमेरिका का हिस्सा देख सकेंगी। यद्यपि ये सभी यात्राएं एक महीने से चार महीने की अवधि तक की होंगी। परन्तु ये विदेश यात्राएं एक तरफ जहां आपके अनुभव को बढ़ाने में सहायक होंगी वहीं दूसरी तरफ ये यात्राएं आपके स्वास्थ्य की दृष्टि से भी तथा मानसिक परेशानियों को भी कम करने के लिये अनुकूल रहेंगी।

इसके अलावा आपके जीवन में लगभग पूरे भारत की यात्रा तथा कई बार तीर्थ यात्रा का योग है।

आपके हाथ में चन्द्र पर्वत कुछ दबा हुआ है तथा हथेली में अन्दर की ओर खिसका हुआ है। अतः इस पर्वत से आपको मानसिक परेशानियां तथा कठिनाइयां रहेंगी। जैसा कि मैं पीछे स्पष्ट कर चुका हूं कि इस चन्द्र पर्वत की वजह से गैस्टिक ट्रबल, अपच, अजीर्ण आदि की शिकायत थोड़े बहुत रूप में बनी रहेगी। और आपके जीवन में जो मानसिक परेशानियां बराबर बनी रही हैं उनका मूल कारण भी यह चन्द्र पर्वत ही है। इसके लिये मैं उपाय पीछे स्पष्ट कर चुका हूं।

हाथ में राहू पर्वत दबा हुआ है जो कि अपने आप में अनुकूल ही है। इससे आपके मन में न तो कभी अधार्मिक और अनैतिक भावना आई है और न आगे के जीवन में ऐसा संभव ही है। एक दृष्टि से इस पर्वत का दबा हुआ रहना आपकी धार्मिक भावनाओं को ऊंचा उठाने में सहायक रहा है।

मणिबन्ध आपके अनुकूल है। पहला मणिबन्ध जंजीरवत् है जो कि शुभ परिणामों को देने वाला है साथ ही आपके हाथ के तीन मणिबन्ध आपको दीर्घायु बनाने में भी सहायक हैं।

जहां तक शुक्र पर्वत का प्रश्न है वह अनुकूल है। और जीवन रेखा ने धनुषवत् अपने आपको बनाकर शुक्र पर्वत का विस्तार ही किया है। इस पर जो बाधक

रेखाएं हैं वे आपके जीवन में बाधाओं की सूचक हैं और जिसके बारे में मैं कुछ समय पहले स्पष्ट कर चुका हूं। यद्यपि शुक्र पर्वत हथेली की ओर बढ़ा हुआ भी है और इससे यह स्पष्ट होता है कि आपके जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक साधनाओं का परस्पर समन्वय रहा है। एक प्रकार से देखा जाय तो आपके जीवन में भोगमयी वृत्तियों पर धार्मिक वृत्तियों का प्रभाव विशेष रूप से रहा है और यह आपके जीवन में अनुकूल ही रहा है।

अंगूठा पूर्ण लम्बा तथा पीछे की ओर खींचा हुआ है इससे आपकी दृढ़ मनोवृत्ति स्पष्ट होती है। यह अंगूठा इस बात का भी परिचायक है कि आप अपने जीवन में अपने विचारों पर दृढ़ रहती हैं। एक बार आप जो निश्चय कर लेती हैं उसे पूरा करके ही छोड़ती हैं। चाहे उसके लिये कितनी ही परेशानियां उठानी पड़ें।

अंगूठे का पहला पौर कुछ लम्बाई लिए हुए है और अपने आप में सुदृढ़ है। यह सुदृढ़ता आपमें तर्क शक्ति की भावना का विकास करने में सहायक है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि आप कोई भी कार्य आंख मूंद कर नहीं कर लेतीं। अपितु आप उस कार्य में या तो संशोधन करती हैं अथवा उस कार्य में कुछ नवीनता देने का प्रयत्न करती हैं। इस अंगूठे के पर्व को देखने से यह भी ज्ञात होता है कि दूसरों की आलोचना आपको थोड़े बहुत रूप में प्रिय है। यदि आपके अलावा किसी अन्य ने कार्य किया होगा तो आप उस कार्य में या तो त्रुटि निकालने का प्रयत्न करेंगी अथवा यह सुझाव देने से बिल्कुल नहीं हिचकेंगी कि यदि यह कार्य इस प्रकार से न होकर इस तरीके से होता तो ज्यादा उपयुक्त एवं अनुकूल होता।

अंगूठे के जड़ में जहां शुक्र पर्वत का विकास प्रारंभ हुआ है वह उभरा हुआ है। और यह उभरा हुआ विकास आपको भौतिकता की ओर भी प्रवृत्त करता है। आपकी यह भावनाएं बराबर मन में बनी रही हैं कि आप शान-शौकत से रहें, तरीके से रहें, प्रदर्शन प्रियता का थोड़ा बहुत मोह आपके मन में बराबर बना रहा है।

शुक्र पर्वत पर एक आड़ी रेखा इन बाधा रेखाओं को काटती हुए मंगल पर्वत तक गई है। और जहां से यह रेखा प्रारम्भ हुई है उससे यदि आयु रेखा का मिलान करें तो ज्ञात होता है कि वह अवस्था आपके जीवन की ४३वें वर्ष में आती है। मंगल भूमि का स्वामी है तथा शुक्र भौतिक सुख का अधिकारी है। अतः ऐसा ज्ञात होता है कि जीवन के ४३वें वर्ष की समाप्ति तथा ४४वें वर्ष के प्रारंभ तक अपको अपना स्वयं का मकान सुख प्राप्त होगा। यह अलग बात है, कि आप स्वयं किसी प्रकार की नौकरी नहीं करती होगी या आपके स्वयं के कोई आय के स्रोत नहीं होगें परन्तु आपके पति के द्वारा उपार्जित धन से उनके सहयोग से यह मकान योग का समय सिद्ध होता है।

मंगल रेखा के पास ही एक छोटा-सा चतुर्भुज जीवन के ३७वें वर्ष में बना

है। अतः उस अवधि में भी मकान बनाने का योग बना होगा या जमीन खरीदने का योग बना होगा। परन्तु ऐसा ज्ञात होता है कि इस आयु में मकान तो नहीं बना होगा परन्तु जमीन आपने अवश्य खरीदी होगी। मेरी राय में यह जमीन भी आपने ही खरीदी होगी या आपके नाम से खरीदी गई होगी।

आपके हाथ में मंगल रेखा बलवान है और वह जीवन रेखा के समानान्तर चल रही है। मंगल पर्वत विकसित होने के कारण आपमें क्रोध की भावना भी कुछ विशेष होनी चाहिए। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आपमें अपने व्यक्तित्व के प्रति जागरूकता जरूरत से ज्यादा है। और जबकि आपके आत्म विश्वास को या आपके अहं को चोट लगती है तो आप तिलमिला जाती हैं। उस समय आप सामने वाले का कच्चा चिट्ठा खोलने लग जाती हैं और यह आपकी प्रवृत्ति होनी चाहिए कि जैसे भी हो अपना पक्ष मजबूत और दृढ़ होना चाहिए और इस पक्ष को पुष्ट करने के लिए आप उन सभी तरीकों का तथा सभी तर्कों का प्रयोग करती हैं जो आपके अनुकूल हो सकते हैं। इसके साथ ही जैसा कि मैंने अभी बताया कि मंगल रेखा धीरे-धीरे जीवन रेखा के समानान्तर चल रही है जो कि आपमें आत्म विश्वास की भावना पैदा करती है। आपमे जरूरत से ज्यादा आत्म विश्वास होना चाहिए। किसी भी प्रकार की बाधा आने पर आप हताश या निराश नहीं होतीं अपितु अपने परिचितों को भी मुसीबत में या दुख के दिनों में धैर्य बंधाती हैं और उस परेशानियों के समुद्र को पार कराने में सहायक होती हैं। यह आपका एक उज्जवल पक्ष है।

मंगल पर्वत से ही एक रेखा शनि पर्वत की ओर गई है और ऐसा ज्ञात होता है कि भले ही वह भाग्य रेखा से पूर्णतः मिल नहीं पाई है, परन्तु फिर भी उस तरफ वह बहुत अधिक बढ़ी है। इससे यह ज्ञात होता है, कि आपके जीवन में जमीन संबंधी कार्यों से कोई विशेष लाभ नहीं हुआ है और न भविष्य में जमीन स बन्धी कार्यों से लाभ ही है।

मेरी सलाह यह है कि आप अपने नाम से यथासंभव भूमि संबंधी कार्य न करें तो ज्यादा उचित एवं अनुकूल रहेगा।

हाथ में सभी गौण रेखाएं सामान्यतः अनुकूल ही हैं। हथेली में जीवन रेखा, मस्तिष्क रेखा तथा स्वास्थ्य रेखा को मिलाकर एक बड़े त्रिभुज का आकार बनता है। और इस त्रिभुज को आकार देने में चन्द्र रेखा का भी सहयोग रहता है। यह त्रिभुज अपने आप में अनुकूल है। इस त्रिभुज से यह भली-भांति ज्ञात हो जाता है कि आपके जीवन का उत्तरार्द्ध ज्यादा अनुकूल एवं सुखमय कहा जा सकता है। मोटे रूप में यदि आपके पूर्ण आयु ६८ वर्ष मानते हैं तो जीवन के ३८ वें वर्ष के बाद से अनुकूलता प्रारंभ हुई होगी और आगे की अवधि में यहअनुकूलता या सुख आपके जीवन में बराबर बना रहेगा। मेरी राय में आपको अपने जीवन की अनुकूलता के लिए विष्णु या

श्री कृष्ण की आराधना थोड़े बहुत रूप में रखनी चाहिए। इसके अलावा श्री राम, लक्ष्मी तथा अन्य देवी देवताओं की पूजा भी आपके जीवन को अनुकूकु बनाने में सहायक हो सकती है।

महिला ने अपना सिर ऊंचा उठाया और कहा पंडितजी अब तक आपने जो भी तथ्य स्पष्ट किये हैं वे अपने आप में पूर्णत: सत्य हैं पर कुछ प्रश्न मैं इसके अतिरिक्त भी जानना चाहती हूँ।

पंडितजी ने कहा—आप बिना संकोच के पूछिए, मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है।

युवती मुस्कराई और कहा, आप हाथ के माध्यम से जन्म का महीना तथा जन्म समय संशोधन कर लेते हैं। मैं इस मामले में अभी तक सन्देह में हूं। मेरी मां ने जो समय मुझे बताया है वह भी उन्हे पूरी तरह से याद नहीं है। कभी वह कुछ और समय बताती हैं कभी कुछ अन्य समय को ही बता देती हैं। इस प्रकार एक समय और दूसरे समय में लगभग दो से तीन घण्टों का अन्तर है।

पंडितजी ने कहा जन्म समय को संशोधन करना कोई बहुत अधिक कठिन कार्य नहीं है। आप एक मिनट रुकिये मैं अभी आप की इस समस्या का भी समाधान कर देता हूं।

पंडितजी ने आतशी शीशे का सहारा लेते हुए हाथ की रेखाओ का अध्ययन करने के बाद बोले आपका जन्म अप्रैल महीने में होना चाहिए क्योंकि आपकी मध्यमा उंगली के दूसरे पौर पर केवल एकही रेखा पूरी है। इसके अलावा बाकी जितनी भी रेखाएं हैं वे सभी टूटी हुई तथा अस्पष्ट हैं। यदि हम तारीख का अध्ययन करें तो रेखाओं की गणना मे ज्ञात होता है कि आपका जन्म ८ अप्रैल को ही होना चाहिए।

दो क्षण रुककर पंडित जी ने कहा निश्चय ही आपका जन्म ८ अप्रैल १९३३ है। जहां तक हाथ की रेखाओं के अध्ययन का प्रश्न है आपकी जन्म तारीख में पूर्णत: सत्यता है। आपको अपनी तारीख तो याद है न ?

हां पंडितजी मेरी जन्म तारीख आपने हाथ के माध्यम से पूर्णत: सत्य बताई है वास्तव में मेरी जन्म तारीख ८ अप्रैल १९३३ ही है।

पंडितजी ने हाथ पर उसी प्रकार से दृष्टि जमाते हुए आगे उत्तर दिया कि जहां तक आपके अंगूठे के सबसे ऊपरी पौर का प्रश्न है उससे ऐसा ज्ञात होता है कि आपकी लग्न कर्क होना चाहिए और यह कर्क लग्न ही लगभग दो अंश से कुछही ज्यादा होना चाहिए। इस हिसाब से आपका जन्म समय शाम के ८ बजकर ३१ मिनट २४ सेकेण्ड के आसपास ही होना चाहिए और इस समय की गणना करने पर कर्क लग्न दो अंश से ही स्पष्ट होता है।

आपकी बात लगभग सही दिखाई देती है। क्योंकि मेरी मां ने मेरा जन्म लगभग शाम को ७ से १० के बीच बताया है। मेरे पंडित जी ने जो मेरी जन्म कुण्डली बनाई थी उसमें कर्क लग्न है। परन्तु कर्क लग्न लगभग ८ अंशों में उन्होंने स्पष्ट किया है। परन्तु ऐसा ज्ञात होता है कि उनको पूर्णत: जन्म समय का ध्यान नहीं रहा होगा। आपने जो पिछली घटनाएं स्पष्ट की हैं वे पूर्णत: सत्य हैं और उसके आधार पर मेरी राय में आपने जो समय बताया है वही सत्य है और प्रामाणिक होना चाहिए।

पंडितजी ने धीरे से उत्तर दिया यह पूर्णत: प्रामाणिक ही समझिये। मैंने जो जन्म समय आपको बताया है वही सत्य है। क्योंकि इसी समय को आधार बनाकर यदि जन्म कुण्डली के ग्रहों का निर्धारण किया जाय तो आपके हाथ की रेखाओं तथा जन्म कुण्डनी का पूर्णत: सामंजस्य हो जाता है। और इस प्रकार आपके हाथ की रेखाओं से जो घटनाएं स्पष्ट होती हैं वे ही घटनाएं जन्म कुण्डली से स्पष्ट हो जाती हैं।

कुछ क्षण रुककर पंडित जी ने बताया कि मैं १ सेकेण्ड में आपके जन्म-कालीन ग्रहों को भी स्पष्ट कर देता हूं। आपकी जन्म कुण्डली में कर्क लग्न होना चाहिए तथा सिंह राशि में सिंह गुरु, चन्द्र, मंगल तथा केतु चार ग्रहों का संयम होना चाहिए। इसी प्रकार मकर में शनि कुम्भ में राहू तथा मीन राशि में सूर्य बुध और शुक्र तीन ग्रह एक साथ बैठे हुए होना चाहिए। हकीकत मे देखा जाय तो आप की जन्म कुण्डली यही बनती है।

महिला ने अपने बैग में पड़ी हुई जन्म कुण्डली निकाली और मिलान करने पर देखा गया कि वास्तव में जन्म कुण्डली में ग्रहों की स्थिति लगभग वही थी जो पंडित जी ने बताई थी।

पंडितजी ने हाथ की रेखाओं का अध्ययन समापन करते हुए कुछ तथ्य और बताये जो कि इस प्रकार से थे—

१. आपके हाथ में आकस्मिक धन रेखा का योग नहीं है। न तो अभी तक आपको आकस्मिक धन प्राप्त हुआ है और न आगे के जीवन में ऐसा कोई योग ही है।
२. वाहन सुख जीवन के ४४ वर्ष के प्रारम्भ में होगा। यह कार योग होगा और आगे के जीवन में यह वाहन सुख बराबर बना रहेगा।
३. आर्थिक दृष्टि से आपके आगे के जीवन में किसी प्रकार की कोई बाधा या परेशानी नहीं है।
४. आपके हाथ में कनिष्ठिका अनामिका तथा मध्यमा पर शंख है और तर्जनी पर पर्वत चिह्न है। अत: आपके जीवन का उत्तरार्द्ध निश्चय ही ज्यादा अनुकूल एवं सुखमय है।

५. आपके हाथ में लक्ष्मी योग, ब्रह्म योग, साधु योग, महालक्ष्मी योग, कलाकार योग पतिव्रता योग, कैलाश योग तथा कमल योग स्पष्ट दिखाई देते हैं और इन योगों के बारे में मैं व्यावहारिक हस्तरेखा ज्ञान पुस्तक में विवरण दे चुका हूं आप इससे सम्बन्धित तथ्य वहां देख सकते हैं।

६. आगे का पूरा जीवन आध्यात्मिक दृष्टि से अनुकूल एवं सुखदायक रहेगा मृत्यु हार्ट एटैक से अपने परिवार में अपने ही घर में होगी तथा पति से पहले होगी जो कि भारतीय नारी आदर्श के अनुरूप ही है।

महिला पंडितजी के ज्ञान से पूर्णतः प्रभावित हो चुकी थी। उसने उठकर चरण छूते हुए कहा—वस्तुतः आपने जो मेरे हाथ का विवेचन किया है वह अपने आप में पूर्णतः सत्य एवं प्रामाणिक है। हस्तरेखा पर आपका ज्ञान अपने आप में अद्भुत है। मैं आपको तथा आपके ज्ञान को पूर्ण श्रद्धा की दृष्टि से देखती हूं।

पंडित जी ने उत्तर दिया इसमें मेरा कोई विशेष महत्व नहीं है। हमें विनीत और श्रद्धायुक्त होना चाहिए हमारे साहित्य पर, हस्तरेखा ज्ञान पर, हमारे पूर्वज ऋषियों पर जिन्होंने यह हमें ज्ञान दिया। मैं तो एक निमित्त मात्र हूं। उनके द्वारा दिये हुए ज्ञान का दीपक जलाऊं और उसके प्रकाश में ज्यादा से ज्यादा लोग अपना रास्ता ढूंढ सकें। अपने जीवन को अनुकूल और व्यवस्थित कर सकें, जीवन मे सभी दृष्टियों से पूर्णता पा सकें।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर ही मैंने भारतीय ज्योतिष अध्ययन अनुसंधान केन्द्र, हाई-कोर्ट कालोनी जोधपुर, राजस्थान की स्थापना की है और इसमें श्रेष्ठ पंडितों को लगाया है जिससे कि भारत और भारत के बाहर के व्यक्ति जन्म-पत्रिका और हस्तरेखा के माध्यम से पथ-प्रदर्शन प्राप्त कर सकें।

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि इस थोड़े से समय में ही केन्द्र ने अत्यधिक ख्याति और सम्मान अर्जित किया है। आज यहां भारत और भारत से बाहर विश्व के अन्य देशों से भी सैकड़ों हजारों हस्तरेखाओं के चित्र तथा जन्म कुण्डलियां प्राप्त होती हैं। सभी को इस सम्बन्ध में सन्तुष्ट किया जाता है और सभी लोगों से प्रशंसा प्राप्त हुई है।

मुझे विश्वास है कि यह केन्द्र निश्चय, ही ज्योतिष के क्षेत्र में भारत का प्रतिनिधित्व कर सकेगा।

उपसंहार

प्रत्येक मनुष्य या सही शब्दों में कहा जाय तो प्रत्येक प्राणी में ईश्वर का अंश विद्यमान है और इसीलिए हम ईश्वर पुत्र कहे जाते हैं। ईश्वर के यहाँ सारा कार्य व्यवस्थित है, सोच समझ कर किया हुआ है, यदि आप का निर्माण हुआ है तो उसके पीछे कोई बहुत बड़ा रहस्य है कोई बहुत बड़ी आवश्यकता है। हकीकत में देखा जाय तो इस पूरे संसार में जिस रूप में आपका निर्माण और प्रादुर्भाव हुआ है वह केवल आपका ही हुआ है। आपके समान केवल इस पूरे विश्व में आप ही हैं। यह हो सकता है कि विश्व में कुछ आपसे घटकर हो सकते हैं या कुछ आपसे बढ़ कर हो सकते हैं परन्तु जिन तत्वों के अनुपात से आपका निर्माण हुआ है वह अपने आप में अन्यतम है। इसीलिये यह कहा जाता है कि ये आपके हाथ में जो रेखाएं हैं वे केवल आपके हाथ ही में है। संसार में किसी भी दो व्यक्तियों के हाथों में एक सी रेखाएं मिल ही नहीं सकतीं और इसी वजह से हर व्यक्ति का व्यक्तित्व अपने आप में अलग हो जाता है। आपके सामने प्रभु ने पूरा संसार फैलाकर रखा है। अब यह आप पर निर्भर है कि इस विश्व में आप अपना क्या स्थान बनायें, किस प्रकार से स्थान बनायें, और इसके लिए यह देखना आवश्यक है कि आप अपने जीवन के क्षणों का किस प्रकार से उपयोग करते हैं। एक-एक क्षण प्रभु की तरफ से आपको वरदान स्वरूप है जो क्षण बीत गया है वह क्षण वापस आ ही नहीं सकता। चाहे हम उस क्षण को प्राप्त करने के लिए लाखों करोड़ों रुपये व्यय कर दें।

जब एक क्षण लाखों करोड़ों रुपयों से भी कीमती है तो आपको यह कोई अधिकार नहीं है कि आप उस क्षण का लापरवाही के साथ उपयोग करें। व्यर्थ के वाद-विवाद में या व्यर्थ की क्रिया कलापों में उस क्षण का उपयोग करें। आपको सोचना चाहिए कि आप के जीवन के प्रत्येक क्षण का उपयोग है और आपको प्रत्येक क्षण का उपयोग सही-सही रूप में करना है। यह आप पर निर्भर है कि आप उन क्षणों का अपने साथ और अपने आपका विश्व के साथ किस प्रकार से सामंजस्य करते हैं। यह विश्व निरन्तर गतिशील है और यदि आप भी उसी के साथ-साथ गतिशील हैं तो निश्चय ही आपका विकास है। परन्तु यदि आपकी गति उससे कम हुई तो आप पिछड़ जायेंगे, पीछे रह जायेंगे और यह विश्व आपसे बहुत अधिक आगे बढ़ जायेगा। इसके बाद आप भले ही कितना ही प्रयत्न करें, विश्व की गति के साथ-साथ आप अपनी गति का सामंजस्य नहीं कर पा सकेंगे।

यह पूरा जीवन आपका स्वयं का है। ये पूरे जीवन के क्षण आपके सामने खुले हुए पड़े हैं। आपको चाहिए कि आप एक-एक क्षण का उपयोग करें। प्रत्येक

अवसर को आते ही पहिचान लें। और उसको अपनी मुट्ठी में बन्द कर लें। प्रत्येक काल, के क्षणांश के धड़कन को आप अनुभव करें और अपने अनुकूल बनाने की कोशिश करें। ये आपके हाथ में है और यदि आपने इस प्रकार से किया तो आप देखेंगे कि आपके हाथ की रेखाएं बदल रही हैं। आपके हाथ की रेखाएं ऊपर की ओर उठ रही हैं। आपके कदम उन्नति की तरफ अग्रसर हो रहे हैं। सफलता, प्रसिद्धि और सम्मान सामने जयमाला लिये हुए खड़ा है। आवश्यकता है आपके कदम बढ़ाने की जयमालाएं वरण करने की वे आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं। व्यग्रता के साथ इन्तजार कर रही है।

जीवन के प्रत्येक कार्य के दो पहलू हैं; सकारात्मक और नकारात्मक। हम किसी भी कार्य को इन दो रूपों में ही देख सकते हैं। या यों कहा जाय कि हम निर्माण और ध्वंस के बीच मे खड़े हैं। यह आप पर निर्भर है कि आप अपने जीवन की घड़ियों का सृजन करते हैं या ध्वंस करते हैं। हकीकत मे देखा जाय तो आप जड़ नहीं हैं चेतन हैं। गतिशील हैं सक्रिय हैं। और सक्रियता का तात्पर्य यह है कि आप गतिशील रहें और हर क्षण अपने आपको गतिशील बनाये रखें। निरन्तर आपके पग उन्नति की तरफ अग्रसर होते रहें।

आप उठें, सक्रिय बनें, सृजन करें। आप निश्चिन्त रहें कि यह आपके चारों तरफ अभाव और निराशा की जो खाई है वह अपने आप ही मिट जायेगी। ये रास्ते में जो कांटे पड़े हैं वे अपने आप फूलों में परिवर्तित हो जायेंगे। पर इसके लिये आत्म-विश्वास की जरूरत है। हिम्मत साहस और धैर्य की आवश्यकता है। निरन्तर आगे बढ़ने की इच्छा-शक्ति की आवश्यकता है।

आपके पास समय, शक्ति, श्रम, स्वास्थ्य और जीवन है। आप दोनों हाथों से इनका उपयोग कीजिये। आपको जितना श्रम और समय मिला है उतना ही समय गांधी को, लिंकन को, टैगोर को, ईशा को या टॉलस्टाय को भी मिला था। फिर क्या कारण है कि वे इस संसार के आकाश में आज भी चमक रहे हैं और आप गुमनाम से अंधेरे में भटक रहे हैं। फिर क्या कारण है कि आप पीछे हैं, फिर क्या बात है कि आपके कदम लड़खड़ा रहे हैं। उठिये, आगे बढ़िए, सफलता की मंजिल सामने ही है, विजय श्री आपको पुकार रही है, प्रसिद्धि और सम्मान आपके स्वागत के लिए खड़े हैं और सफलता जयमाला लिए आपको वरण करने के लिए तैयार है।

हृदय में जोश और स्नायुओं में साहस भरकर आगे बढ़िये। आपका प्रत्येक के कदम मजबूत हो, इस धुंधलके में भी आपकी दृष्टि आर-पार देख सके। आपके हाथ में है कि आप अपनी दुर्बल रेखाओं को बदल दें। अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में परिणित कर दें। काम करने का यही समय है। इसी क्षण से समय है और सही रूप में आपके जीवन के समय की यही पुकार है।